लक्ष्मीधर मालवीय
किसी
और
सुबह

मधु जी, गौरा, अमिल और तारा को

जैसे कि झरने की चादरें
छूट-छूट गिरती हैं
सपने में दीवारें
ढहती हैं !

जैसे कि कड़ाके की सर्दी
में भी उदासीन एक फव्वारा
अपने को बिखेरता जाता है...

पतझर की पीली-पीली दोपहर—दूब की पीली-पीली पत्तियों जैसी !

खुली खिड़की से आसमान के अलावा बगल वाले घर के आँगन का एक टुकड़ा दिखायी देता था—आँगन में हरी पत्तियों और लाल फूलों की गुरहल के पौधे। पौधे और आँगन और पड़ोस का घर भी अंदर से खामोश था। शायद वे दोनों बाहर चले गये होंगे। हों भी तो उनकी आवाज़ नहीं सुनायी देती—कई बार शक हुआ कि दोनों गूँगे तो नहीं हैं ! वे पति-पत्नी हो सकते हैं या शायद न हों। वह पता नहीं क्या काम करता है। साढ़े तीन साल पहले वे इस मकान में आये थे, उस समय भी वे रस्मी भेंट करने नहीं आये थे। इस बीच मैंने उन्हें सिर्फ़ एक बार देखा था जब वे फाटक खोल कर बाहर जा रहे थे।

ठीक मालूम नहीं कि कहाँ, लेकिन कहीं एक कुत्ता रो रहा था। शरद ऋतु की पीली शान्त दोपहरी में। पी-पूँ पी-पूँ, एम्बुलेन्स की दूर से आती आवाज़ सुनायी दे रही थी।

एक बार अँगड़ाई लेकर चौकी के दोनों ओर तातामि पर बिखरे इलस्ट्रेशनों पर नज़र डाली—भोलेभाले चेहरे वाली एक स्कूली लड़की से लेकर उसी लड़की के दिखायी देने वाले दोनों घुटने और उसके ऊपर का हिस्सा, किसी वयस्क औरत जैसा ! कुल बाईस इलस्ट्रेशन। सुबह से लेकर देर दोपहर तक में। रात से पहले इन्हें कान्दा में एक साप्ताहिक पत्रिका को देना था।

प्याले में घूँट भर चाय बच रही थी। ठंडी।

दरवाज़ा बंद करके बाहर निकल रहा था तभी वह बिल्ली आकर पैरों के आसपास फुदकने लगी।

—बाहर से आ नहीं रहा हूँ रे, अब बाहर निकल रहा हूँ।—मैंने डाक बक्स देखते हुए उससे कहा।

कोई डाक नहीं थी।

पतली लंबी और कच्ची गली के बाहर सीधा पक्का रास्ता था और उसके बगल की दीवार के पीछे कब्रिस्तान।

तभी बाँसुरी की धीमी आवाज़ सुनायी दी। लंबी निर्जन सड़क के किनारे-

किनारे सात-आठ साल की एक लड़की बाँसुरी दोनों हथेलियों में पकड़ कर उसे होंठों से लगाये चली आ रही थी।

...शाम हुई लाल, डूब चला दिन, पहाड़ पर के मंदिर का घंटा बोल रहा; आओ, एक दूसरे की उँगलियाँ थाम घर लौट चलें अब, पाखी भी हम भी लौट चलें अब....

—तुम बाँसुरी कितनी अच्छी बजाती हो!—वह पास आ गयी थी। वह ठिठकी और उसने अपना चेहरा उठा कर देखा। फिर वह आगे बढ़ गयी।

मुझे लगा कि मुझे भ्रम हुआ था कि वह बाँसुरी बजा रही थी।

....छोटी-छोटी चिड़ियाँ जब सपने देख रही होंगी, आकाश में गोल बड़ा-सा चंद्रमा, चाँदी के तारे चमकेंगे दिप-दिप ...

घूम कर देखा। वह जा रही थी और उसकी पीठ पर लाल चमड़े का स्कूली थैला लदा था।

शरद की उदास पीली दोपहरी में वह आवाज़ हल्की-और हल्की होती हुई, दूरी में घुल-मिल गयी।

दीवार में एक छोटा-सा फाटक था। उससे होकर कब्रिस्तान पार करके स्टेशन तक का पास का रास्ता था। कब्रिस्तान से निकलते हुए चीड़ के ऊँचे-ऊँचे पेड़ों वाले गोल दायरे के किनारे पड़ी बेंचों पर निगाह गयी। उस दिन भी उस बेन्च पर कोई नहीं बैठा था।

एक बार वह बहुत सुबह आ गयी थी और सारे दिन घर के अंदर रहने के बाद खुली हवा में निकलने के इरादे से हम इस पार्क जैसे कब्रिस्तान में आकर उस बेन्च पर बैठ गये थे। उसके आसपास की ज़मीन नीची होने के कारण दोपहर को हुई कुछ देर की तेज़ वर्षा का जल वहाँ जमा हो गया था और उसमें सामने के मोमिजि की लाल पत्तियों वाली डालें और शाम की नीली रोशनी तैर रही थी। बेन्च पर हम दोनों एक दूसरे से लगे हुए चुपचाप बैठे थे। तब तक उसने विवाह नहीं किया था।

—मैं किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करूँगी जिसके पास खूब धन हो।—वह अचानक बोली।

मुझे मालूम था कि वह उन दिनों कठिन आर्थिक अवस्था के बीच थी।

—मैं कुछ दिन, कुछ दिन भी सही, ऐसे बिताना चाहती हूँ, जिनमें मुझे रोज़ अगले दिन की चिन्ता न करनी हो।

मुझे आश्चर्य है कि उस दिन के बाद मैंने उस बेन्च पर बैठे किसी को नहीं

देरा। यह महज अंधविश्वास हो सकता है क्योंकि कोई भी उस बेन्च पर जब मैं वहाँ नहीं हुआ करता था जाकर बैठता रहा होगा।

वह पाँच-छः स्टेशनों के बीच की सेइबु लाइन थी और उस पर केवल दो डिब्बों की ट्रेनें आती-जाती थीं। सुबह-शाम के समय ही उनमें भीड़ हो जाती थी—सुबह के समय तोक्यो की तरफ़ जाने वालों की और शाम को तोक्यो की ओर से लौटने वालों की। और वक्त उन पर बूढ़े मर्द-औरत और स्कूल से वापस आने वाले अमरीकी बच्चे हुआ करते थे। वे पास के अमरीकी सैनिक अड्डे पर तैनात फौजियों के बच्चे थे और प्लास्टिक की लम्बी थैली में से चिचोड़ कर कैन्डी चाटते रेलगाड़ी के अंदर-अंदर एक छोर से दूसरे छोर तक एक-दूसरे का पीछा करते हुए दौड़ते और जूस या कोकाकोला के खाली डिब्बे खिड़की के बाहर फेंकते थे।

प्लेटफ़ार्म के सिरे पर एक नौजवान चुपचाप खड़ा ट्रेन के आने का इंतज़ार, आँख की सीध में अपलक देखते हुए कर रहा था। छाजन के नीचे दीवार से लगी काठ की लंबी बेन्च पर काली स्कर्ट सफ़ेद ब्लाउज़ पहने एक स्कूली लड़की किमोनो पहने शान्त चेहरे वाली एक अधेड़ स्त्री से हँस-हँस कर बातें कर रही थी। माँ-बेटी या दादी-पोती। बेन्च के छोर पर अठारह बीस साल का एक अमरीकी लड़का, आधी आँख ढकने वाला धूप का चश्मा लगाए।

स्टेशन की रेलिंग के बाहर लगे साकुरा की डालें प्लेटफ़ार्म के एक हिस्से पर झुकी थीं। साकुरा की पत्तियाँ पीली हो गयी थीं लेकिन अभी गिरने नहीं लगी थीं।

सुबह और शाम के अलावा ट्रेनें वहाँ देर-देर पर [illegible] थीं।

दो स्टेशन आगे ट्रेन बदल कर कान्दा में मैं इम्तहान देने के बाद मैं एकदम खाली था—संसार की सबसे अधिक आबादी [illegible] तोक्यो में, जहाँ देश का हर दस में से एक आदमी आकर रहता है।

पुरानी किताबों की दूकानों के बाज़ार में स्कूल-कालेज-यूनिवर्सिटी के लड़के-लड़कियों की भीड़ शाम के समय अधिक [illegible]।

अब मैं क्या करूँ, मैं सोचने [illegible], [illegible] कैसा शाम का [illegible] जिसमें धन कमाने के लिये काम [illegible]। दो दोस्तों के [illegible] आये जिनके साथ कभी शाम गुज़ारी [illegible] लेकिन [illegible] थे—उस समय वे अपने-अपने [illegible] होंगे और सड़क के [illegible] पर या किसी भीड़ [illegible] ट्रेन [illegible]

शिजुकू स्टेशन के [illegible] निकल कर [illegible]

अचानक तेज वर्षा होने लगी। अकस्मात बदलने वाली औरत की तरह शरद का मौसम !

सड़क के दोनों ओर खड़े यानागि, जिनकी लंबी-लंबी बारीक डालियाँ ज़रा सी हवा के चलते ही झूलने लगती थीं, ढोरों की तरह सिर झुकाए खड़े थे।

फ़ूगेत्सुदो का पीला साइनबोर्ड वहाँ से दिखायी दे रहा था। कोई पचास कदम की दूरी पर। वैसे ही दिनों वहाँ जाकर बैठता था। वहाँ जाकर बैठने वाला हर कोई।

मैली लाल दीवारें, लाल कपड़े से मढ़ी मैली कुर्सियाँ, गंदे टेबुल, काली शहतीरों वाली मैली छत और सिगरेट के धुएँ में घूरती आँखों जैसे नंगे बल्ब। वहाँ हमेशा टेबुलों पर बुझे हुए सिगरेट और दियासलाई की तीलियाँ बिखरी रहती थीं।

खिड़की के आगे दोहरी कुर्सियों पर बाल लाल रँगे, मेकअप किये एक जवान लड़का नींद से सो रहा था। बीच के टेबुल के दो ओर चार विदेशी हिप्पी बैठे थे और फ्रांसिसी या इतालवी में लगातार बातें कर रहे थे। उनके पीछे पत्थर के गोल टेबुल की दूसरी ओर दीवार से पीठ टिकाये एक मोटी लड़की अकेली बैठी थी। उसके नकली छल्लों वाले बाल कंधों पर से आगे को ओर लटके थे और वैसे ही काले रोयेंदार कोट की निचली घेर से निकले उसके पैर, मोटी जाँघों तक दिखायी देते थे। छोटे कद की और मोटी, गोगाँ की औरतों की तरह। जब भी दरवाज़ा खुलता, वह नये आये ग्राहक को देखने लगती और किसी खाली टेबुल पर उसके जाकर बैठने तक उसे देखती रहती।

वेटर आकर आर्डर ले गया।

मैं क्यों यहाँ बैठा हूँ।

नहीं। मैं यह बात नहीं करूँगा। वह कोई बात नहीं जिसमें मैं शामिल हूँ।

तो फिर मुझे कौन-सी बातें करनी चाहिये।

उन प्लेटफ़ार्मों के बारे में जो आज पीछे छूट गये। या घड़ी के वक्त के बारे में। या उन खतों के बारे में जिन्हें मैं लिखता, अगर मेरा कोई परिचित-मित्र बच रहा होता। या ज़िंदगी के बारे में। या किसी ऐसी दुर्घटना के बारे में जो अब तक नहीं हुई है। या ऐसे बेचारे व्यक्ति के बारे में जो शीशे की दीवार के दूसरी ओर होने के कारण कोई भी गंध नहीं सूँघ सकता है। या कि उन दो अपरिचित व्यक्तियों के बारे में जो मिलते ही यह निरर्थक बहस छेड़ देते हैं कि उनमें से कौन पहले मरेगा। या इस समय वर्षा हो रही है इसलिये खिली धूप

के बारे में। या उस आदमी के बारे में जिसने जापानी के कपड़े की टोपी पहन रखी है। या उन लंबी यात्राओं के बारे में जो क्षणिक होती है......

उस पुरोहितनुमा व्यक्ति के चेहरे को देख कर क्या यह अनुमान किया जा सकता है कि उसकी आवाज़ भारी होगी या पतली? यदि उसकी आवाज़ काल्पनिक निर्णय के विपरीत हुई तो ज़रूर अचंभा होगा।

हम लोग यहाँ आकर क्यों बैठते हैं। अलग-अलग टेबुलों के पीछे दो चुप पुरुष, एक चुप मोटी लड़की। ये अकेले होने पर भी उस अकेलेपन को महसूस करना चाहते हैं इसलिये यहाँ आते हैं। हम सबके लिये यह एक किस्म का नेशा है।

- आपने कुछ कहा क्या?---लड़की ने पूछा।

मैंने उसकी ओर फिर कर देखा और चुपचाप सिर हिला कर इनकार किया।

अगर उस लड़की के चेहरे के सिर्फ़ दो इंच पास तक अपना चेहरा लाकर देखूँ तो उसका चेहरा कितना बड़ा दिखायी देगा? मसलन, उसका गाल, हाथी के पेट जितना, नहीं?

/भीड़ में हम सब नफ़रत करते हैं और उस भीड़ में एक आदमी को खोज निकालने की कोशिश करते हैं/

बेकार है, यहाँ बैठना भी।

पर वह है कहीं ज़रूर---ख़ूबसूरती, चुनौती......

उठ कर वेटर के पास गया और तीसरी ह्विस्की का आर्डर कैंसिल करा कर बाहर निकल आया। वर्षा बंद हो गयी थी।

निचिगेकि थियेटर के सामने एक ऊँचे चबूतरे के ऊपर एक लाल मोटर रखी थी। उसके सामने बिकिनी पहने दो लड़कियाँ मोटर के विज्ञापन की पर्चियाँ नीचे जमा भीड़ को दे रही थीं। वे प्रसन्न थे और मोटर की बजाय बिकिनी पहने उन लड़कियों को हँस-हँस कर घूर रहे थे।

सामने दूर तक गिंज़ा की ऊँची इमारतों और नियॉन साइनों की कतारें थीं---सोनी बिल्डिंग, मित्सुबिशि के तीन लाल हीरे, कल का गोला---जिन्हें सारी दुनिया गिंज़ा के रंगीन फ़ोटो में देख चुकी है। सड़क के दूसरी ओर एक छोटा सा पार्क था, जिसके बीच में सेमेन्ट के मोटे काँटों वाला ऊँचा खंभा था। उस पार्क की बेन्चों पर दोपहर के समय बेरोज़गार बूढ़े और शराबी नींद में सोये दिखायी दिया करते थे। पास में कोम्पा के साइनबोर्ड के बल्ब जल गये

थे लेकिन मैं जानता था कि उतनी जल्दी सीढ़ियाँ उतर कर वहाँ जाने पर भी वार की सारी कुर्सियाँ खाली मिलेंगी।

बगल में कैमरे की एक बड़ी दूकान थी, जिसकी शोविन्डो के ताकों पर कैमरों की कतार सजी थी। मैं कैमरों के आगे रखे दाम के सफ़ेद कार्ड देख रहा था। वे सभी बहुत महँगे थे।

—फ़ोटोग्राफ़र हो ?

—नहीं तो।

वह सत्ताईस-अट्ठाईस वर्ष की एक औरत थी लेकिन अपने छोटे कद और दुबले-पतले शरीर से उससे कहीं कम उम्र की लगती थी। वह भी शोविंडो के अंदर रखे कैमरे देख रही थी।

—अकेले हो ? —उसने पूछा।

—हाँ।

—मैं भी अकेली हूँ। —वह हँसते हुए बोली।

—तो हम कुछ देर साथ टहल सकते हैं। क्या तुम्हें फ़ोटोग्राफ़ी में रुचि है ?

—मैं बिलकुल नहीं जानती पर फ़ोटो उतार कर देखना जरूर चाहती हूँ। उसने कहा—लेकिन ये कैमरे तो बहुत महँगे हैं और मुझे फ़ोटो उतारना आता भी नहीं।

—क्या तुम बियर पीती हो ?

—हाँ। सिर्फ़ बियर। बहुत थोड़ी-सी।

यूराकच्यो के ओवरब्रिज के दूसरी ओर सोउगो डिपार्टमेन्ट स्टोर के सामने वाली ऊँची इमारत की छत पर एक बियर गार्डन था।

गर्मी का मौसम बीत चुका था इसलिये बियर गार्डन के अधिकतर टेबुलों के गिर्द केवल खाली कुर्सियाँ बैठी थीं। सिर्फ़ एक टेबुल के चारों ओर पाँच-छः लड़के-लड़कियाँ बैठे थे और बियर के हर घूंट के बाद ज़ोर-ज़ोर से हँस पड़ते थे। वे शायद आफ़िस से उठ कर सीधे वहाँ चले आये थे और काफ़ी देर से बियर पी रहे थे।

—मेरे लिये बस, एक छोटी बोतल।—पर्चियाँ खरीदने की खिड़की के पास उसने मेरी कुहनी पकड़ते हुए धीरे से कहा।

—और खाने के लिये ?

—खाने के लिये ? —वह संकोच कर रही थी—तली हुई चिकिन। या—तुम बुरा तो नहीं समझोगे ? अगर हो सके तो पोर्क कटलेट।

—बियर भी तुम मझोली बोतल क्यों नहीं लेती !

—नहीं। बस, छोटी बोतल ठीक है।

हम कई टेबुलों के बीच-से होते हुए ऊँची जालीदार रेलिंग के एकदम पास वाले टेबुल पर आकर बैठ गये। वहाँ से यूराकच्यो स्टेशन की काली छतें, थोड़ी-थोड़ी देर पर यामानोते लाइन पर आती-जाती हरी नीली ट्रेनें, निचिगेकि की दीवार पर लगी नाचती हुई लड़की का लाल नियॉन साइन, गिंज़ा की एक तरफ लाल और दूसरी तरफ सफेद रेंगती हुई बत्तियों से भरी चौड़ी सड़क, ऊन का बड़ा गोला, वाको का रोशन घंटाघर, कावुकिज़ा के चौरास्ते तक—

सचमुच उसे बियर पसंद नहीं थी। वह कई कौर खाने के बाद बियर का एक छोटा-सा घूँट भरती थी। वह शायद खाने में भी मेरी वजह से संकोच कर रही थी क्योंकि वह कटलेट का टुकड़ा उठा कर मुँह तक ले जाने की बजाय बायें हाथ से अपने बालों को पकड़ कर अपना सिर प्लेट तक झुकाती थी।

तभी हमें पशोपेश से उबार लिया भड़कीली बिकिनी पहने एक लड़की ने, जो सारी टेबुलों की भीड़ के बीच में रखे ऊँचे डायस पर चढ़ कर, लाउडस्पीकर पर आ रही जाज़ धुन के साथ नाचने लगी थी।

वह उसे गौर से देखने लगी। कुछ देर बाद जब मैंने उसकी ओर फिर देखा तब भी वह डायस पर नाच रही गो-गो नर्तकी को एकटक देख रही थी। मेरे बियर का मग उठाने से शायद उसका ध्यान टूटा होगा, उसने निगाह नीची कर ली।

—क्या तुम्हें वह अच्छा लगा?—मैंने नाचने वाली लड़की की ओर ठोढ़ी से इशारा करते हुए पूछा।

—उसे देखते हुए मुझे बराबर एक ही बात का ध्यान आता रहा,—वह मुस्कराते हुए बोली—जैसे कि वह अपने सीने से कैमरा लिये सैकड़ों कौओं को हाथ के झटकों से डरा कर भगाने और पेट तथा गिरगिट के आकार की जाँघों से एक अदृश्य भीड़ को पीछे ठेलने की कोशिश कर रही है। अगर मुझे फ़ोटो उतारना आता होता तो मैं उसके नाचने के फ़ोटो ज़रूर लेती।

उसकी लिपस्टिक पर कटलेट का तेल लग गया था और उसके होंठ चमक रहे थे।

—मेरा पेट बिलकुल भर गया।—उसने अचानक कुर्सी की पीठ से लगते हुए कहा।

—क्या तुम तोक्यो शहर के अंदर रहती हो?

—नहीं। चिबा में।

लिफ़्ट से नीचे उतर कर हम सड़क पर आये तो वह बोली—अभी समय है। हम कुछ देर घूमें क्या ?

दो चौड़ी सड़कों के पार हिबिया पार्क था। पार्क में घुसते ही सामने एक गोल तालाब था लेकिन तालाब के बीच में लगा फ़ौआरा बंद हो गया था और उसके गिर्द वे कबूतर और नौजवान लड़के-लड़कियाँ भी नहीं थे जिनकी भीड़ दिन के समय वहाँ हमेशा रहती थी। सामने चीड़ के पेड़ों की कतार के बीच एक गुमटी में रोशनी जल रही थी, जिस पर जूस और पोटेटोचिप्स जैसी चीजें बिकती थीं।

—क्या तुम अकसर यहाँ आते हो?—उसने पूछा। वह मेरे बगल में चल रही थी और उसने अपना एक हाथ मेरी बाँह में डाल रखा था।

—हाँ। मैं अकेला हूँ और इसी शहर में रहता हूँ।

—मुझे तोक्यो के बारे में अधिक नहीं मालूम।

हम कच्ची पगडंडियों से होकर उस ताल की ओर जा रहे थे जिसके बीच में पंख फैलाये सारस की ताँबे की मूर्ति थी और जिस पर फ़ौआरे के छींटे पड़ते रहते थे।

उसने अपनी बाँह में मेरी बाँह कस ली थी। शायद वह उस अँधेरे रास्ते के कारण डर रही थी और वह मुझ से इतना चिपट कर चल रही थी कि लगता था कि मैं चलते हुए उसे आगे की ओर खींच रहा हूँ।

उसने चलते-चलते रुक कर मेरे सामने आते हुए धीरे से पूछा—तुम बुरा तो नहीं मानोगे ?

—नहीं तो !

वह इतनी छोटी-सी थी कि मेरे होंठों के सामने उसका माथा आता था और उसकी देह इतनी थोड़ी-सी थी कि वह किसी भी उम्र से परे हाईस्कूल की किसी क्लास की लड़की लगती थी।

—तुम कुछ सोच रहे हो।

—गो-गो नाचने वाली लड़की के बारे में तुम्हारी कही हुई बात।

फ़ुजि की बेल का टेढ़ा-मेढ़ा मोटा तना, अजगर की तरह छाजन के ऊपर पड़ा था और सीढ़ियों के बाद जहाँ से पक्का रास्ता था, केयाकि के ऊँचे पेड़ों की कतार दिखाई देती थी और उनके पीछे हिबिया पब्लिक लाइब्रेरी की रोशन खिड़कियाँ।

—वह मैंने उस नाचने वाली लड़की के लिये नहीं, अपने लिए कहा था।

—अपने लिये ? —मैंने हल्का सा आश्चर्य प्रगट किया क्योंकि ...

किसी और सुबह

कुछ भी मालूम न था और चूँकि उसने खुद बताया नहीं इसलिये पू
ठीक न लगा।

पार्क के बाहर चौड़ी सड़क के दूसरी ओर पारिवारिक न्यायालय, प
वहन मन्त्रालय तथा दूसरे सरकारी विभागों की इमारतें थीं।
कुछ आगे तोरानोमोन सबवे स्टेशन का साइनबोर्ड दिखाई दे रहा था।

—हम फिर मिल सकेंगे क्या ? —उसने पूछा।

—तुम शिजुकू में फ़ूगेत्सुदो नाम की दूकान जानती हो ?

—मैं पता कर लूँगी।

—तो अगले शनिवार को वहाँ मिलें, शाम को चार बजे।

सबवे की सीढ़ियों के पास आकर उसने मेरी बाँह से अपनी बाँह अलग
कर ली। वह सतुष्ट और सुखी दिखती थी।

शिनबाशि स्टेशन की ओर पैदल जाते हुए मैंने अपने आप से पूछा—वह
भला क्या चाहती है। क्या अपना पति बनाने के लिये उसे एक मर्द की तलाश
है ? या चार दीवारों के ऊपर एक छाजन के नीचे का ठिकाना—घर। सचमुच,
उसके बारे में मैं कुछ भी तो नहीं जानता—जैसे कि वह मेरे बारे में कुछ भी
नहीं जानती। अदृश्य भीड़ को अपने पेट और गिरगिट जैसी जाँघों से पीछे
धकेलने की कोशिश कर रही एक औरत—उसने अपने लिये कहा था......

वह रात की आखिरी ट्रेन थी।

ट्रेन के पहियों पर ब्रेक की ऊँची आवाज़ के साथ ट्रेन के रुकने पर दरवाज़े
खुले और पैरों की अस्तव्यस्त आवाज़ें प्लेटफ़ार्म पर उतर कर चलने लगीं।

स्टेशन के बाहर हज्जाम और दवाखाने की दुकानें कभी की बंद हो चुकी थीं।
फ़ सिगरेट की आटोमेटिक मशीन में रोशनी जल रही थी।

मुसाफ़िर मातम करने वालों की तरह चुपचाप लगभग एक कतार में विकेट
बाहर निकल रहे थे।

बाज़ार के आर्केड के नीचे घुप अँधेरा था। वहाँ आकर जूतों की आवाज़ अचा-
नक तीखी हो गयी थी।

बाहर निकल कर वे अलग-अलग रास्तों पर जाने लगे तो जूतों की आवाज़
और कम होती गयी।

सड़क के दोनों ओर के घरों और दुकानों के दरवाज़े बंद थे और अँधेरे
में एक मोटर या टैक्सी गुज़रती थी तो वे ट्रेन के डिब्बों की तरह
लगते थे। अँधेरे में वह सँकरी सड़क खामोश कतारें लगती थी और उनके
निकलते लगे दरवाज़े।

सिगनल वाली पँचमुहानी पर आकर दो व्यक्ति दाहिनी ओर मुड़ गये और लड़की सीधे चलती गयी। पीछे तीन-चार व्यक्ति आपस में जोर-जोर से बातें करते आ रहे थे।

वहीं पर एक सफ़ेद कुत्ता रहता था जो मेरा पीछा किया करता था। पर वह एक कुत्ते के लिए भी देर रात का वक्त था।

पेड़ों के पीले पत्ते झरने लगे थे और रात को हवा ठंड की गंध से भारी हो जाती थी।

मोड़ पर की फूल वाले की दूकान बंद थी लेकिन उसकी कांच की खिड़की पर अंदर की गर्मी बूँदों में इकट्ठी हो आयी थी और उसके पीछे रखे पीले, नहरूनी, नीले रंग के फूलों वाले छोटे गमले, जो कब्रों पर चढ़ाये जाते हैं, रंगों के हल्के धब्बों जैसे, एक चेहरे की तरह लग रहे थे।

दरवाजे पर पहुँचते-न-पहुँचते वह बिल्ली भाग कर पास आ गयी। वह दोपहर से भूखी थी।

शनिवार को वह वहाँ मुझसे पहले पहुँच गयी थी और इन्तजार कर रही थी। उसी समय मैंने दो मित्रों को भी वहीं मिलने का समय दिया था।

डेढ़ घंटे तक मैं उनका इंतज़ार करता रहा लेकिन वे नहीं आये तो हम बाहर निकल आये।

—तुमने अभी शिजुकू ठीक से न देखा होगा। —मैंने उससे पूछा।

—उस दिन मैं पहली बार तोक्यो आयी थी।—उसने कहा।

कोमा स्टेडियम के बगल के पार्क के भीतर एक दढ़ियल बूढ़ा जमीन पर अधलेटा हो सफ़ेद बड़ी बोतल मुँह से लगा कर पी रहा था और पार्क की नाटी दीवार के पास खड़े कई लोग उसे देखते हुए निर्लज्जता से हँस रहे थे। उनसे कुछ परे फूलों की क्यारी के मोड़ पर उभरी हड्डियों के गालों वाली एक अधेड़ औरत काला चश्मा लगाये अकेली बैठी थी। पार्क के सामने मिलानो सिनेमाहॉल के बाहर एक लड़की का कई मीटर ऊँचा बुडकट लगा था। वह अपनी दाहिनी हथेली सिर के पीछे लगाये और बायें हाथ की कुहनी आगे की ओर उठाये थी। अपने पूरे नंगे बदन पर वह सिर्फ़ तीन जगहों पर काली चिप्पियाँ पहने थी। उसके नीचे खड़े तीन पुरुष उसे एकटक देख रहे थे।

मैंने पलट कर देखा, वह कुछ कदम पीछे चली आ रही थी।

—क्या तुम सिनेमा देखना चाहोगी ?

—तुम मुझे कहीं भी ले चलो ठीक है। —वह बोली फिर सोचने लगी —क्या हम फिर उस पार्क में नहीं चल सकते जहाँ हम पहली बार गये थे ?

—वह यहाँ से काफी दूर पर है। अगर तुम किसी एकान्त जगह में घूमना चाहती हो तो पास में एक पार्क है। हम वहाँ जा सकते हैं।

लेकिन जब हम वहाँ से पैदल टहलते हुए गिल्डफ़र्ड स्ट्रीट पहुँचे, उसका लोहे का जँगलेदार फाटक बंद हो चुका था। मैं उससे माफ़ी माँगने लगा। मुझे ध्यान नहीं रहा था कि वह छः बजे ही बंद हो जाता है।

—तुम्हारा घर शहर में ही है क्या ? —उसने पूछा।

—शहर में नहीं। च्यूब लाइन से चालीस मिनट के फ़ासले पर।—मैंने उसे बताया—बहुत दूर तो नहीं लेकिन तुम्हारे रास्ते से उल्टी ओर है।

—मैं घर रात बारह-एक बजे भी लौटूँ तो परवाह नहीं।

ट्रेन पर शाम की भीड़ की वजह से हमें बैठने की जगह नहीं मिली और उसका कंधा मेरी बाँह से लगा हुआ था लेकिन सारे रास्ते भर हम चुप रहे।

एक स्टेशन पर जहाँ हमें उतर कर गाड़ी बदलनी थी उसने धीरे से कहा—इधर भी मैं पहली बार आयी हूँ।

शायद लंबी चुप्पी को तोड़ने की ग़रज़ से उसने यह कहा था।

स्टेशन के बाहर निकल कर मैंने उससे कहा कि घर में खाने का सामान नहीं है इसलिये मैं रास्ते में ख़रीददारी करूँगा।

आर्केड के नीचे से हरी सब्ज़ियाँ, फल और पैकेटबंद रोशन कागज़ की तीन-चार थैलियों में लेकर आगे बढ़ा तो उसने उनमें से दो थैलियाँ अपने हाथ में ले लीं।

—यहाँ पत्थर की कई दूकानें हैं। —वह सड़क पर आकर बोली।

—हाँ। पास में एक बड़ा कब्रिस्तान है।

—तभी तो यह जगह इतनी शान्त है !

तभी मुझे उसके लिये सिगरेट न ख़रीदने की याद आयी।

—तुम यहीं रुकी रहो, मैं तुम्हारे लिये सिगरेट ख़रीद कर लाता हूँ।

—नहीं-नहीं। मैं नहीं पीती।—उसने मेरा हाथ पकड़ कर रोकते हुए कहा।

मैंने उस दिन बियर गार्डन में उसे सिगरेट दिया था तो उसने लेकर पिया था पर मैंने उससे यह कहा नहीं।

लंबे रास्ते से मोमिजि के अकेले पेड़ वाली तिमुहानी से हम पतली कच्ची गली में मुड़े तो उसने एक बार इधर-उधर के पेड़ों और घरों पर नज़र डालते हुए कहा— कितनी शान्त जगह है !

—यही मेरा घर है।—मैंने दरवाजा खोलते हुए उससे कहा। वह मेरे पीछे कुछ दूर पर खड़ी हो गयी थी।

कमरे में बीच की चौकी पर दोपहर को खाये रामेन का जूठा प्याला पड़ा था। उसे रसोईघर के बेसिन में डाल कर बगल के कमरे से गद्दी उठा कर बाहर वाले कमरे में तातामि पर डालता हुआ बोला—बहुत गंदा है घर!

वह खुले हुए दरवाजे की चौखट के भीतर आकर खड़ी हो गयी थी।

कमरे में बिखरे हुए अखबार और उतारे हुए कपड़े एक साथ समेट कर अंदर वाले कमरे में फेंकते हुए मैंने उससे कहा—अंदर आ जाओ।

उसने अंदर आ कर अगल-बगल की दीवारों को देखते हुए कहा—तुम अकेले हो क्या?

—हाँ।

वह एक बार सिर झुका कर कमरे के अंदर चली आयी। बैठ जाने के बाद भी वह आँख चुरा कर कमरे और तातामि को देख लेती थी।

—जरा रुको, मैं तुम्हारे लिये कुछ ले आता हूँ।

—ठीक है, रहने दो।—वह मुझे उठते हुए देख कर बोली।

—मैं अभी आता हूँ।

वह भी उठ कर खड़ी हो गयी और बोली—तो मैं मदद करूँगी।

—नहीं, तुम बैठो। रसोईघर इतना गंदा है कि—कहते हुए मैं कमरे से बाहर निकल आया।

—यह तुम्हारी बिल्ली है क्या?—कुछ देर बाद उसने वहाँ से पूछा।

—थी नहीं, बन गयी।—मैंने रसोईघर से जवाब दिया—महीने-डेढ़ महीने पहले की बात है। एक दिन सुबह जल्दी सो कर उठा तो दूर पर बिल्ली के रोने की आवाज सुनायी दी। रोने की आवाज के सहारे ढूँढ़ता हुआ बाहर वाली पक्की सड़क पर पहुँचा तो देखा कि कूड़े के ढेर के बगल में दफ़्ती के बक्स में बंद यह रो रही थी। न जाने कौन फेंक गया होगा। तब इसकी आँख भी नहीं खुली थी।

रसोईघर से सुनाई दिया कि बिल्ली तातामि को अपने पंजों से खसोट रही थी। वे दोनों शायद आपस में खेल रही थीं।

—प्यारी बिल्ली है! इसे घर में बंद करके बाहर जाते हो क्या?

—नहीं। इस घर में जानवर पालना मना है। निकलते समय इसे बाहर डाल देता हूँ। लौटता हूँ तो यह कहीं भी हो, आहट सुन कर आ जाती है। रात को भी बाहर कर देता हूँ।

उसकी बातचीत से तनाव दूर हो गया था। शायद उस बिल्ली के कारण।

—अभी खाने को कुछ नहीं है। —मैंने उसके सामने चाय रखते हुए कहा—बाद मे बनाऊँगा।

—ठीक है। —वह हँस कर सिर झुकाते हुए बोली। बिल्ली का बच्चा उसकी गोद मे बैठा था।

—इसके अलावा, हमने अभी तक एक दूसरे को अपना परिचय भी नही दिया है। —मैंने कहा और हम दोनों हँसने लगे।

उसने वैसे ही हँसते हुए अपना नाम बताया।

फिर वह शीशे की बंद खिड़की की ओर सिर घुमा कर बाहर पेड़ों की सुरमई कतार के ऊपर आसमान मे थोडी-सी बच रही रोशनी को देखने लगी।

—मुझे शाम की वह रोशनी अच्छी लगती है। —वह बोली।

मैंने खड़े होकर लैंप शेड मे से तेज रोशनी बुझा दी तो उसमे मोमबत्ती जैसी हल्की रोशनी जलती रह गयी।

तभी बिल्ली उसकी गोद से उछल कर बाहर निकल गयी।

—इसे शायद मालूम हो गया कि बाहर टाले जाने का समय हो गया है। —उसने धीरे-से हँसते हुए कहा।

—नहीं, अभी नहीं।

—पहले मेरा खयाल था कि तुम अकेले नही होगे। लेकिन आज जब तुम मुझे अपने साथ अपने घर ला रहे थे तब मुझे लगा कि तुम अकेले होगे।

—शायद आश्चर्य हुआ होगा तुम्हे!

—नही तो।

वह आगे कुछ कहने जा रही थी लेकिन मैंने उसकी बात काटते हुए पूछा—देखो, क्या मैं शराब पी सकता हूँ? अगर तुम चाहो तो तुम भी पी सकती हो।

—मैं शराब नही पीती। अगर ओसाके हो तो—लेकिन वह भी थोडी—बहुत थोड़ी-सी!

—ओसाके शायद है। देखूँ। अगर हुई तो गर्म करके लाता हूँ।

—मुझे भी तो कुछ करने दो। —वह मेरे पीछे-पीछे रसोईघर मे आते हुए बोली।

मैंने ताक पर रखी बोतलो मे से ओसाके की बोतल और देवदार की चौकोर डिबियाँ निकाल कर उसे दे दीं।

उसने काँच का एक गिलास धोकर उसमें ओसाके भरी और गिलास आग पर चढ़े पानी भरे बर्तन में रख दिया।

—मेरे घर में खाने की चीजें ऊलजलूल हैं।

—खाना तो मुझे रोज मिल जाता है। अगर एक दिन न खाऊँ तो भी कोई हरज नहीं।—उसने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

पानी खौलने लगा तो उसने आग धीमी कर दी और ओसाके का गिलास और काठ की दो प्यालियाँ उठा कर कमरे में ले आयी।

—कितने बरसों बाद मैं मासु में ओसाके पी रही हूँ!—उसने काठ की डिबिया उठा कर होंठ से लगाते हुए कहा।

बिल्ली कमरे के एक कोने में चारों पंजों को अपने नीचे दबाए बैठी थी।

वह उसे एक बार देख कर बोली—अगर तुम बुरा न मानो तो मैं झट से खाना तैयार कर लूँ।

सुनायी दिया जब रसोईघर में उसने खट से गैसरेंज का दूसरा चूल्हा जलाया।

काफ़ी देर हो गयी, वह रसोईघर में खट-खुट कर रही थी। टेबुल के दूसरी ओर उसका मासु रखा था जो तीन चौथाई भरा था।

उठ कर वहाँ गया तो वह बेसिन के आगे झुकी हुई नल की धार के नीचे जूठे बर्तन धो रही थी।

—ओह, उसे रहने दो, मैं कल धो लूँगा। —उसके पास जाकर मैं बोला—तुम्हारी ओसाके एकदम ठंडी हो जाएगी।

—बस, बन गया है। —उसने कहा। पानी की धार के नीचे उसके हाथों पर पड़ी बारीक झुर्रियाँ दिखायी दे रही थीं। —बहुत-सी ओसाके भी मुझसे नहीं पी जाती।

वह चीनी मिट्टी के दो कटोरों में सोबा ले कर आयी और उसे टेबुल पर रख कर पीछे की खिड़की खोली और बिल्ली को वहाँ बुलाने लगी। उसने चावल के देग में पिछले दिनों के चिपके दाने और मांस के टुकड़े पानी में उबाल कर बिल्ली के लिये खाना तैयार किया था।

खिड़की के नीचे बिल्ली के लिये खाना रखकर खिड़की बंद करते हुए वह बोली—पुरुष अकेला होने पर शराब क्यों पीता है, औरत अकेली होने पर शराब क्यों नहीं पीती।

—अकेले या दुकेले होने से कोई फ़र्क नहीं पड़ता। बहुत-से स्त्री और पुरुष दुकेले होने पर भी शराब पीना चाहते हैं।

रात के दस से अधिक का समय हो गया था लेकिन वह इतमीनान से बैठी थी।

—समय, अभी ठीक है क्या। —मैंने उसे याद दिलायी।

—हाँ। वह सुबह सात-आठ बजे घर लौटता है। तब तक ठीक है।

—वह क्या काम करते हैं?

—टैक्सी ड्राइवर हैं।

—ओह, तभी।

—मैं यहाँ की नहीं हूँ। मेरा घर तोओहोकु में है। तोक्यो आये आज आठवाँ दिन है।

—और तुम्हारे पति सच में यहाँ हैं।

—पति? ओह, वह ड्राइवर! —वह जोर से हँस पड़ी—वह मेरा पति थोड़े ही है। मैं उसके साथ रह रही हूँ।

—तो तुम भी अकेली हो, मेरी तरह।

—मैं खुद भी नहीं जानती कि मुझे अपने आप को [illegible] कहना चाहिये या घरवाली।

—मेरा मतलब, तुमने शादी की या नहीं।

—वही तो! मेरी शादी भी हुई था और [illegible] बच्चा भी। हम पति-पत्नी सिर्फ एक हफ्ते साथ रहे फिर वह घर छोड़ [illegible] गया। उसे मैं अच्छी न लगी हूँगी। दसवें महीने बच्ची पैदा हुई। [illegible] माह की थी, वह उठा ले गया। पत्नी और माँ होते हुए भी [illegible] न माँ हूँ न पत्नी।

अचानक मेरी आँखों के सामने एक [illegible] चेहरा कौंध गया।

—एक तरह से अच्छा ही हुआ। —[illegible] मैं फिर वहीं वापस पहुँच गयी जहाँ से मैंने शुरू किया था। पर बार-बार वहीं से शुरू करना अच्छा नहीं लगता।

—अपनी बच्ची को तुमने [illegible]?

—नहीं। मुझे उसका [illegible] याद नहीं पर मैं अक्सर सोचती हूँ कि अब वह दूसरे साल [illegible]। [illegible] कैसा लगता होगा वह! वहाँ [illegible] मुझे सफेद आँख से देखते थे और [illegible] थे इसलिये वहाँ से [illegible] आयी। सोचा, तोक्यो में [illegible] काम मिल जाता है। तोक्यो में [illegible] स्टेशन के बाहर निकली [illegible] आदमी आकर मुझसे [illegible] लगा। उसने कहा कि वह मुझे काम [illegible]। मैं उसके साथ [illegible]

वह आँसु [illegible] मुँह [illegible] लेकिन वह [illegible]

उसमें भरने के लिये ओसाके का गिलास उठाया तो उसने मना कर दिया।

—मैं अपने आप भर लूंगी।—वह एक के बाद दूसरी डिबिया में ओसाके डालने के बाद बोली—सच तो यह है कि कोशिश करके बचा रखने लायक मेरे पास कुछ न था। जो काम वह मुझसे करा रहा था वह तो मैं खुद भी कर सकती थी, अकेली, बिना उसकी मदद के। इतना तो मैं जानती हूँ। वह मेरे पास शहर की बस के किराये भर रकम भी नहीं छोड़ता था। शायद उसे मेरे भाग निकलने का डर था। मूर्ख था वह! उसे सोचना चाहिये था कि मैं वापस भाग जाने के लिये नहीं आयी थी, भाग कर आयी थी। उसने यह भी नहीं सोचा कि सिर्फ़ चंद दिनों पहले तक मैं एक पारिवारिक औरत थी। न जाने क्यों वह सोच बैठा कि मैं वह काम बरसों से करती आ रही हूँ। सच कहूँ, मुझे वह धंधा उतना बुरा नहीं लगता था जितनी कि उस आदमी द्वारा थोपी गयी व्यस्तता। चार दिन हुए पास की एक दूकान के ओजीईई सान् से यह कह कर कि टैक्सी वाले के पास पाँच हज़ार यन की रेजकारी नहीं है, किराये के नाम पर तीन हज़ार यन उधार लिये और वहाँ से भाग आयी। इकेबुकुरो में चाय की एक दूकान में दोपहर से लेकर रात होने तक बैठी रही। पकड़ी जाने के डर से नहीं—मैं यह नहीं जानती थी कि मैं अब कहाँ जाऊँ। दूकान बंद होने जा रही थी इसलिये वहाँ से निकल कर एक सड़क के किनारे-किनारे चलने लगी। एकचौरास्ते पर सिगनल बदलने का इंतजार करता हुआ एक पुरुष खड़ा था। पहनावे से वह छात्र नहीं, किसी ऑफ़िस में काम करने वाला लगता था। मैं उसके बगल में जाकर खड़ी हो गयी। रोशनी हरी होने पर हमने साथ-साथ चलते हुए सड़क पार की लेकिन उसने मेरी ओर एक बार भी नहीं देखा और एक ओर मुड़कर चला गया। रात भर मैं सड़क के किनारे-किनारे न जाने कहाँ तक चलती गयी। तड़का होने लगा तो सड़क पर आने-जाने वाली कारों की संख्या अचानक कम हो गयी। रात भर चलने के कारण हो या तड़के की नीली रोशनी के कारण, सड़क के किनारे जल रहे मर्क़री लैंपों की कतार बड़ी विचित्र लग रही थी—मुझे लगा कि मैं सो रही हूँ और सड़क किनारे की रोशनियों को सपने में देख रही हूँ। —नहीं। इससे अधिक ओसाके मैं नहीं पियूँगी।—अचानक उसने जैसे कि अपने आप कहा—मैं होश एक मिनट के लिये भी नहीं खोना चाहती। पीछे से आ रही एक कार धीमी हुई और हार्न बजा। मैंने घूम कर देखा, एक टैक्सी थी। मैंने झट से फैसला किया और टैक्सी की ओर बढ़ गयी। ठहरने के लिये कोई सस्ता होटल हो तो; मैंने ड्राइवर से कहा। सस्ती जगह, कह कर वह सोचने लगा। फिर उसने पूछा—अकेली हो क्या? हाँ।

—वह द. तातानि के एक कमरे में रहता था। एक ओर, खिड़की के आगे, बेसिन और छोटे-से चबूतरे पर गैस का चूल्हा था। मैं बहुत थकी हुई थी और नींद के मारे मेरी पलकें अपने आप बंद हुई जा रही थीं। उसने अलमारी का पल्ला खिसकाकर अंदर से मेरे लिये गद्दे-रजाई निकाल दिये। बीच में एक बार मेरी नींद खुली तो देखा कि मेरे बिस्तर के बगल में सिर्फ एक गद्दा था। वह सो रहा था और उसकी नाक बोल रही थी। मेरा डरना फिजूल था। जिस वक्त आदमी काम से थक कर चूर होता है उस वक्त उसे खाने और सोने के अलावा शरीर की और कोई भूख नहीं होती।

—वह कितने साल का होगा?—मैंने पूछा।

—ठीक पता नहीं। पैंतीस-छत्तीस साल का लगता है।

—तुमने उससे यह नहीं पूछा कि उसके परिवार है या नहीं।

वह हँसने लगी—यह तो मैंने तुमसे भी नहीं पूछा था। यह मैं किसी से नहीं पूछती क्योंकि यह दखल देने वाला सवाल है। अगर कोई मुझसे ही यह सवाल कर बैठे तो बताओ, क्या उत्तर मैं दे सकूँगी।

—कम-से-कम अपनी लड़की तो भविष्य में शायद मुझे मिल जाए या तुम उसे देख सको।

—पता नहीं। वह अब बोर्डिंग [illegible] में शामिल हो गयी है। मुझसे एक बात कहूँ।—वह बिलकुल भी उदास नहीं थी, बल्कि उसकी आवाज में [illegible] था—मैं अपने बच्चों के बारे में सोचना शुरू करती हूँ तो उनकी बजाय [illegible] सोचने लगती हूँ। वह मेरे पेट से पैदा हुई थी और फिर वह मेरे पास नहीं रह गयी तो मैं बच्चे पैदा करने वाले जानवर जैसी ही तो हूँ—[illegible] पालतू जानवर पैदा करने वाली। मुझे यह बात [illegible] लगती है।

उसने मुझे एक और लड़की की याद दिला दी।

—क्या तुम उदास हो गये?

—नहीं तो।

—तुम कुछ और बात सोच रहे हो।

—खास कुछ नहीं।

उसने फिर नहीं पूछा।

कार [illegible] के अँधेरे में।

फिर [illegible]

[illegible]

पानी की लगातार बूँदे गिरा रहा था, अचानक उड़ गया हो, बौछार एकाएक थम गयी थी।

अँधेरे में एक हथेली ने टटोल कर मेरा हाथ छुआ फिर वह उसी तरह धीरे-धीरे फिसलती हुई मेरी हथेली की ओर खिसकी और मेरी हथेली अपनी ओर खींच ले गयी।

मैं बहुत पहले की उस रात को देखने लगा।

रात के पता नहीं कितने बज गये थे। छत से लटक रही हल्की मोमबत्ती जैसी रोशनी के नीचे दो खाली मग्गु, ओराके का एक खाली गिलास, सिगरेट के बुझे हुए टुकड़ों से भरा शीशे का ऐश ट्रे, वह और मैं—खामोश थे।

—सुनो, क्या मैं तुम्हें छू सकता हूँ? —अचानक मैंने उससे पूछा।

वह खिलखिला कर हँस पड़ी और खिसक कर मेरे पास आ गयी।

मैंने उसकी दोनों हथेलियाँ अपनी हथेलियों के बीच दबा लीं। उसकी उँगलियाँ बारीक और मुलायम थीं और हथेली के ऊपर की चमड़ी जगह-जगह फट गयी थी।

—सर्दी आने के पहले से ही मेरी चमड़ी फटने लगती है। —वह बोली। वह हँस नहीं रही थी। वह उदास भी नहीं थी। मैं जानता हूँ, वह मन में डर भी नहीं रही थी। वह मुझमें कुछ भी नहीं खोज रही थी। न एक पति, न एक परिवार, न एक घर। सचमुच अगर वह कुछ खोज रही थी तो शायद हाँ, एक मनुष्य।

जैसे कि मैं उस वक्त तलाश रहा था एक मनुष्य, जो तब भी मेरा एक हिस्सा था।

मैंने उससे कहा कि मैं उसके लिये बिस्तर निकाल देता हूँ। कुछ देर बाद उस कमरे में लौटा तो देखा कि वह चौकी दीवार के किनारे रख कर कमरे के बीच में अपने लिये बिस्तर लगा रही थी।

—सुनो,—मैंने उसके पास जाकर उसकी एक हथेली में हजार यन के तह किये हुए नोट रख कर मुट्ठी बंद करते हुए कहा—यह अपने पास रख लो।

—वह क्या है।

—कागज।

उसने अपनी मुट्ठी खोल कर देखा—नहीं-नहीं, मुझे धन नहीं चाहिए।

—रख लो।—मैंने दोनों कमरों के बीच के दरवाजे पर खड़े होकर कहा—मुझे अभी कुछ काम करना है।

वह मेरे एकदम पास आकर खड़ी हो गयी और मेरा चेहरा देखने लगी।

और जापानी से शादी की है और फिर यह भी सुना कि वह अपने पति के साथ कहीं विदेश चली गयी है।

दोपहर को पुराने अलबमों में देखने पर आश्चर्य नहीं हुआ कि उसका एक भी फ़ोटोग्राफ़ उनमें नहीं था। पुराने कागज़ों में एक पीला पड़ गया पत्र ज़रूर मिला जो मैंने उसके लिये लिखा था लेकिन शायद भेजा नहीं था। उसने पहले भी मुझे कभी पत्र न लिखा था। शायद इसीलिये मैंने अपना पत्र न भेजा होगा।

जो भी ग्रहण नहीं किया गया, वह सब खो जाएगा। विशाल चट्टान भी जो पकड़ती नहीं, सिर्फ़ ख़ामोशी पीती रहती है, रेत में धँसती जाती है और एक समय उसके ऊपर नीला आसमान रह जाता है।

क्या तुमने कभी रेशमी कीड़े को अपने काम में व्यस्त देखा है? उसी तरह हमारे लिये इतिहास, सभ्यता और संस्कृति का निर्माण है। उसके सर्वोत्कृष्ट को ग्रहण करना और मनुष्य के सारे अनुभवों में से निकृष्ट को, जो मुझमें है, अलग रखना। बौद्धिक स्वच्छता बौद्धिक स्वच्छता के लिये ज़रूरी है।

पर हम इतनी आसान-सी बात भी नहीं समझ पाते—जैसे कि रात को अचानक नींद खुल जाने पर जब यह नहीं समझ पाते कि हमारे पैर किधर हैं, तो आश्चर्य करते रह जाते हैं!

नहीं। मुझे ज़रा भी अफ़सोस नहीं है कि मैंने पकड़ने के लिये तुम्हारी ओर हाथ क्यों नहीं फेंका। कभी-कभी इंस्टिक्ट ही अंतिम और सबसे भरोसे लायक गाइड होती है।

—तुम कहाँ जा रही हो! बाहर?

—हाँ। टायलेट।

अतीत और आगत के बीच एक आक्टोपस, जिसकी बहुतेरी बाहें छोरों पर से सड़ रही हैं। वह वर्तमान नहीं है।

यह कितनी मूर्खतापूर्ण नियति है कि हम सूरज की भाँति एक बूंद के अंदर कैद हो जाते हैं!

—भेड़िया!—तुमने क्रोध से उफनते हुए कहा था।

मुझे अपने चेहरे के बारे में कभी सन्देह नहीं था। वह विकृत मुखौटा तुमने ताकामात्सु स्टेशन के बाहर की एक दूकान से ख़रीद कर मुझे उपहार दिया था।

मैं तुम्हारी नहीं कह रहा—मैं हारूँगा तो क्या अपनी कमज़ोर अनैतिकता से?

या मैं अपने साथ जोड़ूँगा अपने आपको, अंत में।

या उन जंगली जंतुओं के साथ, जो मेरे अंदर हैं।

या चमकते हुए उन तारों के साथ, जो दिन के भरे उजाले में मेरा इंतज़ार कर रहे हैं।

हम एक दूसरे को बहुत अधिक प्यार करने के कारण एक दूसरे से घृणा करने लगे थे—सफ़ेद ऊन के ढेर पर टप-टप गिरती चिनगारियों-सी घृणा!

पिछले कई दिनों से मैं सुबह ही घर से निकल जाता था और शाम होने के बाद वापस लौटता था। मुझे पक्का विश्वास हो गया था कि उसका पत्र उसी समय आयेगा जब मैं घर में नहीं हूँगा। वह पत्र रवाना किये एक महीने से अधिक हो चुके थे।

दोपहर से तेज़ आँधी और वर्षा। झूमते हुए ऊँचे-ऊँचे चीड़ के दरख़्त और भीगती हुई काईदार कब्रें। संगमूसा के चौके और अज्ञात या अर्ध विस्मृत नाम। वह चारदीवारी से घिरी एक रहस्य भरी दुनिया थी, जिसका मुझसे या बाहर की दुनिया से कोई संबंध न था।

सोलहवें वर्ष के आगे से गुज़रते हुए दिखायी दिया, उस पौधे की पत्तियाँ सुर्ख़ लाल हो गयी थीं। उसकी काँटेदार पत्तियाँ सर्दियों में काली पड़ जाती थीं लेकिन झरती नहीं थीं।

शाम होने के बाद भीगा हुआ घर लौटा तो दरवाज़े के सामने खड़ा हो कर सोचने लगा—जैसे कि वह दरवाज़ा मेरे घर का न हो और मैं यह निश्चय न कर पा रहा होऊँ कि उस वक़्त पराये घर के दरवाज़े पर दस्तक देनी चाहिये या नहीं।

सिर के ठीक ऊपर आकाश में मौन चेहरे वाला एक गिरगिट सिर झुका कर नीली-हरी आँखों से घूर रहा था।

मैं अपनी हथेलियाँ फैला कर उन्हें देखने लगा। मुझे लगा कि उँगलियों के छोरों पर नाख़ूनों की बजाय दाँत उगे हैं और पंजे हँस रहे हैं।

दूसरी बार वापस आया था तब आधी रात का वक़्त रहा होगा। वर्षा रुक गयी थी और मोमबत्ती की लौ आकाश में बुझ गयी थी।

डाक अगर आधी रात तक न आये तो इसका मतलब कि उस दिन नहीं आने को—मैंने मन में कहा—उसे मेरा पत्र अब तक जरूर मिल गया होगा और उसका पत्र कल जरूर आयेगा।

मैंने उसे नमस्कार नहीं किया क्योंकि मेरी जानकारी में वही एक ऐसा जापानी है जो किसी के भी नमस्कार का उत्तर नहीं देता।

उसने मुझसे बैठने के लिये नहीं कहा—किसी से नहीं कहता। हाथ का सिगरेट होंठों में खोंस कर उसने एक ड्रार खींच कर खोला और एक लिफ़ाफ़ा निकाल कर बगल वाले टेबुल पर ताश के पत्ते की तरह फेंक दिया।

—इस पत्र का उत्तर क्या अभी आपको दे दूँ?

—लिख कर दे दीजियेगा।—उसने अपने सामने के कागज़ से कहा।

पत्र टेबुल पर छोड़ कर इलस्ट्रेशन का लिफ़ाफ़ा उठाया और बाहर चला आया।

पिछली बार उसने किसी दूसरे के बनाये इलस्ट्रेशनों को सुधारने के लिये मुझसे कहा था। उसे न जाने क्यों जाँघे भारी-मोटी बनवाने की खब्त थी। मुझे क्या, अगर इलस्ट्रेशन मुझे बनाने हों तो उसके कहने से मैं पाँच साल की बच्ची की जाँघें भी हाथी के पैर जैसी बना दे सकता हूँ। मैंने उसे उत्तर दिया कि मैं किसी और के बनाए इलस्ट्रेशनों में सुधार नहीं कर सकता। उसने तब कुछ नहीं कहा था।

आय का यह अनिश्चित सिलसिला निश्चित रूप से खत्म हो गया और प्रकाशक की हिदायतों के अनुसार नंगे-अधनंगे स्केच बना कर पहुँचाने से मैं फ़िलहाल आज़ाद था।

अगर हफ़्ते के दो दिनों में वैसे तीस-चालीस स्केच बना कर शेष पाँच खाली दिन खरीदना हो तो स्केचों का कोई दूसरा खरीददार प्रकाशक मिल सकता है। मुझे यह कभी नहीं लगा था कि मैं कला को गलीज़ कर रहा हूँ। मैं सिर्फ अपने दो दिन बेच रहा था। अगर उसने किसी और के घटियापन को और अधिक घटिया बनाने की ज़बरदस्ती करने की कोशिश न की होती तो वह केवल मुझसे सम्बन्धित मामला होता।

× × ×

गाढ़ा लाल इनैमल पेन्ट, वैसा ही जैसा बड़े डिब्बों में बंद मैं खरीदता था, लंबी-ऊँची दीवार पर फैला था और उसके धब्बे धीरे-धीरे नीचे की ओर रेंग रहे थे...

मैं जाग गया, वह सपना देखने के कारण नहीं। सिर में तेज़ दर्द हो रहा था और लगता था कि कनपटियों पर दरारें पैदा हो जायेंगी और सिर बिना आवाज़ पैदा किये अचानक खुल जायेगा—दफ़्ती के पुराने बक्स में बहुत से पत्थर के टुकड़े जबरदस्ती भरने की कोशिश करने पर बक्स के फस्स से खुल जाने की तरह।

बगल वाले कमरे की खिड़की दिखायी नहीं देती थी लेकिन उसमें रोशनी भर गयी थी और कमरे में मैजेन्टा रंग का उजास था। मैंने देखा, सामने की दीवार पर कैलेन्डर और दो तस्वीरें, लाल रंग में धुँधली और मैली दिखायी देती थीं। तातामि पर बिखरे हुए कपड़े—ओह, मुझे याद आ गया, मैंने ही मैले कपड़ों के ढेर को लात मार कर बिखेर दिया था। और, सिरहाने की ओर पुराने अख़बारों के पन्ने तथा खारिज अधूरे स्केच बिखरे होंगे। मैं कमरा साफ़ कर रहा था। मैं मुस्कराने लगा।

लगा कि आसमान में बादल छाये होंगे। ज़रूर होंगे।

मैं कुछ देर और ऐसे ही बिस्तर में पड़ा रहूँगा, धूप निकल आने का इंतज़ार करूँगा। चारों ओर गहरी खामोशी थी, डरा हुआ सन्नाटा। पास-पड़ोस तक ज़रा भी खट-खुट नहीं। जैसे कि हर वस्तु कह रही हो, कोई परवाह नहीं।

अरे! —अचानक मुझे अपने दोनों पैरों की याद आयी और—नहीं, और कुछ नहीं।

मस्तिष्क का अपना धंधा। खतरनाक खेल है वह! उसे फैलाने की कोशिश करो तो दुलत्ती लगती है मुँह पर।

यू कैन टु हैव इट ऐंड ईट इट टू!—मैंने कहीं पढ़ा था—खाना, अपने आप को सबसे अद्‌भुत बना है, अगर ठीक से खा सको तब!

मैं धूप निकलने का इंतज़ार कर रहा था, कितनी देर से! अँधेरा बढ़ता गया, एकदम रात हो गयी। कहीं एक बिल्ली रो रही थी। वह बिल्ली नहीं। कोई और।

सुबह से डाक बक्स में पड़ा अख़बार भी तब तक नहीं निकाला था। दरवाज़े के बाहर एक बगल दूध की बोतल रखी थी।

दूध की बोतल उठा कर अख़बार खींच कर निकाला तो खाली लेटर बक्स के अंदर लिफ़ाफ़ा गिरने की भोथरी आवाज़ हुई।

× × ×

तुम्हारा लंबा पत्र कई पतों पर भटकने के बाद आज मुझे मिला। तुम्हारा पत्र पा कर मुझे बिलकुल आश्चर्य न हुआ क्योंकि मैं जानती थी कि तुम कभी-न-कभी मुझे ज़रूर लिखोगे।

सच कहूँ, मुझे लगता है कि शुरुआत कभी नहीं हो पाती। और अंत भी कभी नहीं होता।

मैं अपने बारे में बताना कहाँ से शुरू करूँ।

पेरू आए मुझे डेढ़ वर्ष हो गये। जब लीमा के हवाई अड्डे पर उतरी थी उस समय मेरे पर्स में सिर्फ़ बारह डालर थे। अपनी लड़की को——उसे हम बेटि कहते हैं——देखने उसके पिता के घर गयी तो बेटि ने मुझे देख कर भी नहीं पहचाना और अपने पिता से लग कर खड़ी हो गयी।

पेरू में रह सकने के लिये सबसे पहली समस्या आर्थिक थी——मुझे कोई भी काम तलाश करना था। शुरू के कुछ दिन टेलीविज़न और क्लबों में नाची लेकिन वह बंद कर देना पड़ा क्योंकि तरह-तरह के लोग मुझसे प्रेम प्रस्ताव करने लगे। उनकी नज़रों को मैं अठारह-बीस साल की लगती थी। उनकी बातें सुन कर मुझे हँसी आती थी। मैं उनसे कहना चाहती थी कि सेन्योर, मैं अपने हिस्से का सारा प्रेम कर चुकी हूँ और आपकी आँखें आपको धोखा दे रही हैं। उसके बाद कई जगह पढ़ाने का काम किया। अब एक कंपनी में जापानी से अंग्रेजी में अनुवाद करने का काम कर रही हूँ। एक महीने में तीस-पैंतीस हज़ार यन के बराबर कमा लेती हूँ लेकिन इतने में खाने का खर्च ही कठिनाई से निकल पाता है, किराये पर एक अलग कमरा नहीं ले पाती और साझे में रहती हूँ।

सुनो, इस समय घर वाले की पागल लड़की गिटार बजा रही है। पहले वह चीख-चीख कर गालियाँ बक रही थी। फिर उसके माँ-बाप और दो बहिनों ने मिल कर उसे पीटा तो वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। उसके बाद वह गिटार लेकर बैठ गयी। गिटार की आवाज़ बड़ी करुण है। मेरा मन उस धुन के साथ भटक-भटक जाता है। सोचती हूँ कि अगर कभी मैं उसकी तरह पागल हो गयी और मुझे पागलखाने में डाल दिया गया तो, तो डर से काँप जाती हूँ।

वास्तव में तो यह घर एक पागलखाना है, जिसमें रहने वाले आठ व्यक्ति, सभी पागल हैं। अठारह साल की सबसे छोटी लड़की इसा तो खैर, पागल है ही। परसों आधी रात तक, माता-पिता और बहिनों-भाइयों को गालियाँ देती, एक कमरे से दूसरे कमरे में पैर पटकती घूमती रही। पिता तब तक घर वापस नहीं आया था। पिछली रात पति-पत्नी में झगड़ा हुआ था। पत्नी मुझे बिस्तर

घर में उठा कर स्टोरहाउस में ले गयी और दिखाने लगी कि उसका पति कई दिनों से कुछ भी कमाकर नहीं ले आया है इसलिये घर में रात को खाना नहीं बना है। परसों रात उसका पति आया तो उसके साथ उसकी मोटी और भद्दी प्रेमिका थी। पति-पत्नी फिर लड़ने लगे। यों पत्नी को पति की प्रेमिका के रात को घर रह जाने पर कोई आपत्ति नहीं होती क्योंकि प्रेमिका घर साफ कर जाती है और, सामान हो तो, दोनों वक्त के लिये खाना पका कर रख जाती है।

अगली सुबह जब बाथरूम में हाथ-मुँह धोने गयी तो दरवाजे के अंदर हैंडिल पर एक गन्दी पैन्टी टँगी थी। मैंने इसा को पास बुला कर उससे कहा कि वह उसे उठा कर कहीं छिपा दे तो वह जोर से हँस पड़ी और बोली—मेरा पिता मनुष्य नहीं पशु है लेकिन उसमें पशुओं जितनी भी नैतिक चेतना नहीं है। फिर अगर मैं उसके सामने नंगी घूमती हूँ तो क्या बुरा है।

इस वक्त वह सबसे पीछे के मालगोदाम जैसे अँधेरे कमरे में बैठी गिटार बजा रही है। उसे नींद आयेगी तो वह वहीं सो जायेगी और कोई उसे उठा कर बिस्तर पर सुलाने नहीं जायेगा।

अभी मैं सोच रही थी कि एक दिन जब मैं यह घर छोड़ कर कहीं और चली जाऊँगी उसके बाद भी वह ज़िन्दा रहेगी और मेरे मरने के दिन तक मेरे अंदर बनी रहेगी। क्या हम सब एक दूसरे के लिये ऐसे ही बोझ होते हैं, जिन्हें चाहने पर भी मन से उतार सकना असंभव होता है?

जिस इलाके में मैं रह रही हूँ वह सीमा का पुराना और दरिद्र क्षेत्र है। घर के आसपास पत्थर की दीवारों पर टिन की छाजन वाले कच्चे घरों की बस्ती है। इसमें पाँच या छ सस्ते शराबखाने हैं। सुबह होते ही, फटी-पुरानी टोपी लगाये अधेड़ उम्र मर्द हाथ में बोतल लिये जहाँ-तहाँ बैठे दिखायी देने लगते हैं और गलियों में आती-जाती, टोपी लगाये लंबे स्कर्ट पहने नाटी-मोटी औरतें। हर कहीं पत्थर पत्थर पत्थर! सिर के ऊपर, गधे के रंग का सदा मैला रहने वाला आसमान। कितने साल हो गये—जैसे कि एक युग बीत गया—मैंने नीला आकाश, समुद्र और हरियाली नहीं देखी।

जब कभी एकदम अकेला होता है तो मैं अपने आपसे पूछती हूँ कि तू कौन है। इन चार-पाँच वर्षों ने मुझे चार-पाँच लंबी सदियों जितना अनुभव दिया, मेरी उम्र पक गयी है, लेकिन मुझे क्या मिला, मेरी मुट्ठियों में भला क्या रहा। सिवा एक उसके जो मुझे टी वी पर, घटिया क्लबों में, फुटपाथों पर, सारी दुनिया में नचाती है। किसी भी दर्द भरे गीत का दर्द सिर्फ मेरा-उसका है।

तुम्हारा लंबा पत्र कई पतों पर भटकने के बाद आज मुझे मिला। तुम्हारा पत्र पा कर मुझे बिलकुल आश्चर्य न हुआ क्योंकि मैं जानती थी कि तुम कभी-न-कभी मुझे जरूर लिखोगे।

सच कहूँ, मुझे लगता है कि शुरुआत कभी नहीं हो पाती। और अंत भी कभी नहीं होता।

मैं अपने बारे में बताना कहाँ से शुरू करूँ।

पेरू आए मुझे डेढ़ वर्ष हो गये। जब लीमा के हवाई अड्डे पर उतरी थी उस समय मेरे पर्स में सिर्फ़ बारह डालर थे। अपनी लड़की को—उसे हम बेटि कहते हैं—देखने उसके पिता के घर गयी तो बेटि ने मुझे देख कर भी नहीं पहचाना और अपने पिता से लग कर खड़ी हो गयी।

पेरू में रह सकने के लिये सबसे पहली समस्या आर्थिक थी—मुझे कोई भी काम तलाश करना था। शुरू के कुछ दिन टेलीविजन और क्लबों में नाची लेकिन वह बंद कर देना पड़ा क्योंकि तरह-तरह के लोग मुझसे प्रेम प्रस्ताव करने लगे। उनकी नजरों को मैं अठारह-बीस साल की लगती थी। उनकी बातें सुन कर मुझे हँसी आती थी। मैं उनसे कहना चाहती थी कि सेन्योर, मैं अपने हिस्से का सारा प्रेम कर चुकी हूँ और आपकी आँखें आपको धोखा दे रही हैं। उसके बाद कई जगह पढ़ाने का काम किया। अब एक कंपनी में जापानी से अंग्रेजी में अनुवाद,करने का काम कर रही हूँ। एक महीने में तीस-पैंतीस हजार यन के बराबर कमा लेती हूँ लेकिन इतने में खाने का खर्च ही कठिनाई से निकल पाता है, किराये पर एक अलग कमरा नहीं ले पाती और साझे में रहती हूँ।

सुनो, इस समय घर वाले की पागल लड़की गितार बजा रही है। पहले वह चीख-चीख कर गालियाँ बक रही थी। फिर उसके माँ-बाप और दो बहिनों ने मिल कर उसे पीटा तो वह जोर-जोर से रोने लगी। उसके बाद वह गितार लेकर बैठ गयी। गितार की आवाज बड़ी करुण है। मेरा मन उस धुन के साथ भटक-भटक जाता है। सोचती हूँ कि अगर कभी मैं उसकी तरह पागल हो गयी और मुझे पागलखाने में डाल दिया गया तो, तो डर से काँप जाती हूँ।

वास्तव में तो यह घर एक पागलखाना है, जिसमें रहने वाले आठ व्यक्ति, सभी पागल हैं। अठारह साल की सबसे छोटी लड़की इसा तो खैर, पागल है ही। परसों आधी रात तक, माता-पिता और बहिनों-भाइयों को गालियाँ देती, एक कमरे से दूसरे कमरे में पैर पटकती घूमती रही। पिता तब तक घर वापस नहीं आया था। पिछली रात पति-पत्नी में झगड़ा हुआ था। पत्नी मुझे विस्तार

घर से उठा कर रसोईघर में ले गयी और दिखाने लगी कि उसका पति कई दिनों से कुछ भी कमाकर नहीं ले आया है इसलिये घर में रात को खाना नहीं बना है। परसों रात उसका पति आया तो उसके साथ उसकी मोटी और भद्दी प्रेमिका थी। पति-पत्नी फिर लड़ने लगे। यों पत्नी को पति की प्रेमिका के रात को घर रह जाने पर कोई आपत्ति नहीं होती क्योंकि प्रेमिका घर साफ कर जाती है और, सामान हो तो, दोनों वक्त के लिये खाना पका कर रख जाती है।

अगली सुबह जब बाथरूम में हाथ-मुँह धोने गयी तो दरवाज़े के अंदर हैंडिल पर एक गन्दी पैन्टी टँगी थी। मैंने इसा को पास बुला कर उससे कहा कि वह उसे उठा कर कहीं छिपा दे तो वह ज़ोर से हँस पड़ी और बोली—मेरा पिता मनुष्य नहीं पशु है लेकिन उसमें पशुओं जितनी भी नैतिक चेतना नहीं है। फिर अगर मैं उसके सामने नंगी घूमती हूँ तो क्या बुरा है।

इस वक्त वह सबसे पीछे के मालगोदाम जैसे अँधेरे कमरे में बैठी गिटार बजा रही है। उसे नींद आयेगी तो वह वहीं सो जायेगी और कोई उसे उठा कर बिस्तर पर सुलाने नहीं जायेगा।

अभी मैं सोच रही थी कि एक दिन जब मैं यह घर छोड़ कर कहीं और चली जाऊँगी उसके बाद भी वह जिन्दा रहेगी और मेरे मरने के दिन तक मेरे अंदर बनी रहेगी। क्या हम सब एक दूसरे के लिये ऐसे ही बोझ होते हैं, जिन्हें चाहने पर भी मन से उतार सकना असंभव होता है?

जिस इलाके में मैं रह रही हूँ वह सीमा का पुराना और दरिद्र क्षेत्र है। घर के आसपास पत्थर की दीवारों पर टिन की छाजन वाले कच्चे घरों की बस्ती है। इसमें पांच या छः सस्ते शराबखाने हैं। सुबह होते ही, फटी-पुरानी टोपी लगाये अधेड़ उम्र मर्द हाथ में बोतल लिये जहाँ-तहाँ बैठे दिखायी देने लगते हैं और गलियों में आती-जाती, टोपी लगाये लंबे स्कर्ट पहने नाटी-मोटी औरतें। हर कहीं पत्थर पत्थर पत्थर! सिर के ऊपर, गधे के रंग का सदा मैला रहने वाला आसमान। कितने साल हो गये—जैसे कि एक युग बीत गया—मैंने नीला आकाश, समुद्र और हरियाली नहीं देखी।

जब कभी एकदम अकेला होता है तो मैं अपने आपसे पूछती हूँ कि तू कौन है। इन चार-पांच वर्षों ने मुझे चार-पांच लंबी सदियों जितना अनुभव दिया, मेरी उम्र पक गयी है, लेकिन मुझे क्या मिला, मेरी मुट्ठियों में भला क्या रहा। सिवा एक उसके जो मुझे टी वी पर, घटिया क्लबों में, फुटपाथों पर, सारी दुनिया में नचाती है। किसी भी दर्द भरे गीत का दर्द सिर्फ मेरा-उसका है।

वही मेरा पीड़ा भरा स्वर्ग है, जिसकी याद करके मेरे स्तनों से रक्त की बूँदें टपकने लगती हैं।

क्षमा करना, मैंने तुम्हारे बारे में कुछ भी नहीं पूछा। मैं बहुत थक गयी हूँ। सीने में दर्द हो रहा है। इधर मैं काफ़ी दुबली हो गयी हूँ और अकसर अतिरिक्त काम करने लायक नहीं रहती। इलाज भी ठीक से नहीं करा पाती क्योंकि यहाँ भी इलाज का ख़र्च जापान की तरह बहुत ज्यादा है। पिछले महीने, उन लोगों ने, जिनके साथ आजकल रह रही हूँ, मुझे एक ख़ैराती अस्पताल में भरती करा दिया था क्योंकि तब महीने के आख़िरी दिन थे और मेरे हाथ एकदम ख़ाली थे। मुझे बीमारी के कष्ट से अधिक इस बात का भय था कि अगर उन लोगों को मेरे रोग के बारे में मालूम हो गया तो वे बेटि से मेरा मिलना एकदम बंद कर देंगे।

यह पत्र उल्टे-सीधे जल्दी-जल्दी लिख रही हूँ ताकि शीघ्र ही तुम्हारा दूसरा पत्र पा सकूँ।

मेरी लिखावट कितनी गंदी है! क्षमा करना।

और हाँ, अगर उस महिला से कभी भेंट हो तो उसे समझाना कि वह बच्चे पैदा करने वाले पशु की तरह नहीं है। कैसे भी हो, उसे अपनी संतान वापस लेनी चाहिये।

पेरू। पेरू दक्षिणी अमरीका के एक देश का नाम है, जिसके सामने प्रशान्त महासागर है और पीछे अन्देस पर्वत की ऊँची-ऊँची चोटियाँ। कई सौ या कई हज़ार जापानी इस शताब्दी के शुरू में वहाँ जाकर बस गये थे।

अगली बार तोक्यो गया था तो यूराकच्यो के कोकुसाइ काइकान में ट्रैवेल ब्यूरो से पेरू तक जाने का राहख़र्च पता किया।

—आने-जाने का किराया छः लाख यन। प्लेन से। —उसने मोटी किताब में देख कर बताया।

—छः लाख यन! —मैंने कहा—बहुत महँगा है।

मैंने उससे हवाई कंपनियों द्वारा दी जाने वाली रियायत के बारे में पूछा। उसने बताया कि इयाटा से संबद्ध कोई भी एयरलाइन रियायत नहीं देती।

—मैंने सुना है कि ब्रासीली एयरलाइन्स वारिग बीस-पचीस फ़ीसदी कम किराये पर ले जाती है।

वह मुस्कराने लगा।

—इसे मालूम नहीं। आप चाहें तो जाकिर के ऑफिस से जाकर पता कर सकते हैं। लेकिन पचास डॉलर—पता नहीं।

उसने एक स्लिप पर जाकिर का नाम और फोन नम्बर लिख कर दिया।

—वहाँ तक जहाज भी तो जाते होंगे। —मैंने पूछा।

—वहाँ से माल ढोने वाले तो जहाज जाते हैं लेकिन उनमें कुछ ठीक नहीं। कभी-कभी महीने-महीने भर तक कोई जहाज नहीं मिलता। —वह बोला —और पानी के जहाज से जाने में भी खर्च करीब-करीब उतना ही आयेगा। पैसेंजर जहाज का किराया और खाने का खर्च मिला कर हवाई जहाज के किराये के करीब बराबर हो जाता है।

—लेकिन कार्गो शिप भी तो कुछ यात्री ले जाते हैं और वे बहुत मामूली सा किराया लेते हैं। —मैंने उसे अपने दो विदेशी मित्रों के बारे में बताया जो इसी तरह योरप से कनाडा और कनाडा से जापान आये थे—बल्कि उन्होंने जहाज पर काम करके कमा भी लिया था।

—पिछले नवंबर तक। अब कार्गो जहाजों में यात्रियों के यात्रा करने पर पाबंदी लगा दी गयी है।

मैंने उसे धन्यवाद दिया और बाहर निकल आया।

सवा छः लाख येन! उस दिन मेरे पास दस हजार येन भी न थे।

मेरे पास कीमती चीजों में एक कैमरा, एक स्टेरियो सेट और पचास के करीब रेकार्ड थे। स्टेरियो मैंने दो वर्ष पहले, एक बार अचानक अमीर हो जाने के दिन खरीदा था। कैमरा, स्टेरियो और सारे रेकार्ड बेचने पर एक लाख या अधिक से अधिक एक लाख बीस हजार येन मिल सकते थे। मेरा कोई ऐसा रिश्तेदार या मित्र भी न था जो मुझे इतनी बड़ी रकम उधार दे सके। सुना था कि पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित करने वाली संस्थाएँ, बाद में लेख वगैरह लिख कर देने के वायदे पर ऋण देती हैं लेकिन लेख मैंने पहले कभी लिखा नहीं था।

[illegible]। होन्गो से [illegible]। [illegible]। कस्टम्स के दरवाजे से निकल कर बरामदे में आया तो भीड़ के बीच में से उसने मुस्कराते हुए हाथ उठा कर हिलाया। मैं उसके आगे घुटने टेक कर बैठ गया और उसकी एक हथेली लेकर उसकी उँगलियाँ चूमने लगा। वह जोर से हँस पड़ा। चार टांगें लगाए रोबोट हमसे थोड़ा हट कर सावधान मुद्रा में खड़ा हमारा इंतजार कर रहा था।

मैं मुस्कराने लगा।

× × ×

निजी परेशानियों के कारण तुम्हें पत्र न लिख सकी।

कैसा है वह आदमी ! मुझे उस पर क्रोध नहीं आता, दया नहीं आती, सिर्फ हँसी आती है। पिछले महीने वेटि से मिलने गयी तो घर बन्द था। बगल के फ्लैट वालों से पूछने पर पता चला कि वे सब कहीं बाहर गये हैं। अगले शनिवार को फिर गयी लेकिन वे वापस नहीं लौटे थे। लाचार उसकी माँ के घर गयी। सत्तर साल की वह बूढ़ी महिला अकेली रहती है। उससे पता चला कि वे सब तो पेरू छोड़ कर अर्खेन्तीना चले गये हैं और शायद लौट कर नहीं आएँगे। सुनते ही मेरे शरीर का सारा रक्त जैसे कि पैरों से निकल कर धरती में समा गया ! वह दयालु वृद्धा मुझे ढाढ़स बँधाने लगी।

बहरहाल, मैं अर्खेन्तीना जा रही हूँ। वीसा आज मिल गया। अपना सारा सामान मैंने अपने एक परिचित के घर रख दिया है हालाँकि यह पता नहीं कि मैं भी यहाँ वापस लौट सकूँगी या नहीं। मैं बस से जा रही हूँ और दस दिन के सफ़र के बाद बुएनोस आएरस पहुँचूँगी। हवाई सफ़र का साधन मेरे पास नहीं था। मैंने शायद तुम्हें लिखा हो कि पहले जहाँ मैं अनुवादक थी वहाँ से मुझे दो माह तक वेतन नहीं मिला तो मैंने वह काम छोड़ दिया। यहाँ लगातार धोखा ही धोखा मिला। पेरू में दो वर्ष आठ माह रही तो इस स्थान के लिये ममत्व पैदा हो गया लेकिन कष्ट बहुत अधिक सहना पड़ा। देखो, अर्खेन्तीना मेरा स्वागत किस रूप में करता है।

मुझे सिर्फ़ एक बात याद है कि मैं जिसके लिये जी रही हूँ और जिसके लिये धीरे-धीरे मर रही हूँ वह जहाँ है वहीं मुझे भी होना चाहिए। उसके लिए मैं अर्खेन्तीना तो क्या, धरती के परले छोर तक पैदल जा सकती हूँ।

अर्खेन्तीना में मेरा परिचित एक भी नहीं है, सिवा एक महिला के जो पिछले वर्ष यहाँ घूमने आयी थीं तब उनसे एक मित्र के घर दो बार भेंट हुई थी। उन महिला का पता लिख रही हूँ। इसी पते पर मुझे पत्र भेजना। मुझे निश्चित पता नहीं कि वह अब भी इस पते पर रहती है या नहीं। फिर भी लिखना।

मैं इस वक्त भी मुस्करा रही हूँ। क्या तुम देख पाते हो ?

हाँ, इस बार की मेरी एक्स-रे का नतीजा आशाजनक निकला। नहीं जानती कि इसके लिये किसे शुक्रिया अदा करना चाहिए।

यह पत्र पोस्ट आफ़िस के टेबुल के आगे खड़ी होकर लिख रही हूँ। थक बहुत गयी हूँ। बहुत पैदल चलना पड़ा।

मेरे पास कंधे पर से लटकाने का नकली चमड़े का एक बड़ा बैग था, जिसे मैंने काम शुरू करने के पहले दिनों में खरीदा था लेकिन वह बहुत बड़ा था इसलिये उसे एक बार भी इस्तेमाल नहीं किया था।

कई दिन पहले उसे सामान रखने की अलमारी में से निकाल कर झाड़-पोंछा और खोल कर टेबुल के बगल में तानासि पर रख दिया था। उससे अलग हट कर मैंने उसे देखा। वह तानासि के ऊपर रखा था और एकदम खाली होने के कारण लुंज हाथ की तरह एक ओर झुक गया था।

तभी बिल्ली डगमगाते पैरों से कमरे के अंदर आयी और मेरे पास आने की बजाय यहाँ-वहाँ तातामि सूँघने लगी।

उस दिन उसने खाना छुआ तक न था। उसके पहले के तीन-चार दिन भी उसने ठीक से नहीं खाया था। एक-दो कौर खाकर वह लड़खड़ाती हुई मेरे पास आयी और मेरे दोनों घुटनों को बारी-बारी से सूँघने लगी। फिर वह कमजोर आवाज में रोने लगी। मैंने उसके गले के नीचे उँगलियों से खुजलाया।

उसने सिकुड़ी हुई आँखों से मेरी ओर देखा। उसकी दोनों आँखों में कीचड़ जमा हो गया था।

उसका चेहरा, खासकर उसकी अधमुँदी आँखें देख कर वह मुझे सदा उदास रहने वाली बच्ची की तरह लगती थी। वह पहले से मोटी हो गयी थी लेकिन उसकी आँखों के अंदर गहरी झील जैसी दीखती थी।

वह सर्दी से थरथर काँप रही थी। मैंने उसे गोद से उठा कर गर्म कोतत्सु के अंदर डाला लेकिन इससे कुछ नहीं हुआ। उसका शरीर कड़ा हो चुका था और उसके चारों पैर पीछे की ओर तन गये थे।

शायद मैंने उसे कोतत्सु के अंदर डाला, वह उसके पहले ही मर चुकी थी और मुझे पता नहीं चला था।

शाम को हुई एक मौत के बारे में कुछ नहीं किया जा सकता।

दो कमरों के घर में सिर्फ़ सन्नाटा रेंग रहा था।

मैं किसी भी समय क्यों न घर वापस लौटूँ, वह मेरी आहट पाकर दरवाज़ा खोलते-न-खोलते आकर मेरे पैरों के गिर्द उछलने-कूदने लगती थी।

मकान और बाहर की दीवार के बीच एक छोटा-सा तिकोना आँगन था। उसमें फर्न के पौधे अपने आप उग आये थे। उनके बीच मैंने पत्थर की तीन सिलों से एक छोटी-सी बेन्च बना ली थी और उस पर कभी-कदा बैठता था।

बीच में न जाने कब कुछ देर हल्की बर्फ़ पड़ी होगी—पत्थर की चौकी पर हिम की पतली-सी पर्त जमा थी।

कोने में ज़रा-सी खाली जगह थी।

रसोईघर के काठ के चिकने फ़र्श पर दौड़ते-फिसलते पंजों की खरोंच, कमरे की चारों दीवारों में से जाती धक्-धक् आवाज़—कुछ भी तो नहीं था।

एक मौत के सन्नाटे के अलावा।

कुछ भी नहीं। हल्की-सी आवाज तक नहीं।

बाहर अँधेरा हो गया था और खिड़की के काँच पर थोड़ी-सी बूँदें ठहरी हुई थीं, अँधेरी रात के तारों की तरह। कभी-कभी एक बूँद टूटे तारे की तरह नीचे ढुलक जाती थी।

लेकिन ज़िन्दगी और मौत के बीच में और चीज़ें भी हैं। बल्कि सब कुछ।

लेकिन वह क्या है?

क्या मैं इसी टेबुल के सामने बैठा रहूँगा और ओजिज़ोसान हो जाऊँगा, सामने आमदरफ्त करती अदृश्य भीड़ की पहरेदारी करता! नहीं।

बाहर फिर बर्फ़ गिरने लगी थी।

मैंने तुम्हें एक लम्बा पत्र हुरलियम की ट्रेन से लिखा था लेकिन उसे पोस्ट कर सकी। बाद में उसे स्वयं पढ़ा तो भेजने का मन न हुआ। तुम्हारे प्रश्नों का उत्तर मैं दे चुकी हूँ—हालाँकि अपने मन में—उन्हें दुहराने में बहुत कष्ट होता है। देखो, जीने का कोई कारण नहीं हो सकता, सिर्फ़ बहाने होते हैं, जिन्हें हम ढूँढ़ लेते हैं। और अगर नहीं भी ढूँढ़ पाते तो बिना बहाने के भी जी लेते हैं।

तुम्हें पत्र न लिख सकने का एक कारण यह भी था कि मैं कमरा तलाश करने में व्यस्त थी। मैंने बुएनोस आएरस की सारी सड़कें नाप डालीं—लगता था मैं सदियों से चलती आ रही हूँ। बहुत खोजने के बाद यह छोटा-सा कमरा मिला है, जिसमें एक अलमारी, एक बेड, छोटी मेज़-कुर्सी के अलावा सिर्फ़ एक व्यक्ति के खड़े हो सकने की जगह बच रहती है। अपना अकेला सूटकेस मैंने अलमारी के ऊपर डाल दिया है। कल बेटि को यहाँ लायी थी। वह खूब खेली, पैड पर कलम से तस्वीरें बनायीं और चार घंटे बाद चली जाकर इस कमरे को और अधिक अकेला बना गयी।

उसका पिता, पीछे-पीछे मेरे आ जानें के कारण, बहुत झुँझलाया हुआ है।

कई बार अनुरोध करने पर भी उसने सप्ताह में केवल एक बार, वह भी चंद घंटों के लिये, उससे मिलने देने की अनुमति दी है। वह जिस बात से चाहे इनकार कर सकता है, पर इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि मैं बेटी की माँ हूँ। मेरे लिये यह सबसे बड़ा सबूत है।

कल से नये काम-धंधे की तलाश शुरू होगी—और नये सप्ताह की, जो मेरी उम्र घटाएगा, और मेरी असफलताओं में नयी कड़ियाँ जोड़ेगा।

मैं यहाँ आ गयी हूँ लेकिन लीमा की यादें मेरे मन में बेचैनी पैदा करती हैं। वह घर, जिसमें मैं रहती थी, उसका पास-पड़ोस। वह गृहस्वामी, जिसे हमेशा एक ही कमीज और कोट-पैंट पहने देखती थी। वह पगली लड़की इसा। और गासिया—मैंने तुम्हें गासिया के बारे में नहीं लिखा क्या? बीस-इक्कीस साल का शर्मीला नौजवान, जिससे मेरी पहचान कुल एक माह की थी। प्रायः रोज हम साथ-साथ भटकते और तमाम बेसिर-पैर की बातें करते थे।

वह बस स्टेशन मुझे छोड़ने आया था। मैंने देखा कि वह मेरी खिड़की के नीचे खड़ा था और उसकी आँखें नम हो आयी थीं। बस चली तो उसने कहा—अस्ता लाविस्ता !

हालाँकि मैं भी जानती थी और वह भी जानता था कि हम फिर कभी न मिलेंगे।

क्या तुम अगले वसंत में यहीं और जाने की बजाय बुएनोस आएरस नहीं आ सकते? तुम मेरे जन्मदिन पर पार्टी देना चाहते थे। आओ तो किसी एक दिन को अपना-तुम्हारा जन्मदिन मान कर एक साथ बैठ कर खाना खाएँगे।

सबसे अधिक आश्चर्य मुझे इस बात पर होता था कि वह अकेली नहीं थी—उसके एक बच्ची थी। क्या वह उससे मिलती होगी या अपने पिता से? मैंने उसे दो-तीन पत्रों में लिखा कि वह अपना और बच्ची का फोटो भेजे लेकिन उसने नहीं भेजा। अगर भेजती तो भी मैं बेटि की शक्ल का मिलान उससे या बेटि के पिता से नहीं कर सकता था क्योंकि जब वह बेटि की उम्र की थी, मैंने उसे नहीं देखा था। वे दोनों मेरे अनदेखे बड़ी हो गयी थीं—माँ और बच्ची।

बैग वैसे ही खाली तामामि पर रखा था।

× × ×

उसका पत्र आया था। साथ में उसका एक फ़ोटो भी था। मैं उसे एकटक देखती रह गयी—और अपने आप से डर गयी। यह मेरा कौन था—यह अब मेरा कौन है। मैं उससे घृणा करने से अपने आप को रोक नहीं पायी थी—वैसे ही जैसे उसे अब भी प्यार करने से अपने आपको रोक नहीं पाती। क्या तब मैं उसे प्यार करती थी और अब घृणा ? या कि अब मैं उससे घृणा करती हूँ और तब प्यार ?

मेरे चारों ओर जो अब है सिर्फ़ वही मेरा सच होना चाहिये—उसके अलावा और कुछ नहीं।

उस रात अगर डाक्टर अन्तोनियो यों ही मेरे घर न आ जाते तो अच्छा होता या बुरा, मैं अब तक निश्चय नहीं कर पायी। मैं अस्पताल से लौटी उसके कई दिनों बाद उन्होंने बताया कि कमरे में अँधेरा था और मैं बिस्तर के नीचे बेहोश पड़ी थी। मुझे याद है कि उन दिनों मैं एहतियातन दरवाज़े में अंदर से कुंडी नहीं लगाती थी। वह मुझे उठा कर अपने घर ले गये, इंजेक्शन लगाये और अस्पताल में भरती कराया। अस्पताल के बाद भी वह मुझे अपने यहाँ रखे रहे। उनके पास एक ही बेड रूम था। सेन्योरा अन्तोनियो मेरे बगल में सोती थीं और हर चार घंटे पर मुझे दवा देती थीं। डॉक्टर अन्तोनियो बाहर वाले कमरे में लंबे सोफ़े पर सोते थे।

उन्होंने मुझे बताया कि मेरी आँत ख़राब हो गयी है और मुझे खाने-पीने का ध्यान रखना चाहिये। मैंने उनसे कुछ नहीं कहा। कह भी क्या सकती थी। पिछले दस दिन मैंने पपीते के जूस की तीन बोतलों पर बिताये थे। सुबह-शाम की भीड़ के समय फ्लोरीदा गली में आते-जाते लोगों के हाथ अंधों की सहायता के लिये कूपन बेचे थे और दोपहर को नौ जुलाई एवेन्यू पर सिगनलों के आगे रुकी मोटरों के पास जाकर कैंसर इंस्टीट्यूट की दान पेटी में सिक्के माँगे थे—क्योंकि उन सब में से मुझे पाँच फ़ीसदी कमीशन मिलना था।

इधर न किसी का कोई पत्र आया और न मैं किसी को लिख सकी। घर से एक लिफ़ाफ़ा आया था, जिसमें केवल रंगीन फ़ोटो थे—जो मेरे अतीत की एक दुर्घटना के सबूत हैं इसलिये मेरे भविष्य को उससे सुलझा कर अलग करने के लिये सबूत के तौर पर कोर्ट में पेश किये जाएँगे। उनके रंग धुँधले पड़ने लगे हैं—गुलदस्ते सजे लंबे टेबुल के गिर्द बैठे, खाना खाते, शराब पीते, हँसते, एक दूसरे से वार्तालाप के टुकड़े बदलते स्त्री-पुरुष, युवक, प्रौढ़ और बूढ़े, हाथ में ओसाके की छोटी बोतल लेकर किसी को परसने जा रही माँ—तब उनके

चेहरे पर झुर्रियाँ नहीं के बराबर थी। अब उनका चेहरा न जाने कैसा लगता होगा। पिता के सिर के बाल तभी सफेद हो चले थे। सब के बीच में सफेद वेडिंग गाउन पहने मैं और मॉर्निंग सूट में वह—ये सब इस घड़ी कहाँ-कहाँ होंगे! मेरे चारों ओर छितरी ये और वे तस्वीरें मेरे जीवन की सारी सच्चाई हैं या सारा झूठ। या कि सिर्फ वह जो मैं आज हूँ और जो आज मेरे चारों ओर है।

कल बेटि की पाँचवीं वर्षगाँठ थी लेकिन अब हम पखवारे में एक ही बार मिलते हैं इसलिये वह आज सुबह जल्दी आयी थी। पीला रेनकोट पहने, लाल टोपी हाथ में लिये वह दरवाजे के चौखट पर खड़ी, गर्दन एक ओर मोड़ कर होंठों से अधिक आँखों से मुस्करा रही थी और हल्की हवा में उसके बाल भी धीरे-धीरे मुस्करा रहे थे।

मैंने उसके पिता से कहा कि वह उसे मेरे पास छोड़ कर जा सकते हैं। शाम को मैं उसे वापस पहुँचा आऊँगी।

उनके जाते ही वह दौड़ कर मेरे पास आयी और बोली—आज हम बाहर खेलेंगे।

हम दोनों एक दूसरे की उँगलियाँ उलझाये हुए बाहर निकले।

तब उस पार्क के अंदर हमारे अलावा और कोई न था। टूटे हुए झूले की जंजीरें ऊपर के छड़ में रस्सी की तरह लपेटी हुई थीं और नीचे पीली-पीली पत्तियों की चादर बिछी थी।

हम पार्क के दूसरे छोर तक टहलते हुए उस दीवार के आगे जाकर खड़े हो गये जहाँ से दूर तक शहर का फैलाव दिखायी देता था।

—मैं पाँच साल की हो गयी।—अचानक गंभीर होकर उसने कहा।

—हाँ।

पास के रेस्तराँ में ले जाकर मैंने उसके लिए एक आइसक्रीम मँगवायी और एक अपने लिये भी।

शाम हो जाने पर भी वह अपने घर वापस नहीं जाना चाहती थी और लौटने की बात करने पर 'कुछ देर और' कह कर टाल देती थी लेकिन जब हम पैदल चलते हुए उसके घर के दरवाजे के सामने आकर खड़े हो गये तो मैंने उससे कहा अब तुम अंदर चली जाओ।

—और तुम ? तुम अकेली लौटोगी ?

—हाँ, मैं अकेली ही रहती हूँ।

मैंने कहा तो जैसे कि अचानक उसकी पुतलियों में एक रेगिस्तान उभर

आया और मुझे उसके विक्षिप्त हो जाने का डर लगा। मैंने हँसते हुए कहा—बेटि, दो हफ़्ते बाद हम फिर मिलेंगे तो !

वह अपने जेब में से एक खिलौना निकाल कर मुझे देती हुई बोली—यह मैं तुम्हारे लिये लायी थी।

इलास्टिक की डोर के छोर पर बँधा ऊन का गोला, जिसे वह सारे दिन जेब में मेरे लिये रखे घूमती रही थी। शायद मुझे देने में उसे संकोच हो रहा होगा।

शाम की बची हुई नीली चमक में, फ़ुटपाथ पर अकेली खड़ी मैं सोचने लगी—अब ? अब मैं कहाँ जाऊँ ?

मुझे अपना सारा अस्तित्व व्यर्थ मालूम दे रहा था। अपनी ही संतान के आगे मैं अपने को विदेशी और अजनबी लग रही थी। उसने दिन भर में एक बार भी मुझे ममीता कह कर नहीं पुकारा था और वह संबोधन करने से कतराती रही थी।

मैं डॉक्टर अन्तोनियो की कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने मुझे मरने से बचा लिया।

अभी टेरेस पर खड़ी गमलों के पौधों की हरी-हरी पत्तियों को हथेली से धीरे-धीरे सहला रही थी। नीचे गली में पास आती सैंडिल की आवाज़ सुनायी दी तो मैंने आगे बढ़ कर नीचे झाँका।

बगल की इमारत में रहने वाली सेन्योरा ब्लांका काम पर से लौट रही थीं।

—खुलियेता !—उन्होंने मुझे देख कर हँसते हुए कहा। मैं, जूलियट !

इस वक्त पता नहीं कितने बजे हैं। कुछ देर पहले सुनायी दिया था, गली से गुज़रते हुए दो पुरुषों में से एक ने दूसरे से कहा था—एस ला उना।

एक बज गया ! क्या आज नींद आ जायेगी ? पिछली चार रातें नहीं आयी। कल भी साढ़े चार के बाद आँख लगी थी और इमारत में रहने वाले बच्चों के शोरगुल से कुछ ही देर बाद खुल गयी थी। तब सात भी नहीं बजे थे।

मेरा ख़याल सही था। उस टूरिस्ट कंपनी के क्लर्क ने मुझे सही नहीं बताया था। तोक्यो और लॉस ऐंजेलस के बीच प्रायः रोज़ चार्टर फ़्लाइट जाया करती थी, जिसका किराया नियमित किराये का आधा या उससे भी कम होता था। उसके लिये किसी जाली क्लब का मेंबर होना पड़ता था और दुर्घटना होने

पर मुआवज़ा नहीं मिलता था। लॉस में दक्षिणी अमरीका के शहरों तक भी आधे से कम किराये पर ले जाने वाली फ्लाइटें थीं।

सामान बेचने से एक लाख दस हजार यन मिल गये। उसमें एक तिहाई राह खर्च जुट गया। शेष कई परिचितों-मित्रों से उधार लेकर पूरा किया।

मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह सच है लेकिन उस शाम मैं लॉस ऐंजेलस जाने वाली एयर मायाम की फ्लाइट आने का इंतज़ार हनेदा एयरपोर्ट के लाउंज में टहलते हुए कर रहा था।

हवाई सफ़र में मुझे उल्टियाँ हुआ करती थीं—मौसम कितना भी अच्छा क्यों न हो। एक बार तोक्यो-सप्पोरो की महज़ एक घंटे की फ्लाइट में उल्टियाँ करते-करते निढाल होकर मैं सीटों के बीच की तंग जगह में लेट गया था। उसके बाद से, एयर सिकनेस से बचने के लिये मैं हमेशा पहले से शराब पीकर तैयार हो जाता था। उसके नशे में मुझे हवाई जहाज़ के हिलने-डुलने का पता न चलता था और अक्सर अधिक नशे में होने की वजह से मैं नींद में सो भी जाता था।

सामने ड्यूटी-फ्री शराब की दूकान थी।

—आपके पास शराब की छोटी बोतल होगी?

काउन्टर के पीछे खड़ी लड़की ने शोकेस में रखी बोतलों की ओर इशारा किया। उन बोतलों में कोई भी पाँच-छः डालर से कम की न थी।

—क्या बियर के टिन हैं?

—बियर हम नहीं रखते।—उसकी आवाज़ ज़रा सर्द हो गयी थी। शायद वह मेरे मन की बात ताड़ गयी थी—वह आप वहाँ आटोमेटिक से खरीद सकते हैं।

उसने मुझे उन दरिद्र सैलानियों में शुमार किया होगा जो एक-एक सिक्का दाँत से पकड़ते हैं।

मेरे पास जितनी जापानी मुद्रा बची थी, उससे आठ टिन बियर मिल गईं। चलो, इतनी मेरे लिये काफ़ी होगी। इसके बाद शायद मुझे नींद आ जाए। सुबह होते-होते मैं हॉनोलुलू पहुँच जाऊँगा। अगर वहाँ से लॉस ऐंजेलस की, और अगले दिन लॉस से लीमा—रिओ—ब्युएनोस आएर्स की फ्लाइटें मिल गयीं तो तीसरे दिन मैं ब्युएनोस आएरस पहुँच जाऊँगा। अगर न मिलीं तो एक या दो दिन मुझे, दक्षिणी अमरीका जाने वाली चार्टर फ्लाइट के लिये लॉस में इंतज़ार करना पड़ेगा। वहाँ मिलिया टिकेट है। मैंने उस चार्टर कंपनी का फ़ोन नंबर लिख दिया है कि वह ब्राज़ील-अर्जेन्टीना जाने वाली फ्लाइटें

फ़्लाइट में मेरी सीट के लिये तगादा कर दे। अगर बुएनोस आएरस तक न हो सके तो लीमा तक ही सही। वहाँ से रेल या बस से अन्देस पर्वत पार करके अर्खेन्तीना जा सकता हूँ। वह रेल जब अंदेस को पार कर रही होती है तो हवा में ऑक्सिजन की कमी के कारण बहुतेरे यात्री नीमहोशी की हालत में सिर पीछे टिका कर आँख मूँद लेते हैं और ट्रेन के साथ चलने वाला डॉक्टर घूम-घूम कर ऐसे यात्रियों को ऑक्सिजन सुँघाता है—मैंने कुछ वर्ष पहले टी वी पर देखा था।

नहीं तो सिलिया दो चार दिन अपने साथ रह लेने देगी। मैंने उसे लॉस के हवाई अड्डे पर आने के लिये कह दिया था।

एयर सायाम की फ़्लाइट आ गयी थी—दो घंटे देर से। उस पर जाने वालों को बोर्डिंग गेट पर जमा होने के लिये कहा जा रहा था।

पर मुझे अगली फ़्लाइटें मिल जायेंगी और परसों—वहाँ के समय से परसों—शनिवार को मैं बुएनोस आएरस में हूँगा। उसने लिखा था कि शनिवार को उसके ऑफ़िस में छुट्टी है इसलिये अगर मैं शनिवार को वहाँ पहुँचूँ तो हमें छुट्टी के दो दिन साथ रहने को मिल सकते हैं।

क्या तुम बहुत अधिक बीमार हो? तुम्हें क्या हुआ है कि तुमने मेरे दो पत्रों में से एक का भी उत्तर नहीं दिया। सच, मैं परेशान हूँ। यह पत्र मिलते ही उत्तर दो। मैं कुछ दिनों के लिये चिले जा रही हूँ। आज बस का टिकट ख़रीदूँगी। बस से दो दिनों में सान्तियागो पहुँच जाऊँगी। मेरे पास थोड़ी-सी रक़म है। इस महीने कमरे का किराया न देकर उससे टिकट खरीद लूँगी। दूसरे खर्चों के लिये मुझे शायद कुछ क़ीमती सामान गिरवीं रखने पड़ें। फिर भी मैंने जाने का निश्चय किया है। वहाँ से एक मित्र ने बुलाया है। मैंने सोचा है कि हफ़्ते-दस दिन सारी दिमाग़ी परेशानियों को भूल कर रोज़ समुद्र में तैरूँगी, जंगली जगहों में दौड़ूँगी और निर्जन नदी-तट पर ज़ोर-ज़ोर से गाऊँगी—इन सारी उल्टी-सीधी बातों से अपना जी हल्का करूँगी। लौटने के बाद एक अरुचिकर काम शुरू होगा। फिर मन को चैन न मिल पायेगा।

चिले जाने का निश्चय करने के पीछे एक कारण यह भी है कि दिसंबर में गर्मी की छुट्टी शुरू हो जाने से सारे विद्यार्थी बुएनोस आएरस से बाहर चले गये हैं और इस वक्त मेरे पास सिर्फ़ एक ट्यूशन बच रहा है। इस हफ़्ते

के बाद यह लड़की भी बाहर चली जायेगी तो दो डालर की यह हफ्तेवारी आमदनी भी बंद। जनवरी में स्कूल कालेज खुलने तक यही हालत रहने को है पर मैं ज़रा भी आतंकित नहीं हूँ।

मुझे जल्दी से जल्दी कोई नौकरी मिलनी ही चाहिए। एक कंपनी में रिसेप्शनिस्ट की जगह के लिये इंटरव्यू दिया है। पंद्रह दिन बाद उसका परिणाम मालूम होगा। मैं हाथ बाँध कर मन ही मन प्रार्थना कर रही हूँ कि मुझे वह नौकरी मिल जाए नहीं तो मुझे यहाँ रहने का वीसा नहीं मिलेगा और कोर्ट भले ही उस आदमी पर अनैतिकता का आरोप लगा कर बेटि को उससे अलग कर दे लेकिन मेरी आर्थिक अक्षमता के कारण मेरी लड़की को मुझे न देकर उसे किसी नर्सरी में भेज देगा। इन्हीं सब चिन्ताओं से मुझे रात-रात भर नींद नहीं आती। दिन में टाइप करती हूँ तो आँखों के सामने बार-बार अँधेरा छा जाता है। पागलों की तरह ब्लाक के बाद ब्लाक पैदल चलती हूँ और हर एक से नौकरी माँगती हूँ।

फिर भी देखो, मैं जी रही हूँ, कैक्टस की तरह। मैं ज़िंदगी को इनकार कभी नहीं करना चाहती क्योंकि ज़िंदगी, सारी तकलीफों के बावजूद बड़ी प्यारी चीज़ है। इस ज़िंदगी और इस दुनिया के बाहर कुछ भी नहीं है। हाँ, किसी ने भी मुझे भरपूर प्यार नहीं दिया और मैं भी अपना प्यार किसी को न दे पायी- न जाने क्यों। अब तो मेरे पास केवल बेटि है। शायद हम अगर सचमुच किसी को प्यार कर सकते है तो केवल अपनी संतान को।

तुम्हें भुला नहीं पायी, न भुलाने की कभी ज़रूरत समझी। मुझे एक-एक बात और उसके बारीक से बारीक डीटेल याद हैं—ताकायामा का पहाड़, बीवा झील के किनारे की निर्जन दोपहर, कोमामाम का कब्रिस्तान, चीड़ की सूखी पत्तियों की चादर। और बहुत-सी यादें। वह कौन थी जिसे सिर्फ़ तुम एक नाम से पुकारते थे।

कभी-कभी सोचती हूँ कि क्या वह दिन मेरे लिये आयेगा जब मैं वहाँ वापस लौट सकूँगी और हम एक टेबुल के गिर्द बैठ कर चाय पीते हुए एक-दूसरे पर हँसेंगे, या एक-दूसरे को मज़ाकिया चुटकुले सुनायेंगे, या रोशनी बुझा कर तातामि पर लेटे-लेटे बारिश को सुनेंगे—पता नहीं। शायद जब लौटने को दिन आयेगा तब तक मैं बूढ़ी हो चुकूँगी।

वही थाई एयर होस्टेस हाथ में दर्जन भर इयरफ़ोन और उनके उलझे तार लटकाये हुए आयी तो मैंने उससे फिर कहा।

—हम फ्लाइट से पहले शराब नहीं बेचते।—उसने गुस्से भरे स्वर में अंग्रेज़ी में कहा—मैंने तुम्हें पहले भी बताया था।

—लेकिन उससे भी पहले मैंने तुम्हें बताया था कि मेरी तबीयत ख़राब हो जाती है।—मेरे अंदर सोया जोकर जाग गया था।

—तुम बियर तो लिये हो। —उसने मेरी जांघ की ओर उँगली से इशारा किया, जिसके बगल में बियर के डिब्बों वाली पारदर्शी प्लास्टिक की भारी थैली हाथ में लटकी थी।—वह तीन आदमियों के लिये काफ़ी होगी।

उसी ने, जहाज़ के अंदर मेरे क़दम रखते ही, बिना कोट पहने पर्सर के कान में फुसफुसा कर कुछ कहा था।

—और वह देखो, सेफ़्टी बेल्ट बाँधने की रोशनी जल गयी है, अपनी सीट पर जाकर बैठ जाओ।

—लेकिन मेरी सीट कहाँ है, मुझे मालूम नहीं।

वह मेरी एक बाँह पकड़ कर मेरी सीट तक लायी और मुझे बैठा दिया। उसने सीट पर बैठाने के लिए मुझे नीचे की ओर शायद दबाया था इसलिये या खुद झटके से बैठने के कारण, हाथ में पकड़ी थैली फ़र्श पर गिर गयी।

उसने बड़बड़ाते हुए थाई भाषा में न जाने क्या कहा और चली गयी।

उसका चेहरा निचुड़े हुए नीबू की तरह लग रहा था उस वक्त मुझे।

—सिनेमा देखना चाहोगे? दो डालर।—कुछ देर बाद निचुड़े हुए नीबू ने फिर मेरे सामने आकर इयरफ़ोनों का उलझा हुआ गुच्छा ऊपर उठा कर दिखाते हुए पूछा।

मैंने उसकी आँख में आँख डालते हुए जापानी में कहा—कितना खट्टा है यह चेहरा!

—तुमने क्या कहा?

—नहीं। कुछ नहीं। थैंक्यू।

उसके चली जाने के बाद मैंने बगल की ओर देखा। बगल वाली सीट पर एक जापानी महिला थीं। उन्होंने मुझे थाई होस्टेस से उलझते देखा था और शायद उसके चेहरे के बारे में मेरा रिमार्क भी सुन लिया था। मुझे अपनी ओर देखते पाकर उन्होंने अपनी दृष्टि सीध में कर ली और अपनी जगह पर ज़रा-सा हिल कर सीधे बैठते हुए सामने वाली सीट की पीठ को एकटक घूरने लगीं।

मैंने हॉस्टेस के साथ अपने अशिष्ट व्यवहार के लिए उनसे माफी माँगी तो उन्होंने चुपचाप अपना सिर एक बार झुका दिया।

ज़रूर वह मेरे दुर्व्यवहार के कारण मन ही मन शर्मिन्दा हुई होंगी।

मैंने बियर का एक टिन थैले में से निकाला और उन्हें देने के इरादे से उनकी ओर बढ़ाते-बढ़ाते खोला तो पटाखे की तरह बियर का फेन उड़ कर उनके कपड़ों पर बैठ गया।

मैंने हँसते हुए उनसे दोबारा क्षमा माँगी।

—मैंने डिब्बा गिरा दिया था इसलिये।—मैं बोला।

—मैं नहीं पीती हूँ।—उन्होंने एक बार फिर सिर झुकाते हुए मुस्करा कर उत्तर दिया।

—मैं पहली बार हवाई यात्रा कर रहा हूँ और मुझे हवाई जहाज से डर लगता है।—अपनी शर्म मिटाने के लिये मैं उनसे झूठ बोल गया और वह बियर खुद पीने लगा।

—कहाँ तक जा रही है?—मैंने पूछा।

—रिओ।

—ओह, रिओ का कार्निवल देखने।

—जी नहीं। पति वहाँ काम करते हैं।

—पहली बार जा रही है?

—नहीं तो।—उन्होंने मुस्कराते हुए कहा। मैंने पहली बार ठीक से उनके चेहरे की ओर देखा। उनके होंठ उमरे हुए और कुछ साँवले थे।—पहले तीन चार बार जाना हुआ है।

कुछ देर बाद उन्होंने उठ कर खड़ी होते हुए मुझसे माफी माँगी और मेरे आगे से होकर निकल गयीं।

तोक्यो की खाड़ी न जाने कब की पीछे छूट चुकी होगी। मैंने उचकते हुए खिड़की के बाहर देखने की कोशिश की। बाहर एकदम अँधेरा था। शायद अब हम ओगासावारा द्वीपसमूह के आसपास होंगे—तोक्यो से प्रायः एक हज़ार किलोमीटर दूर प्रशान्त महासागर में, तोक्यो महानगरपालिका का एक मुहल्ला!

—मैं एक बार ओगासावारा ज़रूर जाऊँगा। मैंने मन में कहा तो मुझे याद आया कि मैंने यह बात तब भी सोची थी, कुछ वर्ष पहले, जब वहाँ बड़ा भूकंप आया था।

वह ओगासावारा द्वीप था, या कौन-सा द्वीप, जिसमें सामंती युग में विद्रोहियों को कालापानी दिया जाता था ?

अचानक मेरा ध्यान बगल वाली खाली सीट की ओर गया—काफ़ी देर हो गयी थी लेकिन वह वापस नहीं आयी थीं। मैंने खड़े होकर उन्हें खोजने के लिये आगे-पीछे निगाह दौड़ायी।

वह सबसे पीछे की तीन खाली सीटों की एक कतार में से सीट पर एक ओर सिर झुकाए बैठी थीं और शायद नींद से सो रही थीं।

मैं उस होस्टेस का या उनका या किसी का भी अब बुरा नहीं मानता, मैंने अपने मन में कहा।

एक बड़े झरने का लगातार शोर कानों में भर रहा था—ज़ा आ आ आ...,...

मैं उस कंपनी के इंटरव्यू में चुन ली गयी लेकिन जनरल मैंनेजर ने यह कह कर मुझे नौकरी नहीं दी कि वह अपने यहाँ ऐसे व्यक्ति को नहीं रखना चाहता जिसके साथ मुकद्दमे वगैरह की पेचीदगियाँ जुड़ी हों। अब जहाँ अस्थायी तौर पर काम कर रही हूँ वहाँ सोलह हज़ार यन के बराबर वेतन मिलता है लेकिन बुएनोस आएरस जैसी महँगी जगह में इसमें से किराया देने के बाद खाने का खर्च भी मुश्किल से निकल पाता है। गर्मी की छुट्टी खत्म होने पर ट्यूशन मिलने तक यही हाल रहने को है।

आज घर रात ग्यारह बजे लौटी। सोलह चौराहे पैदल पार करके थकान से चूर। रास्ते में मैं गुनगुना रही थी वहाँ के गीत। वहाँ की चीज, सिर्फ़ ये कुछ गीत ही बच रहे हैं मेरे पास अब।

रास्ते में एक बस स्टैंड पर देखा, एक छोटा-सा परिवार बस के इंतज़ार में खड़ा था—पति-पत्नी और चार-पाँच साल की गुड़िया जैसी एक बच्ची। वह हू-ब-हू मेरी बेटि की तरह लग रही थी, जब वह इतनी बड़ी थी।

मुझे बच्चे बहुत अच्छे लगते हैं। कभी-कभी इच्छा होती है कि मैं कम-से-कम दस बच्चों की माँ बन जाऊँ। लेकिन मुझे अपनी बेटि इतनी काफ़ी लगती है कि बस। इस छोकरी की आँखें—ओह, होंठों को एक कोने पर दबा कर वह आँखों से जितना कहती है उतना अर्खेन्तीना के झीलों के इलाके की सारी झीलें भी नहीं कह सकतीं। पिछले माह उसने मुझे ममीता कह कर पुकारा—

न जाने कितने वर्षों बाद उसके मुँह से यह संबोधन सुनने को मिला—तो मेरे सारे शरीर में प्रसन्नता की लहर दौड़ गयी।

फिर भला पुरुष प्रत्येक स्त्री से यह क्यों कहता है कि वह उसके बच्चे का पिता बनना चाहता है। उसी को लो, वह बेटि के बाद कोई संतान नहीं चाहता था लेकिन उसने सोफिया को, जब वह हमारे घर मेहमान बन कर ठहरी थी, गर्भवती बना दिया।

खिड़की के चौखटे में सवेरे की उदास पीली चमक भरी है और आसमान में बादल छाये हैं। मन पर भी। रात भर बुरे-बुरे सपने आते रहे। कि मुझे इस कमरे से जबरदस्ती बाहर निकाला जा रहा है, मेरा सामान दरवाज़े के बाहर फेंका जा रहा है। मैं चौंक कर जाग उठती थी और रोशनी जला कर देखती थी कि दरवाजा ठीक से बंद है या नहीं।

सिर चकरा रहा है। जीना कितना कठिन है कि मैं खुद बूढ़ी होती महसूस कर रही हूँ। मेरा हर एक दिन होता है सिर्फ बीत जाने के लिये और मेरी हथेलियों में खालीपन छोड़ जाने के लिये। मैंने कल्पना भी न की थी कि महज़ जीने के लिये मुझे इतनी मेहनत करनी पड़ेगी, वह भी अपनी धरती, मित्रों और परिचितों से दसियों हज़ार किलोमीटर दूर। यहाँ कौन है जिससे कहूँ कि मेरी पीठ में सचमुच दर्द हो रहा है और कल की रात मुझे कैसे दुःस्वप्न आते रहे।

तीन मीटर लम्बे, तीन मीटर चौड़े इस कमरे में दोपहर के वक्त भी इतना अँधेरा रहता है कि रोशनी जलानी पड़ती है। दूसरे कमरे के लिये परिचितों से कह रखा है क्योंकि यह होस्टल है और दूसरा कमरा न मिलने पर कोर्ट बेटि को मुझे न देगा।

सवेरा हो गया है। आज रविवार है इसलिये उम्मीद है कि बाथरूम खाली होगा और मकान मालिक बड़बड़ा न रहा होगा।

तब तक ठीक से सवेरा नहीं हुआ था और खिड़की के बाहर नीचे की ओर देखने पर, हल्के-नीले आसमान और गाढ़े-नीले समुद्र के बीच हवाई के कई छोटे-बड़े द्वीप दिखायी देते थे।

स्पीकर पर नया टाइम बताया जा रहा था।

दूसरे यात्री भी इस शोरगुल से जाग गये थे और पास की खिड़कियों से बाहर देखने लगे थे।

मुझे हॉनोलुलू से फ़्लाइट बदल कर कॉन्टिनेन्टल एयरलाइंस से लॉस तक जाना था। उसमें मेरा रिज़र्वेशन तोक्यो से नहीं हो पाया था। ऐसे कई यात्री, जिनकी सीटें रिज़र्व नहीं थीं, जहाज से उतरते ही ट्रैंज़िट काउन्टर की ओर तेजी से भागे। हमें बताया गया कि कॉन्टिनेन्टल का काउन्टर इमारत के परले छोर पर है, जो यहाँ से काफ़ी दूर है। बीस मिनट बाद यहाँ से एयरपोर्ट बस जाएगी। उतनी देर रुककर मैं खाली सीटें भर जाने का ख़तरा नहीं उठा सकता था इसलिये एक हाथ में सूटकेस और दूसरी ओर के कंधे पर थैला लटका कर पैदल चल पड़ा। एम्फ़ीथियेटर जैसी अधगोल, बाहर की ओर खम्भों की कतार वाली सेमेंट की सादी इमारत में बड़ी देर तक चलते जाने पर भी उसका छोर नहीं आ रहा था। सारे लम्बे बरामदे में केवल मैं था। दूसरे यात्रियों ने पहले से रिज़र्वेशन करा लिये होंगे और वे आराम से बस से आ रहे होंगे। मैं अपनी असमर्थता पर मन ही मन खीझ रहा था। लम्बे बरामदे में ही नहीं, शीशे के बड़े-बड़े दरवाज़ों के पीछे दूसरी एयरलाइन्स के साइनबोर्डों के नीचे के काउंटरों तक निर्जन थे। वैसी औचट जगह में मुझ जैसे अकेले मुसाफ़िर का कत्ल भी किया जा सकता था, दोपहर में। तभी पीछे से पैरों की आहट सुनायी दी और सूखी घास जैसी दाढ़ी वाला एक दुबला-पतला बूढ़ा, काला पैंट और आधी बाँह की सफ़ेद कमीज़ पहने तेज़ कदमों से चलता हुआ बगल से गुज़रा।

—कॉन्टिनेन्टल ?—उसने बगल से गुजरते हुए पूछा।

—हाँ।

वह आगे बढ़ गया। वह मुझसे पहले काउंटर पर पहुँच जाना चाहता था। उसके पास सामान था, चमड़े का सिर्फ़ एक अधखाली थैला, जो उसने कंधे से लटका रखा था, और काले फ्रेम का मोटा चश्मा, जो उसकी नाक पर था।

कॉन्टिनेन्टल एयरलाइन्स के काउंटर के आगे भीड़ थी लेकिन खिड़की के सामने लगी कुर्सियों में चुपचाप बैठी, गमलों में लगे लम्बे काले फ़ीनिक्स के पौधों और काँच की खिड़की के बाहर सूनी हवाई पट्टी को चुपचाप देखती हुई। खिड़की के चौखट में एक दौड़ता हुआ हवाई जहाज़ आया और ज़मीन से उठ कर पीले आसमान में धुएँ की काली लकीर छोड़ता हुआ उड़ गया। सुनहली धूप के टुकड़े खिड़कियों के नीचे संगमर्मर के साफ़ फ़र्श पर लेटे थे।

काउन्टर के आस-पास सिर्फ़ तीन-चार यात्री सीट पाने के लिये मन में बेचैन

चुपचाप खड़े थे। एक अमरीकी नौजवान जोड़ा एक दूसरे की कमर के गिर्द हाथ लपेटे। एक भूरा, जो शायद हवाइयन था। उनमें वह दाढ़ी वाला बूढ़ा नहीं था। वह बीच में न जाने कहाँ गायब हो गया था।

लाल-पीले रंग का चुस्त गाउन जैसा ड्रेस पहने दो होस्टेस बाहर का दरवाजा खोल कर आयी और काउंटर क्लर्क के कान में कुछ फुसफुसा कर वापस लौट गयी। उन दोनों में से एक का बाल सुनहला था।

उनके मुड़ते ही काउंटर क्लर्क ने टेबुल पर रखा माइक हाथ में पकड़ कर मुँह तक उठाया। वह न गोरा था न काला। वहीं का होगा, हवाई का। वह उन यात्रियों के नाम पुकारने लगा, जिन्हें सीटें मिल गयी थीं।

मैं और वह हवाइयन बच गए थे।

—मुझे परसों बुएनोस आएरस पहुँचना है।—मैंने क्लर्क के सामने जाकर कहा—लॉस से आगे की फ्लाइटों में मेरा रिजर्वेशन हो गया है। अगर आप मुझे लॉस तक ले चल सकें तो—

—सॉरी।—उसने बात काटते हुए कहा—इस फ्लाइट की सारी सीटें भर गयी हैं।

तभी उसके बगल में खड़े, सुनहले फ्रेम का चश्मा लगाए और ताज़ा सूट पहने एक कर्मचारी ने धीरे से उससे कुछ कहा।

क्लर्क ने मेरी ओर हथेली बढ़ाते हुए कहा—आपका टिकट ?

टिकट पर सीट नंबर की चिप्पी लगा कर मुझे वापस करने के बाद उसने कुछ दूर पर चुपचाप खड़े उस हवाइयन को पास आने के लिए उँगली से इशारा किया।

हम दो ही बचे हुए यात्री थे।

इस बुढ़िया के कारण कभी-कभी लगता है कि मैंने इस मकान में आकर भूल की। वह छोटी-से-छोटी निजी बात में रोक-टोक लगाती है। एक किरायेदार की बात दूसरे किरायेदार तक और दूसरे की तीसरे तक पहुँचाना ही इसका अकेला शगल है। ओफ, बुढ़ापा कितनी भयावनी चीज़ है! दिन निकलने से लेकर दिन डूबने तक वह इस चौथी मंजिल के एक के बाद दूसरे फ्लैट का दरवाजा खुलवा कर बात पर बात पर बात करती जाती है। जोड़ के दर्द की वजह से सीढ़ियाँ वह महीने में सिर्फ एक बार उतरती है, जब उसे पेंशन लेने

दूसरे यात्री भी इस शोरगुल से जाग गये थे और पास की खिड़कियों से बाहर देखने लगे थे।

मुझे हॉनोलुलू से फ़्लाइट बदल कर कॉन्टिनेन्टल एयरलाइंस से लॉस तक जाना था। उसमें मेरा रिज़र्वेशन तोक्यो से नहीं हो पाया था। ऐसे कई यात्री, जिनकी सीटें रिज़र्व नहीं थीं, जहाज़ से उतरते ही ट्रैंज़िट काउन्टर की ओर तेजी से भागे। हमें बताया गया कि कॉन्टिनेन्टल का काउन्टर इमारत के परले छोर पर है, जो यहाँ से काफ़ी दूर है। बीस मिनट बाद यहाँ से एयरपोर्ट बस जाएगी। उतनी देर रुककर मैं खाली सीटें भर जाने का ख़तरा नहीं उठा सकता था इसलिये एक हाथ में सूटकेस और दूसरी ओर के कंधे पर थैला लटका कर पैदल चल पड़ा। एम्फ़ीथियेटर जैसी अधगोल, बाहर की ओर खम्भों की कतार वाली सेमेंट की सादी इमारत में बड़ी देर तक चलते जाने पर भी उसका छोर नहीं आ रहा था। सारे लम्बे बरामदे में केवल मैं था। दूसरे यात्रियों ने पहले से रिज़र्वेशन करा लिये होंगे और वे आराम से बस से आ रहे होंगे। मैं अपनी असमर्थता पर मन ही मन खीझ रहा था। लम्बे बरामदे में ही नहीं, शीशे के बड़े-बड़े दरवाज़ों के पीछे दूसरी एयरलाइन्स के साइनबोर्डों के नीचे के काउंटरों तक निर्जन थे। वैसी औचट जगह में मुझ जैसे अकेले मुसाफ़िर का कत्ल भी किया जा सकता था, दोपहर में। तभी पीछे से पैरों की आहट सुनायी दी और सूखी घास जैसी दाढ़ी वाला एक दुबला-पतला बूढ़ा, काला पैंट और आधी बाँह की सफ़ेद कमीज़ पहने तेज़ कदमों से चलता हुआ बगल से गुज़रा।

—कॉन्टिनेन्टल ?—उसने बगल से गुज़रते हुए पूछा।

—हाँ।

वह आगे बढ़ गया। वह मुझसे पहले काउंटर पर पहुँच जाना चाहता था। उसके पास सामान था, चमड़े का सिर्फ़ एक अधखाली थैला, जो उसने कंधे से लटका रखा था, और काले फ्रेम का मोटा चश्मा, जो उसकी नाक पर था।

कॉन्टिनेन्टल एयरलाइन्स के काउंटर के आगे भीड़ थी लेकिन खिड़की के सामने लगी कुर्सियों में चुपचाप बैठी, गमलों में लगे लम्बे काले फ़ीनिक्स के पौधों और काँच की खिड़की के बाहर सूनी हवाई पट्टी को चुपचाप देखती हुई। खिड़की के चौखट में एक दौड़ता हुआ हवाई जहाज़ आया और ज़मीन से उठ कर पीले आसमान में धुएँ की काली लकीर छोड़ता हुआ उड़ गया। सुनहली धूप के टुकड़े खिड़कियों के नीचे संगमर्मर के साफ़ फ़र्श पर लेटे थे।

काउन्टर के आस-पास सिर्फ़ तीन-चार यात्री सीट पाने के लिये मन में बेचैन

के लिये बैंक जाना होता है। हर वक्त उसके मुँह में सिगरेट लगा रहता है। पचहत्तर साल की उम्र में भी वह कितनी शराब पीती है—और दूसरों को भी पिलाती है अगर वह उसके पास बैठ कर उससे बातें करे तो! सारे किरायेदारों के सो जाने के बाद जब उसे बात करने वाला कोई नहीं मिलता तो वह टी वी देखना शुरू करती है और अंतिम प्रोग्राम ख़त्म होने तक उसके सामने बैठी रहती है। पिछले बीस-पचीस मिनट से फ़ोन पर ज़ोर-ज़ोर से बात कर रही है।

जब मेरे सारे बाल कांस की तरह सफ़ेद हो जाएँगे और चेहरा उसके चेहरे की तरह झुर्रियों से भर जाएगा तब मेरे बारे में दूसरे क्या सोचेंगे। इस समय तो मुझे अच्छा लगता है जब कोई मुझे सुन्दर कहता है।

मुझे अच्छा लगा था जब उस चित्रकार ने कहा कि वह मेरी एक ऑयल पेंटिंग बनाना चाहता है। शाम को मैं उसके घर गयी थी। शहर बाहर की एक बस्ती में। सीढ़ियाँ उतर कर काईदार आँगन के बाद उसका खण्डहर घर—घर क्या, सिर्फ़ एक छोटा-सा कमरा, जिसमें दीवारों पर और छत से संसार भर से जमा की गयी चीज़ें टँगी थीं। टेबुल पर चीनी मिट्टी के छोटे-बड़े बर्तनों और ताँबे-काँसे की मूर्तियों के अंबार के बीच लकड़ी के स्टैंड पर सफ़ेद प्लास्टर का मुँदी आँखों वाला एक मुखौटा था। उसने बताया, वह एक ऐक्ट्रेस का डेथ-मास्क था जो उसने तैयार किया था।

वह मुझे अपने सामने बैठा कर घुटनों पर सादा कैनवस टिकाये देर तक मुझे देखता रहा। अंत में उसने कहा कि वह मेरी पेंटिंग नहीं बना सकता। हो सकता है कि उस झाड़-झंखाड़, टूटी मूर्तियों और मौत की छाया से भारी उस माहौल से मैं ही अभिभूत हो गयी होऊँ और मैंने उसे निराश किया हो।

कमरे के आगे के टेरेस पर धूप आ गयी है पर गमलों तक अभी नहीं पहुँची है। जिसके लिये मैंने यह सब किया है वह छः दिन बाद आयेगी। वह पिछली बार आयी थी तो उसने बड़ी प्यारी-प्यारी बातें कीं। इस्तरी से मेरा एकमात्र किमोनो जला दिया। मैंने उसे दूसरी बातों में बहलाने की कोशिश की लेकिन वह बराबर उस किमोनो के बारे में अफ़सोस प्रकट करती रही। आसोल से आये एक दोस्त ने मुझे एक आम का तोहफ़ा दिया था। वह मैंने बेटि के लिये रख छोड़ा था। उसने उसे खा कर उसके बीज पर रंग और छोटी-छोटी सीपियों से एक गुड़िया तैयार की। फिर गुड़िया मुझे देती हुई बोली—ममीता, अब तुम इसे बेच सकती हो। मैंने पूछा कि क्यों। तो उसने कहा—तुमने कहा था न, कि इस बार तुम जापान का किमोनो बेच कर कमरे का

किराया चुराओगी लेकिन वह किमोनो तो मुझसे जल गया। —सुनकर मेरी आँखें मोम की तरह पिघलने लगीं!

आजकल यहाँ अपने देश का एक नौजवान आया है, जो साइकिल पर दुनिया का चक्कर लगाने निकला है। मैंने उसे फ्लोरीडा में देखा था। उसे अपने घर लायी। शाम तक वह यहीं रहा। शाम को उसने पूछा—गाना सुनोगी? फिर वह अपने साथ लाया गितार निकाल कर बजाने लगा। अनातानि सासागेता कोतोवा नो नाका नि उसो वा नाइ के दो। ● मेरी आँखों में आँसू छलछला आये।

मुझे अपने अलावा हर कोई सार्थक लगता है। मेरे पास किसी को अच्छा लगने लायक कुछ भी नहीं रहा।

अगले महीने में अट्ठाईस साल की हो जाऊँगी। खुद मुझे विश्वास नहीं होता। लगता है कि मैं एक बार पत्नी और माँ बनने के बाद भी वर्जिन रह गयी हूँ।

पतझर का मौसम शुरू हो गया है और हवा में खुनकी आ गयी है। लेकिन पालो वोरदो में ऊपर से लेकर नीचे तक फूल ही फूल हैं। अवेनिदा लेबर्तादोर और पालेर्मो झील के किनारे फूल, वसन्त शुरू होने के मौसम की तरह, जैसे कि पागल हो कर फूट पड़े हैं। वहाँ आजकल कौन-सा मौसम होगा? मैं इतने थोड़े से वर्षों में वहाँ के मौसमों के महीने तक भूल गयी हूँ। वह देश एक स्वप्न की तरह हो गया है मेरे लिये, जिसे मैंने बहुत समय पहले देखा था।

पिछली बार अस्पताल में बिस्तर पर पड़ी थी। एक रात मेरे सीने में अचानक तेज़ दर्द उठा। मैं खड़ी हुई कि किसी नर्स से कहूँ लेकिन बंद दरवाज़े के आगे बेहोश होकर गिर पड़ी। होश वापस आते समय मैंने देखा था, रेल की काली लाइन और डूबते हुए सूरज की लाली से भरा हुआ क्षितिज! क्या उसी दृश्य जैसा अंत होगा मेरा?

लॉस ऐंजेलस में कस्टम्स की कतार में अपने से कुछ ही पीछे उन्हें खड़ा देख कर मैं प्रसन्नता से चौंक गया। कल रात—या वह परसों की रात थी—सांत्रो से उड़ने के बाद उन्हें बियर का टिन खोल कर देते हुए मैंने फूहड़पन का परिचय दिया था। क्यू से निकल कर उनके पास गया और उनसे क्षमा माँगी।

● "मेरे समर्पण-वाक्य में असत्य नहीं है कहीं भी, फिर भी..."

वह मुझे देख कर मुस्कराने लगीं। उन्होंने मेरा हाल पूछा। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया।

—सही सलामत आप पहुँच गये?—उन्होंने मुस्कराते हुए पूछा।

—मुझे सही सलामत बुएनोस आएरस तक जाना है।

—पर आज तो शायद कोई फ़्लाइट नहीं है।

—जी। आज नहीं कल। सुबह वारिग की फ़्लाइट से।

—कल सुबह!—उन्हें आश्चर्य हुआ—कल की वारिग की ही फ़्लाइट में तो मुझे भी जाना है। पर आप, सुबह तक?

—एक दोस्त है। वह शायद आयी होगी। नहीं आयी होगी तो रात यहीं लांज में बिताऊँगा।

नमी लाइन में खड़े लोग एक कदम आगे बढ़े। मैं अपनी जगह पर आ कर खड़ा हो गया।

मि आ गयी थी और दरवाज़े से ज़रा हट कर टेलीफ़ोन बूथों के बगल में खड़ी थी। मुझे दूर से देखते ही उसने एक बाँह उठा कर इशारा किया। वह ब्लाउज़-पेटिकोट जैसा ड्रेस पहने थी और सिर पर छींटदार रेशमी स्कार्फ़ बाँधे थी। वह पहले से गोरी, दुबली और सुंदर लग रही थी।

—दो वर्ष बाद तुम्हें देख रहा हूँ।—पास आने पर मैंने कहा।

—नहीं। ढाई वर्ष बाद, अगर क्यूशू यात्रा के दिन शामिल कर लो तो। उसकी तुम्हें याद नहीं!—वह मुस्कराते हुए बोली।

हम एक साथ हँस पड़े।

तब वह अकेली जापान घूम रही थी। एक ट्रेन पर हमारी मुलाकात हुई थी और संयोग से हम दोनों नागासाकि जा रहे थे। बाद में भी हमने दक्षिणी जापान की यात्रा साथ-साथ की। कागोशिमा से समुद्र के किनारे-किनारे नीचे की ओर जाते हुए उसने अपनी बेढंगी हरकत से मुझे शर्मिन्दा किया था। वह एक छोटा-सा गाँव था और उसका नाम शायद अकिमे था। उससे कुछ ही दूर पर पश्चिमी चीन सागर में एक छोटा-सा द्वीप था। हम वहाँ जाना चाहते थे लेकिन तैयार होकर दस बजे के करीब बंदरगाह पर पहुँचे तो मालूम हुआ कि वहाँ दिन में सिर्फ़ एक बार जहाज जाता है और वह सुबह सात बजे चला गया है। खीझ कर अपना सामान एक दूकान में जमा करके हम समुद्र के किनारे जाने वाली कच्ची सड़क पर पैदल चलने लगे।

गाँव के काफ़ी आगे सड़क किनारे एक जगह काँटेदार तारों का घेरा बना था और उस पर लाल हरफ़ों की एक इबारत टँगी थी।

—वह क्या लिखा है?—उसने पूछा।
—डायनामाइट। लिखा है कि छुएँ नहीं।
—डायनामाइट का यहाँ क्या काम?
—सड़क बनाने के लिये पहाड़ तोड़ने के काम आता होगा।
—पर यहाँ तो कोई नहीं है।
—तो क्या हुआ।—मैंने सोचा, वह उसे छूना चाहती है।
—तो हम समुद्र में नहा सकते हैं।
—लेकिन हमारे पास बदलने के कपड़े नहीं हैं।
वह ज़िद करने लगी।
—फिर भी हम नहा सकते हैं। यहाँ कोई देखने वाला नहीं है।
हम सड़क के बगल की ढाल उतर कर पेड़ों के नीचे से जाती पगडंडी पर आ गये। समतल पर आने के बाद पगडंडी धान के खेतों के आगे आकर खत्म हो गयी थी—और वह न जाने कहाँ लापता। अभी तो वह मेरे आगे-आगे जा रही थी।
मैंने उसे आवाज़ दी। उसका जवाब कहीं पास से ही आया लेकिन वह दिखायी नहीं दी।
—मैं यहाँ हूँ।
दो-तीन सीढ़ीदार खेतों के नीचे उसका सुनहले बालों वाला सिर दिखाई दिया।
खेतों के बाद रेत की बजाय गोल-गोल पत्थरों का समुद्री किनारा था।
—यह देखो, हम यहाँ नहा सकते हैं।
सचमुच, वहाँ से दूर-दूर तक कोई बस्ती नहीं दिखायी देती थी।
—लेकिन उसके बाद बदन धोने के लिये नल का पानी यहाँ कहीं नहीं मिलेगा।
वह अनसुनी करती हुई ऊपर के कपड़ों के नीचे से अंदर के कपड़े उतारने लगी।
—तुम भी क्यों नहीं आ जाते?—वह पानी में उतरती हुई बोली—वापस जा कर गाँव के किसी घर में हम मीठे पानी से नहा लेंगे।
—लेकिन तुम जानती हो कि जापानी घरों में फौवारा वगैरह नहीं होता।
—परवाह नहीं। आओ।
उसी रास्ते वापस जाते वक्त, जहाँ सड़क पक्की की जा रही थी, दोपहर की छुट्टी के बाद मजदूर लौट आये थे और बुलडोज़रों के साथ काम कर रहे थे।

हमें आते देख कर कई मजदूरों ने कुदालें चलाना बंद कर दिया। हम उनके बगल से गुजर रहे थे तो एक जवान मजदूर ने हँसते हुए मुझसे कहा—इस लड़की का जिस्म सुन्दर है।

—तुम्हें कैसे मालूम।

उसने सड़क के किनारे ऊँची तिपाई पर रखी हाथ भर लंबी दूरबीन की ओर इशारा करते हुए कहा—इससे। दोपहर की छुट्टी में खाना खाने के बाद हम सब बारी-बारी से तुम दोनों को इससे देखते रहे।

उसके साथी भी मुस्करा रहे थे।

—क्या कह रहा है वह?—सि ने मुझसे पूछा।

मैंने उसे बताया तो वह सिर पीछे फेंकती हुई जोर से हँस पड़ी और उस नौजवान से हाथ मिलाती हुई बोली—थैंक यू वेरी मच!

—तुम शहर में ही रहती हो न।—मैंने उससे पूछा।

—नहीं। अपना घर मैंने छोड़ दिया है। वहाँ माँ-बाप एक दूसरे से दिन भर और कभी-कभी तो रात भर लड़ते रहते थे। मैंने उन दोनों से कई बार कहा कि अगर वे अलग हो जाएँ तो दोनों के लिये भला होगा लेकिन वे एक दूसरे को छोड़ने के लिये भी तैयार न थे इसलिये मैंने उन दोनों को छोड़ दिया। तुम यहीं ठहरो, मैं कार निकाल कर लाती हूँ।

वह सड़क पार करके पार्किंग की ओर चली गयी। कार-पार्क के पीछे पाँचों उंगलियों के सिरों पर टिके पंजे जैसा सेमेन्ट का एक स्मारक था। बाद में उसने बताया कि वह लॉस ऐंजेलस इंटरनेशनल एयरपोर्ट का प्रतीक चिह्न था।

फुटपाथ के किनारे लगी बेन्चों पर तीन मोटी महिलाएँ अपने आगे जमीन पर छोटे सूटकेस रखे बैठी थीं और जोर-जोर से बातें कर रही थीं। वे शायद बस का इंतजार कर रही थीं।

—क्या आपकी मित्र नहीं आयीं?—उन जापानी महिला ने पीछे से मेरे बगल में आते हुए पूछा।

—वह आ गयी है। गाड़ी निकालने गयी है। आप, एक दिन कहाँ रुकेंगी?

—होटल में मेरा रिजर्वेशन है। होटल अभी फ़ोन किया है। कुछ देर में होटल की गाड़ी लेने आ जायेगी। मैं यहाँ से होकर तीन-चार बार आयी-गयी हूँ।—वह फीकी मुस्कराहट के साथ बोलीं।

मुझे याद आयी, उन्होंने बताया था कि उनके पति रियो में रहते हैं। लेकिन जेट से यात्रा करने के कारण दिमाग़ में समय की चेतना इस कदर गडमड हो

बहुत गाढ़ी पीली और वनस्पतियों का रंग कलछौंर काही। कुछ आगे जाने पर दाहिनी ओर गाढ़ा नीला समुद्र दीखने लगा। फिर रेत आकर पीछे गुजरने लगे। फिर खेतों के बीच में लाल या नीली टाइल की छतों वाले रिहायशी घर।

—मैं लेगूना में रहती हूँ। लेगूना बीच सारे कैलिफ़ोर्निया में सबसे खूबसूरत बीच मानी जाती है।

वह सीधी सड़क छोड़ कर दाहिने मुड़ी। उस रास्ते के दोनों ओर बस्ती थी। —लो, हम पहुँच गये।—एक दुमंज़िले छोटे से घर के सामने कार रोकते हुए वह बोली।

मैं उतर कर फाटक की ओर बढ़ा तो उसने मुझे रोक दिया—पहले मुझे जाने दो। डिक ने एक कुत्ता पाल रखा है। वह तुम्हें देखेगा तो भूँकेगा।

वह लोहे का जालीदार फाटक खोल कर अंदर आयी और पर्स से चाभी निकाल कर घर का दरवाजा खोलने लगी।

—इस वक्त घर में कोई नहीं रहता। लड़कियाँ देर से लौटती हैं। डिक का कुछ ठीक नहीं, किस समय वह घर में रहेगा, किस समय आवारागर्दी करेगा। उसका कुत्ता नहीं है। लगता है, कुत्ते को समुद्र के किनारे टहलाने ले गया है—कुत्ता उसे टहलाने ले जाता है या वह कुत्ते को, कहना मुश्किल है।—उसने हँसते हुए कहा। घर आ कर वह खुश दिखायी देती थी—अंदर आ जाओ। मेरा कमरा ऊपर है।

सामने के कमरे में एक सोफ़ा सेट लगा था। खाली कमरे में सोफ़ा सेट देख कर लगता था जैसे कि गृहस्वामी अभी कुछ ही देर पहले उठ कर बाहर गया होगा।

उसने अपने कमरे में आते ही कूलर चालू किया और खिड़की का पर्दा खींच कर एक ओर करते हुए बोली—

—यहाँ से समुद्र का किनारा और समुद्र दिखायी देता है।

बंद खिड़की के काँच के दूसरी ओर जहाँ तक निगाह जाती थी, नीले सागर का फैलाव था और जहाँ पर नीला आकाश झुक कर नीले सागर में डूबता था उसके कुछ ही ऊपर सूरज का सिंदूरी गोला डबडबा रहा था।

किनारे के छिछले समुद्र में सफ़ेद-लाल-नीली-गुलाबी-काली बिकिनियाँ पहने सात-आठ लड़कियाँ दौड़ती हुई लाल बिकिनी वाली लड़की का पीछा कर रही थीं। उनके पैरों के नीचे से छींटों का झाग उठ रहा था और दिखायी देता था कि वे खिलखिला कर हँस रही थीं। वे खुले मैदान में दौड़ लगाने वाले जंगली

घोड़ों की तरह लगती थी। उनसे थोड़ा हट कर सूखी बालू पर एक जोड़ा छुट्टियों के बल लेटा हुआ समुद्र की ओर ताक रहा था। पाँच लड़कियाँ एक झुंड में खड़ी थीं और बिकिनी में ढके थोड़े से हिस्सों के अलावा उनके बाकी नंगे शरीर के किनारे धूप की लकीर से चमक रहे थे। उनमें से एक लड़की अपना हाथ दूसरी ओर के कंधे के पीछे ले जाकर पीठ खुजला रही थी। छिछले समुद्र में अठखेली करने वाली लड़कियों में से गहरी नीली बिकिनी पहने लड़की किनारे की ओर आने लगी। उसकी बिकिनी एक ओर के कूल्हे की हड्डी के नीचे खिसक गई थी और वह दूसरी लड़कियों की बजाय नाटी होने की वजह से मोटी लग रही थी।

—तुम यहाँ के समुद्र में नहाओ तो तुम्हें अच्छा लगेगा।—मि ने कहा।

—मि, इस बार नहीं। लौटती बार तुम्हारे पास जरूर रुकूँगा। तब।

पीली धूप का एक टुकड़ा कमरे की 'एक दीवार के एक हिस्से पर पड़ रहा था।

—इस समय तुम बहुत थके होगे। जेट लैग, मैं जानती हूँ, कैसा होता है।

—हाँ। मैं सोना चाहता हूँ।

—असल में यह मेरा भी सोने का वक्त है। मैं सुबह तीन बजे उठती हूँ और सुबह छः बजे से दोपहर दो बजे तक नौकरी करती हूँ। सोने के पहले कॉफी पियोगे?

—नहीं। तुम पियो।

—आज कितने महीने, या कितने साल बाद मैं सूर्यास्त देख रही हूँ।—उसने खिड़की के बाहर समुद्र की ओर देखते हुए कहा—तुम बिस्तर में सो जाओ। मैं कॉफी पीकर किचन साफ करने के बाद सोऊँगी।

—हाँ मि, मैं सो जाता हूँ। तुमसे बहुत-सी बातें करनी हैं, कल करूँगा।

—कल सुबह मैं अपने साथ तुम्हें उठा लूँगी और एयरपोर्ट छोड़ आऊँगी। तुम्हें फ्लाइट से बहुत पहले वहाँ पहुँच कर इंतजार तो करना होगा लेकिन यहाँ किसी और को तुम्हें पहुँचाने की फुर्सत न होगी।

—मि, सुनो।

—सो जाओ। तुम बहक रहे हो।—उसने खिलखिला कर हँसते हुए कहा—मैं कल तुम्हें एयरपोर्ट तक छोड़ दूँगी।

—नहीं। वह बात नहीं।—मैंने प्रतिवाद किया लेकिन या तो वह वहाँ से चली गयी थी या यह कहने के बाद मैं लहरों के अटूट शोर के झरने के नीचे सो गया था—आआ! आआ! आआ! कानों के अंदर जो लगातार शोर करता हुआ

गिर रहा था जाआ आ आ !—वह सागर था। वह एक जेट हवाई जहाज का शोर था।

हम मकान के ऊपर की छत से उसे देख रहे थे—वह क्षितिज की ओर झुकता जा रहा था और जब वह लगभग आँख ओझल हुआ था तभी लाल-नीली आग का विस्फोट हुआ और भारी धमाका सुनायी दिया। विस्फोट के साथ काले-काले यात्री आसमान की ओर छितर गये। लेकिन वे नीचे नहीं गिरे बल्कि ऊपर उठने पर शुक्र कीटों की तरह हवा में तैरने लगे। हम अवाक उन्हें देख रहे थे। वे हमारे सिर के कुछ ही ऊपर से हवा में तैरते हुए हमारे पीछे की ओर उड़े जा रहे थे और अस्पष्ट सुनाई दे रहा था, वे कुछ कह रहे थे। तभी उनमें से एक नीचे गिरता हुआ आया और सफ़ेद गाउन छज्जे के कंगूरे से अटक जाने के कारण छज्जे से टँगा रह गया।

—आख़िर मैं एक तो सकी !—उसने लंबी साँस छोड़ते हुए अस्फुट शब्दों में कहा।

वह एक स्त्री थी और वेडिंग गाउन पहने थी और उसने दोनों हाथों में एक गुलदस्ता कस कर पकड़ रखा था।

नहीं। वह अँधेरे में सुनायी देने वाला समुद्री लहर का ही शोर था, जो न जाने कब बिस्तर में आकर लेट गयी थी और नींद से सो रही थी।

—सि ?—मैंने अँधेरे में हथेली से टटोल कर उसे छूते हुए पूछा तो मेरी हथेली उसके नंगे कंधे पर पड़ी। उसने नींद में इधर करवट ले ली।

दरवाजा खोल कर हताशा, मानसिक और शारीरिक थकान, कड़वाहट और अपाहिज होने के अहसास लिये अँधेरे घर में घुसी। तभी पैरों के पास पड़े एक लिफ़ाफ़े की ओर ध्यान गया। रोशनी कर के पढ़ने लगी। बरसों बाद अचानक होंठ काँपे और कलाई पर एक गर्म बूँद गिरी।

पूरे आठ साल हो गये बेटे को जन्म दिये। एकाएक उसके पैदा होने के दिन की याद आ गयी। वह मुझे एलीवेटर के सामने खड़ा दिखायी दिया था। मैं स्ट्रेचर गाड़ी पर लेटी थी और दो नर्सें उसे ठेल कर आपरेशन थियेटर की ओर ले जा रही थीं। उसने दूर खड़े-खड़े मुझे देखा। जब मुझे होश आया, मैं एक कमरे में बेड पर पड़ी थी और मुझे अपना पेट हल्का और एकदम खाली लग

रहा था। कुछ देर बाद नर्स आयी तो उसने बताया कि पेट के आपरेशन से बच्ची पैदा हुई है। छः दिनों तक नर्सों के अलावा कोई भी मुझसे मिलने नहीं आया। अपने घर वालों के आने की तो ख़ैर, मुझे आशा भी नहीं थी। लेकिन वह भी नहीं आया। नर्सों के आने पर मुझे बड़ी लज्जा मालूम देती थी—कि वे मेरे बारे में न जाने क्या सोच रही होंगी। मैं बिस्तर पर पड़ी-पड़ी खिड़की से दिखायी देने वाले आकाश के टुकड़े को रंग बदलते देखा करती थी। सातवें दिन वह आया था, अस्पताल का बिल चुका कर मुझे घर वापस ले जाने को। मैंने उससे कुछ भी नहीं कहा।

एक दिन जब हम नितान्त अकेले रह जाते हैं, ये छोटी-बड़ी यादें ही तरह-तरह के रंग लपेट कर हमारे पास आती हैं और दुर्लभ वस्तुओं की तरह, अर्चनों की तरह लगती हैं।

उससे भी अद्भुत यह है कि सब-कुछ के बाद भी हम जीते हैं।

वर्तमान मुझे कुछ नहीं देता। यहाँ कुछ नहीं होता। आश्चर्य किसी बात पर नहीं होता। नयी कोई बात नहीं होती। हर घटना पहले से ही सारी पैदा होती है।

मैं थकती जा रही हूँ। लगता है कि मेरा सेक्स काट कर अलग कर दिया गया है। मैं कुएनोम आश्रम से बाहर कहीं भी नहीं जा सकती—पालेर्मो लेक तक भी तो नहीं। और वह हिमपात और जमी हुई झीलों तक के अपने सपने पूरे कर लेता है। कितने वर्ष हो गये, मैंने हिम नहीं देखा।

उसे बेटि के जन्मदिन की याद रही, मुझे बहुत अच्छा लगा। क्या उसे कभी इतनी सुविधा हो सकेगी कि वह यहाँ आ सके। पिछले सप्ताह मैंने बेटि को उसके बारे में बताया तो उसने मुझसे एक अटपटा सा सवाल किया, जिसका उत्तर मैं न दे सकी।

—सुनो, मैं अभी एक डरावना सपना देख रहा था।

वह जाग कर कुछ देर तक मेरी बात सुनती रही फिर उसने बाँह में दाँत काटते हुए कहा—मैं रात को भी सपना नहीं देखना चाहती।—और मुझसे लिपटने लगी।

मैं उसकी छाती, कमर और जाँघ सहलाने लगा।

—मूर्ख कहीं के !—उसने अलग होते हुए तेजी से कहा।

मैं मन में उसे जगाने के लिये पछताने लगा और उसके सिर के बालों के अंदर उँगलियों से धीरे-धीरे सहलाने लगा।

—तुम मेरी सारी देह को अपने होंठों से छू सकते हो, तुम मेरे होंठ चूम सकते हो फिर तुम अपने शरीर का सिर्फ़ एक हिस्सा क्यों बचा रखना चाहते हो, जब कि हम एक साथ एक बिस्तर पर सो रहे हैं।

—सि, तुम नहीं जानती हो। तुम समझती क्यों नहीं हो ?

—जापान में जब हम एक साथ थे तब तो तुमने कभी एतराज नहीं किया था।

—सि, तुम नहीं समझ सकती हो।

कुछ देर तक वह करवट बदलती रही फिर उठ कर टेबुल तक गयी और वापस आकर बिस्तर में लेट गयी।

—दो बजे हैं। एक घंटा और है।—वह बोली—मुझे अफ़सोस है। मैं तब नशे में थी।

मैं उसके सिर के बाल फिर सहलाने लगा। वे रेशम की तरह कोमल थे।

—सि, तुम्हारे बाल सुनहले हैं न। पर अँधेरे में मैं उन्हें देख नहीं सकता, सिर्फ़ महसूस कर सकता हूँ और मुझे अच्छा लगता है। क्या तुम अब भी मुझसे नाराज हो ?

उसने जल्दी से सिर झटक कर इनकार किया।

—तुम दक्षिण अमरीका क्यों जा रहे हो ?

—सि,—मैं उसे बताने जा रहा था कि उसने बीच में ही कहा—ओ, रहने दो।

लगभग एक घंटे बाद उसने उठ कर रोशनी जला दी और कपड़े पहनने लगी।

—ओह, सवा तीन बज गये ! आध घंटे के भीतर हमें चल देना होगा। बताओ, तुम सुबह क्या खाओगे ? मिसोशिरु और चावल यहाँ नहीं मिल सकता।

—जो भी तुम खाती हो।

—मैं सिर्फ़ एक कप कॉफ़ी पीती हूँ। तुम्हारे लिये सैंडविच बना दूँगी—देखूँ, अगर पावरोटी हुई तो। नहीं तो, वक्त रहने पर हम एयरपोर्ट पर खा सकते हैं।

—तो रहने दो। मैं भी सिर्फ़ कॉफ़ी पियूँगा।

—और सुनो, क्या तुम मुझे कुछ रक़म उधार दे सकते हो ?

—कितनी ? मेरे पास अधिक है भी नहीं ।

—दो सौ डॉलर । वह मुझे अपने लिये नहीं चाहिये । दो महीने हुए डिक का बाप मरा था तब डिक के ऊपर सात-आठ सौ डॉलर का कर्ज हो गया था। वह उसने अपने दफनाने के लिये जमा किया था और अकसर कहा करता था कि देखना है, वह या उसका बाप, कौन पहले मर कर उस रकम को इस्तेमाल करता है। उसने लगभग पूरा कर्ज उतार दिया है। सिर्फ दो सौ डॉलर अदा करना रह गया है। जब तुम वापस लौट रहे होगे, मैं तुम्हें वापस कर दूँगी या उसके बाद।

मेरे पास नक़द करीब एक सौ चालीस डॉलर थे। वे मैंने उसे दे दिये।

अपना सामान समेटते हुए मुझे थैले में रखी नैपोलियन ब्रांडी की याद आयी।

—मि, यह अधूरी भेंट है, तुम्हारे लिये। मैं कल रात को तुम्हें देना भूल गया था। लॉस पर उतरने के पहले एक एयर होस्टेस ने मुझे दे दी थी।

—पर आज तुम्हें फिर जरूरत तो होगी।

—रख लो। मुझे और मिल जाएगी।

हम घर से बाहर निकल रहे थे तो अलसेशियन कुत्ता मुझे देख कर भौंकने लगा।

—मैं डिक से नहीं मिल सका। अगली बार आऊँगा तो उससे जरूर मिलूँगा।

—अगर तुम लौटोगे, तो न !

—क्या तुम सोचती हो कि मैं वहीं रह जाऊँगा ?

—कौन जाने ! क्या तुम्हीं कह सकते हो ?

सागर-तट और सागर और आकाश और कैलिफोर्निया की पीली धरती, सब सपाट अँधेरे में डूबे हुए थे—सिवा लहरों के एक निश्चित सम पर टूटने की आवाज और कार की तेज रोशनी के नीचे से पीछे की ओर भागती काली सड़क के।

—अगर तुम्हारा मन हो तो तुम मेरी जाँघ पर सिर रख कर थोड़ी देर को सो जाओ।—वह कार चलाते हुए बोली।

—तो मुझे कुछ पहले जगा देना।

उसने लॉस ऐंजिलस एयरपोर्ट के सामने आकर मुझे हिला कर जगाया—देखो, मुझे काम पर पहुँचने में देर हो जाएगी इसलिये मैं तुम्हें यहीं उतार देती हूँ। वह, कार पार्क के दूसरी ओर एयरपोर्ट है।

—मि, मैं तुमसे कुछ कहना चाहता हूँ।—मैंने उतरते हुए कहा

—लौटती बार कहना।—वह हँस रही थी। उसने पीछे की सीट की ओर अँगूठे से इशारा किया—तुम अपना सूटकेश छोड़े जा रहे हो।

—हाँ, लौटती बार मैं फिर तुम्हारे साथ रुकूँगा। तब। जरूर।

आज रविवार है। चाहती हूँ कि आज मेरे घर कोई न आए और मुझे एक नया संबोधन चुनने के लिये अकेली छोड़ दे।

मेरा मन होता है कि आज शाम मुझे कोई अपने साथ घुमाने ले चले। हम कहाँ जाएँगे? तिग्रे द्वीप में लकड़ी के पुल पर बैठ कर पानी का धीरे-धीरे बहना देखेंगे? या कोस्तानेरा में बैठ कर बातें करेंगे? या घास पर नंगे पैर चलेंगे?

मिरता प्यानो बजा रही है। तीन फ़्लैट आगे से आती उसकी ध्वनि में कितनी उदासी भरी है।

हाँ, तुमने बताया नहीं, तुम मुझसे क्या बात करोगे, किस तरह करोगे। ग्रीक बार से लौट कर। खुले समुद्र में जा सकने से लाचार टूटे पुराने जहाज़ों को देखने के बाद। पेड़ों की छायाओं में बँधे जल को देख कर।

तुम और जल्दी आ सकते तो कितना अच्छा होता। तुमसे मिलने के लिये मुझसे कहीं ज्यादा आतुर बेटि है। रोज़ मुझसे पूछती है, अब कितने दिन बाकी हैं, जापान के मेरे दोस्त को आने में। वह कहती है कि तुम उसे स्कूल छोड़ने जाया करोगे—और उसे आइसक्रीम दिलाने। तो वह तुम्हारे लिये सुबह कॉफ़ी बनाएगी और तुम्हें अपना जिप्सी नाच दिखायेगी।

तुमसे मेरी एक ही प्रार्थना है कि तुम उसे खूब प्यार करो। वह ममतालु लड़की है लेकिन मेरे और अपने पिता के बीच तनाव में जी रही है।

हम तुम्हें लेने के लिये एयरपोर्ट आयेंगे। ग्यारह चालीस पर वारिग की फ़्लाइट आती है।

मेरे लिये वहाँ से कुछ भी लाने की आवश्यकता नहीं है। सिर्फ़ वह किमोनो लेते आना, जो तुमने खरीद लिया है। किमोनो पहने मुझे कितने वर्ष हो गये!

आजकल यहाँ बहुत गर्मी पड़ रही है। मैं और बेटि रात को सिर्फ़ पैन्टी पहन कर सोती हैं और दिन में भी घर के अन्दर सिर्फ़ पैन्टी पहने घूमती हैं।

रात एक बजे थे।

जहाज सीधा डेढ़ घंटे देर से पहुँचा था। यह फ्लाइट लॉस ऐंजिलस से सीधे सीधी आनी चाहिये थी पर जहाज बीच में मेक्सिको के अकापुल्को पर उतरा था, शायद इस वजह से देर हो गयी हो।

जहाज से ट्रांजिट लाउंज की ओर पैदल जाते हुए मैं अचानक चौंक गया और कदम बढ़ाते हुए उसके बगल में पहुँच कर उसे कनखियों से देखा। हाँ, यह वही बूढ़ा था, जो होनोलुलु एयरपोर्ट पर कॉन्टिनेन्टल के काउंटर की ओर जाते हुए मुझे बरामदे में मिला था—कंधे पर वही अधमाली थैला लटकाए, उसी काले पतलून और आधी बाँह की सफेद कमीज में—कमीज जरूर मैली हो गयी थी। उसका ध्यान मेरी ओर नहीं गया था इसलिये मैंने अपने कदम धीमे कर दिये। फिर भी मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि यह वही है।

दो नंबर के चौकोर दरवाजे के अंदर सफेद असरवाली टेबुल के आगे सोले के टोप लगाए दो निहत्थे सैनिक खड़े थे। वे आपस में बात करते हुए इस तरह मुस्करा रहे थे कि वे सैनिक होने लायक कतई नहीं लगते थे।

बेहद उमस वाली गर्मी की वजह से पीठ पर पसीना कपड़ों की पर्तों के नीचे कीड़े की तरह कुलबुला रहा था।

मैंने कंधे पर का थैला उतार कर उस खाली टेबुल पर रख दिया।

उन सैनिकों में से एक बातचीत को वहीं छोड़ कर टेबुल के पास चला आया और मुस्कराने लगा।

—मुचो कलोर!—मैंने कहा।

—कलोर, कालोर!—उसने सिर हिलाते हुए कहा। उसने और भी कुछ कहा लेकिन मैं उसकी स्पेनी समझ न सका।

होनोलुलु के हवाई अड्डे पर मिला वह बूढ़ा फिर गायब हो गया था। वह अचानक इस दूसरी जगह फिर प्रकट होकर मुझे चौंकाएगा जरूर, मैंने अपने मन में कहा।

ये सारे मुसाफिर आगे जाने वाले थे और शीशे की दीवार के भीतर वाले चमड़े की गद्दियों में धँसकर बैठे थे। उन कुर्सियों की विशेषता यह थी कि वे ठंडी नहीं थीं और छूने पर चिपचिप करती थीं।

इतनी उमस वाली गर्मी में चमड़े की कुर्सियाँ! क्योंकि इधर चमड़ा सबसे सस्ता होता है।

एकाध पंखा गुनगुनी हवा नीचे की ओर फेंक रहा था। मैं पंखे के नीचे से एक बार गेट के बाहर जाकर खड़ा हो गया। सामने खड़े हमारे [illegible] के नीचे

कई मैकेनिक अपने-अपने काम में व्यस्त थे और जहाज़ के पीछे रात का सूना एयरपोर्ट था।

वह पहले इसी लीमा में रहता थी। क्या था उस बस्ती का नाम, जिसके बारे में उसने अपने पत्रों में लिखा था! पर अब वह यहाँ नहीं रहती।

तब हफ़्ते और दिन नहीं बल्कि इतना कम समय बच रहा था कि किसी भी घड़ी की छोटी सुई एक पूरा चक्कर नहीं लगा सकती थी।

ओह, कितने साल, कितने महीनों और कितने दिन पहले से मैं इंतज़ार कर रहा था, सिर्फ़ यह बात कहने के लिये!

एक विशाल झरने के लगातार गिरने का शोर—लीमा से रिओ द जनेइरो की रात की फ़्लाइट का।

कहीं कुछ भी तो नहीं है, जिससे मैं डर रहा था। मैं महास्वार्थी हूँ। नहीं। कुछ आत्मकेन्द्रित।

दूसरी ओर की सीट पर पाँच-छः साल का एक जापानी बच्चा खड़ा था और अपने पीछे वाली सीटों पर बैठे दो अमरीकी यात्रियों से इशारों में बातें कर रहा था। हवाई जहाज़ जोर से हिल-डुल रहा था और सेफ़्टी बेल्ट बाँधने की हिदायत रोशन थी। बच्चे के बगल में उसकी माँ अपने एक गुठने के ऊपर दूसरा गुठना लाद कर उस पर दोनों हथेलियाँ तर-ऊपर रखे आगे की ओर झुकी ऊँघ रही थी।

—आबुनाइ यो!—मैंने बच्चे को आगाह किया।

मेरी आवाज़ सुन कर वह औरत जागी और उसने बच्चे की जाँघ के पिछले हिस्से पर तीन-चार थप्पड़ मार कर बच्चे को नीचे खींच लिया।

मुमकिन है कि उसके फूले हुए निचले होंठ और चार लहरदार पेट को देख कर मैंने उसे भूतपूर्व बार होस्टेस माना हो।

—यह औरत ज़रूर सान् पाओलो जा रही है, जहाँ क्यूशू से भाग कर आ बसा इसका पति खेती करता होगा। योनिगे!—वे जापानी जो कर्ज़ नहीं उतार सकते थे और उससे बचने के लिये रात के अँधेरे में गाँव से निकल कर ब्राज़ील या पेरू में जाकर खेत मज़दूरी करने लगते थे।

—आप क्या लेंगे?—एयर होस्टेस ने आकर पूछा।

मैंने उसके चेहरे की ओर देखा। वह मुझसे नहीं, मेरे बगल वाली सीट पर बैठे यात्री से पूछ रही थी।

—और तुम भी !

—हाँ।—उसने अपने होंठों पर एक उँगली रख कर धीमी आवाज़ में

—जापानी शाही ख़ानदान की एक प्रिंसेस रिओ जा रही हैं।—कहते हुए

र मुस्कराने लगा।

—ज़रा रुको, मैं अभी आया।

लौटते समय उसे देखा। वह बुझी हुई बत्तियों के नीचे अपनी सीट पर तना

बैठा था।

—शाही ख़ानदान की एक प्रिंसेस रिओ कार्निवल देखने जा रही हैं,—उसने

—मैं उनके साथ हूँ, एस्कार्ट। और तुम ?

—मैं भी जा रहा हूँ।

—कार्निवल देखने ?

—नहीं। रिओ से आगे।—उल्टी की खट्टी महक नथुनों में भरी थी।

मैं आगे बढ़ रहा था तो उसने एक हथेली ऊपर उठा कर बाई-बाई किया।

वह बच्चा अपनी सीट पर बैठा अब भी जाग रहा था और अपने दोनों

ायों की उँगलियों को उलझा कर चुपचाप खेल रहा था। उसकी माँ पीला

कंबल कंधे तक ओढ़ कर नींद में सो गयी थी।

इस वक्त वे दोनों क्या कर रही होंगी—मतलब वे दोनों, एक बिस्तर में

अधनंगी सोयी, नींद में एक दूसरे को लातें मार रही होंगी न !

सुख।

सुख की परिभाषा करने की भला क्या ज़रूरत है !

खिड़की के बाहर महरूनी रंग की एक टेढ़ी रेखा उभर आयी थी। काले

करने में इंद्रधनुष उगने की तरह सुबह की !

उसे क्या कहते हैं ?—हाँ, समय और काल, जिसमें अन्तराल होते हैं,

कोटरों की तरह बड़े और स्पंज के छेदों की तरह बारीक। इस विश्वास को

तरह कि नीचे धरती है, जिसमें न जाने कितने शहर हैं और हर शहर में न

जाने कितने घर हैं, उन घरों में न जाने कैसे लोग रहते हैं। पर उन सब से

क्या ! मैं जानता हूँ एक, सिर्फ़ एक कमरे में होने वाली सुबह की रोशनी को,

जो मेरे मन के अंदर और एक प्रपात में इंद्रधनुष की तरह उगती है !

कपोतो के आगे, ओओहारा के पहाड़ पर मैंने देखा था, दोपहर को वर्षा

की फुहार में, एक-दो-तीन इंद्रधनुष उगे हुए थे और वे इंद्रधनुष इतने पास थे

कि लगता था कि सिर्फ़ आठ-दस कदम आगे चल कर सबसे पास वाले इंद्रधनुष

के नीचे खड़ा हुआ जा सकता है।—या कि मैं तीन इंद्रधनुषों के एक साथ खिलने

का सपना देख रहा था, प्रवास में से एक सुबह के उगने का सपना, जो उस समय मेरे दिल में था।

कल तुम्हारी दूसरी चिट्ठी मिली। बेटि तुम्हारे आने की बात जानकर इतनी खुश है कि उसका कहना है कि उस दिन वह मेरे साथ ऑफिस न जा कर घर में रहेगी और तुम्हारे आने का इंतज़ार करेगी। मैं दोपहर के बाद ऑफिस से छुट्टी लेकर एयरपोर्ट तुम्हें लेने आ जाऊँगी—मैं और बेटि। एहतियात के तौर पर तुम्हें ऑफिस का फोन नंबर लिख देती हूँ।

यदि छुट्टी न मिलने के कारण मैं एयरपोर्ट न पहुँच सकूँ तो तुम टैक्सी से मेरे घर आ जाना। बुएनोस आएरस में जगह ढूँढना बहुत आसान है। यदि सबवे से आना तो अलेम से। वहाँ से आठवाँ स्टेशन है, जहाँ तुम्हें उतरना है। मेरा मकान स्टेशन से ढाई ब्लाक पर है! तुम मेरे फ़्लैट के ऊपर वाले फ़्लैट में मेरा नाम बता कर शाम छः बजे तक बैठ सकते हो। तुम्हें यह सब करने की ज़रूरत न होगी। मैं एयरपोर्ट पहुँच जाऊँगी।

तुम्हारे आने को अब कितने दिन रह गये?

बेटि क्रिसमस पर अपने पिता के साथ रहेगी। मैं उस दिन कुछ मित्रों के साथ तिग्रे द्वीप में रहूँगी। ट्रेन, फिर बोट से एक दिन का रास्ता है।

यह पत्र पाते ही मुझे लिखो कि तुम किस तारीख़ को यहाँ पहुँच रहे हो।

—क्या रिओ से बुएनोस आएरस जाने वाली फ्लाइट इस फ्लाइट के आने का इंतज़ार कर रही होगी?—मैंने एयर होस्टेस से पूछा।

वह जहाज़ लीमा से ही डेढ़ घंटे लेट उड़ा था, फिर अन्देस पर विपरीत हवा के कारण एक घण्टा और पिछड़ गया था।

—हम अभी कुछ नहीं बता सकते हैं।—उसने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—आप उतरने पर पता करें।

रिओ पहुँचने में पैंतालीस मिनट की देर थी।

शाम के ये चंद घंटे ऐसे होते हैं जब बेचैनी बहुत बढ़ जाती है। फिर रात होने के साथ-साथ कम होने लगती है।

ऐसे समय में अपने से पूछे जाने वाले नये-नये सवाल पैदा होने लगते हैं। जन्म से लेकर वर्तमान तक के बारे में। उनमें से कौन-सी मैं हूँ—वह जो थी या यह जो है। मैं यहाँ इस कमरे में क्यों हूँ। लेकिन ये सवाल भी मुझे झकझोरते नहीं। मुझे कुछ भी नहीं झकझोरता। तिग्रे द्वीप पर क्रिसमस की शाम को वे हाथ में शैम्पेन के पेग लिये हँस-हँस कर बातें कर रहे थे—स्पेनी में। लेकिन उनमें से एक की भी मातृभाषा स्पेनी नहीं थी। जर्मन, ब्रासीलियन, आस्ट्रियन, चेक, डच और फ्रेंच। मैं उन्हें आपस में हँसने-बोलने के लिये छोड़ कर नदी के अंदर जाने वाली सीढ़ी की काठ की बाँह पर कंधा टिका कर खड़ी थी और काठ के पुराने पुल को देख रही थी, जिसे दोनों ओर से बंद कर दिया गया था।

इस समय मेरा सिर्फ़ एक बात का मन करता है—किसी ऐसे दोस्त के साथ बैठ कर बियर पीने का, जो मेरी भाषा समझता हो, जो मेरी बात समझ सकता हो और मेरे कुछ न कहने पर भी समझ सकता हो। मेरी दूसरी सारी आवश्यकताएं बेटि में सिमट गयी हैं। जिस दिन वह मेरे सीने से आकर लग जाती है उस दिन मुझे और कुछ नहीं चाहता। मैं उसके आने का इंतज़ार कर रही हूँ पर मुझे मालूम नहीं कि मुझे उससे कैसा व्यवहार करना चाहिये। वह या समय मुझसे जो भी करवाएगा उसे मैं स्वीकार कर लूंगी—अगर मुझे अपने को उसे देना हुआ तो वह भी। मैं बिलकुल कल्पना नहीं कर पाती कि वह मुझे किस रूप में ग्रहण करेगा।

आज मेरा मन नहीं था कि बेटि मुझे घर में अकेली छोड़ कर स्वयं अपने पिता के बुलावे पर स्विमिंग पूल जाए। लेकिन मैंने उसे रोका नहीं। मैं किसी को नहीं बांधती, कोई मुझसे बंधता भी नहीं।

रिओ में जहाज़ से उतर कर टर्मिनल की इमारत की ओर पैदल जाते हुए वही जापानी महिला फिर दिखायी दीं। मैंने उनके पास आते हुए उन्हें नमस्कार किया—मुझे सीट मिल गयी।

—मैंने रात को ही आपको देखा था जब आप किसी से बात कर रहे थे।—वह बोलीं—मैं उसके दूसरी ओर वाली सीट पर बैठी थी पर शायद अंधेरा होने की वजह से आपका ध्यान नहीं गया।

—आपको तो यहीं तक आना था न !

—जी हाँ। पति मुझे लेने आये होंगे और गेट के बाहर मेरा इंतजार कर रहे होंगे।—उनके चेहरे पर उनकी हार्दिक प्रसन्नता झलक रही थी—पर आपको तो दूर जाना है।

—बहुत दूर तो नहीं। यहाँ से और चार घंटे आगे, बुएनोस आएरस तक। लेकिन वह फ्लाइट चली न गयी हो तो।

मुझे टोकियो से रवाना होने के समय की फिर याद आयी।

—टोकियो से उड़ते समय के अपने व्यवहार के लिये मैं लज्जित हूँ।

वह तो हँसने लगीं।

—इसके लिये शर्मिन्दा होने की ज़रूरत नहीं।—उन्होंने हँसते हुए कहा तो लगा कि वह पिछले दिनों की अपेक्षा प्रसन्न और आत्मविश्वस्त हो गयी हैं।

—मैंने आपको अपना नाम तो नहीं बताया।—मैंने उन्हें अपना नाम बताया तो उन्होंने एक बार सिर झुका कर नमस्कार का उत्तर दिया और अपना नाम बताया।

—आपके पति रियो शहर में ही रहते हैं?

—जी नहीं। पर मैं रियो में ही होटल में रहूँगी, एक-डेढ़ या दो महीने।—उन्होंने एक होटल का नाम बताते हुए कहा।

—तब तो आप रियो कार्निवाल भी देख सकेंगी। आज से शुरू हो रहा है।

—जी हाँ। पर वह तो मैं पहले भी एक बार देख चुकी हूँ।

हम एयरपोर्ट की इमारत के नीचे आ गये थे, जिसमें अलग-अलग मंज़िलों वाले यात्रियों के लिये अलग-अलग दरवाज़ों के ऊपर पीले तख्तों पर इबारतें लिखी थीं।

—आपके पति आपके इंतजार में होंगे।

वहीं से हम निकास दरवाज़े की ओर आ रहे थे।

—जी हाँ।—उन्होंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—अपना ध्यान रखियेगा।

लाउन्ज के भीतर के द्वार में, जापानी महिलाओं की टोपी के आकार की हल्के बादामी रंग की टोपी लगाये, दो एयर होस्टेसें खड़ी आपस में तेज़ी से बातें कर रही थीं। मैंने उनमें एक से बुएनोस आएरस वाली फ्लाइट के बारे में पूछा।—

—वह तो छूट भी चुकी होगी।—उनमें से एक ने उत्तर दिया—शाम को [illegible] की फ्लाइट के सिवा और कोई फ्लाइट नहीं है।

यह सब सुन फिर उन्हीं महिला के बारे सोचने लगा।

वह जहाज़ छूट जाने, रिओ की उमस वाली कड़ी गर्मी और बुएनोस आए-रस पहुँचने की जल्दी के कारण मैं झल्ला गया।

—पर मुझे आज वहाँ पहुँचना ही है।

—क्यों ? आज दिन भर आप कार्निवल देख सकते हैं।

—कार्निवल की ऐसी-तैसी ! मुझे बुएनोस आएरस जाना है। वहाँ मुझे लेने के लिये लोग एयरपोर्ट पर आ कर मेरा इंतज़ार कर रहे होंगे। यह देखिये, उसमें मेरा रिज़र्वेशन था।—मैंने अपनी एक मुट्ठी में पकड़ा हुआ टिकट उसे दिखाते हुए कहा।

दूसरी होस्टेस ने जो लगातार चुप रही थी, मेरा टिकट लिया और मुझे वहीं रुके रहने को कह कर चली गयी। उसके जाते ही वह नाटी होस्टेस भी, यहीं रुके रहियेगा कहती हुई दूसरी ओर चली गयी।

यदि इतनी दूर न होता तो मैं बस से या हिचहाइकिंग करके ट्रक से भी जा सकता था—लेकिन वैसे हफ़्ते भर ज़रूर लगते।

एक हवाई जहाज़ बेतरह शोर मचाता हुआ एकदम पास वाले रनवे पर से उठ कर छाजन की ओट में उड़ गया। सूर्य की बिन्दी उसकी पीठ और डैनों के ऊपर एक क्षण भर के लिये दिखायी दी थी। वह मालवाहक जहाज़ था क्योंकि उसका पेट फूला हुआ था और उसके बगल में खिड़कियों की कतार नहीं थी। अगर वह बुएनोस आएरस जा रहा होता और मुझे चढ़ा लेता तो—

एक नयी होस्टेस ने आकर मेरा नाम लेते हुए पूछा। उसके हाथ में मेरा टिकट था।

—हमने आपको सवा ग्यारह बजे की स्पेशल फ़्लाइट में जगह दे दी है। आपका सामान कहाँ है ?

—मुझे क्या मालूम। मेरे पास नहीं है।

वह मुस्कराने लगी और बोली—कोई बात नहीं, मेरे साथ आइये।

एक काउंटर के आगे आकर उसने फिर पूछा—आपका सूटकेस किस रंग का है।

ब्योरा सुन कर उसने फिर कहा—आप यहीं रहियेगा, कहीं जाइयेगा, नहीं। नहीं तो यात्रियों की इस भीड़ में आपको ढूँढ़ना मुश्किल होगा। अब मैं आपका सूटकेस खोजने जाती हूँ।

पैरों के नीचे काले सफ़ेद संगमर्मर के चौकों का फ़र्श था और बगल की पारदर्शी काँच लगी खिड़कियों से आने वाली धूप उसके पतले लम्बे हिस्से पर पड़ी थी।

काउंटर के पीछे आधी बाँह की सफ़ेद कमीज़ पहने एक मोटा पुरुष, खाकी वर्दी-टोपी पहने तीन होस्टेसों से पुर्तगाली में चुहल कर रहा था।

—आपके सूटकेस का रंग लाल नहीं है।—कुछ ही देर में उस होस्टेस ने वापस आकर कहा—कत्थई रंग का है। उस पर आप के नाम की पर्ची भी लगी है। अब मैं उसे बुएनोस आएरस जाने वाले प्लेन पर चढ़ाने जा रही हूँ। आप यहीं रुके रहिये।

मैं उसे धन्यवाद देना चाहता था लेकिन वह तुरंत मुड़ कर वापस चली गयी थी। मैंने उन चारों से पूछा—उस होस्टेस का क्या नाम है?

—मारिया।

स्टॉल पर कॉफ़ी पीकर वापस लौट रहा था तभी मारिया ने पुकारा। वह मेरा टिकट एक हथेली में लिये काउंटर के पीछे अकेली खड़ी मुस्करा रही थी।

—मारिया, आज मुझे बुएनोस आएरस पहुँचना ही है पर लौटती बार मैं रियो जरूर रुकूँगा।—मैं उससे कृतज्ञता प्रकट करना चाहता था लेकिन मुझसे कहते न बना।

—प्लीज़!—वह वैसे ही मुस्कराती हुई बोली।

—मैं तुम्हें तकलीफ़ पर तकलीफ़ दे रहा हूँ। मुझे लेने के लिये लोग बुएनोस आएरस एयरपोर्ट पर आयेंगे। पर वह फ्लाइट तो निकल गयी। वे परेशान होंगे। क्या किसी तरह उन्हें सूचना भेजी जा सकती है?

—क्या उनके घर में फोन है?

—कह नहीं सकता। पर शायद नहीं होगा। यह उनका पता है।

उसने पते की चिट ले ली।

—मुझे भरोसा नहीं है कि क्रूज़ेइरो वाले उन्हें केबिल भेज देंगे पर मैं कोशिश करके देखूँगी।

......उसका अनुरोध है कि तुम वह लाल-पीली कमीज़ पहन कर आओ, जो तुमने पिछले फोटो में पहन रखी थी।

मैं एयरपोर्ट पर तुम्हें मिलूँगी। पर क्या तुम मुझे पहचान लोगे? पहली मार्च को, ग्यारह चालीस पर, जब हम दस वर्ष बाद मिलेंगे?

नीली उजली धुंध के नीचे हरा जंगल धीरे-धीरे पीछे की ओर खिसकता जा रहा था। कुरितिबा—मैंने गोद में नक़्शा फैला रखा था—नीचे होगा। चारखानेदार खेतों की धरती। वह उरागुआइ होगा। उरागुआइ एक मुहल्ले या शहर का नाम नहीं, एक देश का नाम है। मिट्टी का रंग मटमैला लाल था, गेरू के रंग का। बायीं ओर एक चौड़ी नदी का मुहाना था—काही रंग के फैलाव में गुलाबी रंग की एक टेढ़ी-मेढ़ी लकीर। रिओ द ला प्लाता, उरागुआइ और बुएनोस आएरस के बीच बहने वाली प्लेट नदी। कितना लंबा-चौड़ा, हरा-भरा, समतल देश था वह! खेतों के अनन्त बूटों के बीच में पेड़ों का सिमटा हुआ झुंड और उसके आसपास तीन-चार घर। वे खलिहान की इमारतें नहीं होंगी, उनमें ज़रूर मनुष्य रहते होंगे। कैसी होगी उनकी शक्ल-सूरत, कैसे होंगे, किस रंग के, उनके सुख-दुःख?

—अलो!

मेरे बगल में बैठा यात्री मुझे ग़ौर से देखने लगा। उसने मुझे पागल समझा होगा।

वनस्पतियों की क्यारी के बीच एक गोल चक्कर था, जिसके गिर्द खिलौनों जैसे हवाई जहाज, एक-दो-तीन-चार खड़े थे। वह बुएनोस आएरस का हवाई अड्डा होगा, जहाँ वह इस वक्त बेटि के साथ आ गयी होगी—अगर उसे रिओ से केबिल मिल गया होगा तो। लेकिन वह गोल चक्कर और हवाई जहाज़ पीछे की ओर रेंगते हुए आँख से ओझल हो गये। एक लंबी सड़क। घर घरौंदे। दियासलाई की खड़ी डिबियों जैसे घर। एक बंदरगाह।

मैं बच्चों जैसे कौतूहल से आँख फाड़-फाड़ कर नीचे देख रहा था कि नीचे फैले इतने बड़े शहर में कहाँ हो सकती है वह बस्ती, और उस बस्ती में वह घर, जिसकी सातवीं मंज़िल पर जाने के लिये मैं अड़तीस घंटों से उड़ता आ रहा हूँ!

तभी हवाई जहाज के फ़्लैप नीचे की ओर लटक गये। रनवे के बीच की सफ़ेद पट्टी के टुकड़े पीछे की ओर उड़े जा रहे थे। हवाई जहाज़ थकी हुई उसाँस छोड़ कर रनवे पर दौड़ने लगा।

सीढ़ी के नीचे उतर कर मैं खड़ा हो गया और सामने की ओर देख कर मुस्कराने लगा। दूर पर टर्मिनल की एकहरी इमारत थी। छज्जे के किनारे लटकी, अपने परिचितों-मित्रों को लेने के लिये आये लोगों की कतार जेट

इंजन के शोर की परवाह न करते हुए हाथ हिला-हिला कर ज़ोर-ज़ोर से पुकार रही थी।

मैं वही कमीज़ पहने था, जिसे पहन कर आने का मैंने वायदा किया था ताकि वे मुझे आसानी से पहचान लें।

छज्जे के नीचे फूलों की गोल क्यारी के बीच में ताड़ का एक अकेला पेड़ था। मैं छज्जे के नीचे जाकर ऊपर छज्जे पर कतार में टँगे चेहरों को ध्यान से देखते हुए उसे ढूँढने लगा। उनके ठीक पीछे सूरज था इसलिए उनका सिर्फ सिलाउट दिखाई देता था।

अन्य यात्री इमारत के अंदर जा रहे थे।

—उसे केबिल समय से न मिला होगा।—मैंने सोचा। फिर भी अपनी शरम पर पर्दा डालने के लिये मुस्करा कर हाथ हिलाने लगा। छज्जे पर अब भी कुछ लोग खड़े रह गये थे और न जाने किसके लिये हाथ हिला रहे थे।

हो सकता है, वह उन्हीं में हो।

कस्टम्स में एक व्यस्त अधिकारी ने पासपोर्ट पर ठप्पा मारा—प्रवेश की छपहल मोहर, एनत्रादा।

दूसरे अफसर ने पूछा कि सूटकेस में क्या है और एक उँगली हिला कर बाहर के दरवाज़े की ओर जाने का इशारा किया।

बाहर तेज़ धूप में अस्थायी रेलिंगों की कतारों के ऊपर भीड़ लटकी थी और जब दरवाज़े से किसी का परिचित या संबंधी निकलता तो वह हाथ उठा कर हिलाते हुए उसे पुकारने लगता था। मैंने दोनों कतारों में खड़े व्यक्तियों को तीन-चार बार घूम कर गौर से देखा। वह उनमें नहीं थी।

भीड़ से कुछ ही दूर पर बिना ड्राइवरों की खाली टैक्सियाँ खड़ी थीं।

मेरे पास पेसो नहीं थे। थोड़े से अमरीकी डॉलर थे।

—तावसी?—एक व्यक्ति ने मेरे पास आकर पूछा।

—सी। नादा पेसो। दोलेरास नार्त अमेरिकानो।—मैंने ठिकाना बताया और पूछा—क्वान्तोस?

वह पचीस डालर माँग रहा था लेकिन बीस डॉलर पर राज़ी हो गया।

वह विदूषक लगता था। पहले मुझे चढ़ाने और उसके बाद सीट के ऊपर मेरे बगल में मेरा सूटकेस पटक कर रखने के बाद वह एक धुन गुनगुनाते हुए टैक्सी का चक्कर लगा कर अपनी सीट पर बैठ गया। उसने एक बार फिर पता पूछा।

—निश्चित है कि उसे केबिल नहीं मिला। पर मैं पहुँच गया।—मैं बहुत खुश था, इतना कि मुझे विश्वास नहीं हो रहा था कि मैं वहाँ पहुँच गया क्योंकि अभी आज सुबह तक मुझे लगता था कि मैं बुएनोस आएरस कभी न पहुँच पाऊँगा।

शहर की बस्ती पास आ गयी थी। एक जगह बस-स्टॉप की छाजन। उसके सफ़ेद साइन बोर्ड पर एक नाम लिखा था। शायद उस जगह का नाम। उसके कुछ ही हर्फ़ पढ़ पाया था कि वह पीछे निकल गया। वह एक पार्क के भीतर से होकर जा रहा था। घुमावदार रास्ते पर पाँच-छः अधनंगे किशोर सामने से दौड़ते हुए आ रहे थे, पीछे छूट गये। पेड़ों के एक घने झुरमुट के नीचे, सूखी पत्तियों की तरह बिछी धूप। एक और बस-स्टॉप की छाजन। उसके ऊपर के सफ़ेद साइन बोर्ड पर भी वही इबारत। शायद वह किसी चीज़ का विज्ञापन था।

—दूर है?—मैंने उससे पूछा।

वह सीटी बजा रहा था। उसने सीटी बजाना रोक कर उत्तर दिया—पास आ गया।

सड़क पत्थर के टुकड़ों की थी। उन पर दौड़ते हुए टायरों से भिन्न तरह की भारी घरघराहट पैदा होती थी। दोनों ओर की सभी दूकानें बंद थीं। उसने लिखा था कि इन दिनों कार्निवल की छुट्टी होगी और तीन दिनों तक सारी दूकानें-ऑफ़िस बंद रहेंगे। वह छोटे बिसातियों का बाजार लगता था। हर तीसरी-चौथी बंद दूकान के ऊपर क्यूरियो का साइन बोर्ड लगा था। उन दूकानों में पुरानी कला-वस्तुएं बिकती होंगी।

उसने ठिकाने पर लाकर टैक्सी रोकी, उतर कर मेरा सूटकेस फुटपाथ पर रखा, बीस अमरीकी डॉलर लिये, सैल्यूट किया और चला गया।

खुले फाटक के दाहिने ओर दीवार पर मकान नंबर लिखा था।

तुम नहीं जानते कि तुमने मेरा कितना बड़ा नुकसान किया है और किन बातों की ओर सोचने को धकेल दिया है।

फ़्लोरीदा, ओबेलिस्को, नुएवे द खूलियो, बोका—जिसे तुमने आँखों से ओझल रखा वह था अवेनिदा कोरिएन्तेस और इस इमारत की सातवीं मंजिल का डी फ़्लैट। ठीक है, तुम्हारा मन बुएनोस आएरस आकर उसका नक़्शा देखने का

था, तुमने अपनी इच्छा पूरी कर ली। मैं सिर्फ यह जानना चाहती हूँ कि मुझे यह लिखने की क्या जरूरत थी कि तुम ब्युएनोस आएरस में एक रात रह कर सुबह से पहले वापस चले गये।

पिछले माह मैंने अपनी बची हुई छुट्टियाँ ली थीं और वेटि को स्कूल छोड़ आने के बाद न जाने क्यों एक आश्चर्य का इंतजार मूर्ख की तरह करती थी। लेकिन ऐसा आश्चर्य जो दरवाजा खोलने पर मुझ में एकदम भर दे, मुझ जैसे अभागों की जिंदगी में नहीं आया करता।

क्या करोगे मेरी आवाज सुन कर। जिस दिन मेरे पास कहने को सुख की बातें होंगी, उस दिन टेप करके भेज दूँगी। अभी तो इस थकी हुई आवाज में सिर्फ मुसीबतें, परेशानियाँ और उदासी है। हर सुबह मेरे सामने दिन की एक चट्टान रख जाती है, जिसे सारी शक्ति से खिसका-खिसका कर परे हटाती हूँ। तब तक रात हो गयी होती है। अगली सुबह फिर एक नयी चट्टान। अपने को रोने से रोकती हूँ ताकि कमजोर होकर चट्टान ठेलने की ताकत न खो बैठूँ।

मैं आज प्लासा अवश्य जाऊँगी। वहाँ पेड़ों पर मुट्ठी-मुट्ठी बराबर कोपलें फूटी होंगी। बाहर इतनी धूप है मगर मेरे तन-मन में ठंड भरी हुई है। हर हालत में, अपनी उदासी में कर ही सही, प्लासा जाऊँगी। वहाँ धूप में लेट कर आकाश का नीलापन देखूँगी। हो सकता है, थोड़ी-सी धूप मेरे अंदर समा जाए। अगर यहाँ एक निर्जन पहाड़ी होती तो मैं धूप में कितना नहाती, निर्वस्त्र होकर। यह एक थके हुए प्राणी का सपना है, महज सपना!

मैं हँस रहा था।

तुम चालाक हो। बात बनाना तुम्हें खूब आता है। बताओ, मेरे घर के दरवाजे का रंग कैसा है।

मारिया ने मुझे और तुम्हें गर्मियों में मीरामार समुद्र-तट की अपनी कॉटेज में आमंत्रित किया है। चलोगे?

क्या तुम समुद्र से लौट आये?

कत्थई रंग के किवाड़ों वाले दरवाज़े के अंदर छोटा-सा गलियारा था। सड़क के दूसरे ओर की इमारत पर पड़ रही तेज़ धूप की हल्की चमक गलियारे के अंदर तक प्रतिफलित हो रही थी। बायीं ओर पुराने किस्म की जँगलेदार लिफ़्ट थी, जिसमें हल्का-सा वल्व जल रहा था।

लिफ़्ट सातवीं मंज़िल पर आकर झटके के साथ रुकी। जँगला खोल कर वाहर निकला और जँगला फिर वंद कर दिया। सामने पतला-लंवा अँधेरा गलियारा था। गलियारे में खामोश फ़्लैटों के वंद दरवाज़ों पर व्राइल अक्षरों जैसे लोहे के अंक खुदे थे। उसके फ़्लैट का नंवर भी टटोल कर पढ़ा और—वगल में घंटी का वटन था।

अंदर घंटी वजी। दरवाज़ा खुला। भीतर रोशनी जल रही थी। उसका एक हाथ तव भी दरवाज़े पर था—वह खुले हुए दरवाज़े में खड़ी थी। कुछ पलों तक वह एकटक देखती रह गयी।

—तुम!—वह आगे वढ़ कर मुझसे लिपट गयी।

कमरे के अंदर आकर भी हम एक दूसरे का चेहरा देर तक देखते रह गये। हम एक-दूसरे के कंधों को दोनों हाथों से कस कर पकड़े थे।

—तुम विलकुल वैसी ही हो!

—तुम भी विलकुल वैसे ही हो!

जव मैंने उसे पिछली वार देखा था, दस वर्ष पहले, तव की अपेक्षा वह कुछ 'वड़ी' हो गयी थी लेकिन उसका कुछ उभरा हुआ निकला होंठ और उसकी पुतलियों में चमक—

—सच, तुम विलकुल पहले जैसी ही हो।—मैंने फिर कहा।

—तुम वहुत उत्तेजित हो। मैं भी।—वह मुझे खींच कर कमरे में लाती हुई वोली।

—कितने वर्ष वाद?

—तुम्हें याद है?

—मुझे तो विश्वास नहीं हो रहा—

उत्तेजना में उसने स्पेनी में कहा—मुझे भी।

कमरे में एक कुर्सी पर एक मोटी-सी लड़की वैठी थी। मेरी निगाह पहली वार उस पर पड़ी तो वह उठ कर खड़ी हो गयी।

—मार्ता। —उसने हाथ मिलाते हुए कहा।

—हम अभी कुछ देर पहले एयरपोर्ट से लौटी है। इसके पास अपनी कार है। हमने ग्यारह-चालीस की फ्लाइट देखी। उसमें तुम नहीं थे। फिर हम दो-तीस वाली फ्लाइट का इंतजार करने लगे। उसमें भी तुम नहीं थे। मुझे लगा कि तुमने मुझे फिर परेशान करने के लिये—

—नहीं तो। रियो में एक फ्लाइट छूट गयी।

—लेकिन दो-तीस के बाद तो आज और कोई फ्लाइट नहीं थी।

—थी।—मैं हँसते हुए बोला—स्पेशल फ्लाइट! खास मेरे लिये। पर बताओ, वह कहाँ है।

उसके चेहरे पर एक हल्की-सी परछाईं आकर निकल गयी।

—वह रात को आयेगी। अपने पिता के यहाँ से।

—मुझे एक गिलास पानी पिलाओ।

—ओफ, हमने कितना इंतजार किया! —वह बगल के कमरे में से बोली—मुझे लगा कि अब तुम नहीं आओगे।

मुझे पानी भरा गिलास पकड़ाते हुए वह कुटिलता से मुस्कराने लगी—तुम औसाके पी कर आए हो।

—हाँ, सारे रास्ते भर। सफर के दौरान तबीयत न खराब होने देने के लिये।

—अब भी! पहाड़ी रास्तों पर बस की सवारी करने के पहले तब भी तुम औसाके पिया करते थे।

—अभी तुमने मंजूर किया था कि मैं बिलकुल पहले जैसा ही हूँ। वह रात को कितने बजे वापस आयेगी।

—नौ के करीब। आठ बजे लुइस ने आने को कहा है और उसके पहले मेरे ऑफिस का एक अधिकारी आयेगा। पर उसे मैं इससे फोन करवा कर मना कर दूँगी। मैं नहीं चाहती कि आज मेरे घर कोई दूसरा आए।

वह मार्ता को एक फोन नंबर बता कर समझाने लगी।

—इससे मेरी ओर से माफी माँग लो कि मुझे स्पेनी इतनी नहीं आती कि धड़ल्ले से बातें कर सकूँ। यह बुरा न माने।

—यह बुरा न मानेगी। —उसने मार्ता की कमर पर एक बाँह लपेटते हुए कहा—मार्ता मेरी सबसे प्रिय मित्र है!

फुटपाथ पर चलते हुए दूसरी या तीसरी दूकान के साइन बोर्ड पर नज़र पड़ी, क्यूरियो।

—इस बस्ती में कला-वस्तुओं की बहुत-सी दूकानें हैं।—मैंने कहा।

उसने समझा नहीं तो मैंने एक साइन-बोर्ड की ओर इशारा किया। वह हँसने लगी।

—यह कला-वस्तु की दूकान नहीं है। चमड़े की चीज़ों की दूकान है। यह स्पेनी शब्द है क्वैरो।

पास के चौरस्ते के एक कोने का रेस्तराँ खुला था।

—आओ, ऊपर चल कर छज्जे पर बैठेंगे। यहाँ बहुत गर्मी है।

छज्जे के कोने पर से नीचे का चौराहा दिखायी देता था। रात और शनिवार की छुट्टी की वजह से सड़क-फुटपाथ लगभग निर्जन थे।

कंधे पर तौलिया रखे एक बैरा टेबुल के बगल में आकर खड़ा हो गया तो उसने मुझसे पूछा—क्या खाओगे?

—मैं तो यहाँ की खाने की चीज़ों के बारे में कुछ भी नहीं जानता। मेरे लिये तुम तय कर दो।

—आज रात तुम खिचड़ी खा लो। फिर कल सुबह मैं तुम्हारे लिये [illegible] बनाऊँगी।

बैरा बारी-बारी से हमारे चेहरे देख रहा था। हमारी भाषा के कारण उसे आश्चर्य हो रहा होगा।

मुझे भूख लगी थी। मैंने और बेटि ने अपनी-अपनी प्लेट का खिचड़ी खा डाला लेकिन उसने कुछ कौर खाने के बाद प्लेट बगल में खिसका दी।

—अरे, तुमने तो सबका सब छोड़ दिया!

—आज मुझसे नहीं खाया जाएगा।—वह मुस्कराने लगी—तुम भूखे होंगे। तुम और बेटि मिल कर मेरी प्लेट का खिचड़ी खा डालो। मैं, बस, यह वाइन पियूँगी।

मैंने उसके गिलास में बढ़िया किस्म की लाल वाइन ढाल दी।

—ओह, इतनी सारी वाइन! मैं न पी पाऊँगी।

बेटि चुप थी, शायद हमारी भाषा से अपरिचित होने के कारण या शायद उसे नींद आ रही थी।

उसने वाइन का गिलास उठा कर बेटि के चेहरे की ओर देखते हुए उसे होंठों तक ले जाने के बीच कुछ कहा।

—क्या बात है?

—मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि तुम सामने बैठे हो।

—हाथ में चिकोटी काट कर फिर देखो।

—शायद तब भी विश्वास न होगा कि यह तुम्हीं हो। मुझे असंभव लगता था कि हम फिर कभी मिल सकेंगे।

उसने बिल चुकाया। कई तरह के रंगों के भिन्न-भिन्न नोट। मैंने तब तक ट्रैवेलर्स चेक नहीं भुनाया था और मैं उन नोटों को नहीं पहचान सकता था।

चौरास्ते के दूसरी ओर जहाँ किनारे की सड़क मरम्मत के लिये खोदी गयी थी, आने-जाने वालों की सहूलियत के लिये लकड़ी के पटरे रख दिये गये थे। उन पटरों पर चलते हुए उसने मेरी बायीं हथेली पकड़ ली।

—मुझे लगता है कि तुम वही नहीं हो जिसे मैं जापान पत्र भेजा करती थी।

—तो आज रात तुम्हें एक खत मेरे नाम जापान भेजना चाहिये।

—नहीं, कुछ बातें ऐसी होती हैं, जिन पर, सच होते हुए भी, विश्वास नहीं होता।

लौट कर बेड रूम में कपड़े बदल रहा था तभी बेटि ने आवाज़ दी—दे दा!

वह बाहर वाले कमरे में लंबी कुर्सी के आगे फ़र्श पर बैठी थी। कुर्सी पर रंगीन तस्वीरों की कतरनें फैली थीं। एक किले की ऊँची दीवार। पहाड़ी नदी के पुल का अकेला महराब, जिस पर एक लाल ट्रेन खड़ी थी। दोनों किनारों पर चीड़ के सीधे पेड़, बल खाती राइन नदी के बीच में रुका हुआ स्टीमर। काले समुद्र की लकीर पर टँगा हुआ सूरज।

उसने तस्वीरों की ओर इशारा करते हुए कहा—मिरो!

—लीन्दो!—मैंने उन रंगीन तस्वीरों की तारीफ़ की।

—यह तुम्हारे लिये है।—उसने तीन चार कतरनें मेरे हाथ में रख दीं। —रिगालो। यह भी तुम्हारे लिये है।

उन तस्वीरों के पीछे पेरिस—ब्रूसेल्स—लुक्सेम्बुर्ग—ज़ूरिख जैसे नाम और ८:१५, २:२३ जैसे समय छपे थे।

—बेटि, तुम्हारे सोने का समय हो गया है।—उसकी माँ ने बेड रूम से आवाज़ दी।

—मैं आज दे दा के पास सोऊँगी।

वह प्लास्टिक के छोटे-छोटे रंगीन दानों को, बिना सुई के, धागे में पिरो कर माला बना रही थी।

—इसे कल करना।—उसकी माँ उसकी पीठ पर आ कर खड़ी थी।

—बस थोड़ा-सा और।—उसने दोनों कंधे आगे-पीछे हिलाते हुए कहा।

नकों का एक छल्ला बना कर मुझे देती हुई वह बोली—देखो, अँगूठी—
लिये ।

वह छल्ला मेरी सबसे छोटी ऊँगली मे भी नही आ सकता था पर मैंने
ाप ले लिया ।

—बेटि, अब तुम्हें सो जाना चाहिए । —उसकी माँ ने फिर कहा ।

—दे दा, आज मैं तुम्हारे पास सोऊँगी ।

वह न जाने कितनी बातें मुझसे करना चाहती थी ।

—जानते हो ? मैं यहाँ नहीं पैदा हुई थी । मैं जापान मे पैदा हुई थी ।

—बेटि, क्या तुम्हें जापान की याद है ?

—हाँ, वहाँ हम तोक्यो मे रहते थे । मेरे पिता, माँ, मैं और मेरी बहिन ।

—झूठ ! तुम्हारे कोई बहिन पैदा ही नही हुई ।

—नही सच ! तुम्हें नही मालूम है, मेरी एक बहिन है । वह माँ की पहली
लड़की थी । वह अब भी जापान मे रहती है ।

तभी उसने बेड रूम में आ कर कहा—बातें करोगे तो यह बातों में
सवेरा कर देगी ।

वह न जाने कितनी देर तक और न जाने क्या-क्या बातें कहती रही । उसे
इसका भी ध्यान न था कि मैं उसकी बातें पूरी तरह से समझ भी रहा हूँ या
नहीं, या कि मैं ध्यान देकर सुन भी रहा हूँ या नहीं । बीच-बीच में जब उसे
संदेह होता कि मैं ऊँघ रहा हूँ तो वह मुझे पुकार लेती । फिर उसकी आवाज
धीमी पड़ने लगी । फिर वह चुप हो गयी । कुछ ही देर मे वह नींद मे सो गयी ।
रोशनी बुझा कर कमरे से बाहर निकल आया ।

वह बाहर के कमरे मे लंबी कुर्सी पर अधलेटी हो एक स्पेनी पत्रिका पढ़
रही थी ।

—सो गयी तुम्हारी लाडली ?—उसने मुस्कराते हुए पूछा ।

—हाँ ।

—वह कई महीने पहले से, जब से उसने तुम्हारे आने की बात जा
तुम्हारे नाम की रट लगाये थी ।

—लेकिन यह दे दा क्या है ?

वह हँस पड़ी ।

—मुझे नही पता । शुरू में वह तुम्हें अमिगो दे हापोन—जापानी
पुकारती थी । फिर न जाने कब से दे दा कहने लगी । मैंने उसे तुम्हार

नहीं बताया। कि अगर वह अपने पिता के घर में तुम्हारा नाम ले बैठी तो उन्हें तुम्हारे यहाँ आने का पता चल जायेगा।

—दे दा ! विचित्र नाम है ! पर ठीक है, कोई भी नाम जिससे वह मुझे पुकारना चाहे, ठीक है।

—उसने अपने मन मे गढ़ा है। तुम खड़े क्यों हो, बैठ जाओ।

खिड़की के सिल पर रखे दो गमलों में बारीक हरी पत्तियों वाले पौधे लगे थे। मैं खिड़की के पास वाले सोफ़े पर बैठ गया।

—तुम बहुत थक गये होगे।

—हाँ। लेकिन थोड़ा ही। सिर में जेट का झरने जैसा शोर भरा है। पर अब पहले की बेचैनी नहीं रही कि मैं यहाँ तक पहुँच सकूँगा या नहीं।

वह उठ कर खड़ी हो गयी

—तो तुम भी सो जाओ। वहाँ एक छोटा पलंग और है।

—लेकिन मैं बेड रूम में सोऊँगा तो सुबह वह चौंकेगी। मैं यहीं सो जाऊँगा। इस कार्पेट पर गद्दा डाल कर। जैसे जापान में सोते हैं। वह भी कुछ और देर बाद।

वह आ कर सोफ़े की बाँह पर बैठ गयी।

उसकी गर्दन से कुछ नीचे एक नीला तिल [illegible] था। जापा[illegible] में भी वह गर्मी का मौसम आने पर खुले गले के [illegible] तो व[illegible] नीला तिल एक उगे हुए तारे की तरह दिखायी देने [illegible]

जब वह हँस नहीं रही होती थी, उसकी पुतलियों में बोझिल थकान तैरने लगती थी।

—नहीं तो।

—तुम कहना नहीं चाहते होगे। —उसका स्वर धीमा हो गया—इस बीच वर्ष, सिर्फ जीवित रहने के लिये......

कहते-कहते वह चुप हो रही।

—यह भी बड़ी बात है। तुमने जरूर कुछ पाया होगा। नहीं तो, केवल दुःख ही ऐसा है जो चुपचाप कष्ट सहता जाता है। मनुष्य उससे लड़ कर नया बनाता है।

—वह पता नहीं क्या है। मैं नहीं जान पाती।

उसने आँखें बंद कर ली।

उसके आँखें बंद करने पर चेहरा बहुत थका हुआ दिखायी दिया और उसकी उम्र की अपेक्षा दो गुना बूढ़ा!

—सुनो, तुम्हें याद है? बहुत पहले हमने एक दूसरे के सामने सौगंध खायी थी कि हम हारेंगे नहीं और—

उसकी मुंदी हुई पलकों के बीच से आँसू की दो बूंदें निकलीं और गालों पर सरकती हुई नीचे गिर गयीं।

—नहीं। मुझे याद नहीं। मुझे पिछला कुछ भी याद नहीं रहा। मैं लड़ रही हूँ पर मुझे मालूम नहीं कि मैं किस लिए लड़ रही हूँ।

वह अपने बालों में से एक बाल ढूँढ कर मुझे दिखाते हुए हँसने लगा—यह देखते हो? मैं जानती हूँ। पर मैं उदास नहीं हूँ। मेरे पास जो कुछ भी है, वह उस कमरे में है।

—और तुम खुद।

वह न जाने किन विचारों में खो गयी।

—अब तुम सो जाओ। —अचानक उसने विचार तंद्रा से [illegible] हुए [illegible] अंदर सोने में भी कोई [illegible] नहीं [illegible]

—तुम यहीं सोना चाहते हो? अंदर सोने में भी कोई [illegible] नहीं। [illegible] तुम चाहो।

—मुझे आज यहीं सोने दो।

हमने कालीन पर बिस्तर बिछाया, मेरे लिये।

उसने कमरे की रोशनी बुझा दी। लेकिन खिड़कियों से [illegible] और उसकी हल्की-सी चमक इस कमरे में थी।

उसने झुक कर धीरे-से मेरे होंठ चूम लिये। उसके होंठों की छुवन बिलकुल वैसी ही थी जैसी दस वर्ष पहले।

—मैंने पिछले छः वर्षों से पुरुष देह का स्वाद नहीं जाना पर मैं तुम्हें—कहते हुए वह पास आ गयी।

—हम एक दूसरे को इनकार नहीं करेंगे।

उसका शरीर भी दस वर्ष पहले जैसा था। चिकना और मुलायम। एक सन्तान को जन्म देने के बाद उसका वक्ष और नितंब अधिक भर गये थे और काला फूल अधिक सघन हो गया था।

—नहीं। हमें एक दूसरे को इनकार करने का अधिकार नहीं है।

उसने दोनों बाहें ऊपर कर ली थीं और अस्पष्ट स्फुट शब्दों में स्पेनी में न जाने क्या कह रही थी! उसकी देह छोटी लहरों की तरह काँप रही थी और उसकी जाँघें, अंधेरे में डैनों की तरह फड़फड़ा रही थी।

अचानक वह फफक कर रो पड़ी।

—मुझे और कितने दिन जीना पड़ेगा। मैं और नहीं जीना चाहती। जीने की तकलीफ़। नहीं, अब और नहीं।

—देखो, मैं केवल इसके लिये इतनी दूर से नहीं आया हूँ।

—लेकिन मुझे मना न करो। क्या तुम्हारे पास बचाव की चीज़ नहीं है?

—मैं यह सोच कर नहीं आया। हम थोड़ा जोखिम उठा सकते हैं।

कुछ देर बाद बेड रूम से बेटि के करवट बदलने की आवाज़ सुनायी दी तो मैंने धीरे से उधर इशारा किया।

—ठीक है। मैंने उसे कुछ नहीं बताया पर वह हमारे संबंध के बारे में समझती है। मैं थोड़ी देर बाद जाऊँगी। तुम फ़िक्र मत करना। अगर कुछ हुआ भी तो मैं तुम्हें परेशान न करूँगी। एक बात पूछना चाहती हूँ, तुम ऐसा तो नहीं सोचते न, कि तुमने पाप किया।

—नहीं तो। क्या तुम अपने मन में ऐसा समझती हो।

—नहीं। पर मेरे बाद तुमने किसी दूसरी लड़की को भी प्यार नहीं किया?

—किया। क्या तुम बुरा मानोगी? जिसे किया उसे सारे तन-मन से किया। नहीं तो नहीं किया और कुछ नहीं दिया।

वह सोचने लगी।

—क्या मेरे और अपने बारे में सोच रही हो?

उसने सिर हिला कर इनकार किया।

—वफादारी के बारे में? कि वह तन की है या मन की?

—मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा।

लेकिन वह कुछ कहना चाहती थी।

—देखो, अगर ऐसा है तो क्या तन की इच्छा से प्यार को साधन नहीं बनाया जा सकता?—उसने पूछा।

—जा सकता होगा। लेकिन क्या प्यार के या दूसरे भी किसी संबंध को सदा बनाए रखा जा सकता है?

उसने उत्तर नहीं दिया।

—मैं जानता हूँ, मुझे ये बातें बाद में नहीं, शुरू में कहनी चाहिये थीं।

—मैं बुरा नहीं मानती।—उसने उठ कर हँसते हुए कहा।

उसकी पुकार से नींद खुली। वह बेटि को जगा रही थी।

सुबह हो गयी थी और तेज बारिश हो रही थी। बल्कि शायद रात से क्योंकि रात को एक बार नींद खुली थी तब वर्षा की एकरस आवाज़ अँधेरे में सुनायी दी थी।

बेटि को उठा कर रसोईघर की ओर जाते हुए उसने नज़र चुरा कर मेरी ओर देखा। मैं बिस्तर तह करके लंबी कुर्सी पर रख रहा था।

—रहने दो। मैं बाद में उठा लूँगी।—उसने रसोईघर में घुसते हुए कहा।

—मैं तह कर के यहाँ रख देता हूँ। बाद में तुम ठीक जगह पर कर देना।

वह आयी और बिस्तर उठा कर ले जाते हुए रुक गयी।

—मेरी सारी देह दुख रही है।—उसने हल्के से मुस्कराते हुए कहा—क्या तुम इसीलिये यहाँ तक आये थे?

—तुम क्या कह रही हो! क्या तुम्हें याद नहीं है, तुमने क्या कहा था?

—वह मेरी भूल थी।—वह वैसे ही मुस्कराते हुए बोली और बिस्तर उठाये हुए बेड रूम में चली गयी।

पता नहीं, वह मुस्कराहट शिकायत की थी या विद्रूप की।

खिड़की के चौखटे में सलेटी रंग का आसमान जड़ा था। एक जगह जहाँ झीने बादल थे, एक उद्गम गोरा ठहरा हुआ था—सूरजमुखी के फूल का, जिसकी सारी पंखुड़ियाँ कीड़े खा गये थे!

—क्या सोच रहे हो, यहाँ खड़े-खड़े।—उसने पीछे से आकर मेरे कंधों पर हथेलियाँ रखते हुए पूछा—क्या मेरी बात का बुरा मान गये?

—नहीं तो।

—आओ, हम लोग जल्दी से नाश्ता कर लें। नौ बजे मेरी एक सहेली हमें घुमाने के लिये अपनी कार ले कर आयेगी। कल मैंने तुम्हारे लिये बीफ़ ख़रीदा था। चुरास्को, पावरोटी और कॉफ़ी। तुम कुछ सोच रहे हो।

—नहीं। मैं कुछ भी नहीं सोच रहा।

चुरास्को सारा नहीं खाया गया। चार-पांच सौ ग्राम के गोश्त की तवे पर सेंकी हुई कतली। सुबह उतना भारी खाना खाने की आदत नहीं थी।

—तुमने चुरास्को तो सारा-कि-सारा छोड़ दिया। इसका मतलब है कि तुम्हारे लिये वहाँ का खाना बनाना ही पड़ेगा।

उसकी सहेली के आते ही हम बाहर निकले। तब भी तेज़ बारिश हो रही थी। सड़क के किनारे पानी भरा था और उसमें उनकी कार के पहिये आधे-आधे डूबे हुए थे।

उन दोनों ने अपनी सैंडिलें उतार कर हाथ में उठाए हुए, दरवाज़े से कार तक की दूरी दौड़ कर पार की।

—पहले हम पालेर्मो झील का इलाका देखेंगे। मैंने पत्रों में तुम्हें पालेर्मो के बारे में लिखा था। शहर के बाहर है। अगर यह पानी न गिरता होता तो हम वहाँ पहुँच कर कार से उतर कर घूम सकते थे।

सड़कों पर कहीं-कहीं फुट भर से अधिक पानी जमा हो गया था और सामने से आती कार या बस, झील को चीरती हुई मोटरबोट जैसी लगती थी। बगल से गुज़रते समय उनके छींटे कार के बंद काँचों पर मैली फुहार की तरह गिरते थे।

हम शहर के बीच से होते हुए बाहर के इलाके में निकल आये। उस सड़क की बायीं तरफ़ एक पुश्ते के दूसरी ओर लहराता हुआ मैला जल था। हो सकता है वह समुद्र रहा हो। या प्लेट नदी या प्लेट नदी का समुद्री मुहाना, जिसे मैंने पिछले दिन हवाई जहाज़ की खिड़की से देखा था।

वैसी घनघोर वर्षा में पालेर्मो में भला कौन घूमता! ऊँचे-ऊँचे दरख़्तों के झुंड और दाहिने-बायें, वर्षा की बारीक चादर के पीछे छोटी-बड़ी झीलें। फ़ुजि पर्वत के पास की झीलों जैसी, जैसी कि वे झीलें सूरज उगने के कुछ पहले और सूरज डूबने के कुछ देर बाद दिखायी देती हैं। कई वर्गमील में फैला झीलों का वह इलाका।

—हम यहाँ किसी दिन फिर आएँगे।—उसने मुझसे कहा—जब मौसम साफ़ होगा।

उसकी सहेली शायद मेरी ख़ातिर कार धीरे-धीरे चला रही थीं।

वह पीछे की सीट पर मेरे एक बगल बैठी थी। वह मन ही मन गुम थी और बारीक आवाज़ में एक गीत गा रही थी—नाज़े दाका कोतोबा गा मित्सुशारानाइ मामा, अनाता नो मेनाका नि मोतारेता वाताशि....*

लेकिन वह मेरी पीठ से नहीं लिपटी थी बल्कि उसने अपनी ठोढ़ी मेरे दाहिने कंधे पर टिका रखी थी।

—अनाता तो आउ नो गा ओसो सुगिता तामे नि... ●

उसकी सहेली और बेटि उस गीत का अर्थ नहीं समझ सकती होंगी। मैं ही वह गीत बारह-पंद्रह वर्ष बाद सुन रहा था। वह एक पुराना करुण प्रेम गीत था।

बेटि चुप थी और लगातार खिड़की से बाहर देख रही थी। फिर वह पीछे झुक कर मेरी बाँह से टिक गयी। कुछ देर बाद वह अचानक मेरी ओर घूमी और बिना कुछ कहे मेरे सीने से लग गयी और अपनी आँखें बन्द कर लीं।

कुछ देर बाद मैंने उसे देखा तो वह नींद में सो गयी थी।

पालेर्मो के कई चक्कर लगाने के बाद हम वापस लौट रहे थे। एक जगह सड़क के आगे वेटिकन के सेन्ट पीटर्स स्क्वायर के सामने वाले गिरजे जैसी एक भव्य इमारत थी।

—संसद भवन है वह।—सहेली ने बताया।

हमें घर छोड़ने के पहले उन्हें एक महिला से मिलना था, जो उन दोनों की मित्र थी। वह घर हमारे घर के पास है, उन्होंने बताया।

मैं उन रास्तों-सड़कों से एकदम अनभिज्ञ था और यह भी नहीं जानता था कि यह जगह हमारे घर से कितनी दूर है।

एक जगह सड़क के किनारे उन्होंने कार रोकी, हम उतरे तो उसने आगे बढ़ कर बन्द दरवाज़े के बगल में लगे बहुतेरे बटनों में से, जिस अपार्टमेंट में उन्हें जाना था उसका बटन दबा कर इंटरफोन से अपना नाम बताया। फाटक के दरवाज़े अपने आप खुले—ऊपर से कोई बटन दबाया गया होगा। लेकिन यह मुझे अलीबाबा चालीस चोर की कहानी जैसा अचंभे में डालने वाला लगा।

अंदर फ्लैट का दरवाज़ा जिस मोटी महिला ने खोला था वह घर की मालकिन नहीं, नौकरानी थी। मालकिन उस समय नहाने के बाद कपड़े बदल रही थी, उसने हमें बताया।

वे दोनों थक गयी थीं। वे कालीन पर हाथ-पैर फैला कर लेट गयीं।

*"पता नहीं क्यों, शब्द नहीं मिल रहे हैं पर तुम्हारी पीठ से लगी हुई हूँ मैं..."

● "तुमसे मिलन होने में विलम्ब हो गया है इसलिये..."

कमरे के पिछले हिस्से में एक बड़ी खिड़की थी और खुली हुई थी। उसके बाहर चौड़े सिल पर कई छोटे-बड़े गमले रखे थे। उनमें लगे पौधों की पत्तियाँ वर्षा में भीगी थीं और चमक रही थीं—जैसे कि आसमान की चिन्दियाँ उन पर चिपक गयी हों। दूर-दूर तक ऊँची नीची इमारतें थीं और नीची इमारतों की चमकती हुई गीली छतें।

उस खिड़की के सामने खड़े होकर उन इमारतों और छतों को देखते हुए अचानक मुझे दूसरी खिड़की से दूसरी इमारतों को देखने की याद आयी, सुबह के समय।

—क्या तुम इसीलिये यहाँ आये थे?—मैंने सवाल दोहराया—क्या मैं इसी लिये यहाँ आया था? तो पहली बार, एकदम पहली बार, सवाल ने मुझे चौंका दिया—तुम किस लिये यहाँ आये थे?

पर मैंने तो कभी यह नहीं पूछा कि मैं यहाँ क्यों आया!

—तुम यहाँ किस लिये आए।

मैं यहाँ किस लिये आया।

मैं या कोई दूसरा, हो सकता है सवाल न भी पूछे। पर सवाल कभी-कभी अपने आप पैदा हो जाता है, बिना बोतल के जिन की तरह!

तभी मालकिन कमरे में आयीं तो वे दोनों उठ कर बैठ गयीं। वह वृद्धा थीं। दुबली-पतली, कमजोर और पीली। एल ग्रेको की लम्बी आकृतियों की तरह। वह नीले रंग का जापानी हप्पी कोट पहने थीं जिसकी पीठ पर चटख लाल रंग में मात्सुरि का चीनी वर्ण अंकित था।

—यह मेरा बेटा सात वर्ष हुए जापान से लाया था।—उन्होंने हप्पी कोट का एक पल्लू हथेली में उठा कर मुझे दिखाते हुए कहा—इसकी पीठ पर कुछ छपा है। पर मैं उसे पढ़ नहीं सकती।

उन्होंने मुझे अपने साथ एक बुकशेल्फ़ के पास ले जाकर अपने पुत्र का फ़ोटो दिखाया। नेकटाई-सूट पहने वह एक युवती से सँटा हुआ खड़ा था।

—सात वर्ष हुए, एक कारखाने में, जहाँ वह इंजीनियर था, एक दुर्घटना में जाता रहा।

मैं उनसे कुछ नहीं कह सका।

वह मुझे छोड़ कर कमरे में चली गयीं।

—मैं तुम लड़कियों को कितने दिनों बाद देख रही हूँ!

—सेन्योरा, समय बिलकुल नहीं मिलता। बाहर से आने के बाद मैं अपनी माँ के पास कोरदोवा भी नहीं जा सकी। सहेली ने हँसते हुए अपनी सफ़ाई दी।

—हाँ, हम बूढ़ी के पास कौन फटकेगा !

उन्होंने हमें कॉफी पिलायी।

हम लौटने को हुए तो उन्होंने तीनों लड़कियों के गाल चूमे और मेरी ओर अपना दाहिना हाथ बढ़ाया।

—आप फिर जरूर आइयेगा। जापान यात्रा मेरे बेटे की अंतिम विदेश यात्रा थी। जरा रुकिये, मैं आपके लिये अपना फ़ोन नंबर लिख कर देती हूँ।—उन्होंने एक कागज़ पर झुके हुए कहा—यह लड़की आपको कितना याद करती थी। आपके आने के बाद से इसके चेहरे की रंगत कितनी बदल गयी है!

दरवाज़े पर दोनों सहेलियों ने उस दूसरी प्रौढ़ महिला के गाल चूमे।

•

सुबह वह मुझसे कतरा रही थी और मैं उसका सामना बचा रहा था या शायद हम दोनों।

थोड़ी ही देर की बात थी क्योंकि उस दिन कार्निवल की छुट्टियाँ ख़त्म हो गयी थीं और उसे अपने ऑफ़िस जाना था। बेटि दिन भर मेरे साथ रहने को थी। उस वक्त बेटि नहा रही थी और टब में लगातार पानी की धार गिरने की आवाज़ आ रही थी।

—अगर तुम्हारी इच्छा हो तो शहर आ जाना।—वह ऑफिस जाने के लिये कपड़े पहन कर तैयार हो गयी थी—तुम्हारे लिये घर की एक चाभी छोड़ जाती हूँ। मुझे लौटने में कुछ देर होगी—शायद रात हो जाए।

—दे दा !—बेटि ने बाथरूम से पुकारा—दे दा ! देखो, देखो !

बाथरूम के दरवाज़े से दिखायी दिया, वह टब में एकदम नंगी खड़ी थी।

—देखो, यह देखो।—उसने हँसते हुए टब की ओर इशारा किया।

टब में उसके घुटनों तक सफ़ेद झाग भरा था। लगता था उसने पानी में साबुन का चूरा डाल दिया था।

—देखो तो, यह कितनी निर्लज्ज है !—मैंने कहा।

—यह ऐसी ही है।—वह भी हँस रही थी।

बेटि भी ही-ही करके हँस रही थी।

—बेटि ! दोपहर को दे दा के साथ बाहर जा कर खा लेना।

—ममीता, ममीता ! मेरा दूसरा तौलिया !

—बेटि, मुझे देर हो रही है, आज उसी तौलिये से पोंछ ले !

—तुम जाओ। मैं ढूंढ़ कर उसे दे दूंगा।

—इसे एक वार नहाने पर हमेशा दो तौलिये चाहिये।

—मैंने कहा न, तुम जाओ। तुम्हें देर हो जाएगी।

वेटि टव का पानी खँगाल रही थी।

मैं उसे दरवाज़े तक छोड़ने गया।

दरवाज़े से निकलने के वाद उसने मुड़ कर मेरी ओर देखा और चेहरा आगे वढ़ा कर मेरे होंठों को अपने होंठों से छू दिया।

—दरवाज़ा ठीक से वंद कर लेना।—उसने कहा और तेज़ कदमों से चली गयी।

वेटि को मैंने पीली नारंगी और लाल पट्टियों का अपना तौलिया निकाल कर दिया तो वह तौलिये को दोनों हाथों से ऊपर उठा कर देर तक उसकी तारीफ़ करती रही।

—वेटि, जल्दी कर! मुझे भूख लगी है।

वह तौलिया लपेटे मेरे पास तक आयी और हँसते हुए धीरे से—जैसे कि कमरे में कोई तीसरा भी हो—वोली—हम खाना खाने नहीं चलेंगे, प्लासा चलेंगे।

—हाँ, प्लासा चलेंगे। लेकिन खाना खाने के वाद।

—और,—उसने एक उँगली उठा कर मना करते हुए कहा—ममा से नहीं कहेंगे।

पिछले दिन से हो रही वर्षा रुकी नहीं थी लेकिन झींसियों में पड़ रही थी।

हमारे पास एक ही छतरी थी और हम एक-दूसरे की हथेली पकड़े उसके नीचे चल रहे थे।

मुझे पार्क का रास्ता मालूम न था।

उसने अचानक मेरा हाथ एक ओर खींचते हुए कहा—प्लासा। प्लासा उधर है।

पत्थर जड़ी सड़क पर चलते हुए तो फिसल कर गिरने का डर नहीं था लेकिन जहाँ पत्थर उखड़ गये थे और लाल मिट्टी थी वहाँ पैर रखने पर फिसलता ज़रूर था।

गीली लंवी सड़क के दोनों ओर पेड़ों की कतारें थीं और उन पेड़ों की पत्तियाँ ग्रीष्म ऋतु की वर्षा से धुल कर कंचन हरी हो गयी थीं। दूर, जहाँ तक दिखायी देता था, पेड़ों की वे कतारें और उनके वीच गीली सड़क ही थी।

—वेटि, तुम शायद रास्ता भूल गयी हो।—मैंने उसे रोकते हुए कहा।

—नहीं। उधर है प्लासा।—वह मुझे आगे खींचने लगी।

बायें मुड़ने के बाद कुछ आगे सचमुच एक छोटा-सा निर्जन गोल पार्क था।

पार्क के गिर्द जाने वाली सड़क के किनारे एक जगह एक कार खड़ी थी और उसके निकट की सुरक्षा में एक पेड़ के नीचे जवान मर्द-औरत का एक जोड़ा आपस में लिपटा स्तब्ध खड़ा था।

पार्क में घुसते ही एक नीची जगह वर्षा का जल जमा था। जमीन के उतने दायरे पर आकाश का मिलेटी प्रतिबिंब तैर रहा था और उस पर पड़ने वाली भींसियाँ उस आकाश में बहुतेरे छेद बना रही थीं।

उसके बगल से होकर आगे बढ़ते-बढ़ते वह ठिठक गयी और नन्हीं-नन्हीं बूँदों को छिछले आकाश पर गिर कर क्षणभंगुर सफेद छोटे दायरे बनाते देखने लगी। कुछ देर बाद उसने एक बार मेरी ओर देखा और मुस्करायी। हमने एक-दूसरे से कहा कुछ नहीं मुस्कराते हुए आगे बढ़ गये।

उसे ठीक से पार्क नहीं कहा जा सकता था। सड़क के एक बड़े दायरे के बीच खाली पड़ी जमीन थी, जिस पर कुछ-एक पेड़ और झाड़ियाँ अपने आप उग आये थे, एक-दो जगह पत्थर की बेंचें रखी थीं और सिर्फ जरा-सा हिस्सा जंगली घास उग आने की वजह से हरा था।

बेटि को कच्ची जमीन पर पड़ा टूटी टहनी का एक टुकड़ा मिल गया। वह उसे उठा कर परखने लगी। फिर उसने उसे घुमा कर जोर से आसमान की ओर फेंका। हम दोनों उसे उठाने के लिये एक साथ दौड़ पड़े। पास पहुँचने पर उसने पीछे से मेरी कमीज पकड़ कर खींचते हुए मुझे रोकना चाहा तो गिर पड़ी और गीली मिट्टी में लिथड़ गयी और हँसने लगी।

घुटनों और कुहनियों पर से मिट्टी रगड़कर अलग करते हुए वह हँसती जा रही थी।

मैंने वह टहनी और अधिक दूर फेंकी।

वह खेल की शुरुआत थी।

उसने अपने जूते उतार कर पत्थर की बेन्च के नीचे रख दिये।

—दे दा!—एक झाड़ी के पीछे छिप कर उसने चुनौती दी।

—बेटि?

लेकिन हरी पत्तियों के बीच से उसकी सफेद ब्लाउज का टुकड़ा दिखायी दे रहा था।

पकड़ी जाने के पहले वह दूर भागने लगी।

—नो! नो!—वह हँसते हुए चिल्ला रही थी।

हमारे बीच का फ़ासला कम होता जा रहा था।

हम दोनों बुरी तरह हाँफने लगे थे।

—आओ,अब हम इस पेड़ पर चढ़ेंगे।—मैंने पैर से जूते निकालते हुए कहा।

उसने मेरे जूते उठा कर बेन्च के नीचे कर दिये और छतरी बंद कर के बेंच के ऊपर रख दी।

—ठीक है। तुम उस पेड़ पर चढ़ो, बेटि इस पेड़ पर चढ़ेगी।

झुकी हुई डालों वाले सिर्फ़ उस पेड़ पर पत्तियाँ नहीं थीं और उसके तने तथा डालों पर हरी काई की बारीक पर्त लिपटी थी।

वह पेड़ पर अधिक ऊँचे चढ़ गयी तो मुझे डर लगने लगा। मैं उतर कर उसके नीचे खड़ा हो गया। वह एक डाल से लटक कर झूल रही थी। झटके लगने से पत्तों पर टिकी वर्षा की बूँदे गिरती थीं।

दोपहर हो गयी होगी। या शायद उससे भी देर। बदली के कारण समय का सही-सही अन्दाजा नहीं लगाया जा सकता था।

—बेटि, अब हम वापस चलेंगे।

वह अचानक गंभीर हो गयी।

हम पार्क से निकल कर सड़क पार करने वाले थे तभी उसने मेरा हाथ पकड़ कर पीछे खींच लिया और एक कार हमारे सामने से गुज़री।

मुझे अचानक याद आयी, एक बार ऐसा ही हुआ था जब पीछे से आ रही कार से बचाने के लिये उसने मेरा हाथ पकड़ कर मुझे पीछे खींच लिया था। एक बार नहीं, दो बार। पर यह याद बहुत बर्षों पहले और बहुत दूर-दूर के देशों में घटी बातों की हो सकती थी इसलिये मैंने बेटि से कुछ नहीं कहा—कहता भी तो वह शायद समझ न पाती।

फुटपाथ पर पत्थर के चौखटे जहाँ-तहाँ उखड़े हुए थे।

फुटपाथ पर चलते-चलते अचानक वह लोहे के जँगले लगी जकड़ बंद खिड़कियों वाली एक इमारत की बाहरी दीवार के कूबड़ पर चढ़ कर चलने लगी, जैसे कि बचपन में हम अपने घर के पास के एक पुराने घर की दीवार की ऐसी ही सँकरी उभार पर चढ़ कर एक-एक कदम बगल की ओर खिसका करते थे। हम जिस दीवार पर चलते थे उसके दो छोरों के ऐन बीच में दो पैर रखने भर की समतल जगह थी और वहाँ आने पर हम रुक कर सुस्ता लिया करते थे। उसके बाद की आधी दूरी हमें बड़ी लंबी और खतरनाक लगती थी हालाँकि दो छोरों के बीच का फ़ासला सिर्फ़ पाँच-एक मीटर था।

किसी भी महाद्वीप में क्यों न हो, एक जैसा ही है—दीवारों का कूबड़ और बचपन में उस पर चढ़ कर केकड़े की तरह चलना!

लौटती बार वह सचमुच ही घर का रास्ता भूल गयी और चौराहा आने पर मुझे लिये हुए कभी दाहिने, कभी बायें रास्ते पर मुड़ जाती।

—बेटि, एलादो ?—मैंने उससे आइसक्रीम दिलाने का वायदा किया था।

—सी !—उसका चेहरा अचानक खिल उठा।

फुटपाथ के बगल में एक ऊँची दीवार के अंदर मुहल्ले के किमानी की छोटी सी दूकान थी, जिस पर सिगरेट, चाकलेट जैसी चीज़ें भी थीं।

दूकानदार ने बेटि के हाथ में पतंगी कागज से लिपटी आइसक्रीम पकड़ाने के बाद मुझे रेजगारी लौटायी—मैली, तुड़ी-मुड़ी पैसों के कई रंगों के कई नोट।

—बेटि, अब हम अपने घर का रास्ता कहाँ पूछ लें।

गोश्त वाले की एक दूकान के दरवाजे पर दो मर्द खड़े थे। वह आइसक्रीम ऊपर उठा कर उन्हें अपने मकान का नंबर बताने लगी और मैं उनके बीच से हो दूकान के अंदर जा कर दूकान मालिक से वही पता पूछने लगा।

हम ग़लत रास्तों पर चलते हुए ठीक ठिकाने के पास तक आ गये थे।

—दे दा ! वह देखो ! वह रहा अपना घर !—अचानक उसने चिल्ला कर कहा और मुझे पीछे छोड़ कर घर की ओर दौड़ गयी।

उसी रात लुइस हमें बोत्रा दिलाने के लिये आया। साथ उसकी मँगेतर भी थी। बेटि किमोनो पहन कर पहले से ही तैयार थी। मँगेतर ने बेटि के किमोनो की तारीफ की तो बेटि ने उसे वह किमोनो ला कर दिखाया जो उसकी माँ के लिये जापान से आया था। मँगेतर उसे एक बार पहनने को लालायित हो गयी। मैंने वह किमोनो खोल कर उसे गाउन की तरह पहना दिया तो बच्चियों की तरह उसने उसके पल्ले लपेट लिये और खुश हो गयी।

वह भी हँसने लगी लुइस गंजे सिर से हँसने लगा और किमोनो लपेटे अपनी मँगेतर का फोटो उतारने लगा।

कपड़े बदलने के लिये पीछे वाले कमरे में गया तो वह पीछे-पीछे चली आयी।

—वह किमोनो मैंने एक बार भी नहीं पहना था। सबसे पहले उ[illegible] पहना, चलो, अच्छा ही हुआ !—उसने व्यंग्य से मुस्कराते हुए कहा।

मैं अपनी भूल पर खिसिया कर चुप रह गया।

लगता है कि उस रात बोका शहर के एकदम दूसरे छोर पर रहा होगा क्योंकि हम घर के सामने वाले स्टॉप से बस पर सवार होकर दो बार बस बदलने के बाद एक टैक्सी पर सवार हो कर बोका पहुँचे।

लुइस हमें किसी गुमटी वाली दूकान, त्रात्तोरिया, में ले जाना चाहता था लेकिन उसके पहले वह हमें बोका का रंगीन इलाका दिखाना चाहता था। वह हमें लेकर एक इमारत की पहली मंज़िल के गोदाम जैसे बड़े कमरे में दाख़िल हुआ। उसमें ऊपर-नीचे आने-जाने वाली बिजली की सुस्त सीढ़ियों और हल्की रोशनी के अलावा और कुछ न था—यहाँ तक कि उन सीढ़ियों पर चढ़ते-उतरते मनुष्य भी बहुत कम थे। उसके बाद लोहे की चादरों की सीढ़ियों से चढ़ कर हम इमारत के ऊपरी खंड में पहुँचे—वह शायद तीसरी मंज़िल रही होगी। उसके बाद एक पुल था। पुल पर पीले रंग के तेज़ बल्ब जल रहे थे और नीचे लोहे की चादरें बिछी थीं। वह पुल काफ़ी ऊँचा था। पुल के नीचे नहर जैसी नदी का ठहरा हुआ काला जल था। या हो सकता है, वह समुद्री खाड़ी रही हो और वह बंदरगाह का इलाका रहा हो क्योंकि उसके दोनों ओर ऊँची-ऊँची सीधी-झुकी अनेक क्रेनें थीं, जिनके मत्थे पर लगे हल्के लाल बल्ब जल-बुझ रहे थे।

एक जोड़ा मर्द-औरत हम लोगों के पास से होकर आगे बढ़ गये।

लोहे की चादरों वाले फ़र्श का वह पुराना पुल और वह इमारत, पीली तेज़ रोशनी में किसी तिलस्मी फ़िल्म के अधूरे बने सेट की तरह लगते थे।

वह लुइस से बातें कर रही थी। मँगेतर मेरे पास आ कर अँधेरे की ओर उँगली से इशारा करते हुए उन स्थानों का परिचय देने लगी। मैं उन जगहों के बारे में कुछ भी न जानता था—यहाँ तक कि उनका नाम भी पहली बार सुन रहा था। हाँ, दूर पर बुएनोस आएरस का बंदरगाह दिखायी दे रहा था और उसके बाद जहाँ तक दृष्टि जाती थी, शहर की रोशनियाँ अँधेरे में झिलमिला रही थीं। पुल के बायीं ओर, एकदम पास में एक त्रात्तोरिया था। उसकी दीवार पर उसका हरा-लाल नियॉन पेस्कादितो जल-बुझ रहा था।

अचानक उसका ध्यान हमारी ओर गया और वह लुइस को छोड़ कर 'अच्छा बताओ तो' कहती हुई मेरे और मँगेतर के बीच में खड़ी हो गयी। मँगेतर चुप हो गयी और चुरा कर एक बार मेरी ओर देखते हुए आँखों-ही-आँखों मुस्करायी।

पुल के दूसरी ओर भी अधअँधेरी सन्देहग्रस्त-सी सड़कें, गलियाँ और उनके किनारे दो-दो चार-चार के छोटे-बड़े झुण्डों में आने-जाने वाले मनुष्यों की अस्पष्ट आकृतियाँ थीं। अँधेरे फ़ुटपाथ के बगल में एक खुला हुआ त्रात्तोरिया

था। अंदर रोशनी में सजी अलमारी के नीचे एक टेबुल पर झुका अकेला ग्राहक दरवाजे की ओर पीठ किये बैठा था। शायद उस दूकान में और कोई नहीं था—मालिक तक नहीं। बन्द गोदामों जैसी उन इमारतों की बेखिड़की दीवारें, बचपन में, बुढ़ियों के साथ मुँह अँधेरे मन्दिर की ओर जाते वक्त गाँव के रास्ते में पड़ने वाली पुरानी इमारतों की दीवारों की याद दिलाती थीं।

मैं अचम्भे में पड़ा हुआ था कि मैं इन रास्तों पर पहले भी एक बार आ चुका हूँ पर कब, याद नहीं आ रहा था।

लुइस हमें साथ लिये हुए, एक उपयुक्त ट्रात्तोरिया तलाश रहा था।

चौरास्ते से दाहिने मुड़ते ही सड़क, सीमेंट के खंभों और लोहे की जंजीर से सवारी गाड़ियों के लिये बन्द कर दी गयी थी। बायें हाथ कोने वाली तिकोनी इमारत, चटख हरे-नीले-पीले-गुलाबी-नारंगी रङ्गों में रँगी दीवारों, खिड़कियों और दरवाजों की वह इमारत मैंने कब देखी थी? रात होने की वजह से वे रङ्ग दब गये थे और दूसरे-दूसरे रङ्ग लगते थे। पर मैंने उस इमारत को पहले कहाँ देखा था?

तभी दस-बारह साल के पाँच-छः किशोरों के एक गिरोह ने बेटि को घेर लिया। और हँस-हँस कर, बोनीता! बोनीता! लुगार बोनीता, चिल्लाते हुए उसके चारों ओर नाचने लगे।

किमोनो पहने एक हमउम्र लड़की उन्हें प्यारी लगनी ही चाहिये थी।

हम भी हँसने लगे लेकिन बेटि मेरी कमर से चिपट गयी।

—क्या तुम्हें डर लग रहा है?—मैंने उससे पूछा।

उसने चेहरा उठा कर मेरी ओर देखा और ठोड़ी एक बार झुका दी।

वे छोकरे जैसे अचानक आये थे वैसे ही अचानक गायब हो गये।

अँधेरी सड़क के किनारे पत्थर की एक ऊँची बेंच पर तीन-चार साल का टोपी लगाए बच्चा दोनों पैर नीचे लटकाए उदास बैठा था। हो सकता है उसका बड़ा भाई उसे वहीं बैठे रहने को कह, उस गिरोह में शामिल होकर खेल रहा हो।

लुइस मुझे एक-एक इमारत के बारे में बता रहा था। बोका में दीवारों और किवाड़ों को जानबूझ कर विभिन्न रङ्गों में रँगा गया था। बोका तांगो की जन्मभूमि थी, वहाँ की हर इमारत का तांगो के इतिहास में अपना विशेष महत्त्व था।

काही रङ्ग की दीवार वाली इमारत की पहली मंजिल की बन्द खिड़कियों के अंदर रोशनी जल रही थी और ऊपर वाली मंजिल एकदम अँधेरी घुप थी।

लुइस एक से अधिक दूकानों के आगे खड़े होकर कुछ देर प्रकट में अपने आप से बात करने के बाद अंत में एक दूकान में हमें लेकर दाखिल हुआ।

दरवाज़े के पास वाले टेबुलों पर बैठे थे सिर्फ़ सफ़ेद टेबुलक्लाथ, प्लेटों में सजग ताज़ा नैपकिन और छत से लटक रही थी स्टेशन वेटिंग रूम के औंधे शेड वाली तेज़ रोशनियाँ। पर दूकान के भीतर ईंट के महराबदार रोशन गलियारे के नीचे सभी टेबुल भरे हुए थे।

लुइस और उसकी मँगेतर के पीठ पीछे के टेबुल पर सफ़ेद बुंदियों वाली काली कमीज़ पहने एक बूढ़ा अकेला बैठा था। उसने अपने बगल वाली कुर्सी की पीठ एक मुट्ठी से पकड़ रखी थी। उसके माथे पर एक दो तीन चार—आठ दस बेड़ो लकीरें पड़ी थीं और वह बड़े ध्यान से देख रहा था। मुझे लगा कि वह हमारी ओर देख रहा है लेकिन वह किसी को या किसी चीज़ को नहीं देख रहा था।

—आपके लिये क्या मँगाया जाए?—लुइस ने पूछा तो मैं चौंक गया—और तुम? विनो ब्लांको। और तुम?—उसने अपनी मँगेतर से पूछा।

बेटि हम वयस्कों को लगातार मुस्कराते रहने, बीच-बीच में ज़ोर से हँस पड़ने और चुप रहते हुए ऊपर से लगातार बातें करते जाने के लिये आज़ाद छोड़ कर टेबुल के एक कोने को कनखियों से लगातार देख रही थी।

गितार पकड़े हुए एक व्यक्ति आया और राह के दूसरी ओर को एक खाली कुर्सी खींच कर बैठ गया और सिर झुका कर गितार पर तांगों बजाने लगा।

उसके पीछे वाले टेबुल पर एक अधेड़ उम्र जोड़ा आमने-सामने बैठा खाना खा रहा था। जब वह मर्द हँस नहीं रहा होता था, उसका चेहरा एज़रा पाउंड के चेहरे जैसा हो जाता था।

टेबुलों के गिर्द से दो-तीन जोड़े उठे और खाली फ़र्श पर आ कर तांगों की धुन पर नाचने लगे।

अकार्डियन लिये जो दूसरा वादक तब तक दीवार से पीठ टिकाए चुपच खड़ा था, टेबुलों के पास आ कर अकार्डियन बजाने लगा।

नाचते हुए एक जोड़े में महिला की पीठ कमर तक खुली हुई थी अ उसके साथी का पंजा उस पर केकड़े की तरह कस कर चिपका हुआ था।

—क्या मैं भी नाच सकता हूँ?—मैंने पूछा।

मैं उठ कर चला तो लुइस ने हँसते हुए अपनी दोनों हथेलियाँ चेह सामने ला कर फ़ोटो उतारने का अभिनय किया।

मुझे अच्छा लग रहा था, उन अपरिचितों के साथ तांगो की तेज़ धुन पर नाचना।

लेकिन थोड़ी ही देर बाद मेरी व्यक्तिगत खुशी के बीच सुनायी दिया—अब बन्द करो यह तमाशा दिखाना!

कोई और उस बात को नहीं समझ सकता था क्योंकि वह वहाँ उपस्थित तमाम लोगों में से केवल दो की मातृभाषा में कही गयी बात थी।

लौटते समय रात अधिक हो गयी थी इसलिये बिजली से चलने वाली वे सीढ़ियाँ रुकी थीं लेकिन हम उन्हीं सीढ़ियों से, सामान्य सीढ़ियाँ उतरने की तरह उतरे।

मैं मन में लगातार हँस रहा था। कभी-कभी मुस्कान मेरे होंठों तक भी आ जाती रही होगी।

मैं उस वक्त दुनिया के किसी भी आदमी-औरत से बात करने को तैयार था लेकिन अपने आप से बातचीत के दो टुकड़े—नहीं, कदापि नहीं!

—आज पालेर्मो चलोगे?—उसने सुबह पूछा—आज आसमान भी खुला है। चलो तो मैं आज ऑफ़िस से छुट्टी ले लूँगी।

दस बजे के करीब हम बाहर निकल रहे थे तभी उसकी एक सहेली आ गयी। उसने सहेली से कहा तो वह हमारे साथ चलने को राजी हो गयी।

हम घर के पास वाले चौरास्ते से बस पर सवार हुए और शहर की कई बस्तियों से होते हुए, पिछली बार जिन रास्तों से होकर गये थे उनसे बिलकुल भिन्न रास्तों से, पालेर्मो के पास उतरे।

न केवल वे रास्ते, बल्कि पालेर्मो का पूरा इलाका वह नहीं लगता था जिसे हमने उस दिन वर्षा की झड़ी में देखा था। आज वहाँ सैलानियों की भीड़ थी जो पेड़ों की छाया में घास पर तौलिये फैला कर बैठे थे, चार-पाँच व्यक्तियों का परिवार जो बेन्च पर बैठा था या किराये की नाव लेकर झील में सैर कर रहा था या बच्चों का झुंड जो जूस-आइसक्रीम बेचने वाले की गाड़ी के गिर्द जमा था।

हम बेलों से ढके पक्के रास्ते से जा रहे थे तो उसने अचानक मेरे पास आ कर कहा—लाओ, तुम्हारा एक फोटो लूँ।

दोपहर भर वहाँ घूमने के बाद झीलों और दरख्तों के कुंज से निकल कर-

हम घास का मैदान पार करके बाहर जा रहे थे। उसकी सहेली थक गयी थी। वे घास पर बैठ गयीं।

—दे दा! मुझे पकड़ोगे ?

वेटि और मैं जूते उतार कर एक दूसरे का पीछा करने लगे।

मैदान के एक हिस्से में दो नौजवान केवल जाँघिया पहने वॉलीवाल खेल रहे थे और उनके साथ की दो लड़कियाँ विकिनी पहने एक जगह बैठी धूप खा रही थीं।

मैं जब दौड़ता हुआ वेटि के पास पहुँचने को होता तो वह नहीं दे दा, नहीं दे दा, चीखने लगती और घास में छोटे जानवर की तरह लुढ़क जाती।

—क्या लौटने का इरादा नहीं है ?—उसने उठ कर हमें आवाज़ दी।

शाम हो रही थी।

हम बस की बजाय सबवे लौटने के लिये सबवे स्टेशन की ओर पैदल जा रहे थे। वह और उसकी सहेली बातें करती हुई आगे-आगे जा रही थीं और वेटि तथा मैं एक दूसरे का हाथ थामे उनसे कुछ ही कदम पीछे-पीछे। स्टेशन काफ़ी दूर रहा होगा।

बायें हाथ एक विशाल स्मारक था, ऊँची चौकी पर बैठे रोमन योद्धा का।

वेटि ने होंठ पर एक उँगली रख कर इशारा किया और स्मारक की चौकी पर चढ़ने लगी।

—म मा!—उसने मूर्ति के घुटने पर से आवाज़ दी—म मा!

वे पलट कर वेटि को देखने लगीं।

वह और अधिक ऊँचे चढ़ने जा रही थी।

उसने पास आ कर वेटि को डाँटा।

अगला चौरास्ता पार करने के बाद उन्हें मालूम हुआ कि वे ग़लत दिशा में जा रही थीं। उन दोनों ने वापस सड़क पार की। तभी सिगनल की रोशनी लाल हो गयी। हरी बत्ती जलने तक मैं और बच्ची चौराहे के बीच में गोल तालाब के किनारे जा कर तालाब में खड़ी-लेटी मूर्तियाँ देखने लगे। सिगनल बदलने पर हमने वही सड़क पार की लेकिन वे वहाँ नहीं थीं। चारों ओर निगाह दौड़ाने पर भी वे नहीं दिखायी दीं।

—वेटि, हम यहीं खड़े रहें। वे हमें ढूंढ़ लेंगी।

कुछ देर तक हम वहीं सिगनल के बगल में खड़े रहे लेकिन वे नहीं आयीं तो हम एक रास्ते के किनारे-किनारे, जिधर उनके जाने की अधिक संभावना मालूम थी, चलने लगे।

—बेटि, तुम्हें घर का रास्ता मालूम है !

उसे घर का रास्ता नहीं मालूम था ।

—मुझे मालूम है ।—मैंने झूठ कहा—हम टैक्सी ले लेंगे ।

उसके चेहरे पर परेशानी झलक रही थी । वह शायद अपनी माँ की नाराजगी के बारे में चिंता कर रही थी ।

फुटपाथ के किनारे एक खाली कार खड़ी थी । कार के पास एक दंपति, एक किशोर और एक शिशु खड़े थे । वे शायद वहाँ से जाने वाले थे क्योंकि तभी पति ने प्रैम को लपेट कर पीछे वाली सीट पर डाला था ।

मैंने उनसे उस मुहल्ले तक जाने का रास्ता पूछा, जहाँ हमें जाना था ।

उन्होंने कहा कि वे शहर के उसी भाग में रहते हैं और हमें हमारे घर तक छोड़ देंगे ।

कार चलाते-चलाते वह मेरे देश के बारे में आम सवाल करने लगे ।

—वह देखो, ममा !—बेटि ज़ोर से चिल्लायी ।

वे आगे चली जा रही थी । हम पाँच सौ मीटर भी न आये होंगे ।

उन्होंने कार सड़क के किनारे ला कर रोक दी । हमें कार से उतरते देख कर वह कार तक आयी और कार के खुले हुए दरवाज़े के नुकीले कोने पर—उफ़, खून !—मुझे लगा था कि वह उस पर अपना माथा ज़ोर से पटकने जा रही है पर उसने कोने पर अपनी एक हथेली रख कर उस पर माथा रख दिया था । वह बेटि पर नाराज होने लगी । बेटि धीरे-धीरे रोने लगी ।

मैंने उस कृपालु व्यक्ति को धन्यवाद दिया फिर हम चारों सड़क के किनारे चुपचाप चलने लगे । बेटि मेरा हाथ पकड़ कर चल रही थी और चलते-चलते बीच-बीच में दूसरी बाँह उठा कर आँखों पर फेर लेती थी । वह और सहेली दस पंद्रह कदम आगे थीं । सहेली उसकी बाँह में हाथ डाल कर उसे अपने बदन का सहारा देते हुए चल रही थी ।

हम सब, शायद बेटि तक, अपने-अपने से बहस में उलझे हुए थे ।

सबवे से उतर कर सीढ़ियाँ चढ़ते हुए उसने घर की चाभी मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा—तुम चलो, मैं इसके यहाँ हो कर आती हूँ ।

—और बेटि ? तुम्हारे साथ जाएगी या मेरे साथ ?

—बेटि, मेरे साथ आओ ।—उसने बेटि से कहा ।

सहेली ने अलग होते समय मुस्करा कर मुझसे बुएनोस नोचे कहा क्योंकि उसे वापस नहीं आना था ।

फाटक के अंदर घुसते-घुसते मैं रुक गया । मैं यहीं इंतज़ार कर सकता हूँ ।

वहाँ रोशनी भी नहीं थी। सिवा दूर पर सड़क के किनारे लगी एक रोशनी के या पीछे लिफ़्ट के अंदर जल रही हल्की रोशनी के। फुटपाथ के किनारे बसस्टॉप के आगे दो व्यक्ति खड़े थे। इस तरह वहाँ मुझे खड़ा देख कर उन्हें अटपटा न लगेगा। वे सोचेंगे कि मैं भी अगली बस आने के इंतजार में खड़ा हूँ।

फाटक के सामने खड़े काफ़ी देर हो गयी लेकिन वे नहीं आयीं तो मैंने सोचा कि अब वे आ रही होंगी और अगर उसने मुझे यहाँ खड़ा देखा तो वह सोचेगी कि मैंने मौन विरोध प्रकट करने के लिये ऐसा किया है। मुझे ऐसा करने का अधिकार नहीं है, मुझे ऐसा नहीं करना चाहिये। ऊपर आ कर फ़्लैट का दरवाज़ा खोला और रोशनी कर दी।

उन्हें आने में काफ़ी देर हुई। दस के करीब का समय रहा होगा। आयी तो वह प्रफुल्ल थी।

उसने अपना पर्स उछाल कर टेबुल पर फेंका।

—बेटि! बेटि, हम अपने घर पहुँच गये!—वह बोली। उसके स्वर से लगता था कि उस समय उसे वहाँ अपने और बेटि के अलावा तीसरे व्यक्ति के होने का एहसास तक न था।—बेटि, मेरी बेटि!—वह बेटि को अपनी दोनों बाँहों में कस कर जकड़ते हुए उसे चक्कर देने लगी—मुझे पुकारो, ममीता!

—ममीता!—कहते हुए बेटि फफक कर रो पड़ी।

—क्या करती हो!—मैंने उसकी बाँहों से बेटि को अलग खींचते हुए कहा—क्या तुम नशे में हो?

—नहीं।—उसने फीके से हँसते हुए कहा—पहले भी मैं इसे यों प्यार करती थी लेकिन यह कभी नहीं रोई। आज, शायद तुम सामने हो इसलिये।

बेटि अँधेरे बेडरूम में चली गयी।

—मैं उसे मना लूँगी।

उसने कमरे की रोशनी बुझा दी और बेडरूम में चली गयी।

बगल की खिड़की में हल्का-सा उजास था।

—सुनो,—उसने वहाँ से कहा—हम दोनों रात का खाना खा चुकी हैं तुम जो खाना खाना चाहोगे, कुछ देर बाद उठ कर बना दूँगी।

—तुम्हें उठने की जरूरत नहीं है। मैं बना लूँगा। क्या चीज़ें हैं।

—आलू, गोश्त, दही और पावरोटी।

—बहुत काफ़ी है। मैं खुद बना लूँगा। तुम सो जाओ।

—तुम खुद न बनाना। बाद में मुझे जगा देना।

आधी रात के बाद रसोईखाने में गया और उसका दरवाज़ा उढ़का कर रोशनी जलाई।

पिछले तीन दिनों में मैं उस कमरे के अंदर केवल चार-पाँच बार आया था—कॉफ़ी का भरा हुआ प्याला लेने या नल से गिलास भरने। वह घर में खाना बनाती थी भी नहीं। हम घर से बाहर जाते समय या घर वापस लौटते वक़्त चौराहे के बगल वाले रेस्तराँ में या और कहीं खाना खा लेते थे।

खाना बनाने के पहले मुझे एक बड़ी प्लेट चाहिए थी। प्लेटें गैस रेंज के ऊपर दीवार में जड़े काठ के दरों में थीं। एक प्लेट निकाल कर पानी से धोने लगा तो पानी की बूँदें प्लेट पर बरसाती छींटों की तरह ठहर गयीं। बर्तन मलने का चूरा बेसिन के बगल वाली खिड़की की सिल पर प्लास्टिक के डब्बे में था। माँजने के लिये जाली ज़री जैसी रस्सी का एक गोला सिल के दूसरे कोने पर और स्पंज, पानी में भिगोए चमड़े जैसा, बेसिन में। उनसे बर्तनों पर चिकनाई सिर्फ़ पोंछी जा सकती थी। ज़री और स्पंज साबुन से साफ़ करने के बाद साबुन और ज़री से संगमर्मर के सिल पर जमा तेल की चिपचिपी चर्बी साफ़ की। तभी मुझे बारीक उँगलियों वाली उन दो हथेलियों की याद आयी, जिन पर सर्द पानी और बर्तन साफ़ करने वाले चूरे के लगातार प्रयोग से महीन दरारें पड़ गयी थीं। वह हथेली मैंने जापान में देखी थी। हालाँकि वे उसकी हथेलियाँ नहीं थीं।

शोरबा पकाने के लिये छोटी देगची साफ़ करके आग पर रखने के बाद तेल की बोतल खोजने लगा। ऊपर के दूसरे खाने में दूसरी ओर कई बोतलें थीं। कत्थई रंग की वह बोतल तेल की ही हो सकती थी क्योंकि उसके बाहर तेल, सर्दी खाए छोटे बच्चों की रेंट की तरह बह कर चिपचिप कर रहा था।

शोरबा उबलने लगा।

जिसे मैंने नमक समझ कर चखा वह चीनी थी। एक और शीशी में सफ़ेद चूरा था—वह भी नमक नहीं था, न जाने क्या था। नमक ढूँढ़ना छोड़ दिया—नमक बिना भी चलेगा। पावरोटी। ऊपर के किसी दर में न थी। वह फ़र्श पर रखे दफ़्ती के बड़े बक्स के ऊपर एक प्लेट में, रूमाल में ढकी रखी थी। उसे देख कर मैं लज्जा से गड़ गया। पावरोटी के ऊपर हरी-हरी बुंदियाँ चिपकी थीं, फफूंद की!

पुरुषों को रसोईखाने में नहीं आना चाहिये। यह हिदायत कितनी चालाकी भरी है।

वह शोरबा ही काफ़ी था। शोरबे की देगची एक हाथ में उठा कर रोशनी बुझायी और दरवाजा खोल कर अँधेरे कमरे में आ गया।

क्या इसका कारण ग़रीबी है? नहीं, इसका कारण आर्थिक नहीं हो सकता। फिर इसका कारण क्या है? मैं अँधेरे से बहस कर रहा था। पर नहीं, क्या तुमने वायदा नहीं किया था कि तुम अँधेरे में सवाल नहीं पूछोगे।

एक कीड़ा होता है नामेकुजि, बेहद सुस्त और बिना हाथ-पाँव जैसे अवयव वाला। वह मरता है तो सिकुड़ कर पिघलने लगता है और एक अकेली बूँद हो जाता है, अंत में वह भी गायब हो जाती है—आत्मग्लानि!

सुबह वह सो कर उठी तब मैं जाग रहा था।

—अरे, रात को तुमने मुझे जगाया क्यों नहीं?—उसका कंठ स्वर अभी-अभी सो कर उठने के कारण भारी था—कॉफ़ी पियोगे?

वह कॉफ़ी बनाने के लिये रसोई में गयी।

—ओफ़, यह कास्टिक सोडे की थैली फ़र्श पर किसने रख दी।—उसने वहीं से पूछा।

—मुझे मालूम नहीं था कि वह कोई खतरनाक चीज है। रात को बेसिन साफ़ करते समय मैंने भूल से नीचे रख दी होगी। बेसिन साफ़ करना जरूरी था।

—तुम्हें जरूरी लगा होगा। मेरे घर इतने सारे लोग आते हैं पर आज तक किसी ने यह नहीं कहा कि बेसिन गंदा है या रसोईख़ाना गंदा है।

मैं उठ कर रसोई में चला आया।

—मैं बर्तन इस्तेमाल करने के पहले उसे धो रहा था। उस पर चिकनाई थी।

—रही होगी। पहले मैं भी सारे बर्तन गर्म पानी से धोया करती थी। सारे बर्तन चमकाने और घर की पॉलिस करने में मेरा एक तिहाई दिन निकल जाता था। मेरे पास इन व्यर्थ कामों के लिये समय नहीं है। मैं बर्तन सिर्फ़ नल के पानी से धो कर रख देती हूँ।

मैं उसके पास चला गया।

—सुनो, तुम्हें क्या हो गया है जो तुम ऐसी हो गयी हो।

—कुछ नहीं। मुझे कुछ नहीं हुआ है। — वह कॉफ़ी के दो खाली कप सिल पर रखने लगी।

—तुम पहले तो ऐसी नहीं थीं।

—मैं जो अब हूँ वही मैं हूँ। तुम्हें निराशा हो रही होगी। है न?

मैं उसे उत्तर न दे सका।

—रात तुमने क्या खाया ? —उसका स्वर अचानक मुलायम हो गया। उसने शायद प्रसंग बदलने के लिये पूछा था। मुझे जगा लेना चाहिये था। तुम्हें मालूम नहीं था कि कौन चीज कहाँ है। पावरोटी—उसने प्लेट पर ढका रूमाल एक ओर से उठा कर देखा—क्या तुमने यह पावरोटी खायी ?

—नहीं। मैंने वह पावरोटी नहीं खायी। आलू का शोरबा बनाया था। नमक नहीं मिला। पर शोरबा स्वादिष्ट बना था।

—नमक यह है तो। —कहते हुए उसने ताक पर रखी एक पुड़िया मुझे दिखाने के लिये उठायी तो पुड़िया का सारा नमक मेरे सिर पर बिखर कर फर्श पर फैल गया।

—आः, मुझे माफ करना ! —नमक मेरे सिर पर गिरते ही वह एक क्षण को स्तब्ध होकर दूसरे ही क्षण मुझसे लिपट कर रोने लगी—जैसे वह दस साल बाद मिलने पर भी न रोयी थी।

—तुम रोती क्यों हो। मैंने बुरा नहीं माना। मैं वैसे अंधविश्वासों को नहीं मानता। मैं जानता हूँ तुमने जानबूझ कर ऐसा नहीं किया।* चलो, बाहर के कमरे में बैठ कर कॉफी पियेंगे। मैं बना कर लाता हूँ।

उसने चुपचाप सिर हिला कर इनकार कर दिया—मैं बनाऊँगी।

हमने चुपचाप कॉफी पी। धूप कमरे की एक दीवार पर आ गयी थी। कॉफी पी कर वह ऑफिस के लिये तैयार होने चली गयी। बेटि तब भी सो कर नहीं उठी थी।

—दोपहर को मेरे साथ खाना खाने आओगे ?—उसने अंदर वाले कमरे से आ कर पूछा। वह स्कर्ट और ऊपर सिर्फ ब्रा पहने हुए थी।

—जरूर, अगर तुम इसी पोशाक में हो तो !

—उसके होठों पर हल्की-सी मुस्कान आयी। नहीं तो सुबह से उसके चेहरे पर कितनी उदासी और खोया-खोयापन था।

—तो मैं बेटि को साथ नहीं ले जा रही हूँ। तुम उसे ले कर दोपहर की छुट्टी होने से पहले प्लासा सान् मार्तीन में आ जाना।

उसने सबवे से आने का रास्ता समझाया—अंतिम स्टेशन अलेम से दो स्टेशन पहले फ्लोरीदा पर उतरना है। सबवे स्टेशन से ऊपर निकलते ही

---

*श्मशान से लौट कर घर में प्रवेश करने से पूर्व, प्रेत बाधा दूर करने के लिये द्वार पर नमक छिड़कने की जापानी प्रथा।

सामने देलगादो का साइनबोर्ड दिखायी देता। वहाँ से बाँयें मुड़ना। उसके बाद ऑफ़िस तक का रास्ता बेटि को याद है।

उसने दरवाज़े के बाद खड़ी होकर ज़रा-सी फांक में चेहरा डाल कर मेरे होंठ चूमे और एक बार मुस्करा कर चली गयी।

नौ के करीब बेटि उठ कर आयी।

—ममा ?

—ममा ऑफ़िस गयीं। हम दोपहर को साथ खाना खाने के लिये चलेंगे।

वह लंबी कुर्सी के आगे फ़र्श पर बैठ गयी और कुर्सी पर सिर टिका कर फिर सो गयी।

मैं टेबुल के आगे बैठा हुआ पुराने अख़बारों में नयी ख़बरें पढ़ रहा था, धूप खुली खिड़की से अंदर आ कर फ़र्श के एक टुकड़े पर लेटी कुछ भी नहीं कर रही थी और ख़ामोशी हमारे गिर्द बाँस के अदृश्य टट्टर की तरह सन्नद्ध खड़ी थी।

आहट पा कर मैंने अख़बार एक ओर किया तो पन्नों की हल्की-सी आवाज़ हुई।

बेटि एक कागज़ पर कुछ लिख रही थी।

—बेटि, क्या लिख रही हो।

—आ कर देखो।

लाल रोशनाई वाली कलम से—पुलिया—दरवाज़ा—कंगूरेदार दीवार और तिमहला दुंदुमा।

—क्या है यह।

—दे ला हापोन।

—जापान का, लेकिन जापान का क्या।

—कास्तिज्यो दे ला हापोन।

—जापानी क़िला !—मैं हँसने लगा।

स्केच पूरा बना लेने पर उसने वह पर्ची उठा कर मुझे देते हुए कहा—दे दा, यह तुम्हारे लिये है। रिगालो।

दस बजे थे। मैंने उससे कहा—अब हमें चलना चाहिए।

वह चड्डी पहने, सिर पर छींटदार रेशमी स्काफ़ बांधे तैयार थी। उसने जल्दी-जल्दी कपड़े पहने।

फ़्लोरीदा स्टेशन पर सबवे सीढ़ियों से ऊपर आते ही सामने कोने पर देलगादो का बड़ा-सा साइन दिखायी दिया। उसके सामने की सँकरी गली

फ्लोरीदा थी। उसके दोनों ओर खुली हुई निर्जन दुकानों की कतारें थीं। मैं वहाँ पहली बार गया था।

गली में घुसते ही बीच में एक छोटा स्टॉल था, जिस पर राजनीतिक खबरों की तह में लपेटे अखबार रखे थे और अधूरी नंगी औरतों के रंगीन कवर वाली पत्रिकाएँ क्लिपों से टँगी थीं।

यहाँ इन्हीं दो चीज़ों की खपत सबसे अधिक होनी चाहिए—मैंने मन में हँसते हुए सोचा—तह की हुई राजनीतिक खबरें और अधूरी नंगी औरतें।

क्योंकि घर से निकलने के बाद वैसा पाँचवाँ स्टॉल दिखायी दिया था।

फ्लोरीदा गली के एक तिहाई हिस्से पर दोपहर की कड़ी धूप का धारदार लंबा पैटर्न बिछा था और आने-जाने लोग उस छायादार हिस्से में चल रहे थे।

एक टूरिस्ट एजेंसी की काँच की खिड़की के पीछे कोस्टाब्रावा—मार प्ला—लेएन—वारीलोचे वगैरह के बड़े-बड़े रंगीन पोस्टरों पर हज़ारों पेसो के दाम लिखे थे। वारीलोचे जाने का हमारा प्लान था। कि वह अपने ऑफिस से पंद्रह दिन की छुट्टी लेगी और बेटि की स्कूल से किसी बहाने से छुट्टी दिला दी जाएगी। वह एक नीली झील थी और उसके पीछे बर्फ से ढका पहाड़—पोस्टर पर।

दोपहर की छुट्टी होने में अभी एक घंटे की देर थी।

—बेटि, आओ कहीं बैठ कर कुछ खाया जाए।

—नहीं-नहीं! कान्तीना नहीं जाएँगे। —वह मेरी बाँह पकड़ कर रास्ते की ओर खींचने लगी—ममा का ऑफिस इधर है।

अगले चौराहे पर वियामोन्ते और फ्लोरीदा की तख्तियाँ लगी थीं।

—यहाँ, ममा का आफिस यहाँ है। —उसने मेरा हाथ पकड़ कर आगे खींचते हुए कहा।

—हाँ बेटि, लेकिन यह देखो, मैं ऐसे पहनावे में ऑफिस के अंदर नहीं जा सकता।

—कोई परवाह नहीं। यह तो है ममा का ऑफिस!

एयरफ्रांस के ऑफिस के पास वाले चौरास्ते पर पब्लिक फोन का बूथ था। सौभाग्य से मेरे पास एक पेसो का सिक्का तो निकल आया। सिक्का डाल कर डायल किया। लाइन नहीं मिली। दूसरी बार सिक्का डाल कर फिर डायल किया। फिर नहीं मिली तो बेटि ने सिक्का मेरे हाथ से छीन कर खुद डाला और

डायल घुमाया। तब भी लाइन नहीं मिली तो उसने फ़ोन वापस रख कर मेर हाथ खींचते हुए कहा—वह सामने ही तो है!

—वेटि, मैंने कहा न, मैं ऑफ़िस के अंदर नहीं जा सकता। तुम जाओ मैं यहाँ तुम्हारे इंतजार में खड़ा रहूँगा। —मैं लगभग रो पड़ने को हो आया थ पर मैंने स्वर को सख्त बनाते हुए कहा।

—वह देखो, पुलिस खड़ी है। मैं उसे बुलाऊंगी।

—मैंने तुम्हें बताया न वेटि!

नीली टोपी वर्दी में पुलिस के दो सिपाही हमारे कुछ पास आ गये औ हमें ग़ौर से देखने लगे।

—वह सामने वाली इमारत में ममा का ऑफ़िस है। —उसने फिर मेरे हाथ को झटका देते हुए कहा।

—सेन्योर! —उनमें से एक ने मेरे कंधे पर थपकी दे कर हथेली मेरे आगे की—पासापोर्ते!

उसने ज़रूर यह माना होगा कि मैं एक किशोरी को उसकी इच्छा के विरुद्ध साथ ले जाने की कोशिश कर रहा था।

मैं और वेटि एक साथ उसे अपनी-अपनी बात सुनाने लगे।

हम ऑफ़िस के दरवाज़े से कोई पाँच मीटर के फ़ासले पर खड़े थे। मैंने झुँझला कर हार मान ली।

फाटक के दोनों ओर आवारों जैसी शक्ल के दो सफ़ेदपोश पहरेदार खड़े थे। एक ने रोक कर मुझसे पूछा कि मैं कहाँ जाना चाहता हूँ लेकिन मेरे उत्तर देने के पहले ही उसने अंदर चले जाने का इशारा किया।

—तुम यहीं रुको दे दा, मैं ममा को बुला लाती हूँ।—कहते हुए वह सीढ़ियों पर दौड़ गयी।

गलियारे में दो लिफ़्टों के फाटक बन्द थे और सीढ़ी के बगल वाले लंबे टेबुल के पीछे एक बूढ़ा कर्मचारी जैसे कि अपनी झेंप मिटाने के लिये व्यस्त दिखायी देने की कोशिश कर रहा था!

वे दोनों सीढ़ियाँ उतरती दिखायी दीं।

—थोड़ी देर इंतज़ार कर लो। आज बिजली चली जाने के कारण काम तो कुछ नहीं हो रहा है पर समय से पहले हम बाहर नहीं जा सकते हैं।

—आज पुलिस ने मुझे पकड़ लिया होता।—मैंने अपने स्वर को यथासंभव कोमल बनाते हुए कहा। लेकिन उसने शायद सुना नहीं।

—बस, घंटे भर की बात है।—उसने पहले जैसे स्वर में कहा—तब तक तुम दोनों पास के प्लासा में बैठो।

—मैं इंतज़ार कर लूँगा। पर तुम बेटि को अपने पास रख लो।

उसका स्वर एकाएक बदल गया—अचानक मुस्कराते हुए उसने कहा—ठीक है।

वह ऊपर चली गयी। बेटि उसके पहले ही सीढ़ियाँ चढ़ गयी थी।

गली में, नीली वर्दियाँ पहने दो-तीन सिपाही चौराहे पर धूप में खड़े हुए आपस में बातें करने में मशगूल थे। मैं दाहिने मुड़ गया, जिधर फ्लोरीदा गली के छोर के ऊपर पेड़ों की हरियाली दिखायी दे रही थी।

गली से निकल कर चौड़ी सड़क के पार सीढ़ियाँ चढ़ते ही ऊँचे-ऊँचे पेड़ों की घनी छाया वाला एक पार्क था, प्लासा सान् मार्तीन।

उस वक्त सारे पार्क के अंदर एक भी व्यक्ति नहीं दिखायी दे रहा था, सिवा एक हाथ में प्याला लिये नल की टोंटी पर झुकी हुई एक निर्वस्त्र औरत के। वह कोई स्मारक होगा—आरसेन्दा दे स्वर्दिस्तेन कातालानिस।

पेड़ों की घनी और ठंडी छाया में धूप की पीली लकीरें सोयी हुई थीं। एक छोटा-सा जंगल जिसे एक शहर ने घेर लिया हो और जिसे इसकी याद न हो।

इतने दिनों में—मुझे बिलकुल तो याद नहीं था कि मुझे बुएनोस आयरस आए कितने दिन हो गये थे—पहली बार मैं अकेला था और किसी चीज़ के बाहर था। वह चीज़ क्या थी, बहुत सोचने पर भी मैं उसे पहचान नहीं पाता।

ताड़ के पौधों से स्मारक के पीछे एक चबूतरे पर तीन बूढ़े बैठे थे और एक दूसरे को अपनी दुःखगाथा सुना रहे थे।

पार्क के बीच में एक स्मारक था। स्मारक के सीढ़ीदार चबूतरे के ऊपर एक घोड़ा अगला बायाँ हाथ ऊपर उठाए खड़ा था और उसके पीछे ऊँचे स्थान पर दो टाँगों पर खड़े घोड़े पर एक और मूर्ति सवार थी। स्मारक के पीछे एक बहुत ही ऊँची इमारत थी—सम्भवतः विश्वविद्यालय की इमारत जैसी।

दोपहर की छुट्टी होने में अब भी काफी देर थी। उस प्लासा से फ्लोरीदा गली के दूर छोर तक और वहाँ से प्लासा तक कई बार आया गया।

साढ़े बारह बजे प्लासा में उसी स्मारक के पास पहुँचा तो वे वहाँ मेरा इंतज़ार कर रही थीं। बेटि ने दूर से मुझे देख कर आवाज़ दी।

—कहाँ खाना खाया जाए।—वह अपने से पूछने लगी फिर बोली—आओ, तुम्हें माइपू की एक कैन्टीन में ले चलती हूँ। पास में ही है।

पार्क के बगल से माइपू गली शुरू होती थी।

—मैं वेटि को अपने साथ रख लूँगी हालांकि ऑफ़िस वाले नाक-भौंह सिकोड़ते हैं।—खाना खाते समय उसने कहा—तुम आज़ादी से घूम सकोगे। दो बजे इसका पिता आ कर इसे अपने साथ ले जाएगा और शाम को छः बजे वापस छोड़ने घर आएगा। इसलिए तुम छः बजे के बाद घर लौटना।

शाम को छः बजने के बाद भी काफ़ी देर तक मैं शहर में ही निरुद्देश्य भटकता रहा।

घर के पास वाले सबवे स्टेशन पर उतरा तो प्लेटफ़ार्म पर लगी घड़ी में आठ बज चुके थे। शायद वह मेरे लौटने में इतनी देर हो जाने के कारण चिन्ता कर रही होगी कि मैं शहर में रास्ता भटक गया हूँगा।

सातवीं मंज़िल पर लिफ़्ट से बाहर निकला तो लंबे सूने गलियारे के दूसरे छोर की ओर से एक पुरुष लिफ़्ट की ओर आ रहा था। गलियारे में बहुत ही हल्का बल्ब लगा था। वह शायद सफ़ेद पैन्ट पहने था। हम दोनों चलते हुए एक दूसरे के बगल से गुज़र गये।

घंटी का बटन दबाया। घंटी की आवाज़ के साथ ही उसने दरवाज़ा खोला और झटके से मुझे भीतर खींच लिया।

—गज़ब हो गया! —वह हाँफ रही थी।

—क्या हुआ!

—ज़रूर उसने तुम्हे देखा होगा।

—किसने।

—उसने। वह अभी तीस सेकेंड पहले दरवाज़े पर से गया है। उफ़!

—तो वह—हो सकता है उसने ध्यान न दिया हो।

—ऐसा कभी नहीं हो सकता।

उसने वेटि से पूछा।

—देखो, मुझे जिसका भय था वही हुआ। वह घंटी बजाने जा रहा था तब उसने तुम्हें लिफ़्ट से निकलते देखा और वेटि से कहा कि पहले उस व्यक्ति को अंदर जाने दें फिर वेटि को बंद दरवाज़े के आगे छोड़कर लौट गया।

लेकिन जब मैं आ रहा था तब वह मुझे गलियारे में मिला था और लौट रहा था और अकेला था। तो क्या वह अँधेरे में खड़ा हो कर मुझे देख रहा था?

तुमने कहा था कि वह छः बजे आयेगा। मैंने एहतियातन दो घंटे की देर की।

—तुमने जानबूझ कर ऐसा किया, मैं जानती हूँ।

मैं कमरे में आ गया।

—सुनो, अगर यह रात का समय न होता तो मैं अपना सामान उठा कर किसी होटल में चला जाता। सुबह होने तक मुझे यहाँ रह लेने दो। सुबह मैं यहाँ से चला जाऊँगा।

—अब तो तुम जाओगे ही। विनाश का काम जो पूरा कर लिया! केवल तोड़ना और नष्ट करना ही तुम्हारे लिये संभव है।

—मैंने कहा न, बस करो। कल मैं चला जाऊँगा इसलिये आज हम लड़ेंगे नहीं। मैं तुम्हें और इसे देखने के लिये आया था, देख लिया, अब मुझे लौट जाना चाहिये।

वह टेबुल के सामने वाली कुर्सी पर बैठ गयी।

—क्या तुम सिर्फ देखने के लिये ही इतनी दूर आये?

—मैं खुद सोच रहा हूँ।

—साफ़-साफ कहते क्यों नहीं, तुम किस लिये यहाँ आये हो। कौन-सी बड़ी उम्मीद ले कर।

—नहीं। कोई बड़ी उम्मीद तो नहीं, सिर्फ इस आशा से कि जिसके लिये मैंने इसकी संभावना मानी थी उसने इन चार-पाँच, आठ-दस सालों में अपने आप को थोड़ा तो सँवारा होगा।

—रेफिनामिएन्तो, एलेगान्सिया! हुँ!

—तुम मुझसे भी स्पेनी में बोलती हो। क्या मातृभाषा भी तुमने भुला दी! सोचो, हम दोनों कहाँ पैदा हुए थे। इतनी दूर आ कर हमारे पास वहाँ की चीज सिर्फ भाषा बच रही है। सच, क्या तुम्हें वहाँ की याद बिलकुल नहीं आती? रात को सोज्यो च्यरमेरा बेचने वाले की पुकार की याद तक नहीं?

—मुझे कुछ याद नहीं है और मुझे किसी की याद नहीं आती। सिर्फ यह मेरी चमड़ी का रंग और मेरे पासपोर्ट का रंग वहाँ का है। काफी निराश हो रही है न तुम्हें, मुझसे? तभी तो कह रही हूँ कि तुम सिर्फ मुझे देखने के लिये क्यों वहाँ से चले आए।

—यह न समझो कि मुझे आने का पछतावा हो रहा है। वापस लौटने के लिए जाना तो पड़ता ही है न! लेकिन जो मैंने देखा, उसमें मेरी रुचि नहीं हो सकती।

—हो भी कैसे सकती है। पिछले दस वर्षों में तुम जिस रास्ते से गुजरे हो उसने तुम्हारी रुचि सिर्फ़ औरत तथा उसमें भी उसकी देह के पंद्रह सेंटीमीटर हिस्से में महदूद कर दी है।

—पंद्रह सेंटीमीटर हिस्से में? —ओह, वह! क्यों नहीं

नहीं हूँ। लेकिन मुझे दूसरे पंद्रह सेंटीमीटर हिस्से में भी उतनी ही अधिक रुचि है, जो सिर के भीतर है। और स्त्री के ही नहीं पुरुष के भी।
—तुम क्या कह सकते हो—

—देखो, अब हम वार्तालाप नहीं कर रहे हैं बल्कि एक दूसरे को सुना कर एकालाप कर रहे हैं। पड़ोसी सुन रहे होंगे और समझ न पाने के कारण परेशान हो रहे होंगे।

—सुनने दो, मुझे परवाह नहीं। मेरे जीवन के ये दस वर्ष एकदम बेकार गये।

—बेकार क्यों गये।

—क्योंकि मेरे मन में कहीं पर तुम थे। ये दस साल मैं तुम्हें ले कर क्या करती रही।

—सवाल सब शुरू में पूछते हैं लेकिन सवाल अंत में पूछना चाहिये।

—इसीलिये तो पूछ रही हूँ।

—मेरा यही मतलब। क्या तुम यह कहना चाहती हो कि वह एकदम बेकार था जो मैंने और तुमने इतने वर्षों तक किया?

—हाँ। प्रेम।

—उसके अलावा और सब बेकार नहीं था। मैंने तुमसे तोक्यो में एक बार कहा था कि अगर प्रेम करने के लिए स्त्री की जरूरत हो ही तो देश की जन-संख्या में से आधी, साढ़े पाँच करोड़ औरतों में से निन्यानबे प्रतिशत में तुमसे अधिक।

—हाँ, मुझसे अधिक खूबसूरत होंगी, जरूर होंगी। फिर मुझमें तुम्हारी रुचि होने का भला क्या कारण हो सकता है।

—खूबसूरत नहीं खूबसूरती, मैंने तब भी तुमसे कहा था। मेरे लिये तुम्हारा महत्त्व सिर्फ़ इसलिये था कि मैंने तुम्हें महत्त्वपूर्ण माना था।

—तुम सपना देख रहे थे। जैसे कि मैं सपना देख रही थी तुम्हें ले कर। नहीं तो तुम्हारे इस रूप की मैंने कल्पना तक न की थी। ऐसा व्यक्ति जो कृत्रिम मुस्कान मुस्कराता हुआ हाथ मिलाता है। उस रात बोका में तुम नाच रहे थे, लुइस की मँगेतर भी चौंक गयी थी तुम्हें देख कर।

—मेरे बारे में नहीं, पहले तुम प्रेम के बारे में कह रही थीं।

बेटि छोटे सोफ़े पर जा कर बैठ गयी थी और हम दोनों के चेहरे बारी-बारी से देख रही थी।

—नहीं चहिये अब मुझे किसी का प्रेम-वेम। मुझे अब किसी पुरुष की जरूरत नहीं।

—मुझे अब किसी चीज़ की इच्छा नहीं है। —वह स्पेनी में बुदबुदा रही थी —सब-कुछ बहुत काफ़ी हो गया।

नीचे की सड़क से एक भारी ट्रक सुस्ती से गुज़रा।

वह मेरे कंधे से सिर टिका कर बेसिन के ऊपर झुकी हुई देर तक उलटी करती रही।

बेटि आकर बाथरूम के दरवाज़े के बाहर कुछ दूर पर खड़ी हो गयी।

मैं उसे सहारा दिये हुए कमरे में वापस लाया और गिरी हुई कुर्सी खड़ी की।

—अब मैं ठीक हूँ।

बेटि हमारे पीछे-पीछे आयी और लंबी कुर्सी पर जा कर बैठ गयी।

—क्या तुम्हारी तबीयत सम्हल गयी ?

—हाँ।

मैं अपना सामान बटोर कर सूटकेस में रखने लगा मेरे कुछ कपड़े और किताब-कापियाँ बेडरूम में थीं, गंदे मोजे और कपड़े ग़ुसलख़ाने में बेसिन के नीचे।

—बेटि को बता दो कि मैं कल सुबह चला जाऊँगा ताकि वह सुबह मुझे सूटकेस ले कर जाते देखे तो चौंके नहीं।

—तुम खुद बताओ।

मैंने बेटि को अपने पास बुलाया और अपने बगल में चिपका कर कहा कि कल सुबह मैं चला जाऊँगा।

—वापस ? जापान ?

एक क्षण तक मैं सोचता रह गया।

—हाँ। —मैंने उसे उत्तर दिया।

वह कुछ न बोली। सिर्फ़ सिर एक बार बगल की ओर हिला कर एक सीधी बच्ची की तरह मुझसे अलग हो गयी।

मैं कुछ दिन पहले यहाँ आया था। कल यहाँ से चला जाऊँगा। दस साल की यह बेटि बारह साल की हो जाएगी, पंद्रह-बीस साल की हो जाएगी और उस बीच न जाने कब की, अभिगो दे हापोन को भूल चुकी होगी। मैं भी इससे दोबारा कभी न मिल पाऊँगा, दूसरी बार कभी नहीं, क्योंकि छोटी-छोटी अँधेरी दूरियाँ भी पत्थर जैसी अभेद्य सचाई होती हैं पर मैं इसे हमेशा 'देखता' रहूँगा, हर वर्ष इसके जन्मदिन पर मन में हिसाब लगाऊँगा कि अब वह इत्ती बड़ी हो गयी होगी, इस वर्ष तो वह इतनी लंबी हो गयी होगी। मेरे लिये बस इतना ही काफ़ी होना चाहिये क्योंकि धूप हर दूसरी सचाई से अधिक प्रखर है और गर्म

जीता हुआ इन्सान उससे भी ऊपर है। मेरी उदासी की एक लकीर भी उस पर नहीं खिंचनी चाहिये।

मैंने बेटि से बुएनोस नोचे कहा तो वह मुझसे बुएनोस नोचे कह कर पीछे वाले कमरे में सोने चली गयी।

—तो क्या तुम सचमुच जा रहे हो?

—कल सुबह, न!

—ये वर्ष मैंने तुम्हारे लिये बिताये।

—मैंने भी ये वर्ष तुम्हारे लिये बिताये थे। पर इस बात का दुःख नहीं है मुझे।

—तो मत जाओ! —वह आगे कुछ कहने जा रही थी लेकिन उसका गला भर आया था।

मैंने कुछ नहीं कहा तो वह बोली—ठीक है, मैं तुम्हें रोकूँगी नहीं। पर मैं बेटि को बारीलोचे जरूर दिखाऊँगी। हमने उससे वायदा किया था।

रात का ही वक्त था लेकिन पता नहीं कितने बजे थे।

सुबह कुछ देर से नींद खुली तब कमरे में मेरे और धूप के सिवा कोई न था। वह बेटि को अपने साथ ले गयी थी। बड़े टेबुल पर चाभी का गुच्छा पड़ा था और उसके नीचे एक पत्र दबा था। उसने दोपहर की छुट्टी में प्लासा मानू मार्तीन की मूर्ति के पास मिलने को कहा था। लिखा था, मेरे सोये हुए होंठों का चुंबन ले कर गयी थी।

—क्या तुम्हें याद है?—मैंने उससे और अपने आप से पूछा।

खिड़की खुली थी। उसकी झिलमिली, बगल में लगे इलास्टिक के अधफटे पट्टे को खींचने पर खुलती-बंद होती थी। खिड़की के सिल पर रखे गोल गमले का पौधा धूप में चमक रहा था। खिड़की से बाहर झाँकने पर ऊपर और नीचे के सूने हरे बाग्ज दिखायी दिये और सामने दूर पर एक ऊँची मुर्दा इमारत और रुई के फाहों जैसे बादलों से अटा बुएनोस आएरस का आसमान।

वह मैं किससे पूछ रहा था।

क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि मैं या कोई और बाद में पछतावा क

फाटक से पहले बायीं ओर दीवार में एक बड़ा आईना लगा था। आईने के अंदर एक आदमी खड़ा था, जिसके एक हाथ में सूटकेस लटका था।

फाटक का सिर्फ़ एक दरवाज़ा खुला था। वाहर निकल कर मैंने फाटक की दाहिनी ओर दीवार पर खुदे मकान नंबर के अंकों को एक बार फिर देखा।

सामने की गोल पत्थर जड़ी सड़क पर से एक मोटर गुजरी।

चौरास्ते के एक ओर वही रेस्तराँ था ग्राइम्फ़ो, जिसकी दूसरी मंज़िल पर हम तीनों ने कई बार खाना खाया था। उसके दरवाज़े के बगल वाली नीली काँच की दीवार पर लिखा था एला दो। घर लौटने से पहले मैं उसके अंदर जाकर वेटर से आइसक्रीम खरीदते हुए कहता था—तोमार कासा। आइसक्रीम मैं वेटि के लिये घर ले जाता था। कंधे पर तौलिया रखे वह वेटर। द ला चोकेलातो ?—निहायत शफ़ीक मैनेजर पूछता था। —सी, चोकेलातो।

मैं अब अपने आप कहीं भी जा सकता था।

फ़्लोरीदा पर सबवे से वाहर निकल कर होटल तलाश करने लगा। तुकुमान और माइपू सड़कों के चौरास्ते के एक बगल, नेपोलियन की टोपी लगाए शातिर आँखों वाले व्यक्ति के बड़े पोस्टर के नीचे अख़बारों का एक छोटा-सा स्टॉल था। वहाँ से ताज़ा अखबार ख़रीदा और आसपास के किसी होटल का नाम पता पूछा। स्टॉल वाले ने एक चिट पर होटल का नाम लिख कर थमा दिया।

वह होटल फ़्लोरीदा सबवे स्टेशन की सीढ़ी के ठीक सामने था। होटल का किराया अधिक मालूम दे रहा था पर मैंने सोचा कल या परसों में यहाँ से चला ही जाऊँगा।

पाँचवीं मंज़िल के अपने कमरे में पहुँच कर खिड़की से नीचे देखा तो देलगादो के सामने वाला चौरास्ता और आते-जाते स्त्री-पुरुष दिखायी दिये।

दोपहर का समय हो गया था।

तेज़ कदमों से प्लासा सान् मार्तीन के स्मारक के पास पहुँचा तब एक बज कर दस मिनट हो गये थे। उसने हाथ उठा कर मुझे इशारा किया।

—वेटि कहाँ है।

—उसका पिता उसे ले गया है। वह कल आयेगी। वह जाना नहीं चाहती थी। पर बाद में इस शर्त पर जाने को तैयार हो गयी कि शनिवार को वह हमारे साथ रहेगी।

वह मुझे माइपू के एक रेस्तराँ में खाना खिलाने ले गयी लेकिन वह पहले से भिन्न रेस्तराँ था। काफ़ी देर तक वह उस मोटे वेटर से हँस-हँस कर बातें

करती रही और मैं मुस्कराता हुआ सुनता रहा। हम लौटने के लिये उठ रहे थे तो मैंने दस हज़ार पेसों के नोट उसे देते हुए कहा—इसे रख लो।

वह रकम मैंने उससे उधार ली थी, जब मैं आया था और मैंने ट्रैवेलर्स चेक भुनाये न थे।

—अभी इसे अपने पास ही क्यों नहीं रखते। तुम्हें बार्सीलोना में जरूरत पड़ेगी। बाद में हिसाब कर लेंगे।

—यह मैंने तुमसे उधार लिया था।

—तो भी, अभी अपने पास ही रखो। मैं कहीं गिरा दूँगी। अच्छा ठीक है, मैं ही रख लेती हूँ। शाम को फिर प्लाज़ा में आ जाना। हम एक साथ घर लौटेंगे।

मैंने उससे कहना चाहा कि मैंने अपना सामान वहाँ से उठा कर होटल में कमरा ले लिया है लेकिन मैं उसे एक बार और देखने के लोभ पर काबू न पा सका।

शाम को उसके बताये हुए समय पर उसी पार्क में उससे फिर मिला तो वह काफ़ी प्रफुल्ल दिखायी दे रही थी।

—इस बार मैंने आने में दस मिनट की देर की, दोपहर का बदला लेने को।—कहते हुए वह हँसने लगी—यह सच नहीं है, झूठ है।

—झूठ ही सो भी; हमारी प्रतीक्षा करने की अवधि एक बराबर हो गयी।

—उसने कहा कि हम अगले सबवे स्टेशन तक पैदल चल कर वहाँ से सबवे पकड़ेंगे।

—मुझे माफ़ करना, मैं तुम्हारे घर वापस नहीं जा रहा हूँ।

—क्यों?—वह फुटपाथ पर चलते-चलते खड़ी हो गयी।

—मैंने कल रात तुम्हें बताया था न! आज सुबह मैं वहाँ से अपना सामान ले कर एक होटल में आ गया हूँ।

—मुझे दोपहर को ही इस बात का शक हुआ था जब तुमने अपमानित करते हुए मुझे पैसे वापस किये थे।

—वह मैंने तुमसे उधार ली हुई रकम तुम्हें लौटायी थी। अपमानित करने का मेरा कोई इरादा न था।

हम कोरदोवा और माइपु के चौरास्ते पर खड़े थे।

—देखो, मैं बहुत-सी बातें तुमसे कहना चाहता हूँ लेकिन उन सब को कहते मुझसे नहीं बन रहा। विश्वास करो, मुझे इस बात का जरा भी रंज नहीं है कि मैं वहाँ से तुम्हारे पास आया। हमने बरसों लंबा सफ़र साथ-साथ किया है।

वह मुझे एकटक देख रही थी। उसकी आँखों में आँसू भरने लगे।

फाटक से पहले बायीं ओर दीवार में एक बड़ा आईना लगा था। आईने के अंदर एक आदमी खड़ा था, जिसके एक हाथ में सूटकेस लटका था।

फाटक का सिर्फ़ एक दरवाज़ा खुला था। बाहर निकल कर मैंने फाटक की दाहिनी ओर दीवार पर खुदे मकान नंबर के अंकों को एक बार फिर देखा।

सामने की गोल पत्थर जड़ी सड़क पर से एक मोटर गुज़री।

चौरास्ते के एक ओर वही रेस्तराँ था त्राइम्फ़ो, जिसकी दूसरी मंज़िल पर हम तीनों ने कई बार खाना खाया था। उसके दरवाज़े के बगल वाली नीली काँच की दीवार पर लिखा था एला दो। घर लौटने से पहले मैं उसके अंदर जाकर वेटर से आइसक्रीम खरीदते हुए कहता था—तोमार कासा। आइसक्रीम मैं वेटि के लिये घर ले जाता था। कंधे पर तौलिया रखे वह वेटर। द ला चोकेलातो ?—निहायत शफ़ीक मैनेजर पूछता था। —सी, चोकेलातो।

मैं अब अपने आप कहीं भी जा सकता था।

फ़्लोरीदा पर सबवे से बाहर निकल कर होटल तलाश करने लगा। तुकुमान और माइपू सड़कों के चौरास्ते के एक बगल, नेपोलियन की टोपी लगाए शातिर आँखों वाले व्यक्ति के बड़े पोस्टर के नीचे अखबारों का एक छोटा-सा स्टॉल था। वहाँ से ताज़ा अखबार खरीदा और आसपास के किसी होटल का नाम पता पूछा। स्टॉल वाले ने एक चिट पर होटल का नाम लिख कर थमा दिया।

वह होटल फ़्लोरीदा सबवे स्टेशन की सीढ़ी के ठीक सामने था। होटल का किराया अधिक मालूम दे रहा था पर मैंने सोचा कल या परसों में यहाँ से चला ही जाऊँगा।

पाँचवीं मंज़िल के अपने कमरे में पहुँच कर खिड़की से नीचे देखा तो देलगादो के सामने वाला चौरास्ता और आते-जाते स्त्री-पुरुष दिखायी दिये।

दोपहर का समय हो गया था।

तेज़ कदमों से प्लासा सान् मार्तीन के स्मारक के पास पहुँचा तब एक बज कर दस मिनट हो गये थे। उसने हाथ उठा कर मुझे इशारा किया।

—वेटि कहाँ है।

—उसका पिता उसे ले गया है। वह कल आयेगी। वह जाना नहीं चाहती थी। पर बाद में इस शर्त पर जाने को तैयार हो गयी कि शनिवार को वह हमारे साथ रहेगी।

वह मुझे माइपू के एक रेस्तराँ में खाना खिलाने ले गयी लेकिन वह पहले भिन्न रेस्तराँ था। काफ़ी देर तक वह उस मोटे वेटर से हँस-हँस क

एक के आस-पास अकेले घूम रहा हूँगा, उसमें अचानक भेंट हो सकती है।

एक बार होटल के कमरे में जा कर रात को खाने की तलाश में फिर बाहर निकलने की इच्छा न थी इसलिये होटल जाने की बजाय सारमिएन्तो के चौराहे तक गया कि रात का खाना शाम को ही ला लूँ। वहाँ वह दूकान थी जिस पर मैंने दोपहर को खाना खाया था।

उस वक्त काउन्टर के आगे एक भी ग्राहक न था। पीछे वही लड़की खड़ी थी जिसने दोपहर को ट्रैवलर्स चेक भुनाने के लिये पास की एक ग़ैर सरकारी एजेंसी का नाम पता बताया था। वह मुझे पहचान कर मुस्करा दी।

—हैम्बर्गर, आलू और क्रीम। क्या मैं ख़रीद कर होटल ले जा सकता हूँ?

—हाँ। मैं पैक कर दूँगी। तुम कुछ परेशान दिखायी देते हो।

—नहीं तो। —मैंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

उसने कागज़ की बड़ी थैली में रख कर सामान दिया।

—मैं कल या परसों यहाँ से चला जाऊँगा।

—क्या तुम यहाँ लंबे समय रहे?

—नहीं। चंद एक दिन।

मैं वापस मुड़ने को था तभी उसने दाहिनी हथेली आगे बढ़ायी।

—मैंने दाम क्या नहीं चुकाया?

वह खिलखिला कर हँस पड़ी—क्या मैं तुमसे हाथ मिला सकती हूँ। अपनी नासमझी पर मुझे भी हँसी आ गयी।

—बेशक।

दूकान से बाहर निकलने के बाद भी मेरी आँखों के सामने उस अपरिचित लड़की से विदा होने का दृश्य बार-बार पलट कर आता रहा पर थोड़ी-सी देर में वह दृश्य भाप की तरह गायब हो गया।

अंधेरे कमरे में खिड़की के सामने खड़े होने पर फ़्लोरीदा स्टेशन की सीढ़ियाँ दिखायी दे रही थी। बाहर वर्षा की बौछार पड़ी होगी क्योंकि देलगादो का लाल नियॉन साइन और दूसरी सभी रोशनियाँ कोरियन्तेस की चौड़ी काली सड़क पर भी उतर आये थे—जैसे कि वह सड़क नहीं, एक गहरी नहर थी, जिसके अंदर रोशनियाँ नशे में लड़खड़ाते पैरों पर खड़ी हो कर नाचने की कोशिश कर रही थीं। खिड़की के काँच पर बौछार की चंद बूँदें चिपकी रह गयी थी। रात के साढ़े ग्यारह-बारह बजे थे। कुछ एक छतरियाँ कोरियन्तेस का चौरास्ता धीरे-धीरे पार कर रही थीं और रात, रोशनी, वर्षा और अँधेरे में बड़ी अजीब-सी दिखायी देती थीं।

—वह सफ़र ख़त्म हो गया।—उसने धीरे से कहा।

—मुझे इस बात पर बड़ा आश्चर्य होता है। मैं यह जानता हूँ, दुनिया में लाखों-करोड़ों स्त्री-पुरुषों के साथ ऐसा होता है कि एक दिन वे अलग-अलग रास्तों पर चले जाते हैं। मैं जानता हूँ पर मुझे बहुत ही अचम्भा होता है कि ऐसा क्यों होता है और मैं विश्वास नहीं कर पाता। तुम ऐसा कभी न सोचना कि मुझे इससे चोट पहुँची। मुझे सिर्फ़ आश्चर्य हो रहा है। मैं इसे अपना सौभाग्य मानता हूँ कि मैं आश्चर्य करने की उम्र को पार करके, सदमा लगने या खुश होने की उम्र में नहीं पहुँचा हूँ।

—ठीक है।—वह अचानक बोली। वह भी शायद कुछ कहना चाह रही होगी पर उसने कहा नहीं।

—तुम यहाँ से सबवे पर सवार होगी?

—नहीं। मैं कुछ देर पैदल जाऊँगी। दूसरे या तीसरे स्टेशन से सबवे पकड़ लूँगी।

तभी चौरास्ते का सिगनल बदला और इंतज़ार में खड़ी कारें फिर दौड़ने लगीं।

—अब हम कभी नहीं मिलेंगे।—मैंने कहा।

—हाँ। अब हम कभी नहीं मिलेंगे।

—अपना ख्याल रखना।

—तुम भी।

वह घूमी और आगे बढ़ गयी।

फुटपाथ के किनारे-किनारे जा रही वह लड़की जो गहरे आसमानी रंग का स्कर्ट और सफ़ेद स्लीवलेस ब्लाउज़ पहने थी, वही थी। वह फुटपाथ उस धरती से कितने हज़ार किलोमीटर दूर था, जो मेरा और उसका देश था, जहाँ वह और मैं पैदा हुए थे, जहाँ पहली बार हमारा परिचय हुआ था, जहाँ फ़ुजि की पाँच झीलों को हमने एक साथ देखा था—धरती के दूसरी ओर!

मैंने निगाह दौड़ा कर उसे देखना चाहा लेकिन उसकी आकृति बहुत आगे जा कर दूसरे आते-जाते लोगों की भीड़ में खो गयी थी।

काफ़ी देर बाद इस बात पर मेरा ध्यान गया कि मैं देर से वहीं खड़ा हूँ तो मैं चलने के लिए वापस मुड़ गया।

उसी बुएनोस आएरस में रहते हुए भी मुझे लगा कि मैं अब दूर लौट रहा हूँ। कितनी असंभव होगी यह संभावना कि कल या परसों, सुबह दोपहर या शाम को फ़्लोरीदा गली से आते-जाते, या जब मैं प्लासा सान् मार्तीन में स्मा-

रक के आस-पास अकेले घूम रहा हूँगा, उससे अचानक भेंट हो सकती है।

एक बार होटल के कमरे में जा कर रात को खाने की तलाश में फिर बाहर निकलने की इच्छा न थी इसलिये होटल जाने की बजाय सारमिएन्तो के चौराहे तक गया कि रात का खाना शाम को ही खा लूँ। वहाँ वह दूकान थी जिस पर मैंने दोपहर को खाना खाया था।

उस वक्त काउन्टर के आगे एक भी ग्राहक न था। पीछे वही लड़की खड़ी थी जिसने दोपहर को ट्रैवेलर्स चेक भुनाने के लिये पास की एक ग़ैर सरकारी एजेंसी का नाम पता बताया था। वह मुझे पहचान कर मुस्करा दी।

—हैम्बर्गर, आलू और क्रीम। क्या मैं खरीद कर होटल ले जा सकता हूँ?

—हाँ। मैं पैक कर दूँगी। तुम कुछ परेशान दिखायी देते हो।

—नहीं तो। —मैंने मुस्कराते हुए उत्तर दिया।

उसने कागज़ की बड़ी थैली में रख कर सामान दिया।

—मैं कल या परसों यहाँ से चला जाऊँगा।

—*क्या तुम यहाँ लंबे समय रहे?*

—नहीं। चंद एक दिन।

मैं वापस मुड़ने को था तभी उसने दाहिनी हथेली आगे बढ़ायी।

—मैंने दाम क्या नहीं चुकाया?

वह खिलखिला कर हँस पड़ी—क्या मैं तुमसे हाथ मिला सकती हूँ। अपनी नासमझी पर मुझे भी हँसी आ गयी।

—बेशक।

दूकान से बाहर निकलने के बाद भी मेरी आँखों के सामने उस अपरिचित लड़की से विदा होने का दृश्य बार-बार पलट कर आता रहा पर थोड़ी-सी देर में वह दृश्य भाफ की तरह गायब हो गया।

अंधेरे कमरे में खिड़की के सामने खड़े होने पर फ्लोरीदा स्टेशन की सीढ़ियाँ दिखायी दे रही थी। बाहर वर्षा की बौछार पड़ी होगी क्योंकि देनगादो का लाल नियॉन साइन और दूसरी सभी रोशनियाँ कोरियन्तेस की चौड़ी काली सड़क पर भी उतर आये थे—जैसे कि वह सड़क नहीं, एक गहरी नहर थी, जिसके अंदर रोशनियाँ नशे में लड़खड़ाते पैरों पर खड़ी हो कर नाचने की कोशिश कर रही थी। खिड़की के काँच पर बौछार की चंद बूँदे चिपकी रह गयी थीं। रात के साढ़े ग्यारह-बारह बजे थे। कुछ एक छतरियाँ कोरियन्तेस का चौरास्ता धीरे-धीरे पार कर रही थीं और रात, रोशनी, वर्षा और अँधेरे में बड़ी अजीब-सी दिखायी देती थीं।

कमरे की चार दीवारों के बीच ठहरा हुआ सन्नाटा—चुप्पी का। जैसे कि कमरे के बीच में रखी छोटी चौकी पर हल्के रंग के फ़ुरोशिकी कपड़े में लिपटा हुआ उपहार कोई उस बीच छोड़ गया हो, जब मैं बाहर चला गया था। नहीं। वहाँ मुझे मस्तिष्क की शिराओं को ताँत की तरह कस कर तैयार नहीं रखना था और चौकन्ना नहीं रहना था दरवाज़े की घंटी बज उठने के लिये।

तो फिर मैं—

तुमने कहा था न, कि यह सवाल तुम नहीं पूछोगे।

तो क्या मुझे वापस चले जाना चाहिये, जहाँ मैं कभी नहीं गया हूँ। या कि मुझे सीधे जाना चाहिये, जहाँ से मैं आया हूँ।

दोनों बेकार हैं।

तो मुझे सिर्फ़ आगे बढ़ना चाहिये, वह कहीं भी क्यों न हो।

सुबह उठते ही मैंने एयरलाइन के आफ़िस में फ़ोन किया।

—क्या आप मुझे आज रिओ-लीमा लॉस से तोक्यो की फ़्लाइट में एक सीट दे सकती हैं?

—क्या उसमें आप का रिज़र्वेशन है?

—नहीं। मेरे पास दूसरी एयरलाइन्स का टिकट है।

—ज़रा रुकिये। —उसने कहा

—हम आपको लीमा तक की सीट दे सकते हैं। उसके बाद आपको खुद कोशिश करनी होगी, हो सकता है मिल जाए।

—कल की फ़्लाइट में?

—कल कोई फ़्लाइट नहीं है, परसों है।

—तो परसों।

—ज़रा ठहिरये।

—परसों, हाँ, हम आपको लॉस तक पहुँचा सकते हैं लेकिन उसके आगे हमारी ज़िम्मेदारी नहीं होगी।

—धन्यवाद। परसों की फ़्लाइट में मुझे एक सीट दे दीजिये। —मैंने उसे अपना नाम और टिकट नंबर बताये।

मैं परेशान हो गया था। परेशान होने की बात थी नहीं। आज और कल

न मही, परसों। बाहर खाना खाते हुए, कमरे का चार दिन का किराया मैं चुका सकता हूँ।

नीचे सुबह ऑफिस जाने वालों की भीड सिगनल हरा होने पर चौडी सडक पार करके फ्लोरीदा की गली मे आ-जा रही थी। उतने ऊँचे पर मे, स्त्री-पुरुषों की वे टूटी हुई कतारें चींटियो की कतारों जैसी लगती थी।

नहीं। उनमें मे उसे पहचान सकना सभव नहीं था।

मैंने दोबारा फ़ोन किया।

इस बार एक पुरुष स्वर ने उत्तर दिया।

मैंने उसका नाम बता कर कहा कि मैं उससे बात करना चाहता हूँ।

—अभी दो-तीन मिनट पहले उनका फोन आया था। उन्होंने यात्रा करने के लिये दस दिनों की छुट्टी ले ली है।

मैंने उनसे ग्रासियस कह कर रिसीवर रख दिया। कपडे बदले और नीचे आया। काउन्टर पर सफेद बालों वाली वही अधेड औरत थी जिसने कल मेरे लिये कमरा बुक किया था।

—बारीलोचे तक का हवाई जहाज का किराया क्या होगा।

—ज्यादा नहीं। —उसने बताया—यही कोई दस हजार पेसो के आस पास होना चाहिये।

इतना मैं खर्च कर सकता हूँ, मैंने मन मे अपने को आश्वस्त किया।

—क्या बारीलोचे बहुत महँगी जगह है?—मैंने फिर पूछा।

—नही तो। लगभग बुएनोस आएरस के बराबर। लेकिन इस समय वहाँ भीड़ बहुत होगी। रिज़र्वेशन—

उसने हवाई कंपनी का पता बता दिया था। एइरोलिनियास अर्खेन्तिनास का ऑफिस, फ़्लोरीदा के एकदम छोर पर दाइगेनाल, सुब्ते डी स्टेशन के पास एक मार्केट मे था और उसके अंदर यात्री, सुबह अस्पताल मे पर्ची लिखाने वाले मरीज़ों की भीड़ की तरह जमा थे। बंद दरवाज़ों के ऊपर अलग-अलग स्थानों के नाम लिखे थे और टिकट खरीदने वाले यात्रियों की कतारें बेन्चों पर बैठी थी।

—बारीलोचे। एक।

ग्राउन्ड होस्टेस ने बताया कि अगले दस दिनों तक की सारी उडानों की सीटें भर चुकी हैं।

काउन्टर के बाहर एक दलाल खडा था। वह सुन कर मुस्कराने लगा।

—सिर्फ एक सीट। —मैंने उसके चेहरे के सामने एक उंगली उठा कर दिखाते हुए कहा।

—मा रीया ! —उसने बगल वाले खाली काउन्टर के पीछे बैठी लड़की की ओर आवाज़ फेंकी ।

मारिया अपनी कुर्सी पर से उठी ।

—मेरे साथ आओ । —उसने मुझसे कहा ।

वह मुझे दूसरे कमरे में ले जा रही थी ।

रिटर्न ?—उसने रास्ते में पूछा ।

—हाँ । एक, सिर्फ़ एक ।

—कितना ?—मैंने खजांची की खिड़की में झुक कर पूछा । मेरे बायें हाथ में नीला और सफ़ेद हवाई टिकट था ।

—सात हज़ार एक सौ छियासी पेसो ।

वह तीसरे दिन का टिकट था । तीसरे ही दिन लोमा तक मुझे रिज़र्वेशन मिल गया था लेकिन अब उसकी ज़रूरत नहीं रह गयी थी ।

वह बेटि को ले कर बारीलोचे ज़रूर गयी होगी । उसने कहा था कि वह बेटि को लेकर बारीलोचे ज़रूर जाएगी । परसों मैं वहाँ पहुँच कर उन्हें ज़रूर ढूंढ़ निकालूंगा इसलिये परसों तक मैं बुएनोस आएरस में कहीं भी या हर कहीं घूम सकता हूँ ।

पिछले दिन मैंने स्पेनी स्मारक तक अकेले जाने की कोशिश की थी लेकिन सब्वे की चार लाइनों के कई स्टेशनों पर धरती के अन्दर-अन्दर भटक कर अंत में निराश हो लौट आया था । स्मारक का रंगीन फ़ोटो पैम्फ़्लेट में छपा था और वह पैम्फ़्लेट मेरे जेब में था । मैंने वह स्मारक उस शाम को देखा था जब पालेर्मो झील से बेटि, उसके और उसकी सहेली के साथ पैदल सब्वे स्टेशन की ओर लौटते हुए मैं और बेटि चौराहे के बीच के तालाब में स्थित उस स्मारक तक चले गये थे और हम उनसे बिछुड़ गये थे । वह जगह पालेर्मो से लौटते हुए, रोमन मूर्तियों के स्मारक से कुछ आगे एक चौराहे पर थी और उसके पास ही इतालिनो या इससे मिलते-जुलते नाम का एक सब्वे स्टेशन भी था ।

मैंने वह फ़ोटो फ़्रन्ट के काउन्टर पर खड़े मोटे क्लर्क को दिखा कर वहाँ तक जाने का रास्ता दरियाफ़्त किया । उसका चेहरा ऐसा था कि वह होटल का क्लर्क होने की बजाय अर्जेन्तीनी संसद् का सदस्य हो सकता था । उसने बताया कि मुल्ते डी से नुएवे दे फ़ुरियो पर उतर कर पालेर्मो जाने वाली सब्वे पर सवार होकर जाया जा सकता है या तीन गलियों के आगे कातेद्राल स्टेशन से सवार होकर सीधे ।

मैं उस सब्वे लाइन पर पहली बार जा रहा था इसलिये स्टेशन आने पर

एक संख्या घटा देता था—जुएवे दे फुरिओ के बाद पालेर्मो नवाँ स्टेशन था।

वह उस लाइन का अंतिम स्टेशन भी था। लेकिन ऊपर आने पर कहीं भी झील नजर न आयी। सडक के एक ओर एक इमारत बन रही थी और उसकी खुदी हुई ज़मीन में धूर भरी थी। सडक के दोनों ओर बड़े-बड़े पत्तों वाले नाटे वृक्षों की कतारें थीं।

सामने से एक अधेड व्यक्ति आ रहा था।

—सेन्योर !—मैंने उसे रोक कर पूछा—झील, पालेर्मो झील।

उसने चलते-चलते, नात्सी सैल्यूट की मुद्रा में एक हाथ उठा कर दूर की ओर इशारा किया और आगे बढ गया।

मुझे उस वक्त झील देखने से अधिक उतावली थी एक सार्वजनिक प्राइवेट क्यूबिकल की। बुएनोस आएरस में मैंने एक भी सार्वजनिक पेशाबघर नहीं देखा था। हो सकता है, वहाँ एक भी न हो और उसकी जरूरत भी किसी को न पडती हो। अर्खेन्तीनी, पेय के नाम पर केवल वाइन पीते हैं, पौराणिक देवताओं की तरह, और देवताओं के पेशाब करने का जिक्र किसी भी देश के पौराणिक साहित्य में नहीं पाया जाता।

कुछ आगे एक पार्कनुमा जगह का फाटक था और फाटक के बीचोंबीच निःशुल्क प्रवेश की तख्ती रखी थी। स्त्री-पुरुष-बच्चों के छोटे-बडे झुण्ड बेधडक अन्दर जा रहे थे।

वह वहीं था, फाटक के अन्दर।

बाद में एक कप जूस खरीद कर पास की एक खाली बेन्च पर बैठ गया।

सामने रास्ते के गोले के बीच में एक ताल था। ताल में जलपक्षी तैर रहे थे। किनारे की ढाल पर उगी हरी घास धूप में चमक रही थी। सफेद फ्रॉक पहने एक छोटी बच्ची दूर भागने की कोशिश कर रही थी और उसकी हँसती हुई माँ आ कर उसे पकडने का नाटक कर रही थी।

बेन्च के पीछे के किसी पेड की छाया बडे दायरे में फैली थी।

पास की बेन्च पर बैठा नौजवान जोडा ऊँची आवाज में अपने निजी संबंधों पर बहस कर रहा था।

मैं इस पार्क से, और इस शहर से भी चला जाऊँगा पर मैं यहाँ आया क्यों था ? मैं बडी देर तक अचंभे में पडा रहा—मैं यहाँ आया, हाँ, मैं आया तो—यह कितने आश्चर्य की बात है—विश्वास नहीं होता कि मैं यहाँ आया और इस वक्त एक ऐसे पार्क की बेन्च पर बैठा हूँ जिसका नाम तक मुझे नहीं मालूम। यह कितने आश्चर्य की बात है !

वहाँ से उठ कर चल देने का इरादा मैं बड़ी देर तक करता रहा। आखिर, धूप पास खिसकती हुई वेन्च पर आ गयी।

पार्क के दूसरे फाटक से वाहर निकला—अरे, सामने वही बुलंद स्पेनी स्मारक था! उस रोज़ हम शायद चौराहे के दूसरी ओर से वहाँ आये थे।

तालाव के पानी में पैर डाल कर वे ही चार-पाँच नङ्गी लड़कियाँ इठला रही थीं। उनमें से हर एक की कमर से कपड़ा फिसलते-फिसलते जाँघ पर आ कर ठहर गया था। उस दिन वेटि चबूतरे पर चढ़ कर उनके पास चली गयी थी और खेल-खेल में उनके सिर के पीछे जा कर खड़ी हो गयी थी।

तभी हमें देर हो गयी होगी और वे दोनों कहीं इधर-उधर चली गयी होंगी।

एक नौजवान लड़की सफ़ेद पतलून और विना ब्रेसरी सिर्फ़ काला ब्लाउज़ पहने, सड़क पार करके उन मूर्तियों की ओर आ रही थी।

उसने फ़ोटो उतरवाने से इनकार कर दिया। शायद उसे कपड़ों के नीचे नंगी होने का अचानक एहसास हो आया था।

मुझे याद आयी, एक वार जापान से मैंने जापानी ज़िंदगी के कुछ फ़ोटो उसे भेजे थे, जो उसकी एक अर्खेन्तीनी सहेली को पॉर्नोग्राफ़िक लगे थे—और यह सुन कर मुझे वहुत खुशी हुई थी।

तालाव के एक किनारे खड़ी एक वदसूरत और विशाल मूर्ति के आगे तिपाई पर पुराना कैमरा खड़ा था।

—सेन्योर!—एक अधेड़ उम्र पुरुष ने मेरे पास आ कर धीमी आवाज़ में पूछा। उसने सोचा होगा कि मैं स्मारक के सामने खड़े होकर अपनी तस्वीर उतरवाना चाहता हूँ।

—मेरी तस्वीर उतार दोगे? वह वोला। वह स्मारकों के पास सैलानियों के फ़ोटो उतारने वाला पेशेवर फ़ोटोग्राफ़र था और मेरे वहाँ आने के पहले तक उस वड़ी मूर्ति की छाया में खड़ा था। उसके चेहरे पर सिर्फ़ एक आँख थी—फ़ोटो उतारने के लिये उसे एक से अधिक आँख की जरूरत थी भी नहीं—और दूसरी आँख की खाली जगह उसने अपनी टोपी की छाजन झुका कर ढक ली थी।

फ़ोटो उतर चुकने के वाद उसने जेव सँभाल कर कागज़ की चिट निकाली और उस पर अपना नाम-पता लिखने लगा।

—इस पते पर मुझे भेज देना ज़रूर।

—ए लादो!—सामने वाले पार्क के फाटक पर साइकिल के पीछे आइस-क्रीम का चौकोर वक्स रखे एक मोटे आदमी ने नाराज़ स्वर में हाँक लगायी—ए लादो!

घर लौटते समय मैं हमेशा चौरास्ते की उस दूकान से कागज के गिलास में आइसक्रीम खरीदता था।

एक दिन ऐसा हुआ कि मैंने कई बार घंटी बजायी फिर भी दरवाजा न खुला तो समझ गया कि अभी वे वापस नहीं आयी है। नीचे उतर कर फाटक के आस-पास टहलने लगा।

अचानक काफी दूर से बेटि ने मुझे पुकारा तो एक बार चौंकने के बाद मैं मुस्कराने लगा क्योंकि इतनी बड़ी दुनिया में सिर्फ वही मुझे वैसे पुकारती थी।

पास आने पर मैंने उसे कागज में लिपटा आइसक्रीम का गिलास दिया तो वह उत्तेजित पिल्ले की तरह उछलने-कूदने लगी। फिर एक बार उसने मुझसे शालियम कहा।

मैं उसे गौर से देखने लगा। उसने मुझे अपनी ओर देखते देख कर मखौल उड़ाने के ढंग से मुस्कराते हुए मोथरी आवाज में खिंचती हुई हाँक लगायी —ए लाओ!

उसका चेहरा टूटे हुए टिन के बर्तन की तरह एक ओर पिचका हुआ था। मुझे उसकी ओर घूर कर देखने पर पश्चात्ताप होने लगा।

सड़क के किनारे एक खाली बग्घी खड़ी थी और उसकी सबसे ऊँची सीट पर कोचवान बैठा था। कोचवान ने हँस कर ऊँची आवाज में आइसक्रीम वाले से कहा कि वह भी अपना फोटो उतरवा ले।

आइसक्रीम वाले ने उसे उत्तर न दे कर हँसते हुए फिर आवाज दी—ए लाओ!

नहीं, जीते-जागते इन्सान की जिंदगी का कुछ भी पोर्नोग्राफिक नहीं हो सकता है। वह खूबसूरत है, और खूबसूरत न भी हो तो उसमें धड़कन है। भले ही उसके सिर्फ एक आँख हो, उसका चेहरा टिन के पिचके डिब्बे की तरह हो, उसके आगे-पीछे चारों ओर जीवन है।

स्मारक के पीछे आसमान में सिर्फ हल्की-सी ललाई बच रही थी।

दूसरी ओर इतालिया स्टेशन होगा। देखो, अब मैं इस शहर की रग-रग को पहचानने लगा हूँ।

मैं मुस्कराने लगा।

हुए थे और हम एक दूसरे को कभी प्यार करते थे। इन बातों को मैं या तुम या कोई दीगर व्यक्ति कभी नहीं मिटा सकता।

आगे सचमुच, प्लासा इतालिया सबवे स्टेशन में उतरने वाली सीढ़ियाँ थीं।

साथ-साथ सीढ़ियाँ उतरते हुए दो-तीन स्त्री-पुरुषों ने सिर घुमा कर मुझे एक बार ग़ौर से देखा।

—उन्ना !—टिकट खिड़की पर दस पेसो का एक नोट पटकते हुए मैंने कहा।

हल्की रोशनी की फुहार में ऊँघते क्लर्क ने खिड़की के पीछे से भुनभुना कर न जाने क्या कहा, मैं सुन नहीं सका। उसने एक पेसो का नारंगी रंग का नोट उठा कर हवा में लहराया।

ओह, फिर वही बात ! आते समय भी ऐसा ही हुआ था। ग्यारह पेसो की बजाय दस पेसो देने की वजह सिर्फ़ एक टोकन मिला था—टोकन छः पेसो का ! रेज़कारी हड़प ! दस पेसो में एक टोकन, बारह पेसो में दो ! कितना मखौल उड़ाने वाला हिसाब है यह ! इसके पीछे अगर कोई तर्क हो सकता है तो यह कि हर आदमी को अपनी जगह वापस लौटने का टोकन लेकर चलना चाहिये—और अपनी जगह पर वापस लौट आना चाहिये। पर मुझे तो अगले दिन उस शहर से ही चले जाना था।

प्लेटफ़ार्म के फाटक में भी वही मज़ाकिया तिपाई लगी थी—छेद में टोकन डाले जाने पर यात्री की कमर में एक लात मार कर उसे अंदर कर देने वाली !

रोशन प्लेटफ़ार्म पर अँधेरी सबवे ट्रेन आयी। लोग एक साथ चढ़ने उतरने लगे। ट्रेन चल भी दी लेकिन उसके अंदर रोशनियाँ नहीं जलीं। यहाँ तक कि दरवाज़े भी बंद नहीं किये गये ! जब वह स्टेशनों पर आ कर खड़ी होती थी तब सिर्फ़ उतनी देर के लिये उसके अंदर स्टेशन की रोशनी भर आती थी।

चलती हुई अँधेरी ट्रेन में एक फेरीवाला आवाज़ लगा कर पर्स बेच रहा था।

कोई परवाह नहीं, यह बुएनोस आयरस में मेरी आख़िरी रात है। आज छः तारीख़ है, कल मैं बारीलोचे चला जाऊँगा।

मैं एक लावारिस कुत्ते की तरह आज़ाद था। सुबह का थोड़ा-सा वक्त था

जिसे किसी तरह बिताना था। माइपू की एक बद दुकान की खिड़की में देश-देश के डाक टिकट सजे थे। उन्हें देखते-देखते चालीस-पैंतालीस मिनट बीत गये। नौ जुलाई के स्मारक के गिर्द सिर्फ खाली बेन्चें बैठी थीं। मैंने उन्हें पहली बार देखा था तब पश्चिमी क्षितिज पर शाम की बैजनी उजास बच रही थी और गोल फ्रंट वाली इमारत के ऊपर फान्टा और पेप्सि के नियॉन साइन जले थे और इन्हीं बेन्चों पर बहुतेरे लोग बिजली की रोशनी के नीचे चुपचाप बैठे थे। पर यह यहाँ आने से कई महीने पहले मैंने जापान में देखा था, बुएनोस आएरस के पैम्फ्लेट की रंगीन तस्वीर में—और इसी आधार पर उसे एक शाम—रात की अपनी बुएनोस आएरस यात्रा का वर्णन पत्र में लिख भेजा था......

सामने अखबारों का स्टॉल था। मुझे दिन का ताज़ा अखबार ख़रीदना था। पत्रिकाओं के पीछे स्टॉल की जवान मालकिन खड़ी थी। उसकी छातियों की आधी से अधिक गोलाई खुले गले के ब्लाउज़ के बाहर थी और पत्रिकाओं के कवर पर पड़ी कागज़ी औरतों के नंगेपन पर छापे के काले छींटे पड़े थे।

—क्या तुम फोटोग्राफर हो ?—उसने हँसते हुए पूछा।

—नहीं। टूरिस्ट।

प्लासा सान् मार्तिन पास में ही था। मुझे प्यास लगी थी। वहाँ पेड़ के नीचे एक छोटी हौज़ में फुहारे की टोंटी वाला नल था। उस पर एक कबूतर बैठा था और बार-बार सिर झुका कर फुहारे में चोंच डाल कर पानी पी रहा था। मैं उसके पानी पी चुकने के इन्तज़ार में दूर पर खड़ा रहा।

सुबह ही ज़रूरी चीज़ें साथ ले जाने वाले थैले में डाल कर बाकी सामान होटल में जमा करा दिया था। वह थैला कंधे से लटका था इसलिये होटल वापस जाने की आवश्यकता न थी।

रात को किसी वक्त तेज़ बारिश हुई थी। उस वक्त भी घनी बदली छायी थी और उमस वाली गर्मी।

वह भिन्न एयरपोर्ट था—म्युनिसिपल एयरपोर्ट। शायद वही जो बुएनोस आएरस उतरने के कुछ मिनट पहले दिखायी दिया था।

हवाई जहाज़ रनवे पर टहलने लगा था लेकिन उसका दरवाज़ा खुला था। दक्षिण पूर्वी एशिया के किसी देश में—नाम ठीक से याद नहीं, शायद मलेशिया

या इन्दोनेशिया में—एक बार जिस छोटे हवाई जहाज़ से यात्रा की थी उसमें पिछले दरवाज़े के सिर्फ़ कब्ज़े बच रहे थे और सब यात्रियों के सवार हो जाने पर पाइलट ने दरवाज़े पर रस्सी बाँध दी थी ? मैं मन-ही-मन हँसने लगा। हवाई जहाज़ जब रनवे छोर पर पहुँच गया तब एक होस्टेस ने दरवाजा बन्द कर दिया। जाहिर है वह बुएनोस आएरस की सबवे ट्रेन नहीं, बोईंग जेट जहाज़ था और उड़ते वक्त उसके दरवाज़े सबवे के दरवाज़ों की तरह खुले नहीं रह सकते थे।

जहाज़ उड़ा तो कुछ ही देर में आकाश में छाये सारे बादल नीचे चले गये। पारदर्शी जल वाली झील के ऊपर तैरते सफ़ेद झाग जैसे बादल।

बुएनोस आएरस बीस मिनट पीछे छूट गया था।

लेकिन मैं यहाँ वापस आऊँगा, मैंने अपने मन को आश्वासन दिया।

प्रायः एक घंटे बाद जहाज़ नीचे उतरने लगा। नीचे बंजर मैदानों के बीच से बहती एक पतली नदी थी और उसके एक किनारे पर पास-पास दस-पंद्रह चीड़ के वृक्षों की एक छोटी सी-कतार खड़ी थी।

मैं थैला उठा कर नीचे उतरने जा रहा था लेकिन होस्टेस ने बताया कि वह बारीलोचे नहीं निउकुएन है। थैला सीट पर छोड़ कर नीचे उतर आया। बाहर गर्मी नहीं थी और वह छोटी-सी जगह लगती थी, जैसी कि किसी भी कस्बाई रेलवे स्टेशन के आस-पास मुख्तसर-सी बस्ती बस जाती है।

फिर उड़ने के कुछ ही देर बाद दाहिनी ओर के क्षितिज की सीधी रेखा में एक छोटा-सा सफ़ेद ढेर दिखायी देने लगा।

बगल में बैठे यात्री से पूछा तो उसने बताया कि वह सामने अन्देस पर्वत-माला है और वह त्रोनादोर की चोटी है, अन्देस की सबसे ऊँची चोटी।

बारीलोचे में हवाई जहाज से बाहर निकलते ही बर्फ़ीली हवा का तेज झोंका लगा। सचमुच, जैसा कि पोस्टरों में दिखाया गया था, अन्देस के पहाड़ों पर बर्फ़ पड़ी थी। वे पहाड़ स्वच्छ हवा के कारण कृत्रिम रूप से नज़दीक दिखायी दे रहे थे। मैं उन्हीं कपड़ों में था जो मैंने बुएनोस आएरस में पहने थे—आधी बाँह की कमीज़ और गर्मी का बारीक पैंट। ऊनी कपड़े मैं जापान से ही नहीं लाया था क्योंकि बुएनोस आएरस में गर्मी का मौसम होने का मुझे पता था। बारीलोचे में इतनी अधिक सर्दी होने का अनुमान नहीं किया था।

बुएनोस आएरस में बारीलोचे का टिकट ख़रीदते समय होटल के बारे में पूछताछ की थी तो यह बताया गया था कि बारीलोचे की विज़िओन टूरिस्ट एजेंसी

के कर्मचारी एयरपोर्ट पर मिलेंगे और वे मेरे लिये होटल ढूँढ़ देंगे। लेकिन उस समय वहाँ विजिओन या किसी दूसरी टूरिस्ट कंपनी का कोई आदमी न था।

ठंड से मेरे दाँत धीरे-धीरे बजने लगे।

एक डेस्क के पीछे खड़े अमरीकी जैसे नौजवान से पूछा तो उसने कहा कि मुझे अपने आप शहर तक जाना होगा। वह मेरे साथ बाहर तक आ कर एक टैक्सी ड्राइवर को विजिओन एजेंसी का हवाला दे कर अंदर चला गया।

बड़ी भील के बगल में एक पक्के चौक के तीन ओर पत्थर की दो एक-मंजिला पुरानी शैली की इमारतें थीं। सामने वाली एक इमारत के ऊपर घंटाघर की मीनार थी और उसके नीचे दो पुरानी तोपें पहियेदार गाड़ियों पर रखी थीं।

टैक्सी हल्की-सी ढाल चढ़ कर बायीं ओर घूमी और इमारत की पहली मंजिल में बने महराबदार रास्ते से निकल कर एक किनारे खड़ी हो गयी।

—तूरिएमो विजिओन।—टैक्सी ड्राइवर ने बताया।

दफ्तर के अंदर सैलानियों की भीड़ जमा थी। मैंने पहली ही नजर में उन सब के चेहरे देखे। वह उनमें नहीं थी। अगर वह रेल से आ रही होगी तो कल किसी समय बारीलोचे पहुँचेगी।

काउन्टर के पीछे खड़ी लड़की यात्रियों के सवालों के जवाब में मुस्करा अधिक रही थी और चश्मा लगाए एक ठिगना पुरुष काउन्टर के दो छोरों के बीच झुँझलाता हुआ आ-जा रहा था। वह पिंजरे के पीछे चहलकदमी करने वाले रीछ की तरह लगता था।

उनके पीछे वाली दीवार पर प्राकृतिक दृश्यों के बड़े-बड़े रंगीन पोस्टर चिपके थे। उन दृश्यों में कितनी निश्चिन्तता थी! मैंने कंधे पर का थैला उतार कर फर्श पर रख दिया।

—सेन्योर?—मोटा आदमी मुझे पुकार रहा था। उसका चेहरा दूसरों के कंधों के बीच से मुझे घूर रहा था।

किसी सस्ते होटल में एक कमरा, मैंने उसे बताया।

वह उत्तर दिये बगैर शीशे के पार्टिशन के पीछे चला गया और फोन करने लगा। लेकिन जल्दी ही वह फिर प्रकट हुआ।

—कितने दिनों के लिये?—उसने मुझसे पूछा।

—मेरी मित्र यहाँ आयी होगी। या कल तक आ जायेगी। उसके बाद—

—आप अंग्रेजी बोल सकते हैं?

—आप इसकी फिक्र न करें। थोड़ी मोड़ी मुझे आती है।

—नहीं। होटल वालों को दिक्कत पेश आती है।—बुदबुदा कर कहते हुए वह फिर शीशे के पीछे चला गया। वह मानव संबंधों से चिढ़ा हुआ लगता था।

—मैंने एक होटल में आपको कमरा दिला दिया है।—उसने बाहर आ कर मुझे बताया—आप यहीं रुकिये। होटल की कार आपको लेने आयेगी।

वह मालगाड़ी के गार्ड की तरह परेशान था।

होटल एकदम पास में ही था। महराबदार रास्ते से निकल कर चौक को पार करने के बाद गोल रास्ता ऊपर चढ़ कर दाहिने हाथ, मुश्किल से पचास कदम पर।

मैनेजर की बारीक नाक पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा था और उसका चेहरा था कि अगर वह सिर पर विग भी लगा ले तो वह फ़िल्मों में जज का पार्ट कर सकता था। वह सिर्फ़ अँगरेज़ी बोलता था।

उसने मुझे मेरे कमरे की चाभी दी। चाभी के छल्ले में मोमिज जैसी पत्ती के आकार का लकड़ी का टुकड़ा जुड़ा हुआ था। काउन्टर पर उसी लकड़ी का ऐश ट्रे रखा था।

—मेरी एक मित्र यहाँ आने को थीं। मुझे पता नहीं कि वे किस होटल में ठहरी होंगी। उनका पता क्या किसी तरह लगाया जा सकता है ?

—वे होटल में ठहरी हैं या पेन्सियोने में।

इस बात पर मेरा ध्यान पहले नहीं गया था—बल्कि पेन्सियोने सस्ते होने के कारण उसे वहीं ठहरना चाहिये था।

—यहाँ इतने होटल और पेन्सियोने हैं पर मैं कल सुबह होटलों में फ़ोन करके पता लगाने की कोशिश करूँगा। उनका नाम मुझे लिखा दें। सेन्योरा—

—रहने दीजिये। मुझे यह भी ठीक मालूम नहीं कि वह अभी तक यहाँ पहुँची भी हैं या नहीं।

मुझे वास्तव में यह निश्चित रूप से नहीं मालूम था कि वह अब अपना नाम किस तरह लिखती थी—अपने कुँवारेपन के पारिवारिक नाम के साथ या अपने भूतपूर्व पति के नाम के साथ।

—क्या यहाँ ऊनी कपड़ों की कोई दूकान होगी ?

—आज तो देर हो गयी है। शाम होते ही सभी दूकानें बंद हो जाती हैं। कल सुबह आप ख़रीद सकते हैं। और अगर आप खाना यहाँ खाना चाहें तो किचन में खाने का पहले से ऑर्डर दे सकते हैं। सुबह का नाश्ता तो कमरे के किराये में शामिल है। अगर सस्ते में खाना चाहें तो वह एक रेस्तराँ है, दोन निकोला, पास में ही है, वहाँ खा सकते हैं।

उसने पर्चे पर पहले से छपे बारीलोचे के नक्शे में दोन निकोला की जगह पर कलम से बिन्दी लगा कर समझाया। मेरे पहनावे पर ध्यान देकर उसने मुझे एक सस्ते रेस्तराँ का पता बताना आवश्यक समझा होगा।

होटल का ब्वॉय ऊपर के कमरे तक मुझे छोड़ने आया।

—मील ग्रासीयस सेन्योर! —वह वापस जाने लगा तो मैंने उसे धन्यवाद दिया। उसने सकपका कर एक नजर मेरी ओर डाली और बिना कुछ कहे दरवाजा बंद करके चला गया।

वह कमरा मेरी जरूरत से कहीं ज्यादा बड़ा था। उसमें दो बड़े पलंग थे। अगर हम तीनों इकट्ठे आये होते तो मैं एक पलंग पर और वे दोनों दूसरे पलंग पर आराम से सो सकते थे।

खिड़की का पर्दा खोलने पर सड़क के दूसरी ओर लाल रंग की एक इमारत दिखायी दी, जिसके आगे एक अकेली कार, पुराने मॉडल की छोटी वाक्सवैगन खड़ी थी। उस इमारत के पीछे पहाड़ी ढाल पर चीड़ के काले पेड़ खड़े थे। शाम की बची हुई पीली तेज धूप उनकी फुनगियों पर पड़ रही थी और वे पेड़ जलती हुई मोमबत्तियों की तरह लग रहे थे। आसमान कलछौंह नीला हो गया था, अनन्त गहराई में पीछे की ओर खिसकता हुआ..

हॉर्न की जरा-सी आवाज, एक दूसरे का हाथ पकड़े दो लड़कियों ने दौड़ कर बाकी सड़क पार की और एक कार सामने से गुजर गयी।

—चलो, बाहर चलें।

पास के तिराहे से एक रास्ता नीचे की ओर जाता था—वही रास्ता जिससे होटल आया था—एक रास्ता सीधे। उतनी छोटी बस्ती में कोई खो नहीं सकता। बायीं ओर एक चौकोर बदशक्ल इमारत थी। उसकी पहली मंजिल की बंद दूकानों के अँधेरे शो केसों में टँगे चमड़े के कोट और स्वेटर झपकी लेते मालूम देते थे। कुछ आगे दाहिने हाथ पेट्रोल पंप था और उसके सामने ढालदार सड़क थी, जो वहाँ से दिखायी दे रहा था, बड़ी झील के आगे वाले चौक तक जाती थी।

चौक के दूसरी ओर पत्थर की सीढ़ियाँ थीं और उनके नीचे एक पक्की सड़क। सड़क पार करने पर झील का पत्थर का पुश्ता। काली झील में उठने वाली फेनदार लहरों का लगातार सिलसिला किनारे की ओर आ रहा था। पश्चिम

की ओर नाटी पहाड़ियों के ऊपर आकाश में थोड़ी-सी पीली रोशनी बाकी रह गयी थी। दूर पर एक चर्च का ऊँचा काला कोन था। अन्देस की ओर से आने वाली हवा इतनी सर्द और तीखी थी कि लगता था जैसे मैं एकदम निर्वस्त्र हूँ।

अगर हम तीनों इकट्ठे यहाँ आते तो ! इतनी खूबसूरत जगह में उसके साथ देखना चाहता था। हमने कई-कई महीने पहले, जब मैं अर्खेन्तीना पहुँचा भी न था, यहाँ आने का प्लान बनाया था। उसमें बारीलोचे ऐसा नहीं था और यह बारीलोचे 'वह' बारीलोचे अब कभी नहीं हो सकता। उसमें जहाँ हम जाने को थे वहाँ झील इतनी बड़ी न थी और पहाड़ों पर बर्फ़ नहीं जमा थी और इतनी सर्दी भी न थी। वहाँ एक ऊँचे पहाड़ के नीचे, मैदान के बीच में लाल छतों वाला, तिब्बती मठ जैसा एक घर या होटल था। हम वहाँ गये ही नहीं ! लेकिन वह वेटि को लेकर यहाँ ज़रूर आयी होगी क्योंकि उसने कहा था कि उसने वेटि को बारीलोचे घुमाने का वायदा किया है। मैंने भी वेटि से यही वायदा किया था कि हम बारीलोचे ज़रूर चलेंगे। हम अपने एक जैसे वायदे इकट्ठा क्यों नहीं निभा पाये ! मान लो, इस वक्त वे यहीं हों और इसी समय या कल या परसों राह में भेंट हो जाये तो हम तीनों सिटपिटा जायेंगे या खुश हो जायेंगे, पुराने परिचितों की तरह ललक के साथ आगे बढ़ कर मिलेंगे या एकदम अपरिचित होने का नाटक करते हुए कन्नी काट कर आगे बढ़ जायेंगे।

—क्या तुम भी टूरिस्ट हो ?

वह ऊपर सिर्फ़ एक महीन सूती ब्लाउज़ पहने थी और उसके बाल तेज़ हवा से उड़ रहे थे। वह युवावस्था और अधेड़पन को एक साथ चकमा दे रही, एक अमरीकी लड़की-औरत-स्त्री-महिला थी। पूछते हुए उसने अपने एक हाथ में लटकाया खाकी थैला पुश्ते पर पटक कर रख दिया था।

मैं मुस्कराते हुए उसे ग़ौर से देखने लगा।

—मैं टूरिस्ट हूँ। हिचहाइकिंग करते-करते यहाँ तक आ गयी।

—कहाँ से।

—मैसाच्यूसेट्स, अमरीका, से। —वह हँसने लगी—इट्स फ़नी। हिच-हाइकिंग। क्या तुम्हें किसी होटल में जगह मिल गयी ?

—हाँ।

—यहाँ के सारे होटल बहुत महँगे हैं। —वह बोली—क्या तुम मुझे अपने साथ एक रात के लिये नहीं टिका लोगे ? मैं इसी तरह किसी न किसी के साथ ठहरती आयी हूँ।

वह पुश्ते पर, एक पैर दूसरी ओर लटका कर बैठ गयी।

यह पिटा-पिटाया किस्सा है, मैंने अपने मन में कहा।

—अफसोस है, आज रात के लिये बसेरा तुम्हें किसी और के साथ तलाशना होगा। मेरी पत्नी मेरे साथ है।

—ओः, तुम्हारी पत्नी तुम्हारे साथ आयी है! लेकिन इतनी ठंड में भी उसने तुमसे कोट पहन लेने के लिये नहीं कहा?

मुझे अँधेरा होने से पहले सस्ते में रात का खाना खा लेना था। निकोला, सेन्ट निकोलस के नाम के साथ नत्थी करके मैंने उस सस्ते रेस्तराँ का नाम याद कर लिया था। वहाँ तक जाने का रास्ता मैं किसी भी राहगीर से पूछ सकता हूँ, दोन्दे एस्त निकोला रेस्तोरान्ते। पर रात होने से पहले।

—अरे, क्या तुम जा रहे हो?—वह लड़की बोली।

एक चौरास्ते के कोने पर एइरोलिनिआस अर्जेन्तिनास एयरलाइन्स का नीला नियॉन साइन जल रहा था और उसके आगे सड़क पर ढेर सारा पानी इकट्ठा था। शायद बरसाती पानी ढालदार सड़क के नीचे जमा हो गया था या सड़क के नीचे का पाइप फट गया था। रास्ता पहचानने के लिये जमा पानी वाला चौराहा मैंने याद कर लिया। सड़क का फुटपाथ ऊपर चढ़ती सीढ़ियों का था। एक सीढ़ी के बगल में सिगरेट वाले की गुमटी खुली थी। मुझे सिगरेट भी ख़रीदना था। वहाँ से एल ऐंड एम का एक पैकेट ख़रीदा और निकोला का रास्ता भी पूछ लिया।

वह रेस्तराँ उतना सस्ता नहीं था जितने की मैं उम्मीद कर रहा था। उतावली में हवाई जहाज का टिकट ख़रीद कर मैंने शायद ठीक न किया था। मुझे बारीलोचे पहुँचने की अगर इतनी जल्दी न होती तो मैं रेल से आ सकता था। लेकिन अब वह बीती बात थी। अब मैं खाने और होटल पर अधिक खर्च नहीं करना चाहता था। मैंने सुबह से कुछ खाया न था इसलिये डेढ़ वक्त का खाना मैं अपने को खिलाने को तैयार था।

नहीं। चुरास्को किसी हालत में भी नहीं— वह कितना भी सस्ता या मुफ्त का ही क्यों न हो! मिलानेसा पापा फिता, राविओल कौन तुको, सालादा मिक्सता—और विनो ब्लाको। पावरोटी मुफ्त थी, जितनी चाहूँ खा सकता हूँ।

एक सौ नब्बे पेसो—बराबर एक सौ नब्बे येन—में वह खाना बहुत सस्ता था। जापान में उतने में तो एक कप कॉफी भी नहीं मिल सकती। अगर मेरे हाथ इतने तंग न होते तो मैं मेन्यु में छपे दाम इतनी बार न पढ़ता।

वहाँ से बाहर निकलने के बाद उतनी सर्दी नहीं मालूम दे रही थी। शायद इसलिये कि मैं मग की सारी विनो ब्लाको, पीने की इच्छा न होने हुए भी पी

गया था। अँधेरी सड़क की बायीं ओर एक बनिये की दूकान खुली थी। उसके शीशे के मैले शो-केस में फल, सब्जी शराब और पावरोटी जैसी खाने-पीने की चीजें रखी थीं; पीले-गुलाबी रिबन भी लटके थे और दरवाजे के भीतर मोटी घरेलू औरतों की छोटी-सी भीड़ जमा थी।

मैंने एक बार सोचा कि फल और पावरोटी यहाँ से खरीद लूँ तो कल दोपहर का खाना सस्ते में निपट जायेगा। फिर मैंने टाल दिया। उस वक्त मेरा पेट भरा था।

तभी मुझे झील के पुश्ते पर मिली उस औरत की याद आयी। होटल के कमरे में दो बेड थे। उनमें से एक में उसे दे सकता हूँ।

वह उतरती ढाल घुड़सवार की मूर्ति वाले चौक तक जाती होगी, जिसके नीचे पुश्ते पर वह अभी आध घंटा पहले बैठी थी।

एक जगह एक अकेला व्यक्ति अँधेरे में खड़ी मोटर रगड़-रगड़ कर पोंछ रहा था। अँधेरा होने के कारण उसका चेहरा स्पष्ट नहीं दिखायी दिया—ऐसा लगा कि उसके चेहरे पर घनी दाढ़ी थी शायद—लेकिन उसके दोनों हाथों की नीरव गति अँधेरे की वजह से वास्तविकता की अपेक्षा कहीं ज्यादा फुर्ती भरी लग रही थी। ऐसा लगता था कि वह अँधेरे से बॉक्सिंग लड़ रहा है।

वह वही चौक था और चौक के नीचे सड़क के पार पुश्ता भी था लेकिन वह औरत उठ कर चली गयी थी। उसने अपने लिये रात का ठिकाना ढूँढ़ लिया होगा। या हो सकता है इस वक्त भी कहीं तलाश रही हो।

लहरें भी दिखायी नहीं देती थीं, अँधेरे में उनकी सिर्फ़ आवाज सुनायी देती थी। मैंने किसी से उस काली झील का नाम तक नहीं पूछा था। लेकिन मुझे उस कस्बे में आये बारह घंटे भी तो नहीं हुए थे। बायीं ओर, बहुत दूर पर, अन्देस के हिमाच्छादित पहाड़ होंगे, पर वे दिखायी नहीं देते थे, सिर्फ़ उस ओर से आने वाली हवा के झोंके देह के अंदर हड्डियों पर महसूस होते थे।

अचानक मुझे लगा कि मैं उसे ढूँढ़ नहीं पाऊँगा, बारीलोचे के सारे होटलों और पेन्सियोने में जा-जा कर उसका पता लगाने पर भी मैं उसे ढूँढ़ नहीं सकूँगा—बावजूद इसके कि वह बेटि के साथ उन्हीं में से किसी एक में टिकी होगी पर वह मेरी निगाह की लकीरों के बीच से फिसल कर निकल जायेगी। यह कहना गलत है कि मैं उसे सिर्फ़ देखने के लिये वहाँ से यहाँ तक आया। हमने बहुत पहले, जैसे कि सैकड़ों-हजारों वर्ष पहले एक-दूसरे में अपने वायदों की पूंजी लगायी कि हम एक साथ न रहते हुए भी एक-दूसरे को और अपने आप को—

क्या वह हमारा किशोर वय में सपना देखना था ?

पालेर्मो में चुपचाप वर्षा के बीच वह गीत—बोका में पुल पर पीली रोशनी—मुभमें स्पेनी में उसका एकालाप—कमरे में वह सुबह तक लंबी, बहुत लंबी रात—वेप्पू के गरम सोतों वाले इलाके में दलदल पर धीरे-धीरे बनने-फूटने-फूटने वाले बुलबुलों की तरह ! हमने एक दूसरे को सदा के लिये खो दिया।

फिर भी इतने वर्ष जो हमने दूर-दूर रहते हुए भी एक दूसरे की निकटता में बिताये, वह सपना नहीं था और वह कभी नहीं मिट सकता क्योंकि एक बार जो कुछ भी हो जाता है वह कभी नहीं मिटता।

तो मुझे यहाँ से चले जाना चाहिये, कहीं भी। वारीलोचे से दक्षिण में, सिर्फ सुबुत और सान्ताक्रूज जिलों के बाद अन्तार्टिदा—दक्षिणी ध्रुव का बर्फीला महाद्वीप शुरू होता है। दूरियों का मानव संबंधों के बाहर कोई अर्थ नहीं होता।

पुश्ते के पास तीन-चार ट्रेलर अँधेरे और बन्द पास-पास खड़े थे। वहाँ से ढाल के ऊपर चौक वाले घंटाघर का सिर्फ ऊपरी रोशन गोला दिखायी दे रहा था। साढ़े दस बजे थे।

चौक के गिर्द की इमारतों पर मर्करीलाइटें नीचे से हरी और पीली रोशनी डाल रही थीं। उस रोशनी में वे इमारतें फिल्मी इवान द टेरेबल या फ्रांकेन्स्टाइन के चेहरों जैसी लगती थीं।

नाटे महरावदार खंभों के सामने के अँधेरे में एक सैनिक सिर पर लोहे का टोप लगाये और दोनों हाथों में एक मुख्तसर-सी ब्रेनगन या कारबाइन या स्टेन-गन कस कर पकड़े धीरे-धीरे टहल रहा था। मैं उसके सामने से गुजरने लगा तो वह टहलते-टहलते एक बार खड़ा हो गया और फिर टहलने लगा।

बेटि हमेशा देर से सो कर उठती थी इसलिए अगर मैं जल्दी उठ कर उसका पता लगाऊँ और उसका पता चल जाए तो उससे उनके कमरे में भेंट हो सकती है।

होटल का दरवाजा ठेल कर खोलते हुए मैं देख रहा था कि वह उन्हीं कपड़ों में है जिन्हें पहने-पहने वह रात को सो गयी थी, परेशान और प्रसन्न, बेटि तब तक सो रही है।

दरवाजा खुलते ही हवा का सर्द झोंका लगा। मैंने दरवाजा खींच कर बंद कर लिया।

—क्या कपड़ों की दूकानें खुल गयी होंगी ?—मैंने काउन्टर क्लर्क से पूछा।

—अभी तो नहीं खुली होंगी। यहाँ दूकानें ग्यारह बजे के करीब खुलती हैं। आप खरीदना क्या चाहते हैं ?

—कुछ ऊनी कपड़े।

वह मेरी सूती कमीज पर निगाह गड़ा कर मुस्कराने लगा।

—वारीलोचे सेन्टर में चमड़े की दूकानें हैं। उनके बाहर क्वेरो के साइन लगे हैं।

—वह मैं जानता हूँ।

बाहर सड़क पर लोगों की आमदरफ़्त शुरू नहीं हुई थी। सामने वाली लाल इमारत के आगे वही वाक्सवैगन तब भी खड़ी थी और उससे कुछ परे हट कर बिजली के खंभे के बगल में पाँच-छः स्त्री-पुरुष सिर पर फुंदने वाली ऊनी टोपियाँ लगाए सर्दी में ठिठुरते हुए चुपचाप खड़े थे। वे सुबह की टूरिस्ट बस के इंतज़ार में खड़े लगते थे।

सड़क पार करके मैं उस लाल इमारत के भीतर गया। वह भी होटल था। काउन्टर के पीछे एक लड़की खड़ी थी।

मैंने कागज़ पर दो नाम लिख कर उसे दिखाया। वे उसके शादी के पहले के और बाद के नाम थे।

—ये मेरी मित्र हैं। क्या आपके यहाँ ठहरी हैं ?

उसने रजिस्टर खोल कर नामों का मिलान किया और चिट वापस करते हुए बोली—नो सेन्योर !

पिछली रात चौरास्ते के पास जो सफ़ेद मोटर खड़ी देखी थी वह उस वक्त भी वहीं खड़ी थी और वह नौजवान तब भी उस पर वैसे ही पालिश करने में तल्लीनता से व्यस्त था। पिछली रात का मेरा संदेह सही था, उसके दाढ़ी थी। मैं हँसने लगा पर ऐसा हो नहीं सकता कि वह रात से लेकर इस वक्त तक लगातार मोटर साफ़ करता रहा हो !

मैंने कैमरा ऊपर उठाया ही था कि वह झटके से मेरी ओर घूमा—नो ओ ओ !—वह बड़ी जोर से चिल्लाया। उस एक पल भर तक उसका सारा चेहरा जापानी नाटक में इस्तेमाल आने वाले मुखौटे जैसा विकृत हो गया था।

उसने एक ऊँगली हिलाते हुए मुझे अपने पास आने का इशारा किया। उसके दोनों हाथ पालिश करने वाले स्पंज से भरे थे इसलिये मैं निर्भय उसके पास चला गया।

—अब्ला स्पेन्योल ?—उसने रुखाई भरे स्वर में पूछा।

—पोर्तो।—मैंने अँगूठे और तर्जनी के बीच ज़रा-सी खाली जगह छोड़ कर उसे दिखायी।

—मैं भी उतनी ही थोड़ी अंग्रेज़ी बोल सकता हूँ। बहुत थोड़ी।—वह अंग्रेज़ी में बोला—तुम्हें ठंड नहीं मालूम देती?

—मालूम देती है। लेकिन मेरे पास गर्म कपड़े नहीं हैं। दूकानें खुलें तो खरीदूँगा।

—मेरा नाम है अर्नेस्तो और मेरी पत्नी का नाम है लिदिया। तुम ज़रा देर रुको तो वह आ जाएगी। मैं तुम्हें उससे मिलवाऊँगा।—कहते हुए वह फिर अपनी कार पर पालिश करने लगा—पिछले हफ़्ते हमारी शादी हुई है। यहाँ हम हनीमून मनाने आये हैं।

—क्या मैं अब तुम्हारा फ़ोटो ले सकता हूँ?

—नहीं, अभी नहीं, लिदिया आ जाए तब।—उसने मेरी आँखों में एकटक घूर कर कहा फिर अचानक जोकर की तरह होंठ फैला कर हँस पड़ा।

खड़े-खड़े काफ़ी देर हो गयी लेकिन उसकी पत्नी नहीं आयी।

—औरतों को, तुम जानते हो, बाहर निकलने के लिये तैयार होने में उन्हें कितनी देर लगती है। मैं सो कर उठ गया लेकिन वह गधी की तरह सोती रही हालाँकि रात भर हम दोनों एक बराबर समय जागते रहे। मैंने उससे कहा था कि सुबह उठ कर हम कार से योनादोर के झरने तक जायेंगे। लेकिन यह देखो, वह अभी तक सो रही है। हम शाम के पहले वापस लौट आयेंगे। अगर तुम चाहो तो हमारे कमरे में आना। हम बारीलोचे सेन्टर में ठहरे हैं।—उसने अपना कमरा नम्बर बताया—मेरे पास एक फ़ाज़िल कोट है। उसे तुम ले सकते हो।

—मैं चार बजे तुम्हारे पास आऊँगा। लेकिन कोट मुझे नहीं चाहिये। दूकान खुलने पर मैं खरीद लूँगा।

—नहीं। एक मनुष्य के नाते कहना मेरा फ़र्ज़ था। वह देखो, तुम्हारे रोयें सर्दी की वजह से खड़े हैं।

हम दोनों हँसने लगे।

—तुम कितनी भी दूर जा कर क्यों न खोजो, मनुष्य के अलावा और कुछ नहीं खोज सकते हो।—उसने वैसी ही फुर्ती से पालिश करते अपने हाथों की ओर देखते हुए कहा—लेकिन जीने के लिये कीमत हर एक को चुकानी होती है; उदास हो जाने, हाथ पर हाथ रख कर बैठ रहने, खुल कर हँसने, किसी को पूरी तीक्ष्णता से प्यार करने—इस सब के बाद भी हर एक को चुकानी होती है, जीने के लिये।

—वह क़ीमत क्या है ?

वह हँसने लगा—तुमने सोचने के बाद यह सवाल पूछा है। हर कोई मुझे बातूनी और जोकर समझता है। तुमने भी ऐसा ही सोचा होगा।—फिर उसने बात का प्रसंग बदल दिया।

—मैं तुमसे शाम को मिलूँगा।

मैं आगे बढ़ा तभी उसने पुकारा—सुनो, तुमने मुझे अपना नाम नहीं बताया। पर ठीक है, शाम को जब आओगे तब जान लूँगा।

—हाँ, शाम को।—मैंने कहा और फिर मुड़ कर आगे बढ़ गया।

साफ़ दिन निकल आया था और सर्द हवा के दो झोंकों के बीच के थोड़े से समय में धूप का हल्का-सा गुनगुनापन देह पर महसूस होता था। उस धूप में पोलिसिया की इमारत, उसके फाटक के आगे टहल-टहल कर दिन में भी पहरा देने वाला सैनिक, मुनिसिपालिदाद का घंटाघर, उसके आगे घुड़सवार मूर्ति वाला पत्थर का चौक, पहियेदार गाड़ियों पर रखी तोपें, महराबदार दो नाटे फाटकों के नीचे से जाने वाली दो सड़कें और उन पर यदाकदा आती-जाती मोटरें और लोग, रात के हरे-पीले तिलस्म से न केवल मुक्त थे बल्कि खुशनुमा भी लगते थे।

झील के पुश्ते के नीचे तीन-चार व्यक्ति तिरछी दीवार की आड़ में सर्द हवा से बचने के लिये कोट की कालरें उठा कर बैठे थे और धूप खा रहे थे। एक जगह पर जहाँ कस्बे का नाला बह कर झील में मिलता था, ढेर सारे सफ़ेद पक्षी बैठे थे और बिल्लियों की तरह चिल्ला रहे थे। पुश्ते के ऊपर एक आदमी लेटा था और आँखें मूँद कर सो रहा था। दूर पर चर्च का कोन था जो साफ़-साफ़ दिखायी दे रहा था। धूप में सिकती ख़ामोशी, सर्द हवा के तेज़ झोंके और झील के बीच से झील के किनारे की ओर आती सफ़ेद लहरों का अटूट सिलसिला।

दूर पर एक औरत और उसके साथ दस-बारह साल की एक दुबली-पतली लड़की, सड़क पार कर के दूसरी ओर जा रही थी।

—बेटि!—मैंने ज़ोर से आवाज़ दी—बेटि!

वे लगभग पूरी सड़क पार कर चुकी थीं।

मैं उठ कर उनकी ओर दौड़ने लगा।

—बेटि! बेटि!

ऐसा नहीं हो सकता कि मेरी आवाज़ उन तक न पहुँची हो लेकिन उन्होंने एक बार भी घूम कर देखा नहीं। वे आगे चली गयीं।

वह औरत उससे कुछ अधिक लम्बी और मोटी थी, ख़ास कर उसके कूल्हे।

मेरा दिल जोर से धड़कने लगा था। उनके आँख ओझल हो जाने के बाद सारी सड़क और पुश्ते के किनारे मेरे सिवा और कोई न था। मुझे लगा कि मैं कुछ ही पलों मे बहुत अधिक थक गया हूँ। मैं सुस्ताने के लिये पुश्ते पर बैठ गया।

अब मुझे यहाँ से चले जाना चाहिये। पर यहाँ से मैं कहाँ जाऊँगा? अगले किस कस्बे—शहर—या देश मे? मैं लातीन अमरीका अब दोबारा कभी न आ सकूँगा। कितनी ज्यादा दूर है यह जगह। पर किस जगह से? मेरी जगह से। वह जिसे मैं अपनी जगह कहता हूँ, कहाँ पर है? और क्या मैं उस जगह का हूँ? तो वह जगह कहाँ है जिसे मैं कह सकूँ कि मैं उस जगह का हूँ। मैं इस समय कहाँ हूँ—दक्षिणी अर्खेन्तीना मे सान् कारलोस दे बारीलोचे की एक झील के किनारे पत्थर की दीवार पर धूप मे बैठा हूँ, दीवार के नीचे झील है, जिसका नाम मैं अब तक किसी से पूछ नही सका हूँ, बायी ओर हिम से ढके अंदेस के पहाड़ हैं और अभी दोपहर नही हुई है। अगर अपने समेत इन सारी बातों को किसी नक्शे मे देखना चाहूँ तो ये किसी भी नक्शे में न दिखायी देंगे।

तभी निगाह के नीचे वाले पत्थर के चौक पर आ कर खड़े हो गये दो नंगे पैर दिखायी दिये। मैंने चेहरा उठा कर देखा। पंद्रह साल का एक लड़का सामने चुपचाप खड़ा था। लकड़ी का एक छोटा-सा बक्स चमड़े की पेटी से उसके कंधे मे लटका हुआ था।

उसने मेरे जूतों की ओर उँगली से इशारा करते हुए कहा—लिम्पियेन्तो पेसोज सेन्योर!

मैंने जूतों से पैर बाहर निकाल लिये। वह उकड़ूँ बैठ कर उन पर पालिश करने लगा। उसके बगल मे खुला हुआ छोटा बक्स रखा था। उसमे कई गोल डिब्बियाँ और ब्रश थे।

दोनों जूतों पर पालिश करके उसने जूतों को मिला कर मेरे पैर के आगे रख दिया। मेरे पास सिर्फ पाँच रुपये का नोट था और उसके पास वापस करने को रेजकारी न थी। वह दबमट मे पड़ गया। वह नोट ले कर अपना बक्स मेरे आगे रख रहा था।

—नहीं। बक्स अपने साथ लेते जाओ।

—मैं अभी आ जाऊँगा।—वह बक्स छोड़ कर भाग गया और तीन मिनट के भीतर न जाने कहाँ से नोट तुड़ा कर ले आया।

पीछे हरे रंग की एक इमारत थी और उसके आगे एक कुआँ। भारत यात्रा के दौरान, पणजी, गोआ मे बस अड्डे के पास नदी तट पर।

—वह क़ीमत क्या है ?

वह हँसने लगा—तुमने सोचने के बाद यह सवाल पूछा है। हर कोई मुझे बातूनी और जोकर समझता है। तुमने भी ऐसा ही सोचा होगा।—फिर उसने बात का प्रसंग बदल दिया।

—मैं तुमसे शाम को मिलूँगा।

मैं आगे बढ़ा तभी उसने पुकारा—सुनो, तुमने मुझे अपना नाम नहीं बताया। पर ठीक है, शाम को जब आओगे तब जान लूँगा।

—हाँ, शाम को।—मैंने कहा और फिर मुड़ कर आगे बढ़ गया।

साफ़ दिन निकल आया था और सर्द हवा के दो झोंकों के बीच के थोड़े से समय में धूप का हलका-सा गुनगुनापन देह पर महसूस होता था। उस धूप में पोलिसिया की इमारत, उसके फाटक के आगे टहल-टहल कर दिन में भी पहरा देने वाला सैनिक, मुनिसिपालिदाद का घंटाघर, उसके आगे घुड़सवार मूर्ति वाला पत्थर का चौक, पहियेदार गाड़ियों पर रखी तोपें, महराबदार दो नाटे फाटकों के नीचे से जाने वाली दो सड़कें और उन पर यदाकदा आती-जाती मोटरें और लोग, रात के हरे-पीले तिलस्म से न केवल मुक्त थे बल्कि खुशनुमा भी लगते थे।

झील के पुश्ते के नीचे तीन-चार व्यक्ति तिरछी दीवार की आड़ में सर्द हवा से बचने के लिये कोट की कालरें उठा कर बैठे थे और धूप खा रहे थे। एक जगह पर जहाँ कस्बे का नाला बह कर झील में मिलता था, ढेर सारे सफ़ेद पक्षी बैठे थे और बिल्लियों की तरह चिल्ला रहे थे। पुश्ते के ऊपर एक आदमी लेटा था और आँखें मूँद कर सो रहा था। दूर पर चर्च का कोन था जो साफ़-साफ़ दिखायी दे रहा था। धूप में सिकती ख़ामोशी, सर्द हवा के तेज़ झोंके और झील के बीच से झील के किनारे की ओर आती सफ़ेद लहरों का अटूट सिलसिला।

दूर पर एक औरत और उसके साथ दस-बारह साल की एक दुबली-पतली लड़की, सड़क पार कर के दूसरी ओर जा रही थी।

—बेटि !—मैंने ज़ोर से आवाज़ दी—बेटि !

वे लगभग पूरी सड़क पार कर चुकी थीं।

मैं उठ कर उनकी ओर दौड़ने लगा।

—बेटि ! बेटि !

ऐसा नहीं हो सकता कि मेरी आवाज़ उन तक न पहुँची हो लेकिन उन्होंने एक बार भी घूम कर देखा नहीं। वे आगे चली गयीं।

वह औरत उससे कुछ अधिक लम्बी और मोटी थी, ख़ास कर उसके कूल्हे।

मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगा था। उनके आँख ओझल हो जाने के बाद सारी सड़क और पुश्ते के किनारे मेरे सिवा और कोई न था। मुझे लगा कि मैं कुछ ही पलों में बहुत अधिक थक गया हूँ। मैं सुस्ताने के लिये पुश्ते पर बैठ गया।

अब मुझे यहाँ से चले जाना चाहिये। पर यहाँ से मैं कहाँ जाऊँगा? अगले किस कस्बे—शहर—या देश में? मैं लातीन अमरीका अब दोबारा कभी न आ सकूँगा। कितनी ज़्यादा दूर है यह जगह। पर किस जगह से? मेरी जगह से। यह जिसे मैं अपनी जगह कहता हूँ, कहाँ पर है? और क्या मैं उस जगह का हूँ? तो यह जगह यहाँ है जिसे मैं कह सकूँ कि मैं उस जगह का हूँ। मैं इस समय कहाँ हूँ—दक्षिणी अर्जेन्तीना में सान् कारलोस दे बारीलोचे की एक झील के किनारे पत्थर की दीवार पर धूप में बैठा हूँ, दीवार के नीचे झील है, जिसका नाम मैं अब तक किसी से पूछ नहीं सका हूँ, बायीं ओर हिम से ढके अदेस के पहाड़ हैं और अभी दोपहर नहीं हुई है। अगर अपने गमन इन सारी बातों को किसी नक्शे में देखना चाहूँ तो ये किसी भी नक्शे में न दिखायी देंगे।

तभी निगाह के नीचे वाले पत्थर के चौक पर आ कर खड़े हो गये दो नंगे पैर दिखायी दिये। मैंने चेहरा उठा कर देखा। पंद्रह साल का एक लड़का सामने चुपचाप खड़ा था। लकड़ी का एक छोटा-सा बक्स चमड़े की पेटी से उसके कंधे से लटका हुआ था।

उसने मेरे जूतों की ओर उँगली से इशारा करते हुए कहा—लिम्पियेन्ता पेसोस सेन्योर!

मैंने जूतों से पैर बाहर निकाल लिये। वह उकड़ूँ बैठ कर उन पर पालिश करने लगा। उसके बगल में खुला हुआ छोटा बक्स रखा था। उसमें कई गोल डिबियाँ और ब्रश थे।

दोनों जूतों पर पालिश करके उसने जूतों को मिला कर मेरे पैर के आगे रख दिया। मेरे पास सिर्फ़ पाँच रुपये का नोट था और उसके पास वापस करने को रेजगारी न थी। वह दुबसट में पड़ गया। वह नोट ले कर अपना बक्स मेरे आगे रख रहा था।

—नहीं। बक्स अपने साथ लेते जाओ।

—मैं अभी आ जाऊँगा।—वह बक्स छोड़ कर भाग गया और तीन मिनट के भीतर न जाने कहाँ से नोट तुड़ा कर ले आया।

पीछे हरे रंग की एक इमारत थी और उसके आगे एक कुआँ। ——— ——— के दौरान, पणजी, गोआ में बस अड्डे के पास नदी तट पर।

ठीक उसी तरह उसने पालिश किये जूते मिला कर मेरे पैरों के पास रखे और पचास पेसो ले कर चला गया।

आगे सिर्फ़ तीन-चार व्यक्ति पुश्ते पर अलग-अलग वैठे थे इसलिये वह उनके पास से गुज़रते समय उनके जूतों पर एक नज़र डालता जा रहा था।

मैं उससे पूछना चाहता था कि तुम्हारा घर कहाँ पर है, घर में कौन-कौन है और तुमने पढ़ाई क्यों वंद कर दी है। लेकिन वह तव सिर झुका कर फुर्ती से पालिश कर रहा था। अगर मैंने वैसा मूर्खतापूर्ण सवाल पूछा होता तो उसने उत्तर दिया होता कि उसका घर ढाल के ऊपर वाले अस्पताल के पीछे गज्यार्दो और तिस्कोर्निया गलियों के वीच वाली काली झुग्गियों की वस्ती में है, उसके माँ और वाप काम करते हैं लेकिन उससे उनका और पाँच वच्चों के परिवार का पालन नहीं हो पाता इसलिए वह काम करता है। वह न जाने कव का गायव हो गया था।

मैं उठ कर टहलता हुआ गिरजे की ओर चला गया। मैं उस गिरजे को अंदर से देखना चाहता था। उसमें रंग-विरंगे काँच के टुकड़ों वाली खिड़कियाँ होंगी और इस वक्त वहाँ शायद कोई न होगा, सिर्फ़ धूप उन खिड़कियों से छन कर, विभिन्न रंगों के पैटर्न में फ़र्श और वेन्चों पर पड़ रही होगी।

पर धूप लकड़ी के किवाड़ों पर पड़ रही थी और किवाड़ वंद थे।

मैं लौट चलने के लिये मुड़ा था तभी एक छोटा पत्थर मेरी पीठ पर लगा। घूम कर देखा तो एक पेड़ की छाया में तीन-चार वच्चे खड़े थे और मुझे देखते हुए चुपचाप हँस रहे थे।

एइरोलिनियास अर्खेन्तीनास के वुकिंग आफ़िस में अगले दिन वुएनोस आए-रस वापस जाने वाली फ़्लाइट में रिज़र्वेशन करा कर होटल लौटा तव सुवह के नाश्ते का निर्धारित समय वीत चुका था। मुझे रात को ही खाने का कुछ सामान खरीद कर रख लेना चाहिये था।

शाम को चार वजे वारीलोचे सेन्टर में जा कर अर्नेस्तो के कमरे का दर-वाज़ा खटखटाया लेकिन अंदर से जवाव नहीं मिला। नीचे उतर कर काउन्टर पर पूछने पर पता चला कि उसके कमरे की चाभी अभी दड़वे में ही है। वे तव तक वापस नहीं लौटे थे। वारीलोचे सेन्टर में ही चमड़े के कोट और ऊनी स्वेटरों की दूकानें थीं। लेकिन वे वहुत महँगे थे। अगले दिन तो मुझे वहाँ से चले ही जाना था। शाम और रात मैं पिछले दिन की तरह गुज़ार दे सकता था—होटल के अंदर या होटल के वाहर भी। एक हद तक सह लेने के वाद ठंड लगती तो है लेकिन पहले जितनी तकलीफ़देह नहीं होती।

लौट कर फिर काउन्टर पर दरियाफ्त किया। वे वापस नहीं लौटे थे।

—मेरी एक और मित्र,—मैंने जेब से कागज की वही चिट निकाल कर क्लर्क को दिखायी—ये आपके यहाँ ठहरी हैं ?

उसने चुपचाप सिर हिला कर इनकार किया। मुझे भी उम्मीद नहीं रह गई थी कि वह यहाँ होगी। बल्कि यह उम्मीद भी नहीं कि वह बारीलोचे आयी होगी। वह तो मैंने यों ही पूछ लिया था। वह भी एक होटल था, इसलिये कि शायद।

एक पेरुवियन दंपति ने मुझे अपनी टैक्सी पर चढ़ा लिया। वे भी एयरपोर्ट जा रहे थे।

अब यह वापसी का रास्ता है, मैंने अपने मन में सोचा।

टैक्सी चौक से नीचे वाली सड़क पर उतरने के बाद गिरजे के सामने से गुजरी। वहीं नीचे वही नीली झील थी और उसमें वैसी ही सफेद झालरदार लहरें उठ रही थीं। पीछे दूर पर बादलों की धुंध में छिपी बर्फीली चोटियाँ। कस्बे के बाहर निकल आने पर ऊँचे-नीचे वनस्पतिविहीन मैदानों के बीच सीधी लंबी सड़क और दाहिनी ओर त्रोनाडोर का ऊँचा शिखर, जिसे पहली बार मैंने आते समय हवाई जहाज से देखा था तब वह सिर्फ एक धुँधले धब्बे जैसा दिखायी दिया था।

मन न जाने क्यों उदास हो गया।

पेरुवियन दंपति अन्य यात्रियों की भीड़ में एक बार और दिखायी दिये थे। वे मेन्डोसा की फ्लाइट के आगे कतार में खड़े थे। टैक्सी में उन्होंने मुझे पेरू का एक पेसो का सिक्का भेंट किया था।

जहाज उड़ा तो कुछ देर तक उस नीली झील को देखता रहा—ऊपर से वह शान्त और स्थिर दिखायी देती थी—और उससे कुछ अधिक देर तक त्रोना-डोर की चोटी के सफेद धब्बे को। शायद मैं उस नीली झील को देखने के लिये ही जापान से आया था। वह झील पीछे छूट गयी थी और लाल रंग की पहाड़ियों का बंजर इलाका शुरू हो गया था। साँप की तरह बल खाती एक नदी—नक्शों में दिखायी गयी जैसी, फिर-फिर छोटी-बड़ी झीलें फिर चौकोर हरियाली के बूटे और पारदर्शी झील की सतह पर तैरते झाग जैसे बादलों के गोल-गोल घेरे जिन्हें बुएनोस आएरस से आते वक्त यहीं देखा था—वैसे ही। समुद्री [illegible] तरह चौड़ी प्लाता नदी, बुएनोस आएरस के औद्योगिक इलाके [illegible] चिमनियों में उठता सफेद धुआँ और बंदरगाह।

होटल के कमरे में पहुँच कर थैला एक ओर रखा और उसे ऑफ़िस में फ़ोन किया।

—वह नहीं है।—एक पुरुष स्वर ने कहा—ज़रा रुकिये।

दूसरी आवाज़। लेकिन वह भी पुरुष का ही स्वर था। उसने मेरा नाम पूछा।

—क्या वह आपके साथ नहीं गयीं? उन्होंने तो कहा था कि उनके देश से उनका कोई मित्र आया है और उसके साथ यात्रा करने के लिये उन्होंने दस दिन की छुट्टी ली थी।

—जी। पर मुझे अपने काम से कई जगह जाना था और मैंने यह उचित न समझा कि अपने कारण उन्हें और उनकी छोटी-सी बच्ची को अपने पीछे-पीछे घसीटूँ।

—आप ठीक कहते हैं। उनकी बच्ची। उन्होंने उस बच्ची के लिये बहुत तकलीफ़ें उठायी हैं। आप कहाँ ठहरे हैं?

मैंने उन्हें होटल का नाम बताया—लेकिन सेन्योर, कल मैं यहाँ से चला जाऊँगा।

—ठीक है, अगर वह इसके पहले आ गयीं तो उन्हें आपका ठिकाना बता दूँगा। शायद वह आप से मिलना चाहें।

मुझे उसके ऑफ़िस फ़ोन नहीं करना चाहिये था। वह ज़रूर बारीलोचे गयी होगी और मेरे आने का कारण बता कर आफ़िस से छुट्टी ली होगी।

तुम सिर्फ़ तोड़ सकते हो—उसकी उस रात की मुख-मुद्रा मेरी आँखों के सामने आ गयी।

या यह भी हो सकता है कि उसने काफ़ी पहले छुट्टी ली हो, जब हमारा इकट्ठा बारीलोचे जाने का पक्का था और बाद में उसने छुट्टी रद्द न करवायी हो और घर पर ही हो। या वह बीमार पड़ गयी हो। पर मुझे अब वहाँ नहीं जाना है।

सारमियन्ते के रेस्तराँ में खाना खाने गया तो वही लड़की अपने काउन्टर के पीछे खड़ी ग्राहकों को कूपन बेच रही थी। कतार में लग कर उसके सामने आया तो हम दोनों मुस्करा दिये।

—अरे, तुम वापस आ गये?

—अलविदा कहने के लिये। कल मैं अर्खेन्तीना से जा रहा हूँ।

—अपना नाम-पता मुझे दे देना। शायद कभी तुम्हें चिट्ठी लिखूँ। तुम्हें अपना पता दे देती लेकिन हमारा ठीक नहीं, हम कितने समय तक वहाँ रह सकेंगे।

पीछे कई व्यक्ति अपनी बारी आने के इंतज़ार में चुपचाप खड़े थे इसलिये अपनी थाली ले कर हट गया।

वहाँ से निकल कर अवेनिदा कोरिएन्तेस के किनारे-किनारे अलेम की ओर जा रहा था। गर्मी जैसे कि अचानक बढ़ गयी थी। शायद आसमान में हल्की बदली होने की वजह से या इसलिये कि मैं बारीलोचे से आया था, जहाँ सर्दी थी।

एक दुकान की खिड़की में एक पोस्टर लगा था—एक चेहरे का प्रोफ़ाइल, भौंह और आँख के काले तिकोने के बगल से निकली नाक की लकीर, जो घुटने से मुड़ी हुई एक जनानी नंगी टाँग थी। फ्रायड का वह व्यंग्यात्मक पोस्टर मैंने जापान में भी कहीं देखा था।

अचानक बड़ी जोर का धमाका हुआ। फुटपाथ पर आ-जा रहे लोग लपक कर आसपास की दुकानों के अंदर घुस गये, सड़क पर चलती कारें सड़क के किनारे आ कर खड़ी हो गयीं और उनमें सवार व्यक्ति दौड़ते हुए रेस्तराँ, दुकानों में और खंभों की आड़ में छिप गये। पलक मारते, कोरियन्तेस की चौड़ी सड़क वीरान और मुर्दा हो गयी।

बंद दरवाज़े के सामने की तंग जगह में मेरे अलावा पाँच छह दूसरे राहगीर भी दुबके थे।

—डाकघर!—उनमें से एक ने कहा।

दूसरे ने अगल-बगल सिर हिलाया।

—रोज़-रोज़!

तभी एक के बाद दूसरा दो धमाके हुए।

हम सब उसके बाद भी धमाके होने का इंतज़ार कर रहे थे लेकिन पंद्रह बीस मिनट सन्नाटा रहा तो इक्के-दुक्के लोग वहाँ से खिसकने लगे। फुटपाथ पर भी कुछ व्यक्ति चलते दिखायी देने लगे। मैं दरवाज़े में से निकल कर फिर अलेम की ओर चलने लगा। ढाल उतरने पर चौड़ी सड़क के दूसरी ओर बड़े डाक घर की विशाल इमारत थी और साबुत खड़ी थी। लेकिन उसके बगल वाली बड़ी इमारत की सारी खिड़कियों के काँच उड़ गये थे और सामने कई तुड़ी-मुड़ी जलती हुई मोटर गाड़ियों से काला-काला धुआँ उठ रहा था। उसके सामने सड़क के दूसरी ओर एक छोटी-सी भीड़ जमा हो गयी थी। एम्बुलेन्स के व्यस्त कर्मचारी इमारत के अंदर से सफ़ेद चादरों से ढकी स्ट्रेचर ला कर गाड़ियों पर चढ़ा रहे थे। पुलिस का एक सिपाही दाँतों के बीच सीटी दबाए, हाथ के बहाव से ट्राफ़िक का संचालन कर रहा था।

—इस देश का क्या होने वाला है!—पीछे खड़े एक व्यक्ति की आवाज़ सुनायी दी।

उसके आगे की दो सड़कों के बीच में एक छोटी-सी खार

होटल के कमरे में पहुँच कर थैला एक ओर रखा और उसे ऑफ़िस में फ़ोन किया।

—वह नहीं है।—एक पुरुष स्वर ने कहा—ज़रा रुकिये।

दूसरी आवाज़। लेकिन वह भी पुरुष का ही स्वर था। उसने मेरा नाम पूछा।

—क्या वह आपके साथ नहीं गयीं? उन्होंने तो कहा था कि उनके देश से उनका कोई मित्र आया है और उसके साथ यात्रा करने के लिये उन्होंने दस दिन की छुट्टी ली थी।

—जी। पर मुझे अपने काम से कई जगह जाना था और मैंने यह उचित न समझा कि अपने कारण उन्हें और उनकी छोटी-सी बच्ची को अपने पीछे-पीछे घसीटूँ।

—आप ठीक कहते हैं। उनकी बच्ची। उन्होंने उस बच्ची के लिये बहुत तकलीफ़ें उठायी हैं। आप कहाँ ठहरे हैं?

मैंने उन्हें होटल का नाम बताया—लेकिन सेन्योर, कल मैं यहाँ से चला जाऊँगा।

—ठीक है, अगर वह इसके पहले आ गयीं तो उन्हें आपका ठिकाना बता दूँगा। शायद वह आप से मिलना चाहें।

मुझे उसके ऑफ़िस फ़ोन नहीं करना चाहिये था। वह ज़रूर बारीलोचे गयी होगी और मेरे आने का कारण बता कर आफ़िस से छुट्टी ली होगी।

तुम सिर्फ़ तोड़ सकते हो—उसकी उस रात की मुख-मुद्रा मेरी आँखों के सामने आ गयी।

कुछ एक पेड़ और जंगली घास अपने आप उग आयी थी। रुका हुई चीज़ वह सिर्फ़ मैं ही था। आगे-पीछे की सड़कों पर कारें दौड़ रही थीं।

तो मुझे चले जाना चाहिये, न! अब यहाँ क्या है।

मुस्ताने के लिये मैं कुछ देर वहाँ बैठ रहा। फिर उठ कर दूसरी ओर की सड़क पार की। उधर एक बन्द कारखाना जैसा था, या बन्दरगाह की इस्तेमाल में न आने वाली इमारत, जिसके ऊपर पुरानी ज़ङ्ग खायी कई क्रेनें खड़ी थीं।

कुछ आगे जा कर वही सड़क वापस पार की। सामने एक दूसरा था, जिसके बीच में सफ़ेद मूर्तियों का एक स्मारक स्तम्भ था। धूप में मैं पेड़ों की छाया में घास पर बैठ गया। कुछ दूर पर स्त्री-पुरुष का पहले बैठा था और ज़ोर-ज़ोर से बातें करने में इस तरह लीन था था कि वे बहस कर रहे हैं और उन्होंने विस्फोट की आवाज भी पीछे एक गुलाबी इमारत थी। वह राष्ट्रपति भवन था।

मैं अचानक उठ खड़ा हुआ। नहीं, मुझे वहाँ अवश्य जाना

अलेम के सबवे स्टेशन की सीढ़ियाँ उतरते हुए मुझे एक गयी। मैं वापस सीढ़ियाँ चढ़ने लगा।

मार्ता ने आगाह कर दिया था—लातीन अमरीका की तीन चौथाई औरतों का नाम मार्ता है—कि इसेइज़ा एयरपोर्ट तक टैक्सी की बजाय बस से जाने में बचत होगी। बस सिर्फ़ इक्वाडोर से जाती है। होटल से बस स्टैंड तक का किराया तीन सौ पेसो होगा।

—और पेसो सब यहीं ख़र्च कर देना। अर्जेन्टीना के बाहर पेसो को कोई पूछेगा भी नहीं।—उसने बताया था।

मैंने कुछ चिट्ठियाँ लिख कर रखी थीं। फ़ाज़िल पेसो ख़र्च करने की ग़र्ज़ से उनके लिये डाक टिकट ख़रीद लिये।

लेकिन सिर्फ़ इक्वाडोर जाने पर मालूम हुआ कि बस-स्टॉप बदल गया है, कहीं और है। टैक्सी ड्राइवर ने नए बस-स्टॉप पर पहुँचा दिया और चार सौ पेसो ले कर चला गया। सामान उतारने-चढ़ाने वाले कर्मचारी ने दस पेसो मज़दूरी ली। मेरे अलावा और यात्री पहले ही जा चुके थे। इसलिये बुकिंग्स में काम करने वाली लड़की कंपनी की कार में मुझे हवाई अड्डे तक पहुँचाने को तैयार हो गयी—उसे अपने एक सहयोगी को उसके घर उतारना भी था। एयरपोर्ट पहुँचने पर मेरे पास दस-दस पेसो के सिर्फ़ दो नोट बच रहे थे। मैंने सोचा कि इन नोटों को ख़र्च नहीं करूँगा, बतौर यादगार रख छोड़ूँगा। सूटकेस जमा करने और एमिग्रेशन काउन्टर पर जाकर पासपोर्ट में 'सालीदा' का तिकोना ठप्पा लगवा कर मैंने राहत की लंबी साँस ली और बाहर निकल आया।

उन्नीस दिन पहले मैं इसी एयरपोर्ट पर उतरा था, छत्तीस घंटे की उड़ान के बाद। लाज के बाहर, लोहे के अस्थायी रेलिंग पर उन लोगों की भीड़ झुकी हुई थी जो अपने मित्रों—संबंधियों को लेने के लिये यहाँ आये थे। उन्नीस दिन पहले मैं भी उनकी तरह यहाँ आया था और एक हाथ में सूटकेस लटका कर चेहरों की ऐसी ही दूसरी भीड़ में अपना परिचित एक चेहरा खोज रहा था।

नीली जीन्स पहने रेलिंग पर लटकी हुई दो लड़कियाँ। काले स्कर्ट-ब्लाउज़ में एक बहुत ही मोटी अधेड़ उम्र मुस्कराती हुई औरत। एक गंजा पुरुष एक कम उम्र स्त्री के गाल चूमता हुआ और उनके पास में खड़ी तेरह-चौदह वर्ष की एक प्रसन्न लड़की। एक नाटा बूढ़ा मर्द अपने से काफ़ी ऊँचे कद की लड़की की कमर के गिर्द अपनी बाँह लपेटे और दूसरे हाथ में बड़ा-सा जनाना बैग लटकाए बस-स्टैंड की ओर धीरे-धीरे जाता हुआ...

मुझे ऐसा बिलकुल नहीं लगा कि मैं उस शहर से वापस जा रहा हूँ, जहाँ मैं इतनी दूर से सिर्फ़ एक लड़की के पास, वर्षों बाद उसे सिर्फ़ देखने के लिये आया था। बल्कि मुझे यह सोच कर अचंभा हुआ। जैसे कि कुछ व्यक्ति प्यार,

कर सकते हैं, तो कुछ प्यार नहीं कर पाते—दोनों ही बातें एक जैसी अचंभे में डालने वाली बातें लगती हैं। बहुत पहले—जैसे कि कई सौ वर्ष पहले किसने कहा था याद नहीं, कि तुम सिवा अपने किसी को प्यार नहीं करते। मुझे इस बात पर भी आज तक अचंभा होता है। उस समय मुझे वह किसी एक देश का कोई हवाई अड्डा लगा, जिस पर मैं आगे जाने वाले हवाई जहाज आने के इन्तजार में खड़ा था।

हवाई जहाज पर चढ़ने से पहले मैंने एक बार घूम कर ऊपर के छज्जे की ओर देखा। उस पर चार व्यक्ति खड़े थे—एक नौजवान ने अपना एक पैर रेलिंग के ऊपर डाल दिया था और वे चारों न जाने किसे हाथ हिला-हिला कर विदा दे रहे थे। वैसे ही जैसे मैं छज्जे के नीचे खड़ा होकर हाथ हिला रहा था, छज्जे पर खड़ी एकहरी कतार में से अपना परिचित चेहरा न पहचान पाने की झुंझलाहट में, उन्नीस दिन पहले।

तो अब मैं जा सकता हूँ।

बन्दरगाह—बोका—मटमैली गुलाबी प्लात नदी का समुद्री मुहाना......

मैं न जाने कितने वर्षों से इनके ऊपर-ऊपर गोल चक्कर लगाता। मँडराता रहा था, एक पक्षी की तरह जो यहाँ-वहाँ उतरना चाहता था पर...

एक विशाल प्रपात के शोर जैसा—ज़ा आ आ....

यह शोर अगर अलकोहल की तरह खून में मिल जाए—तो अधिक, और अधिक की माँग करता है, न!

वह लगातार उड़ता जाता था....

जैसे कि धीरे-धीरे ऐंठता चीटा

मरता हुआ

वक़्त

इंतज़ार में स्टैंड पर खड़ा हो गया। आकाश में घनी वदली छायी थी और बुएनोस आएरस से कहीं अधिक उमस वाली गर्मी थी। वस-स्टैंड के सामने छपरैल के इकहरे घरों की कतार थी—पुर्तगाली औपनिवेशिक शैली की। एक घर के सामने कच्चे आँगन में दो छोटी लड़कियाँ सिर्फ़ जाँघिया पहने खेल रही थीं और घर के लाल फ़र्श वाले वरामदे में पत्थर की वेन्च पर एक नंगेवदन जवान एक वच्चे को गोद में लिये खेला रहा था। मुझे वस-स्टॉप पर खड़े देख कर वह वच्चे को गोद में लिये-लिये मेरे पास आया।

—फ़ौज दो इगुवासू? ओनीवुस ?—नो नो।—उसने सड़क के दूसरे फुटपाथ की ओर इशारा किया और वापस चला गया। मैं सड़क के गलत किनारे पर खड़ा था।

मोरेल, स्टेशन इंचार्ज ने कहा था कि वस एक-एक घंटे पर आती है लेकिन मुझे यह पता नहीं था कि अगली वस पाँच मिनट वाद आयेगी या पचपन मिनट वाद।

एक खाली टैक्सी सामने से गुज़री। कुछ दूर जा कर वह घुरघुराती हुई पीछे लौटी। टैक्सी ड्राइवर ने पुर्तगाली भाषा में कुछ कहते हुए पंजा दिखा कर इशारा किया लेकिन मैंने चालीस कूज़ेइरो कहा तो वह हँसने लगा और मुझे पीछे वैठ जाने का इशारा किया।

पुलिस चेक प्वाइंट पर सौ से अधिक वसों-कारों की लंवी कतार रुकी थी और उन सव के ड्राइवर उतर कर अलग-अलग झुण्ड में खड़े हँस-हँस कर आपस में वातें कर रहे थे। एक दुवला-पतला मरियल-सा सैनिक, एक कंधे पर राइफ़ल लटकाए, सड़क के दोनों छोरों पर नज़र डालता हुआ धीरे-धीरे टहल रहा था। टैक्सी ड्राइवर ने वात करना रोक कर दो उँगलियाँ ऊपर उठा कर मुझे दिखायीं।

—दो घंटे लगेंगे,—वह वोला—चक्कर काट कर निकल चलें।

—उसने टैक्सी लंवी कतार से वाहर निकाली और कुछ दूर विपरीत दिशा में लौट कर दाहिनी ओर के खेतों के वीच से जाने वाले कच्चे रास्ते पर उतार दी।

कच्ची सड़क की गेरुई गर्द, अगल-वगल के मक्के के पौधों पर आधी ऊँचाई तक की पत्तियों के ऊपर जमा थी। आगे काफ़ी दूर तक एक काली घाटी जैसी थी और शायद उसमें एक नदी भी रही होगी क्योंकि शाम का नीला धुँधलका उस के ऊपर एक विशाल अजगर की तरह पड़ा था। वहुत दूर पर क्षितिज की सुरमई रंग की लकीर के ऊपर के वादल सुर्ख लाल थे।

वहाँ कोई गाँव या बस्ती नहीं थी। वह खेत के बीच में जाने वाले रास्तों में भटक गया था। सामने से एक बूढ़े को आता देखकर उसने उसके बगल में आ कर टैक्सी रोकी और रास्ता पूछा। फिर वह गाने लगा। आगे एक छोटी सी बस्ती थी, काठ के चार-पांच घरों का झुंड। सफेद स्कर्ट और सफेद ब्लाउज़ पहने एक दुबली-पतली औरत नंगधड़ंग बच्चे को अपनी कमर पर टिकाये एक दरवाज़े के चौखट के सहारे खड़ी थी। तीन-चार मुर्गियाँ टैक्सी की आवाज़ से डर कर पंख फड़फड़ाती हुई आँगन के दूर छोर पर भागीं। एक घर की छाजन के नीचे खड़े चार-पाँच मर्द-औरत-बच्चे। बाहर बँधी डोरी पर लटके सफेद कपड़े। सड़क पर खेल रहे अधनंगे बच्चे। बारहों महीने की उस सड़ी उमस वाली गर्मी में, ऊपर से जब किसी भी समय टप-टुप बारिश होने लगती हो, कौन पूरे कपड़े पहनेगा! स्पेन-पुर्तगाल से धर्म और सभ्यता का पैग़ाम लाने वाले जब आए, उसके पहले यहाँ के स्त्री-पुरुष-बच्चे चट्टानों और हरी फर्न की तरह नंगे रहते होंगे।

मैं वहाँ फिर आना चाहता था। मैं टैक्सी ड्राइवर से भी यह कहना चाहता था लेकिन मुझे पुर्तगाली का एक लफ़्ज़ भी न आता था और वह लगातार गुनगुना रहा था और मुस्करा रहा था।

इगुवासू गाँव शायद पास था।

—फ़ोज दो इगुवासू?—मैंने उससे पूछा।

उसने गुनगुनाना रोक कर उत्तर दिया—सी।

एक चौराहे पर से, जिसके बीचोंबीच सिर्फ़ मुखौटों का ढाई-तीन मीटर ऊँचा काठ का स्तम्भ खड़ा था, और जिसके पीछे बायें हाथ आसमानी रंग से पोताई किया हुआ गिरजा था, उसने टैक्सी दाहिने मोड़ी—तब पहली बार मेरा ध्यान इस बात पर गया कि वहाँ सभी सवारियाँ दाहिनी ओर चलती थीं—और कोई सौ मीटर ढलान उतर कर टैक्सी खड़ी कर दी।

—निरोन।—उसने कहा।

होटल निरोन का बाहर का कमरा सिनेमा सेट के सम्पन्न व्यक्ति के ड्राइंग रूम जैसा था। बीच में गद्देदार कुर्सियाँ और काठ का नीचा टेबुल, सामने वाली दीवार पर शीशे के पीछे बर्फीले पहाड़ का कोई चार मीटर लंबा, तीन मीटर ऊँचा फोटो एनलार्जमेन्ट। उस कमरे में एक जलते हुए टेबुल लैंप के अलावा और कोई न था।

इधर-उधर बैठे किसी व्यक्ति को देखने की कोशिश करने के बाद मैंने आवाज़ दी—पार फावोर!

एक व्यक्ति अंदर वाले कमरे के दरवाजे से निकला। वह सफ़ेद बालों वाला एक गोरा बूढ़ा था और व्यस्त और उत्तेजित दीख रहा था। काउन्टर पर रखे टेबुल लैंप के पास आ कर उसने नाम-पता-पासपोर्ट नंबर वगैरह दर्ज करने का होटल का फ़ार्म निकाला।

—एक कमरा।

—सी-सी। —उसने सिर झुका-झुका कर उत्तर दिया।

—मैं थोड़ी स्पेन्योल बोल सकता हूँ पर पोर्तगीज नहीं।

—सी।

—क्या आपस्पेन्योल समझ सकते हैं।

—सी।

वह दूकान में एक ग्राहक के आने पर उस बूढ़े दांत के डॉक्टर की तरह प्रसन्न था, जिसकी प्रैक्टिस ठीक से चल न रही हो।

—ल माला ?

—मेरा सूटकेस, हवाई अड्डे पर, सेन्योर मोरेल।

—सेन्योर मोरेल, सी। —उसने एस हथेली उठाकर मुझे ठहरने का इशारा किया फिर फ़ोन में लगा ताला चाभी से खोल कर फ़ोन करने लगा। फ़ोन करने के बाद उसने पहले की तरह फिर वह कागज मेरे सामने रख दिया।

—नो नो नो नो। न्यूमेरो द ला रेसिदेन्सिया—नो नो नो—द ला कासा। नो:, ला फ़ीर्मा लासीना तूरा—नो नो नो, ला सीना तूरा—

तभी बाहर का दरवाजा खोल कर पंद्रह-सोलह साल की एक मोटी लड़की अंदर आयी और ढीले लंबे स्कर्ट और खुले गले की ब्लाउज़ के अंदर भारी-भारी छातियाँ और चूतड़ झुला कर दौड़ती हुई हाल पार करके अंदर के कमरे में घुस गयी। उसके पीछे ऊँचे कद की एक महिला धीरे-धीरे चलती हुई अंदर आयीं और सब से पीछे, पिचके गालों वाला दुबला, चिपटा परेशान-सा एक अधेड़ उम्र पुरुष।

वह भी अंदर जा रहा था लेकिन मैनेजर ने उसे पुकार कर बुलाया।

—रवाल्दो तूतूरा। —उसने मेरी ओर दाहिनी हथेली बढ़ाते हुए अपना नाम बताया।

उसकी वजह से दांत का डॉक्टर नुमा मैनेजर और भी आश्वस्त हुए। तूतूरा ने पोर्तगीज में छपा फ़ार्म भरने में मेरी सहायता की। बीस-बाईस साल की एक सांवली लड़की, बूढ़े मैनेजर के कंधे पर एक कोहनी टिका कर मेरा

नाखून भरना देख रही थी। फ़ार्म भर जाने पर वह अपनी कमर अगल-बगल घुमाती धीरे-धीरे टहल कर अंदर चली गयी।

बूढ़े मैनेजर ने भरा हुआ फ़ार्म एक्स-रे फ़िल्म की तरह दोनों हाथों में ऊपर उठा कर जाँचने के बाद अंदर वाली दीवार की ओर मुँह करके आवाज़ दी।

—मैं अभी आता हूँ। —कह कर कुबड़ा बाहर चला गया।

उसी सुस्त लड़की ने मुझे मेरा कमरा दिखाया। कमरा काठ की घुमावदार सीढ़ी के ऊपर दूसरी मंज़िल पर था। वह काफ़ी तंग था लेकिन इसकी मुझे परवाह न थी। अगले दिन ही तो मुझे चले जाना था। ऊँची खिड़की पर मोटे कपड़े का पर्दा लगा था। उसे खींच कर खोलना चाहा लेकिन वह कीलें ठोंक कर स्थायी रूप से बंद कर दिया गया था। वह लड़की गुसलखाने वगैरह के बारे में पोर्तगीज़ में विस्तार से समझा कर चली गयी।

मेरे पास सिर्फ़ एक छोटा थैला था, जिसमें पासपोर्ट तथा पैम्फ़्लेट वगैरह थे। नहाने के लिये साबुन-तौलिया, टूथब्रश खरीदने के इरादे से बाहर निकला।

ढाल के नीचे कुछ आगे जा कर चाय या कॉफ़ी की खस्ताहाल दुकान थी, जिसके काउन्टर के ऊपर अलमारी में सिगरेट के पैकेट भी सजे हुए थे। काउन्टर पर एक आवारा किस्म का नौजवान बैठा था।

—एम हावीन दे पान ?

उसने बैठे-बैठे हाथ उठा कर अलमारी के खाने में टटोल कर साबुन की एक बट्टी निकाली और ताश का पत्ता फेंकने की तरह काउन्टर पर फेंक दी। मुझे हज़ारों किलोमीटर दूर की याद आ गयी। मैं कहीं भी क्यों न जाऊँ, अचार के बर्तन में से निकाले एक जैसे अचार की तरह व्यक्ति घृणा करने के लिये मुझे मिल ही जाता है !

मुझे सिगरेट भी खरीदना था लेकिन मैंने उस दुकान से कभी कुछ न खरीदने का निश्चय किया।

होटल की सीढ़ी पर तीन-चार छोकरे-छोकरियाँ बैठे थे। वे आपस में कुछ भी कहने के बाद हँस पड़ते थे। काउन्टर पर वह साँवली लड़की हथेली पर ठोड़ी टिकाये खड़ी थी और वह दृष्टि से बाँध के दरवाज़े के बाहर की आमद-रफ़्त को चुपचाप देख रही थी।

—सिगरेस्तो। —मैंने अपने दोनों होंठों पर दो उँगलियाँ रख कर हवा फूँकते हुए उससे पूछा।

वह काउन्टर के पीछे से निकल कर दरवाज़े पर आयी और उसने सड़क के दूसरी ओर की रेस्तराँ जैसी एक दुकान की ओर उँगली से इशारा किया

सिगरेट ख़रीद कर कमरे में लौटने के बाद नहाने के लिये कपड़े उतारे। नीचे के कपड़े पसीने से चिपचिपे हो गये थे और उनसे बदबू भाप की तरह उठ रही थी। सूटकेस में नये कपड़े थे लेकिन वह सूटकेस ही न जाने कहाँ चला गया था। ब्यूनोस आएरस में जब वह बदसूरत ग्राउन्ड होस्टेस अपनी साथिन से चुहल करती हुई मेरा सामान बुक कर रही थी तभी मुझे भय हुआ था कि वह मुझे ग़लत फ़्लाइट में बुक कर देगी। लेकिन उसने वैसा नहीं किया। मुझे सही फ़्लाइट पर बैठा कर उसने मेरा सूटकेस न जाने कहाँ गुम कर दिया। बहुत संभव है, वह बुएनोस आएरस में ही पड़ा हो क्योंकि जहाज़ पर चढ़ने के पहले मैं गेट पर खड़ा था और यात्रियों का सामान कैरियर बेल्ट पर जाते देख रहा था, उन बक्सों में मेरा सूटकेस नहीं दिखाई दिया था। मोरेल ने कहा था कि जैसे ही मेरे सूटकेस का पता चलेगा, वह मुझे फ़ोन करेगा।

सारी देह पर पसीने के काँटे उग आये थे। ग़ुसलख़ाने में नल के नीचे खड़े हो कर टोंटी—छूते ही बिजली का ज़ोर का झटका लगा। उछल कर मैं ग़ुसल-ख़ाने के बाहर निकल आया और चौखट पर खड़ा होकर उस नल को घूरने लगा—हालाँकि बिजली का करेन्ट अदृश्य होता है। टोंटी पर काली टेप लपेटी हुई थी।

—उस मैनेजर के बच्चे को अभी बुला कर दिखाता हूँ!

मैंने झटके से दरवाज़ा खोला और झटके से बंद कर दिया। कपड़े पहन कर फिर दरवाज़ा खोला और नीचे उतरा। काउन्टर पर मैनेजर का बच्चा नहीं मैनेजर की बच्ची बैठी थी और एक पत्रिका पढ़ रही थी। उसे अपने साथ ऊपर लाकर नल की टोंटी दिखायी। वह तुरन्त समझ गयी और पिता अपने को बुला लायी।

मैनेजर ने समझाया कि यह कोई ख़तरनाक बात नहीं है, वहाँ ११० वोल्ट की बिजली है। वह मुझे आश्वस्त करने के लिए बहुत देर तक लगातार बोलता रहा फिर उसने कोट के जेब से टेप की रील निकाल कर टोंटी पर कई फेरे लपेट दो और मुझे एक बार और आश्वस्त करके चला गया।

मैं नहाने के लिये ग़ुसलख़ाने में दोबारा गया लेकिन देखा कि टोंटी से पानी तिलस्मी ढंग से, बूँद-बूँद टपक रहा था। शाम को बाहर से आया था और रोशनी करके बिस्तर पर चित लेट गया था। ऊपर एक ख़ूबसूरत शैंडेलियर की रोशनी थी और मैं उसे घूरते हुए न जाने किन ख़यालों में खो गया था। अचानक वह शैंडेलियर छत की कड़ी से टूट कर मेरे ऊपर गिरा—नीचे नहीं गिरा बल्कि तार से बँधा झूलता रह गया। असल में वह कड़ी से टूटा भी नहीं था, मैं ही

उस वक्त यह सोच रहा था कि अगर वह मीडेनिटर ! पर मैं जागते हुए वैसे दुःस्वप्न नहीं देखना चाहता और मैं अभी मरना भी नहीं चाहता।

नहीं। मैं नहाऊँगा नहीं।

तभी रोशनी बुझ गयी। इसीलिये—जैसे कि मैं जानता था कि वहाँ ऐसा होगा ही—मैं अपने साथ एक पॉकिट टार्च लाया था जो भूल से थैले के जेब में रखी होने की वजह से पास में थी। टार्च की रोशनी में चोर की तरह अपने कपड़े ढूँढ कर पहनने के बाद कमरे की रोशनी अपने आप जलने का इन्तज़ार करने लगा।

रोशनी हुई तो नीचे उतरा। रात का खाना कहीं खाना था।

बूढ़ा कमरे को बेन्च पर बैठा, पीठ को और सिर लटकाए, ऊंघ रहा था।

उसने एक रेस्तराँ का नाम, रेस्तोरान्ते कातारावा, और ठिकाना बताया।

—लेकिन उस तरफ़ एकदम अँधेरा होगा।

—कोई बात नहीं। मेरे पास टार्च है।

ढाल उतर कर दाहिने मुड़ने पर कुछ आगे एक सुपर मार्केट थी, जिस में काफ़ी भीड़ थी। काउन्टर के आगे एक जवान निकले हुए पेट वाला पिता एक बच्चे को बाँह पर बैठाये इंतज़ार कर रहा था और उसकी पत्नी खरीदा हुआ सामान कागज़ के बड़े थैले में भर रही थी। मार्केट के आगे गुलाबी रंग की इमारत में चुगम्कारिया रेस्तराँ था। अगर वह इतना सूना न होता तो मैं वहीं खाना खा लेता। आगे सड़क एकदम अँधेरी थी। अगले अँधेरे चौराहे पर एक टूटी हुई नाली बायीं ओर से आती दो-तीन मोटरों की तेज़ रोशनी में दिखायी दे गयी। मैंने उन्हें गुज़र जाने दिया।

रास्ते के दूसरी ओर सिर्फ़ एक दूकान के ऊपर लाल नियॉन साइन जल रहा था और उसकी बन्द खिड़कियों के अन्दर ज़नाने ड्रेस खड़े थे।

रेस्तोरान्ते कातारावा के दरवाज़े पर अँधेरा था और फाटक पर एक बेंत का महराब बना था। वह देखने में जापान के बड़े शहरों के सपर क्लबों जैसा लगता था। जापान में सपर क्लब बहुत महँगे होते हैं।

वह अन्दर से रोशन जगह थी और वहाँ कई साधारण दीखने वाले स्त्री पुरुष खाना खा रहे थे। एक टेबुल के गिर्द पति-पत्नी और बच्चों का छोटा-सा परिवार बैठा था। काउन्टर की ऊँची कुर्सी पर एक नौजवान बैठा था उसके आगे बियर का मग रखा था। पीछे वाले टेबुल पर दो अधेड़ उम्र पुरुष व्यवसायी प्लेटों के ऊपर लटके हुए बहस कर रहे थे। चौकोर बड़े टेबुल के ...जैसे

; लड़की चुपचाप खाना खा रही थी। छत के लटके कई पंखों की नाचती
ख़ियाँ नीचे हवा फेंक रही थीं।

सफ़ेद ड्रेस पैहने वेटर वगल में आकर चुपचाप खड़ा हो गया।

—सरवेसा।—असल में काउन्टर पर वैठे नौजवान को वियर पीते देखते
मेरा मन ललचा गया था—कार्ने वीफ़े दे चौरिएसो।—फिर मैं सोचने के
ये रुक गया।

तभी वेटर वापस मुड़ कर चला गया।

उसके जाते ही रोशनी गुल हो गयी। अँधेरे में छूरी-काँटों की खनक किसी
टी टकसाल की याद दिलाती थी।

खाना वहुत महँगा नहीं था।

तेरोल में घुसते ही वुतूरा ने कहा—मोरेल का फ़ोन आया था।

—क्या मेरा सूटकेस मिल गया?

—नहीं! यही वताने के लिने उसने फ़ोन किया था। यहाँ से सान् पाओलो
र रिओ की फ़ोन लाइन ठीक है लेकिन वुएनोस आएरस इंटरनेशनल कॉल हो
ती है। वह लाइन हफ़्ते में छः दिन ख़राव रहती है—अर्खेन्तीनियों के
जनीतिक स्वास्थ्य की तरह। कल शायद पता चल जाए।

—इसका मतलव यह कि मैं कल भी कहीं नहीं जा सकता।

उसने वेन्च पर एक ओर ज़रा-सा खिसक कर मुस्कराते हुए कहा—वैठ
ओ।

वुतूरा को थोड़ी-थोड़ी जापानी आती थी। चीनी भी। जापानी उसने सान्
ओलो में, जव वहाँ उसके कॉफ़ी के वाग़ थे; वागों में काम करने वाले जापानी
ज़दूरों से सीखी थी। चीनी चीन में, जहाँ वह पंद्रह वर्ष रहा था। उसकी माँ
ालवी थी और पिता रूसी। माँ कोलंवस के ख़ानदान की थी।

—क्रिस्टोफ़र कोलंवस और उसका भाई जॉन कोलंवस।—वह वता रहा
—मेरी माँ जान कोलंवस की वंशज थी। और पिता की ओर से मुझे कज़ाक
न मिला। मेरे नाम, वुतूरा के दो शहर रूस में हैं। एक वैसारावियां में,
तरी किशिनेओ में नेस्तर नदी के पास, वुतूर। और दूसरा दोन नदी के पास,
ूर लिनोका।

मुझे लगा कि मैं इतिहास से वातें कर रहा हूँ।

उसे रूसी, इतालवी, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, स्पान्योल, लैटिन, संस्कृत,
रवी, चीनी और जापानी भाषायें आती थीं।

मैं इससे इतना अधिक आश्चर्यचकित हो गया कि अपने गुम गये सूटकेस के

बारे में खीभना भूल कर मन-ही-मन यह सोचने लगा कि इतनी भाषाओं का जानकार यह वुतुरा ब्रासील की सीमा पर बसे फोज दो इगुवासू नाम के इस छोटे से गाँव में क्यों पड़ा है !

—इसके बाद तुम कहाँ जाओगे ?

—इसके बाद ? ओह, मैं जापान लौटूंगा । रास्ते में शायद एक-दो दिन के लिये रिओ में रुकूँ ।

—रिओ ! क्या रखा है रिओ में । हजारों-लाखों लोग रिओ कार्निवल देखने आते हैं । मैं तीस सालों से ब्रासील में हूँ मैंने रिओ कार्निवल एक बार भी नहीं देखा । क्या है उसमें ! सिवा इसके कि नीग्रो शराब पी-पी कर नाचते हैं—मैं नीग्रो लोगों से सख्त नफ़रत करता हूँ । हां, क्या तुम भी शराब पीते हो ?

—हाँ । पीता तो हूँ ।

—लेकिन यहाँ की शराब भूल कर भी मत पीना । उसमें न जाने क्या मिला देते हैं कि एकदम सिर में चढ़ जाती है । अगर तुम्हें शराब पीनी ही हो तो पाराग्वुआई में जाकर खरीदो । यहाँ से कुल तीन किलोमीटर पर बार्डर है । वहाँ सस्ती भी है । न जाने कितने लोग वहाँ जाकर खरीद लाते हैं और मुनाफे से बेचते हैं । इसी का धंधा करते हैं ।

—लेकिन कस्टम्स वाले—

—कस्टम्स वाले शराब लाने की परवाह नहीं करते, एक बोतल हो या सौ बोतल हो । वे सिर्फ इसकी निगरानी करते हैं कि कोई पिस्तौल-राइफल अंदर न लाये । या मैं अगली बार गया तो तुम्हारे लिये लेता आऊँगा ।

—नहीं, शुक्रिया । मुझे इतनी अधिक चाह नहीं है । सूटकेस मिलते ही मैं यहाँ से चला जाऊँगा ।

तभी अंदर वाले दरवाज़े पर आकर मोटी लड़की ने उसे पुकारा ।

वह मुझे बहुत-सी बातों पर अचंभा करने के लिये अकेला छोड़कर खाना खाने चला गया ।

अगली सुबह होते ही इंतज़ार करने लगा कि ग्यारह बजे तो मोरेल को फ़ोन करूँ ।

—कोई खबर नहीं है ।—फ़ोन करने पर उसने बताया—शाम तक शायद कुछ पता चले ।

शाम को भी—कोई खबर नहीं ।

सारा दिन होटल में बैठा रहा । एक बार दोपहर को खाना खाने

पास के एक रेस्तराँ तक गया और गर्मी इतनी अधिक थी कि खाकर सीधे होटल वापस लौट आया। पास में कोई किताब भी न थी, सिवा यात्रा सम्बन्धी सचित्र पैम्फ़्लेटों और एक स्पेनी शब्दकोश के। उन पैम्फ़्लेटों के ज़रिये देर तक घूमता रहा, इगुवासू के झरने देखता रहा, जो होटल से मुश्किल से पंद्रह किलोमीटर दूर पर थे।

तीसरा दिन। मेरा क्रुद्ध स्वर दीन स्वर में बदल गया था।

—सेन्योर मॅरिल ? मैंने तीन दिनों से नहाया नहीं है, कपड़े नहीं बदले हैं। मैं खाना खाने के लिये बाहर निकलने के अलावा कहीं नहीं गया हूँ।

—मैं आपकी हालत समझ सकता हूँ। मैंने बुएनोस आएरस तार दिये हैं, पता चलते ही मैं आपको ख़बर करूँगा।

क्या मैं शाम को एक बार फिर फ़ोन करके पूछ सकता हूँ।

—कर लीजिये। आपका सूटकेस मिलते ही मैं खुद आपको सूचित करूँगा।

बाहर निकला। छाजन के खंभे से टिका एक नौजवान, काला ड्रेस पहने एक लड़की को पकड़ कर उससे बातें कर रहा था। तीन-चार साल का, सिर्फ़ जाँघिया पहने एक बच्चा, अपने आगे काठ का खाली बक्स ढेलता आ रहा था। मुझ पर नज़र पड़ते ही वह बक्स ठेलना भूल कर मुझे एकटक देखने लगा। बस स्टॉप पर तीन चार खाली टैक्सियाँ खड़ी थीं और उनके चालक, फुटपाथ पर एक पेड़ की छाया के नीचे कमीज़ के सारे बटन खोल कर झुंड में खड़े गप लड़ा रहे थे। बस-स्टाप के गिर्द छः-सात अधेड़ उम्र औरतें धूप में चुपचाप खड़ी थीं।

रेस्तोरान्ते काताराता उस तेज़ धूप में बहुत दूर था। कभी-कभी सूरज के सामने बादल के टुकड़े आ जाने पर गर्मी अचानक बढ़ जाती थी। ढाल के ऊपर वाले चुरास्कारिया में चला गया।

टेबुलों के बीच की खाली जगह में एक बच्चा भाग रहा था और आगे भागते हुए बच्चे का पीछा कर रहा था। कोने के एक टेबुल पर एक अधगंजा आदमी बायीं हथेली उल्टी करके उस पर गाल टिकाए बैठा था। उसके सामने बियर की एक आधी खाली, तीन खाली बोतलें और एक भरा मग रखा था। उसने मुझे सीढ़ियाँ चढ़ कर अन्दर आते देखा और जब मैं एक टेबुल के पीछे जाकर बैठ गया तो वह किसी और चीज़ को देखने लगा।

—सरवेसा ! सराडा, नो कार्ने।—मैंने लड़के से कहा। मैं गोश्त नहीं खाना चाहता था।

कुछ देर बाद वह एक लंबी मलाया उठाए हुए आया जिसमें भुने हुए प्याज, मॉमेज, आलू और हरे मिर्च बिंधे हुए थे।

सामने वाली इमारत के आगे की ढाल पर एक काला बूढ़ा दरांती से घास काट रहा था। उसकी बाँह इतनी सूखी और पतली थी कि दूर से यह ठीक-ठीक नहीं मालूम देता था कि कहाँ पर बाँह खत्म होती है और दरांती की बेंट शुरू होती है।

बाहर निकला तब तक वह उसी ढाल के दूसरे छोर तक पहुँच पाया था। उसके माथे और सारे चेहरे पर पसीने की बूँदें और सफेद दाढ़ी की खूँटियाँ धूप में चमक रही थीं।

सुपर मार्केटों के सामने से गुजरते समय, हाफ पैन्ट और ब्रेसरीनुमा ब्लाउज पहने एक लड़की को अंदर जाते देख कर ध्यान आया कि मैंने रात को खाना खाने के लिये बाहर न निकलने के इरादे से मॉमेज, दूध और फल खरीदने का निश्चय किया था।

शाम के पाँच बजे थे और धूप का तीखापन कम हो गया था। पर्दाबन्द खिड़की वाले उस कमरे में, जिसमें दिन में भी रोशनी जलाए रखनी पड़ती थी, बैठे रहने का मन नहीं हो रहा था। अचानक मुझे ऐसा लगा कि मेरा सूटकेस मिल गया है। झपटता हुआ नीचे उतरा और मोरेल को फोन किया।

—वेरी सॉरी। कोई खबर नहीं। मैंने ऑफिस में कह दिया है कि अगर कल तक वह नहीं मिला तो मैं गुम गये सामान का हरजाना भर दूँगा और वह रकम तुम सब को देनी होगी।

—सेन्योर मोरेल, सामान मिले या न मिले, मैं दोपहर की फ्लाइट से यहाँ से आगे जाना चाहता हूँ। मैं यहाँ सिर्फ इगुवासू का झरना देखने के लिये आया था। वह भी मैं नहीं देख सका। लेकिन परवाह नहीं। मैं कल यहाँ से जाना चाहता हूँ। मैंने होटल के मैनेजर से कह दिया है।

—सॉरी। कल वाली फ्लाइट में एक भी सीट खाली नहीं है। परसों है। कल आप झरना देख आइये। मैं परसों की फ्लाइट से आपके लिये सीट बुक कर देता हूँ।

मन-ही-मन बुड़बुड़ाता हुआ बाहर निकला और ढाल की ओर फुटपाथ के किनारे उतराता गया। निगाह के पास कॉफी की वह छोटी-सी दुकान थी और उसके नाटे काउन्टर के पीछे वही गुंडानुमा नौजवान अकेला बैठा था।—इस दूकान से कभी कुछ नहीं खरीदूँगा—मैंने अपना पूर्वनिश्चय दोहराया। एक जगह इमारत की मरम्मत हो रही थी और उसके सामने फुटपाथ पर करीने से लगी

ईंटों के ढेर से रास्ता रुक गया था। उस दूकान के शोकेस में बंदूकें सजी हुई थीं और झुर्रियों से बने चेहरे वाली एक बूढ़ी औरत, ढीले चोंगे जैसा ड्रेस पहने दरवाज़े पर खड़ी थी। उसके एक हाथ में कॉफ़ी का कप था और वह सामने अधगोले में खड़े पाँच-छः लड़के-लड़कियों से हँस-हँस कर बातें कर रही थी। उन लड़कियों में से एक का चेहरा मेरा पहचाना हुआ था। उसे पिछली किसी शाम मैंने तिरोल के दरवाज़े के बगल में अपने हमउम्र किशोरों के बीच, सीढ़ी पर बैठी देखा था। मैंने उन पर एक उड़ती नज़र डाली और फुटपाथ से उतर कर सड़क के दूसरी ओर चला गया।

—सर!—पीछे आ कर किसी ने पुकारा।

वह दूकान के सामने खड़े उन किशोरों में से एक था।

—क्या मैं आप से बात कर सकता हूँ?—वह अंग्रेजी में बोला—मेरा नाम रीमान है। मैं क्रूज़ेइरो एयरलाइंस में काम करता हूँ और मेरा काम टूरिस्टों की सेवा करना है।

मैं उसके साथ उसके साथियों के पास लौट आया।

वृद्ध महिला ने भौंहें ऊपर करके मुस्कराते हुए मेरी ओर दाहिनी हथेली बढ़ायी।

वह बेल्जियन थीं लेकिन उनका जन्म लंदन में हुआ था और उनकी आरंभिक शिक्षा भी वहीं हुई थी। एक समय उनके पति की कांगो में बड़ी जमीन्दारी थी।

—ओह, अफ्रीका को मैं जब याद करती हूँ तो मैं बहुत उदास हो जाती हूँ।—उन्होंने अगल-बगल सिर हिलाते हुए कहा।

तभी दूकान के अंदर से एक महिला ने आ कर मेरे हाथ में कॉफ़ी का सफ़ेद प्याला पकड़ा दिया था।

हाफ़ पैन्ट पहने बारह-तेरह साल का एक लड़का, दोनों हथेलियों पर सफ़ेद कपड़े से ढकी थाल लिये, हमारे पीछे खड़ा हो गया था और बात करने वाले का मुँह अपना चेहरा घुमा-घुमा कर ताक रहा था। वह शायद किसी रेस्तराँ का ब्वॉय था। उसकी बड़ी-बड़ी आँखों में एक झील जैसी गहरी उदासी थी और जब भी मैं यह जानने के लिये उसकी ओर देखता कि अब भी वह खड़ा है या चला गया, वह उन उदास आँखों से मुस्करा देता था।

—यह बूढ़ी महिला बेल्जियम की काउन्टेस है।—रीमान ने धीरे से मेरे कान में कहा।

मैंने उनका चेहरा एक बार फिर ध्यान से देखा। उनके चेहरे के नीचे गले

में बड़े-बड़े मीनियों की माला थी। मुझे बुतूरा की याद आ गई।—इस गाँव में सिर्फ़ भूतपूर्व ऐतिहासिक व्यक्ति ही बसते हैं।—मैंने उनसे नहीं, अपने आप से कहा।

बूढ़ी काउन्टेस ब्रामीनियों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रही थी—मुझे ये लोग सारी दुनिया के लोगों से ऊपर पसंद हैं। अफ्रीका में अपना सब कुछ गँवा देने के बाद मेरे पति ने और मैंने अपने मुल्क की बजाय इस देश को चुना। बुड्ढा अब नहीं रहा लेकिन इस जगह को छोड़ कर जाने का मेरा मन नहीं करता—केवल इन लोगों के कारण। ब्रामीली जैसा दोस्त तुम सारी दुनिया में खोजने पर भी नहीं पा सकते। और ब्रामीली लड़कियाँ! इतनी खूबसूरत लड़कियाँ मैंने और कहीं नहीं देखीं। इस प्यारी लड़की को देखते हो?—उन्होंने तिरोस की सीढ़ी पर पहली बार दिखायी दी मोटी लड़की की ओर इशारा किया—अभी यह सिर्फ़ पंद्रह साल की है लेकिन अगर यह सौंदर्य प्रतियोगिता में शामिल हो तो अपने से ज्यादा उम्र की लड़कियों से बाज़ी मार ले जाएगी।

वह लड़की शर्मा कर हँसने लगी।

वह लड़का अब भी हमारे पीछे खड़ा था। उसे वहाँ खड़े-खड़े घंटे भर से अधिक समय हो गया था। मैं सोच रहा था कि थान में रखा खाना कब का ठंडा हो चुका होगा और उसे बाद में ग्राहक की झिड़कियाँ सुननी पड़ेंगी।

मैं वहाँ से चलने लगा तो रोमान ने पूछा—सर, क्या मैं आपके साथ चल सकता हूँ?

—उसने सौंदर्य प्रतियोगिता में भाग लेने के काबिल उस लड़की को भी साथ ले लिया।

—इसका नाम अलिया सोरेइरा है। यह हाईस्कूल में पढ़ती है।

—हम कहाँ चलेंगे, रोमान?

—सर, आपने पराना नदी नहीं देखी होगी। मैं आपको पराना नदी दिखाने ले चलता हूँ। वह यहाँ से एकदम पास है।

तीन-चार तिराहे-चौराहे आगे जा कर वह हमें ले कर बायीं ओर जाने वाली सड़क पर मुड़ गया। वह सड़क अभी बन कर पूरी नहीं हुई थी, उस पर सिर्फ़ लाल ईंटें जड़ी थीं। सड़क के अगल-बगल की ज़मीन खाली थी और सड़क पर सवारियों की आमद-रफ़्त एकदम नहीं थी इसलिये हम तीनों सड़क के बीच में चल रहे थे। सीधी लंबी सड़क का आगे का छोर, बहुत दूर पर साँझ की नीली रोशनी में खो गया था। जहाँ पर चमकता हुआ आकाश और अँधेरी धरती मिल कर एक लकीर बनाते थे वहाँ अलग-अलग पेड़ उगे थे। आकाश में एक ओर से मटमैले सिंदूरी रंग के बादल उठ रहे थे।

क्या तुम्हारी कोई गर्ल फ्रेंड है ?—अलिया ने मुझसे पूछा।

—मेरी गर्ल फ्रेंड ! नहीं तो, मेरी कोई गर्ल फ्रेंड नहीं है।

—तो तुम मुझे अपनी गर्ल फ्रेंड बनाओगे ?

—लेकिन अलिया, अभी तो तुम बहुत छोटी हो। सिर्फ़ पंद्रह साल की।

—पंद्रह साल की होने से क्या होता है। मुझे देखो, क्या मैं बड़ी नहीं हो गयी हूँ ?—कहते हुए उसने मेरी ओर घूम कर पेट में साँस भरी। उसका कहना सही था, उसकी देह उसकी उम्र को पीछे छोड़ कर आगे बढ़ गयी थी।

मैं हँसने लगा।

—तुम ठीक कहती हो। मैं तुम्हें अपनी गर्ल फ्रेंड बनाता हूँ।

वह मेरे एक हाथ की छोटी उँगली में अपनी छोटी उँगली उलझाती हुई बोली—मैं नौ बजे तुम्हारे कमरे में आऊँगी। तिरोल के मैनेजर की छोटी लड़की मेरे साथ पढ़ती है इसलिये किसी को एतराज न होगा। मुझे तुमसे बहुत-सी बातें करनी हैं।

वह सड़क चढ़ाई के बाद ढाल उतर रही थी और दूर पर कई अँधेरे घरों की बस्ती दिखायी दे रही थी।

—सर, आज हम देर से आये हैं इसलिये आप अधिक नहीं देख सकेंगे। मैं आपको यहाँ किसी दिन फिर लाऊँगा। यह बहुत सुंदर जगह है।

—हाँ, रीमान, हम किसी दिन यहाँ फिर आएँगे।

—सर, यह काले लोगों की बस्ती है। हम इन्हें पसंद नहीं करते।

हम उस बस्ती के भीतर दाख़िल हो रहे थे।

पहले घर के बिना किवाड़ वाले अँधेरे चौखट में हाफ़ पैन्ट और बनियान पहने पंद्रह-सोलह साल की एक दुबली-पतली लड़की खड़ी थी और हमें बस्ती में घुसते घूर कर देख रही थी। ईंट की सड़क पहले ही ख़त्म हो गयी थी और ऊबड़-खाबड़ ढालदार सड़क के बीच से बहने वाले कच्चे पनाले ने सड़क को दो हिस्सों में बाँट दिया था।

अलिया मेरे बगल से हट कर रीमान से सट कर चलने लगी।

बिना बल्ब के बिजली के खंभे के नीचे पानी का नल था, जिस के आसपास नंग-बाहर अधनंगे बच्चे, तीन-चार साल से ले कर आठ-दस साल के, खाली बर्तन हाथों में लिये हुए जमा थे। बड़े लड़के पहले पानी भरने के लिये आपस में धक्का-मुक्की कर रहे थे और छोटे बच्चे रो भी रहे थे।

बगल वाले मकान के अँधेरे आँगन में दो काली छायाएं-जैसी खड़ी थीं और ऊँची आवाज़ों में बातें कर रही थीं या झगड़ रही थीं। हमें देखते ही वे चुप

हो गये और एक ने हमसे सवाल किया। रीमान ने उत्तर दिया। उसने उन्हें शायद मेरे बारे में बताया था।

उनके बुलाने पर हम उस आदमी के पास चले गये। उतने अँधेरे में उसका चेहरा स्पष्ट नहीं दिखायी देता था। उसके चेहरे के सिर्फ बायीं ओर, जिधर अभी पूरी तरह अँधेरा नहीं हुआ था, शाम की उभरी हुई हड्डी के ऊपर आसमान में बची हुई धुँधली बैंजनी चमक झलक रही थी।

रीमान ने उसके और मेरे प्रश्न और उत्तरों का अनुवाद किया।

उस घर के पीछे भी वैसा ही एक कच्चा आँगन और कच्चा अँधेरा घर था। उसके एक ओर एक ऊँचा डूह था और डूह के ऊपर घरौंदे जैसा एक घर। उस डूह के कगार पर तीन-चार व्यक्ति चुपचाप खड़े थे और हमारी बातचीत सुन रहे थे। वह कच्चा रास्ता एक काली नदी के किनारे आ कर खत्म हो जाता था।

—सर, यही पुराना नदी है। इसके दूसरी ओर पाराशुआइ है। हम लोग आज देर से आये इसलिये हम ठीक से कुछ भी न देख सके।

—मैंने तुमसे कहा न रीमान, हम यहाँ फिर जरूर आयेंगे।

—सर, अब हमें लौट चलना चाहिए। शायद आपने भी सुना हो, यह सुरक्षित जगह नहीं है।

हम लौट कर आये तब तक बंदूक वाली दूकान बंद हो गयी थी।

—नौ बजे।—अनिया ने मुस्कराते हुए कहा और वे दोनों बगल की गली में मुड़ गये।

मैं कुछ ही कदम आगे गया था कि रीमान ने पीछे से आवाज दी।

—सर,—उसने पास आ कर धीरे से कहा—अनिया गरीब लड़की है। अगर आप, मेरा मतलब अगर हो सके तो कुछ दे दीजियेगा।

मैं कमरे में टमाटर का जूस और कच्ची सॉसेज खा रहा था तभी दरवाजा खटखटा कर मैनेजर की सुस्त चाल चलने वाली लड़की अंदर आयी और टेलीफ़ोनो कहते हुए वापस मुड़ कर वैसी ही सुस्त चाल से चली गयी।

—सर, मैं रीमान बोल रहा हूँ। आपने कहा था कि आप परसों जाना चाहते हैं और परसों की फ्लाइट में आपको रिजर्वेशन मिल गया है लेकिन मैंने अभी आफिस में आ कर चेक किया। आपका रिजर्वेशन नहीं है। अगले पाँच दिनों तक हमारी सारी सीटें बुक हो चुकी हैं।

—लेकिन सेन्योर मोरेल ने तो कहा था कि उन्होंने परसों की फ्लाइट में मेरे लिये रिजर्वेशन किया है।

—ठीक है सर, आप ज़रा रुकिये। मैं एक बार फिर चेक करता हूँ।

कुछ देर बाद उसने कहा—यस सर, मैंने फिर देखा है। आपका रिज़र्वेशन नहीं है और अगले पांच दिनों की सारी सीटें भरी हुई हैं।

—क्या मैं सेन्योर मोरेल से बात कर सकता हूँ?

—मैं ऑफ़िस से ही बोल रहा हूँ सर, लेकिन मिस्टर मोरेल घर चले गये हैं। मैं एक बार फिर चेक करूंगा और मैं आपके लिये पूरी कोशिश करूँगा।

उसने मुझे मानसिक तनाव में डाल दिया। फिर। वैसा ही। पहली बार वह कहाँ था? नहीं-नहीं।

नौ, साढ़े नौ, दस बज गये, उसका फ़ोन नहीं आया। अलिया तो खैर, मैं जानता था नहीं आयेगी। सड़क के दूसरी ओर वाली दूकान से सिगरेट खरीद कर लौट रहा था तो देखा, अलिया बगल वाली बंद दूकान की अँधेरी सीढ़ी पर दो लड़कों के बीच में बैठी थी और फुसफुस बातें कर रही थी। मैं उनके सामने जा कर चुपचाप खड़ा हो गया और वे नज़रें उठा कर मुझे देखने लगे।

—हलो!—अलिया ने कहा और झेंपी हँसी हँस दी।

—तुमने आने की बात अपनी ओर से कही थी। फिर क्यों नहीं आयीं?

—मैं नहीं जानती।

अगर वह जापानी होती तो कहती, वाकारानाइ।

देश और भाषा कोई भी हो, अर्थ एक ही होता है।

—मुझे भरोसा था कि तुम नहीं आओगी!

कल मैं इगुवासू का झरना देखने जाऊँगा ज़रूर। बुतूरा ने बताया था कि बसें एक-एक घंटे पर जाती हैं। मैं ढाल से उतर कर बस-स्टैंड से चढ़ूँ या गिरजे वाले चौराहे पर स्कूल के सामने से।

रात देर नींद नहीं आयीं और अगले दिन आँख खुली तो नौ बज चुके थे। नीचे आ कर जल्दी-जल्दी आधा नाश्ता खाया और बचा हुआ हैम टेबुल के नीचे दुबक कर बैठ रही काली बिल्ली को खिला कर उठ गया।

बाहर निकलने के पहले अगले दिन की फ़्लाइट में अपनी सीट के बारे में आश्वस्त होने के लिये मोरेल को फ़ोन किया। उसने बताया कि सीट उसने पिछले दिन ही रिज़र्व कर दी थी।

—कल रात को रीमान का फ़ोन आया था। उसने कहा कि मेरा नाम पैसेन्जर लिस्ट में नहीं है।

—मैंने आपका रिज़र्वेशन कर दिया है। उसका स्वर ठंडा था।

अपने थैले मे समान रख रहा था कि मैनेजर ने ऊपर आ कर कहा—टेलीफोनो।

रीमान का फोन था।

—आई अम मॉरी सर, लेकिन आपको छठे दिन रिज़र्वेशन मिल सकता है। क्या मैं रिजर्वेशन कर दूँ?

—रीमान, मैंने अभी पंद्रह मिनट पहले सेन्योर मोरेल को फोन किया था। उन्होंने कहा कि उन्होंने कल की फ्लाइट मे मेरे लिये रिजर्वेशन किया है।

—लेकिन सर, कल की फ्लाइट की सारी सीटें कई दिन पहले ही बुक हो चुकी थी आपका नाम कल की पैसेंजर लिस्ट में नही है।

वह लंबी बात करने के मूड मे लगता था। मैंने झल्ला कर बीच मे ही फोन रख दिया। एक बार फिर मोरेल को फोन किया और बताया तो वह झुँझला गया।

—मैं नहीं जानता कि ये लोग आपको कहाँ की खबर देते हैं। मैं स्टेशन इंचार्ज हूँ और आप से कह रहा हूँ कि कल रिओ जाने वाली फ्लाइट आपको लिये बगैर नही जाएगी।

मैंने उसे धन्यवाद दिया और बार-बार परेशान करने के लिये क्षमा माँगी। ढाल चढ कर स्कूल के सामने वाले बस-स्टॉप पर बस का इतजार करने लगा। सडक के दूसरी ओर नीची दीवार के पोछे खेल का मैदान और स्कूल की इमारत थी। वह शायद लड़कियो का मिडिल स्कूल था। मैदान मे कुछ लडकियाँ खेल रही थीं और गौरइयों को तरह शोर मचा रही थी। बस-स्टॉप पर चार-पाँच स्त्री-पुरुष बस की प्रतीक्षा मे खड़े थे और पास के एक पेड की छाया मे एक बूढ़ा आइसक्रीम की गाड़ी लिये खडा था। आइसक्रीम बेचने वाले को देख कर मुझे उसकी याद आ गयी—बेटि की। आइसक्रीम वाले को देख कर उसके लिये एक आइसक्रीम खरीद लेने का हमेशा मन होता था लेकिन वह दूसरे देश मे रह गयी थी और मैं अन्य देश मे चला आया था।

एक बस आती देख मैं आगे बढा तो आइसक्रीम वाले ने उँगली हिला कर मुझे मना कर दिया। अन्य लोग उस बस पर चढ कर चले गए, केवल मैं धूप मे खडा रह गया। उसने मुझे पेड की छाया मे बुला लिया और बात करने लगा। मुझे पुर्तगाली नही आती थी और वह पुर्तगाली मे भी नही, शायद किसी ग्रामीण बोली मे बोल रहा था।

—नो एन्तिएन्दे सेन्योर। —मैंने हँस कर कहा तो वह खिसियानी हँसी हँसी लगा और चुप हो गया। कातारावा जाने वाली बस [illegible] पर चढ़ जाने का संकेत किया।

झरने ने कई किलोमीटर पहले सीमा चौकी थी। वहाँ पचासों ट्रक, वसें और कारें खड़ी थीं और सड़क पर हथियारवंद सैनिक टहल रहे थे।

दो फौजी अफसर वस के अंदर आये और यात्रियों के शिनाख्ती कागज़ात देखने लगे। अफसर ने सामने वाली सीट पर वैठी अधेड़ औरत के कागज़ देख कर उससे उतर जाने को कहा। वह औरत उससे ज़ोर-ज़ोर से वहस करने लगी। अफसर अगली कतार की ओर वढ़ आया था और कंडक्टर उस औरत के पास जा कर उत्तेजित स्वर में उसे समझाने लगा—शायद वह भी उससे जल्दी नीचे उतर जाने को कह रहा था। औरत अपनी गोद में रखी मटमैली पोटली उठाकर वस से उतर गयी। सवसे आगे वाली सीट पर वैठे दो नौजवान नीचे उतार दिये गये। पीछे से जाँच करते आ रहे अफसर ने मुझसे पासपोर्ट माँगा और एक वार पासपोर्ट में लगा मेरा फोटो और फिर मेरा चेहरा देख कर पासपोर्ट वापस कर दिया। मेरे वगल में वैठे वूढ़े ने कागज माँगे जाने पर अफसर से कुछ कहा। अफसर ने उसकी एक वाजू पकड़ कर ऊपर की ओर झटका दिया। वह वूढ़ा गिड़गिड़ा कर कुछ कहता जा रहा था—उसकी जीभ लड़खड़ा रही थी—और अफसर ठोढ़ी उठाकर वस में सवार यात्रियों की गिनती कर रहा था। वस का आगे वाला दरवाजा वंद हो गया था। वूढ़ा उठा और पीछे के खुले दरवाजे की ओर वढ़ा। उसके घुटने भी उसकी जवान की तरह लड़खड़ा रहे थे। उसके उतरने के वाद वह दरवाज़ा भी वन्द हो गया लेकिन वस आगे खड़ी गाड़ियों के चलने के इंतजार में रुकी रही। खिड़की से दिखायी दिया, दो सैनिक उस वूढ़े की दोनों वाँहों को मुट्ठियों से पकड़ कर ऊपर उठाए हुए, सड़क के एक ओर तने खाकी रंग के पर्दे की आड़ में फौजी खेमे की ओर ले जा रहे थे।

वस से उतरते ही सामने की कगार से ओलती की पतली धार जैसे दो-तीन झरने गिरते दिखायी दिये और उनका हल्का-सा शोर भी सुनायी दिया। दूसरे सैलानी सीढ़ियाँ उतर रहे थे। सीढ़ियों के कई मोड़ उतरने पर दूसरे झरने भी दिखायी देने लगे—वे वड़े भी हो गये थे। नीचे गर्मी तेज थी और आकाश में धूप-छाँह वाली वदली। नीचे एक तेज नदी वह रही थी और उसके दूसरी ओर तीस-पचीस झरने नदी में गिर रहे थे।

नदी के दूसरी ओर अर्जेन्तीना था।

सीढ़ियाँ जगह-जगह से फूट कर नीचे जाती थीं। वे सीढ़ियाँ झरनों की उड़ कर आयी फुहारों से गीली हो गयीं थीं। और उन पर पैर से वने गढ़ों में पानी जमा हो गया था। एक जगह पर लकड़ी की वाढ़ लगी थी और उसके आगे खड़े होकर एक स्त्री और एक पुरुष वारी-वारी से एक दूसरे के फोटो उतार रहे

थे। उस जगह में पंद्रह-सोलह झरने एक साथ दिखायी देते थे। हर बार जब कुछ देर के लिये धूप निकलती थी, बड़े झरने के आगे एक छोटा-सा इंद्रधनुष उग आता था और धूप जाने के साथ गायब हो जाता था। पत्थर के फुटपाथ के एक ओर एक छोटी-सी गुमटी में दो नौजवान बैठे थे और गुमटी की दीवार पर पीली लाइफ बेल्टें टंगी थीं। उसके पास वाला झरना सबसे बड़ा था और एक चौड़ी सफेद दीवार की तरह सबसे अधिक ऊँचाई से गिर रहा था। उस झरने के बहते हुए जल के ऊपर पतला-सा टेढ़ा-मेढ़ा पुल था जो झरने के दीवार के एकदम पास तक जाता था। वहां पर सामने, दाहिने और बायें, दो सौ से अधिक पतले और चौड़े प्रपात थे!

·······जैसे कि झरने की चादरें छूट-छूट गिरती हैं·······

नहीं, वह झरने की फुहार नहीं थी, वर्षा की बूंदें थीं क्योंकि वे बूंदें बड़ी-बड़ी थीं और पुल पर पहले गये सैलानी माथे पर हाथ रख कर दौड़ते हुए वापस आ रहे थे। पुल के पहले सिरे पर वापस आते-आते तेज वर्षा की झड़ी लग गयी। वे जो पहले पहुंच गये थे पत्थर की दीवार यहाँ-वहाँ चिपक गये थे, छिपकलियों की तरह। मेरे पास छतरी थी, जो थैले में रह जाने के कारण गुम नहीं गयी थी।

एक बूढ़ी औरत प्लास्टिक का छोटा-सा टुकड़ा सिर पर स्कार्फ की तरह बाँधे धीरे-धीरे सीढ़ियाँ चढ़ रही थी। छतरी उसके सिर पर की तो उसने हँसते हुए धन्यवाद देकर इन्कार कर दिया।

छज्जे की रेलिंग पर एक नौजवान जोड़ा आपस में सटा हुआ खड़ा था। वे बारिश से लापरवाह झरने की ओर देख रहे थे।

पैरों की आहट सुन कर नौजवान ने मेरी ओर देखा और आवाज़ दी—हेइ! तुम कहाँ से। हम अमरीकी हैं।

मैंने उसे बताया कि मैं अर्जेन्तीना से लौट रहा हूँ।

—हम भी अर्जेन्तीना से लौट रहे हैं। —उसने अपना कैमरा मेरी ओर बढ़ाते हुए कहा—हमारी इकट्ठा फोटो खींच दो।

उसके सुनहले बाल बारिश से गीले हो कर चिपक गये थे।

—मेरा नाम है जॉन और यह मेरी पत्नी है ग्लोरिया।

—अर्जेन्तीना में सारी चीज़ें कितनी सस्ती थीं। —उसकी पत्नी ने कहा।

—यह तो बुएनोस आएरस में एकदम पागल हो गयी! जानते हो, इसने इतना सामान खरीदा कि वह तीन क्रेटों में अमेरिका गया है।

—मेरा मन नहीं हो रहा था बुएनोस आएरस छोड़ने का। —ग्लोरिया बोली।

—मेरा भी मन नहीं हो रहा था लेकिन उसका कारण कुछ और था।

—तुम किधर रुके हो, अर्खेन्तीना की ओर या ब्रासील में। —सीढ़ियाँ चढ़ते हुए जॉन ने पूछा।

—ब्रासील, फ़ोज दो इगुवासू में।

—तब तुम ख़जाना लुटा रहे होगे। कितना देते हो।

—मैंने बताया।

—इसीलिये हम अर्खेन्तीना में रुके। हम कमरे का किराया दे रहे हैं दो डॉलर और उसमें हमारा नाश्ता शामिल है।

—मुझे पता नहीं था। —मैंने धीरे से कहा।

—बुएनोस आएरस में तुम दस-पंद्रह डॉलर में जितना चाहो खा सकते हो, उसके अलावा जितना मजा लूटना चाहो लूट सकते हो। मैं तुम्हें बताता हूँ, अगर यह मेरे साथ न होती तो!—उसने आँखें मूंद कर आह भरी।

ऊपर एक सस्ते रेस्तराँ के आगे कई टूरिस्ट वापसी की बस की प्रतीक्षा में खड़े थे।

—जॉन, क्या नदी पार कर के अर्खेन्तीना की ओर जाया जा सकता है? मैं वहाँ एक बार फिर जाना चाहता हूँ।

—बहुत आसानी से। आओ, हम तुम्हें अपने साथ ले चलते हैं। हमारे पास अपना स्टेशन वैगन है। लेकिन तुम्हें यह पता कर लेना होगा कि उधर से आख़िरी बोट कितने बजे छूटती है।

पोर्तो मारिया से हम एक बड़ी नाव से पार हुए। घाट और उसके आसपास अनेक फ़ौजी गाड़ियाँ खड़ी थीं और सैनिक टहल रहे थे।

—इनका प्रेसिडेन्ट आजकल यहाँ आया है,—जॉन बोला—इसलिये परसों से ये सैनिक दिखायी दे रहे हैं। हमारे होटल का मैनेजर बता रहा था कि ब्रासील की तरह होटल काटाराटा में ठहरे सारे मेहमानों को होटल से बाहर फेंक दिया गया क्योंकि सरकारी पार्टी वहाँ ठहरने को थी। अगर मैं वहाँ ठहरा होता तो मैं अपना कमरा हर्गिज खाली न करता।

नदी के दूसरी ओर अर्खेन्तीना का किनारा था।

घाट की कच्ची सीढ़ियाँ चढ़ते हुए मैं ख़ुशी से चौंक गया—देखो, मैं अर्खेन्तीना वापस लौट आया!

सीढ़ियों के ऊपर सीमा पुलिस की एक छोटी-सी चौकी थी—या हो सकता है यह पुरानी चौकी रही हो। कच्ची सड़क के दूसरी ओर फ़र के कपड़े और गाय की रोयेंदार खाल के गोल कालीन बेचने वालों की काठ की छोटी-छोटी अँधेरी और निर्जन गुमटियों की कतार थी। उन पर न तो एक ख़रीदार था और न विक्रेता—शायद तेज बारिश की वजह से। उन गुमटियों के मालिक शायद उन लटके हुए कपड़ों के पीछे गुमटियों के अन्दर बैठे थे।

—तुम यहीं रुको,—वह बोला—मेरी गाड़ी बाजार के छोर पर खड़ी है, मैं अभी ले कर आता हूँ।

—मुझे माफ करना जॉन, मैं अर्सेन्तीना एक बार फिर आना भर चाहता था—बस। यहीं कुछ देर घूम फिर कर मैं वापस लौट जाऊँगा। बारिश हो रही है और मुझे पता नहीं है कि उधर आख़िरी बोट कितने बजे जाती है। यहाँ तक लाने के लिये तुम्हें बहुत-बहुत शुक्रिया।

वे हाथ मिला कर और अच्छे समय की कामना प्रकट कर चले गये।

मैंने दिन की अंतिम नाव के बारे में पता किया। दो-ढाई घन्टे का समय था। मैंने सुबह के बाद कुछ खाया न था। पूछा। वहाँ रेस्तराँ वगैरह नहीं था। एक होटल था। पास में ही।

बारिश और हवा के झोंके इतने तेज हो गये थे कि छतरी बार-बार उलट जाती थी। भीग तो ख़ैर, पहले ही गया था इसलिये पैदल चलते-चलते ठहर कर उलट गयी छतरी सीधी करके फिर लगाना एक दिखावा मात्र था।

वह होटल सचमुच, आठ-दस मिनट की दूरी पर था। उसके फाटक के अन्दर,चौड़े मैदान के दूसरी ओर निर्जन पोर्च के पास एक बस और चार कारें खड़ी थीं।

मेरे जूतों में पानी भर गया था और हर कदम रखने के साथ उसके अन्दर से भीगी आवाज निकलती थी।

वे सारे लोग जो अब तक नहीं दिखायी दे रहे थे, होटल के लम्बे बरामदे में जमा थे। बौछार कभी-कभी बरामदे के अन्दर तक घुस आती थी लेकिन उन्हें उसकी परवाह नहीं हो सकती थी क्योंकि वे केवल जाँघिया और टोपी या बिकिनी में थे और पहले से ही भीगे हुए थे।

एक खंभे के पास वाले टेबुल पर बैठा अधेड़ उम्र आदमी सिर पर मरपत की टोपी लगाए था और तेज हवा के बावजूद बार-बार लाइटर जला कर सिगरेट सुलगाने की कोशिश कर रहा था। विर्जिनी पहले उसकी लड़की ढ़ूँढ़

खड़ी हो कर तौलिये से अपनी देह पोंछते जाने के साथ-साथ टेबुल पर बैठे तीसरे आदमी से लगातार बात करती जा रही थी।

बारिश अचानक तेज़ हो गयी। अलग-अलग बादलों के आकार आपस में घुलमिल गये थे और आकाश एकदम सपाट धुँधला हो गया था। बरामदे के आगे घास का लंबा-चौड़ा बड़ा मैदान था, जिसके बीच में ताड़ के दो ऊँचे पेड़ खड़े थे और तेज़ हवा में अगल-बगल झूम रहे थे। मैदान के दूसरी ओर, बहुत दूर पर एक कतार में खड़े पेड़, वर्षा में ढोरों की तरह सिर झुकाए हुए भीग रहे थे। उन सब के पीछे इगुवासू के झरने रहे होंगे क्योंकि बारिश के हल्के से शोर के ऊपर झरनों की एकरस भारी आवाज़ सुनायी दे रहा था। झरने, वर्षा, नदी के अंधे होते हैं—या बहरे, क्योंकि वे अपने सिवा किसी को सुनते-देखते नहीं।

डाइनिंग हाल के सामने लंबे बरामदे में जाँघिया पहने पुरुषों और बिकिनी पहने लड़कियों का एक गुच्छा मैदान की ओर मुँह करके एक गीत गाते हुए गीत की लय पर धीरे-धीरे नाच रहा था। डाइनिंग हाल के अन्दर वही गीत कई व्यक्ति गा रहे थे।

—विवे, एइ उना कासा। विवे, एइ उना मन्याना!

कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ था और दिखायी दे रहा था कि अन्दर तीस-पैंतीस मर्द-औरत हँस-हँस कर नाचते हुए गा रहे थे।

—उन सेओ अज़ू!

विवे आइ उना कासा	जियो, देखो वह एक घर है
उना मन्याना	एक सुबह है
उना मुखेर	एक स्त्री है
विवे	जियो
आइ उना लुगार	देखो, वह एक ठौर है
उन सिएलो असूल	नीला आकाश है
अइ आलगिन	देखो, है तो कोई
एन केन क्रेएर	विश्वास करने को
सिन कादा कासा	किसी एक घर में
एन कादा अमिगो	किसी एक मित्र में
आइ उना रासोन	तुम्हारे पास कारण है तो
पारा विवीर—विवे....	जीते रहने का—जियो...

डाईनिंग टेबुल के ऊपर सफेद बालों वाला एक बूढ़ा गीत की तर्ज के साथ उछल-उछल कर नाच रहा था।

—एइ, आलगिन एन, केन क्रेएर—

फर्श पर नाचने वालों की भीड़ में से एक पुरुष ने हाथ बढ़ा कर मेरा हाथ पकड़ा और नाचने वालों के गोल में खींच लिया।

—तुम कहाँ से? अर्जेन्तीना से?—उनमें शामिल होते हुए मैंने उससे पूछा।

—नो इंपोर्ता!—उसने हँसते हुए मेरा प्रश्न उड़ा दिया।

—एन कादा अमिगो—

उसका मखौल करने वाला जवाब सुन कर बिकिनी में नाचती हुई उसकी साथिन खिलखिला कर हँस पड़ी और उसने हम दोनों को अपनी बाहों में लपेट लिया।

—सी एन कादा काआसा, एन कादा अमिगो।

वे किलकारियाँ मार कर हँस रहे थे और टेबुल के ऊपर सफेद बालों वाला बूढ़ा आँखें मूँद कर पैर पटक-पटक कर नाच रहा था।

—एइ उना राज़ोन, पारा विवीर—विवे! एइ उना राज़ोन, पारा विवीर, विवे!

वे अचानक खड़े हो कर तालियाँ बजाने लगे लेकिन वह बूढ़ा टेबुल के ऊपर पहले की तर्ज पर नाचता रहा।

—तुम कहाँ से?—पुरुष ने मुझसे पूछा।

—नो इम्पोर्ता।—मैंने उसका जवाब दुहरा दिया।

हम तीनों एक साथ हँस पड़े।

चलने के पहले मैंने एक चिट पर अपना नाम-पता लिख कर उन्हें देते हुए कहा—अगर कभी जापान आओ तो मुझसे ज़रूर मिलना।

लड़की पता पढ़ने की कोशिश कर रही थी।

—तुम आश्वस्त रहो,—वह हँसते हुए बोली—हम वहाँ कभी नहीं आएँगे। जापान बहुत दूर है और ,उतनी दूर यात्रा करने का साधन हमारे पास कभी न हो पाएगा।

—वैसे हम साल में दो-तीन बार विदेश यात्रा करते हैं,—उस आदमी ने बात काटते हुए कहा—मतलब ब्रासील और अर्जेन्तीना की, क्योंकि ये देश हमारे शहर से तीस-चालीस किलोमीटर के अंदर हैं।

वे अभावग्रस्त होने पर भी उदास नहीं थे।

नया गीत शुरू हो गया था। मैंने उनसे विदा ली। वे उसके पहले ही गीत की तर्ज़ पर हिलने-डुलने लगे थे।

बाहर पहले की तरह तेज़ बारिश हो रही थी।

अर्खेन्तीना से ब्रासील जाने वाली आख़िरी बोट रह गयी थी। ब्रासीलो घाट के फाटक पर खड़े सैनिक ने मेरा थैला दोनों हाथों से दबाते हुए पूछा कि मैं अर्खेन्तीना से कुछ ले तो नहीं आया, पासापोर्ते देखा और चार उँगलियाँ हिला कर बाहर निकल जाने का इशारा किया।

अर्खेन्तीना एक पतली-सी नदी के दूसरी ओर छूट गया—अर्खेन्तीना, जहाँ के लिये मैं आया था।

बस में सुबह की अपेक्षा अधिक भीड़ थी क्योंकि वह आख़िरी बस थी। बस पहले वाले चेक-पोस्ट पर आ कर रुक गयी और दो सैनिक अफ़सर सुबह की तरह जाँच करने के लिये बस में आये।

—तुम कुछ लिये तो नहीं हो थैले में?—मेरा पासपोर्ट हाथ में पकड़े-पकड़े उसने पूछा।

—मैं समझ नहीं सका।

उसने कमर से लटक रही रिवाल्वर को दूसरे हाथ से थपथपाते हुए कहा—यह।

—ओह! नहीं।

एक औरत, जो ब्रासील की सीमा से बाहर जाने वाली किसी बस से उतारी गयी लगती थी, बस के अगले दरवाज़े की सीढ़ी पर खड़ी हो कर ड्राइवर से कह रही थी—मुझे चढ़ा लो।

तभी दूसरा सैनिक अफ़सर उसे कुहनी मारते हुए चिल्लाया—नो!

कुहनी औरत के चेहरे पर लगी और वह नीचे गिर गयी।

उधर की सीटों पर बैठे मुसाफ़िर अपनी-अपनी जगहों पर खड़े हो कर चुपचाप बाहर झाँकने लगे। धरती पर गिरी औरत के चेहरे पर लाल-लाल खून फैल गया था। वह उसकी नाक या मुँह से निकला खून था। वह बेहोश नहीं हुई थी क्योंकि वह ज़ोर-ज़ोर से रो रही थी। कई सैनिक उसके आसपास खड़े थे।

उस गीत की कड़ियाँ मेरे कानों में लगातार गूँज रही थीं। घिरती हुई शाम की नीली रोशनी में, आने वाले कल के लिये जीने को पुकारते हुए गीत की! एक घर? एक औरत? नहीं, जीने के लिये ज़रूरी नहीं। जीने के लिये

किसी तर्क की ज़रूरत, नहीं, सिवा अगली सुबह के होने से विश्वास के।

मैंने जब कमरे का दरवाज़ा खोला और रोशनी की तो देखा मेरा गुम गया सूटकेस बिस्तर के ऊपर रखा था।

मुझे हँसी आ गयी—सिर्फ़ चौदह घंटे बाद मुझे आगे चले जाना था।

सूटकेस के ऊपर मोरेल की चिट्ठी टेप से चिपकाई हुई थी—वह गलती से साउ पाओलो भेज दिया गया था। हम आपसे क्षमा माँगते हैं।

मुझे ब्यूनोस आयरस एयरपोर्ट की ग्राउन्ड होस्टेस का खिल-खिल करके हँसता हुआ चेहरा याद आ गया।

रात भर बंद कमरे में बाहर से आता वर्षा का एकरस स्वर सुनायी देता रहा। सुबह भी बारिश हो रही थी। रात को लिखी पाँच-छः चिट्ठियाँ डाक में डालनी थीं। कोरेइयो—डाकघर—बहते हुए नाले जैसी सड़क के दूसरी ओर की गुलाबी इमारत में था। टैक्सी निगोर के दरवाज़े के सामने मेरे वापस आने के इंतज़ार में खड़ी थी। मैनेजर और उसकी बड़ी लड़की दरवाज़े के बाहर तक छोड़ने आये। बुलुरा कहीं चला गया था।

तेज़ वर्षा के बावजूद मैं दौड़ती हुई टैक्सी के अंदर से उन रास्तों को पहचान सकता था। आगे के शीशे को साफ़ करने वाला वाइपर नहीं था और सामने से आने वाली गाड़ियों के कौंधते हुए बल्ब शीशे पर आकर गायब हो जाते थे। बगल से गुज़रते समय उन गाड़ियों के पहियों से उड़ कर गंदे पानी के छींटे दर-वाज़े के शीशे पर पड़ते थे—ठीक ब्यूनोस आयरस में उसकी सहेली की कार में पालेर्मो जाते समय की तरह! वह टैक्सी ड्राइवर उन रास्तों को मुझसे अधिक पहचानता रहा होगा क्योंकि वह लाल पानी के अंदर लगभग पूरी तरह छिप गयी सड़क पर टैक्सी, किसी खुले मैदान में टैक्सी चलाने की तरह चला रहा था।

दाहिनी ओर बाड़ की सफ़ेद बाड़ के पीछे एक लाल साइनबोर्ड था। वह एक होटल का साइनबोर्ड था, जिसे मैंने पाँच दिन पहले फ़ोज़ दो इगुआसू आते समय देखा था।

मोरेल का कहना सही था, उसने रियो द जनेइरो जाने वाली फ़्लाइट में मुझे एक सीट दे दी थी।

उसे वहीं सूटकेस वापस करके मैं फिर खाली हाथ हो गया। सामने के कॉफ़ी स्टॉल की सभी कुर्सियाँ लगी हुई थीं और मेन्जोर मिलन काउन्टर के पीछे एक जगह खड़े हो, ग्राहकों को धीरे-धीरे कॉफ़ी पीते देख रहे थे। मुझे उनसे कोई काम न था—मुझे न कॉफ़ी पीनी थी और न डालर भुनाना था। सामने संगमरमर का ज़ीना था, जो ऊपर की मंज़िल पर जाता था। एक आदमी हाथ में

की ओर झुका हुआ धीरे-धीरे सीढ़ी पोंछ रहा था। वह बूढ़ा और काला था और पहली नज़र में उसकी सिर्फ़ सूखी टाँगें और मैला हाफ़ पैन्ट ही दिखायी देते थे। ऊपर की मंजिल पर गम के पौधे के बगल में लगी लंबी बेन्च पर एक आदमी आँख मूँदे सो रहा था। शीशे के दरवाज़े पर तीन-चार फ़ौजी अफ़सर और दो स्त्रियाँ रनवे की ओर मुँह किये खड़े थे। वे शायद किसी सहकर्मी को विदा करने आये थे। दरवाज़े के बाहर लाल गच पर बारिश का पानी जहाँ-तहाँ जमा था और उनमें बादलों भरा आसमान उतर आया था, उन आकाशों में वर्षा की नन्हीं-नन्हीं बूँदें गिर रही थीं—बुएनोस आएरस में एक शाम घर के पास वाले पार्क में जमा वर्षाजल में नीले आसमान और उनमें पड़ती फ़ींसियों की तरह! उनके साथ एक छोटा बच्चा था जो जानबूझ कर जमा पानी वाली जगहों पर पैर पटकता हुआ दौड़ रहा था।

खाकी रंग का एक हवाई जहाज इमारत के सबसे पास खड़ा था। वह ब्राज़ीली वायुसेना का जहाज़ था। अचानक उसका एक प्रोपेलर घूमने लगा, फिर एक-एक करके उसके चारों प्रोपेलर चालू हो गये। प्रायः आठ-दस व्यक्ति इमारत के अंदर से दौड़ते हुए निकले और उस जहाज़ पर सवार हो गये। उस फ़ौजी जहाज़ के उड़ जाने के तुरन्त बाद खिलौने जैसा एक छोटा जहाज़, जिस पर चार व्यक्ति भी नहीं बैठ सकते होंगे, रनवे के दूर वाले छोर से दौड़ता हुआ आया और टिड्डी की तरह उड़ गया।

वे सारे लोग जो दरवाज़े के अन्दर खड़े थे, बच्चे को साथ लेकर चले गये। केवल बेन्च पर सो रहा व्यक्ति वहीं सोता रह गया।

फ़्लाइट लेट हो रही थी। शायद मौसम की ख़राबी के कारण। दो-चालीस पर सान् पाओलो के लिये उड़ने वाला जहाज़, तीन बज गये थे, अभी तक आया भी न था।

वर्षा की अंधी उजास में से, इगुवासू के झरनों का बहुत हल्का-सा शोर सुनायी दे रहा था। या शायद वह वर्षा की ही आवाज़ थी। ध्यान से सुनने की कोशिश करने पर दोनों आवाज़ें आपस में मिल जाती थीं। छज्जे के किनारे से दिखायी देती थी नदी पार की उदास हरियाली। वह अर्खेन्तीना था। मैं अर्खेन्तीना तक ही आया था। उसके बाद मैं कहीं भी जाऊँ, वह वापसी की यात्रा होगी। लेकिन अर्खेन्तीना तक भला क्यों आया था मैं?

या हो सकता है वह मेरा भ्रम रहा हो—उस तरफ़ अर्खेन्तीना नहीं, पाराग्वाइ भी तो हो सकता था!

लाउडस्पीकर पर फ़्लाइट आने की सूचना दी जा रही थी।

काउन्टर पर मोरेल, बचे हुए तीन-चार यात्रियों के कागजात निबटाने में व्यस्त था। हमारी निगाहें मिलीं तो मैंने एक शब्द में उसे धन्यवाद दिया, उसने होंठों से मुस्करा कर माफी माँगी।

मैं यहाँ आया था। मैं यहाँ से जा रहा हूँ। इसमें उदास होने की नया क्या बात? तब भी तो मैं बहुत दूर से आया था और वह पहला अवसर था जब मैं अपने शहर का स्टेशन आने पर ट्रेन से नीचे नहीं उतरा था और आगे चला गया था। मैं दूसरे, एक छोटे-से स्टेशन पर उतरा था तब सवेरा नहीं हुआ था और मैं स्टेशन से बाहर निकल कर ठीक से रोशनी फैलने के इन्तजार में डेढ़-दो घन्टे सड़कों के किनारे टहलता रहा था। तब भी तो मैं वापस लौट आया था और हमने वायदा किया था—इस बार की तरह नहीं—हमने कहा था कि हम फिर मिलेंगे……

जहाज में अपनी सीट पर बैठे हुए, खिड़की से दिखायी दे रहा था वह छज्जा, जिस पर अभी कुछ मिनट पहले मैं खड़ा था। पर इस वक्त वहाँ कोई न था। हो सकता है, बेन्च पर सोया वह आदमी अब भी वहीं सो रहा हो। भला, वह वहाँ किस लिये आया होगा!

हवाई जहाज धरती छोड़ कर ऊपर उठ गया। मैंने नीचे देखना चाहा लेकिन खिड़की पर वर्षा का सफ़ेद पर्दा तन गया था। मैं जैसे किसी गाँव की कच्ची ऊबड़-खाबड़ सड़क पर पुरानी घोड़ा-गाड़ी में बैठ कर यात्रा कर रहा था। मैंने आँखें मूँद लीं और नींद में सो जाने की कोशिश करने लगा क्योंकि जहाज अधिक हिलने-डुलने से मेरी तबीयत खराब हो जाती थी और मैं कई दिनों तक बीमार रहा करता था।

शाम हो गयी थी लेकिन उतनी ऊँचाई पर से पश्चिमी क्षितिज पर लाली दिखायी दे रही थी। नीचे किसी शहर की रोशनियों का गुच्छा दिखायी दिया फिर गेरुए रंग की पहाड़ियाँ! फिर दाहिनी ओर अतलांतिक का किनारा।

रिओ से ही मैंने बुएनोस आएरस जाने वाला हवाई जहाज पकड़ा था और रिओ में उतर कर मुझे वापसी की फ्लाइटों में रिज़र्वेशन कराना था। उस दिन मैं कितनी हड़बड़ी में था पर दूसरी बार उसी एयरपोर्ट पर उतरने के बावजूद मैं उसे बिलकुल भी नहीं पहचान पा रहा था! शायद चक्कर आने के कारण या रिओ 'एयरपोर्ट के कमरों में धीमे बल्ब लगे होने के का

शायद उस समय मुझे ही वह रोशनी पीली लग रही थी। उस दिन एक होस्टेस ने बुएनोस आएरस जाने वाली फ़्लाइट में जगह दिलाने में मेरी कितनी सहायता की थी—उसका नाम याद नहीं आ रहा था। मैंने उससे कहा था कि लौटती बार मैं रिओ में जरूर रुकूँगा। तोक्यो से साथ आने वाली वह जापानी महिला भी यहीं उतरी थीं। उन्होंने कहा था कि वह यहाँ ढ़ेढ़-दो माह रहेंगी। क्या नाम था उनका ? साचिको—साचिको ? तेराओका साचिको ? या तेरामुरा साचिको। उन्होंने अपने होटल का नाम भी बताया था—अस्त्रॉल या अस्तोरिया।

क्रूज़ेइरो के काउन्टर के पीछे फ़र्श पर अकेला मेरा सूटकेस बच रहा था। हो सकता है तबीयत ख़राब होने के कारण वह काउन्टर ढूँढ़ने में मुझे देर लगी हो।

मैंने रिओ में रात बिताने के लिये किसी होटल में रिज़र्वेशन भी नहीं कराया था।

एक काउन्टर पर जाकर होटलों के बारे में दरियाफ़्त करने लगा। उसने विभिन्न होटलों की दरें बतायीं।

—क्या रिओ में कोई अस्टोरिया होटल है ?

—हाँ, है।

—मेरी एक जापानी मित्र वहाँ ठहरी थीं। क्या आप फ़ोन करके पूछ सकते हैं कि वह अब भी वहाँ हैं ?

—जी हाँ।

—ज़रा रुकिये। होटल का नाम मुझे ठीक-ठीक याद नहीं आ रहा—शायद अस्तोरिया, या अस्त्रॉल।

—ये दोनों होटल यहाँ हैं। आप ज़रा ठहरिये। मैं पूछ कर देखता हूँ। कृपया नाम बताएँ।

—तेरामुरा साचिको। सेन्योरा साचिको तेरामुरा।

उसने फ़ोन किया। कुछ देर बाद उसने दूसरी बार नंबर मिलाया और फ़ोन का रिसीवर कंधे पर चेहरे से दबा कर मुझे देखने लगा। होटल कर्मचारी शायद मेहमानों की सूची में वह नाम ढूँढ़ रहा था।

सेन्योरा साचिको तेरामुरा।—उसने फ़ोन में कहा फिर मुझसे बोला—अस्त्रॉल में सेन्योरा साचिको तेरामुरा नहीं, सेन्योरा साचिको तेराओका ठहरी हैं।

—वही हैं। क्या अस्त्रॉल में एक कमरा मुझे दे सकते हैं।

कमरा रिजर्व कराने के बाद वह [illegible] मुझे दिखाते हुए समझाने लगा—होटल अस्तॉन [illegible] के पास है। [illegible] के विचार से मैं आपको बस से जाने की सलाह न दूँगा। आप टैक्सी कर लीजिए।

उसने एक चिट पर होटल का नाम-पता लिख कर चिट मुझे पकड़ा दी। उसे धन्यवाद दे कर आगे बढ़ा तो वह अपने साथी से पोर्तुगाली में न जाने क्या कह कर जोर से हँसा।

बाहर सड़क के किनारे लगी रोशनियों के अलावा एकदम अँधेरा था। रास्ते में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर कई पुल और सुरंगें थीं। या ऐसा मुझे लगा। मैं ब्युएनोस आएरस पहुँचने से पहले ही उसकी एक-एक सड़क, हर एक मुहल्ले और उसके प्रत्येक पार्क को पहचान सकता था और समझता था कि अगर मुझे उस शहर के किसी भी कोने में छोड़ दिया जाए तो मैं आँख मूँद कर अपनी इच्छित जगह पर पहुँच सकता हूँ। पर तोक्यो मेरे लिये सिर्फ एक शहर का नाम था जिसे मैंने सुना भर था और नक्शों पर एक काली बूँद की शक्ल में देखा था। अगर मुझे उसी रात या अगली सुबह जाने वाली फ्लाइट मिलने का भरोसा होता तो मैं शहर के अंदर जाता भी न लेकिन मैं जैसे कि नींद में इधर-उधर घूम रहा था। दाहिने हाथ आसमान में एक नीला धब्बा धीरे-धीरे उड़ता हुआ पीछे की ओर जा रहा था। तीसरे दिन मुझे ज्ञात हुआ कि वह पहाड़ की चोटी पर, दोनों हाथ फैलाये ईसा की विशाल मूर्ति थी...... बायें हाथ एक गुलाबी इमारत की झलक, जिसके सामने फुटपाथ पर सैकड़ों जलती हुई मोमबत्तियाँ थीं—शायद कोई गिरजाघर। एक लंबी सुरंग, जिसकी छत पर बिजली के बल्बों की दोहरी झालर टँगी थी—तोक्यो में योयोगि की लंबी सुरंग की तरह। सुरंग के बाहर एक लंबी सड़क, जिसके दोनों ओर ऊँची-ऊँची इमारतों की कतारें थीं।

टैक्सी एक होटल के किनारे आ कर रुकी। दरवाजे के ऊपर नीले नियॉन साइन में अस्त्रॉन का नाम चमक रहा था।

होटल का एक कर्मचारी सामान सहित कमरे में छोड़ गया। एक पलंग, एक सँकरा लंबा टेबुल और बगल की कोठरी में गुसलखाना वगैरह।

झट से नंबर पूछ कर तेराओका सान् को फोन किया। हालाँकि मुझे झिझक हो रही थी यदि उनके पति हुए और उन्होंने फोन उठाया तो इतनी देर गए फोन करना अच्छा न लगेगा। लेकिन वही थीं।

—तेराओका सान्, मैं हूँ। क्या आपको मेरी याद है? हम तोक्यो में मिले, तक साथ आए थे।

—अरे, आप ! इस समय कहाँ हैं ?

—होटल अस्त्रॉल में। पाँच सौ बारह नंबर कमर में। रात इतनी देर को फ़ोन करने के लिये क्षमा चाहता हूँ पर शायद कल सुबह ही मैं आगे चला जाऊँ इसलिये इस समय आपको फ़ोन किया। आप कैसी हैं ?

—आप की कृपा है। मैं नहा रही थी, अधनहाई हूँ। आप चाहें तो दस-पंद्रह मिनट बाद मेरे कमरे में आएँ, मेरा कमरा सातवीं मंज़िल पर है। या अगर कहें तो मैं आपके कमरे में आ जाऊँ। या मैं ही आऊँगी—मुझे नहाने में देर लग सकती है। मगर एक शर्त है, कि आप मुझे बियर नहीं पिलायेंगे।—कहते हुए वह हँसने लगीं।

—जी नहीं, वैसी बदतमीज़ी मैं दोबारा नहीं करूँगा।

सिर्फ़ चंद दिनों बाद मैं जापानी में बोला था लेकिन ऐसा मालूम देता था कि फिर से पैदा होने के बाद पहली बार मेरे मुँह से बोल फूटे हैं मैं तेराओका सान् के बारे में बहुत-सी बातें सोच रहा था लेकिन दूसरी बातों के अंधड़ में एक बात भी ठीक से नहीं सोच पा रहा था।

प्राय: आध घंटे बाद उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया—अंदर आ सकती हूँ ?

मैंने उठ कर दरवाज़ा खोला।

एक ही महीने में वह कितनी बदल गयी थीं ! उनकी पुतलियों में कितनी अधिक थकान भर आयी थी ! लगता था जैसे वह लगातार बीमार रही हों !

—मुझे विश्वास नहीं हो रहा है कि हम फिर मिल रहे हैं।—वह बोली।

—मुझे भी। इतनी देर को आपको फ़ोन नहीं करना चहिये था मुझे। मैं डर रहा था कि आप कहीं सो न गयी हों।

—इतनी जल्दी ! रात डेढ़-दो के पहले मैं कहाँ सोती हूँ।

कमरे में सिर्फ़ एक कुर्सी थी।

—आप रिओ कब आये।

—आज ही तो ! होटल पहुँचते ही आपको फ़ोन किया था।

उनके चेहरे पर उदास-सी मुस्कराहट आयी फिर वह खिल कर हँस पड़ी—अरे, एक महीने में आपका रंग काफ़ी काला हो गया ! कहाँ तक घूम आये।

—अपनी दुनिया के छोर तक।

—अपनी दुनिया के छोर तक ! मतलब ?

—मेरी दुनिया बहुत बड़ी नहीं थी। अर्ख़ेन्तीना के दक्षिणी भाग तक।

—बड़ी लम्बी यात्रा की ! सिर्फ घूमने के लिये ? मैंने आपको पहली बार देखा था तभी आप मुझे टूरिस्ट लगे थे।

—जी नहीं। किसी से मिलने गया था।

—ओह !—इस बार उनकी हँसी में उदासी का मेल नहीं था—मुझे ऐसे लोगों से ईर्ष्या होती है जो सिर्फ किसी से मिलने की खातिर इतनी दूर जा सकते हैं। क्या रिओ भी मेरे अलावा किसी से मिलने के लिये ही आये हैं ?

—जी नहीं। रिओ से आगे का रिज़र्वेशन नहीं था और रिज़र्वेशन कराने के लिये यहाँ एक या दो दिन रुकना पड़ सकता है। आपने होटल का नाम बता दिया था इसलिये यहाँ आ पहुँचा।

—मुझे आपकी आवाज सुन कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यहाँ मुझे जानने वाला तो कोई नहीं है फिर जापानी में फ़ोन पर बात करने वाला भला कौन हो सकता है।

मुझे याद आयी, उन्होंने पिछली बार बताया था कि उनके पति यहीं रहते हैं लेकिन अपनी ओर से उनकी चर्चा करना उचित न लगा।

—तेराओका सान्, आपके लिये चाय या कॉफी कुछ भी नहीं है।

—उसकी फिक्र न कीजिये। आप अभी-अभी तो आए हैं। आप अगर शराब पीना चाहें तो मेरी वजह से संकोच न करें। मैं जानती हूँ आपके पीने का समय हो गया है।

—नहीं। ठीक है। और मेरे पास शराब है भी नहीं।

वह अचानक उठ खड़ी हुई—जरा ठहरिये, मेरे कमरे में शायद ह्विस्की है। मैं ले आती हूँ।

—रहने दीजिये। मैं रोज नहीं पीता हूँ। सिर्फ हवाई सफर के पहले।

—तो बाद में भी बुरा नहीं।

वह दरवाजा उढकाकर चली गयी।

आइनेदार टेबुल के ऊपर जल रहे तेज बल्ब का प्रकाश खाली कुर्सी पर पड़ रहा था, जिस पर से उठकर वह गयी थी।

इस लड़की और उस लड़की में क्या समानता है। उस लड़की और इस में क्या फर्क है।

बिस्तर पर थैला और पैम्फ्लेट उसी तरह बिखरे पड़े थे जैसे कमरे में आकर उन्हें बिस्तर पर फेंका था। सूटकेस टेबुल और कुर्सी के आगे फर्श पर पड़ा रखा था।

मैं हमेशा सवाल ही पूछता रहूँगा।

मैंने सूटकेस पलंग के नीचे खिसका दिया और बिखरे हुए पैम्फ़्लेट समेट दिये।

तभी वह दरवाज़ा खटखटा कर अंदर आयीं और एक बोतल मुझे दिखाती हुई बोलीं—मेरा ख्याल सही था, आधी भी नहीं है।

—मुझे शर्म आती है। लगता है, आप मेरी नहीं, मैं आपका मेहमान हूँ।

—तो क्या हुआ।—वह टेबुल पर रखा पतले कागज़ में लिपटा गिलास खोल कर शराब डालने लगीं—मुझे कितने दिन हुए जापानी बोले? एक महीने। लेकिन मालूम देता है जैसे न जाने कितने साल हो गये हों। सबसे अधिक अच्छी होती है अपनी ज़बान में बात करने की। इसलिये भी फ़ोन पर जापानी सुन कर मैं चौंकी थी।

मैं हँसने लगा।

—मैं भी मातृभाषा में बात करने को तरसता था। शायद यही कारण हो जो मैंने आपको ढूँढ़ कर यहाँ आया। और आप? आप नहीं पियेंगी!

—मुझे रहने दें।

—यह नहीं हो सकता।

गुसलखाने में बेसिन के ऊपर एक और नया गिलास रखा था। उसमें शराब ढाल कर खुद के लिये रखी और पहले वाला गिलास उठा कर उन्हें दिया।

मैं मन में सोच रहा था कि अपनी मातृभाषा में अपने किसी देशवासी से बात करने में सुरक्षा क्यों मालूम देती है। मेरे सामने कुर्सी पर बैठी हुई उस महिला से मैं उतना ही अपरिचित था जितना कि वह मुझसे तो भी उनके होने से ऐसा क्यों लगता था कि मैं किसी घर के अंदर सुरक्षित हूँ।

मैं अचानक चुप हो गया था, और वे भी। उस समय मैं न सजग हुआ और न मन में इस बात के लिये संकोच हुआ कि मैं चुप क्यों हूँ।

—काम्पाइ!—उन्होंने अपना गिलास ऊपर उठाते हुए कहा।

—काम्पाइ! फिर मिलने के उपलक्ष्य में।

तभी उन्होंने एकदम पहली भेंट में पूछने की तरह पूछा—आप रिओ पहली बार आए हैं?

—जी, पहली बार, नगर के अंदर पहली बार।

—हाँ, मुझे याद आ गयी। आपने बताया था कि आपको बुएनोस आएरस जाना है।

मुझे रिओ से बुएनोस आएरस की यात्रा की याद आ गयी।

—आप तो यहाँ कई बार आ चुकी हैं, आपने बताया था। आपके पति यहाँ रहते हैं।

—जी हाँ। मैं यहाँ तीन-चार बार आ चुकी हूँ। तब उनके साथ रिओ काफ़ी देखा था। यह मेरी रिओ की अंतिम यात्रा है लेकिन इस बार मैं कहीं नहीं गयी। कोपाकाबाना बीच यहाँ से चार सौ मीटर पर है लेकिन मैं वहाँ भी नहीं गयी।

उन्होंने अपने गिलास में शराब डालते हुए कहा—अगर आप बुरा न समझें तो यह रोशनी बुझा दूँ। गुसलखाने में जल रही रोशनी का उजाला यहाँ तक आयेगा।

—अगर आप चाहें तो ठीक है।

—मैंने उठ कर रोशनी बुझा दी।

—देर रात को रोशनी मुझे अच्छी नहीं लगती। मुझे उस मित्र से ईर्ष्या होती है जिससे मिलने के लिये आप इतनी दूर से गये।

—वह एक लड़की है। मैं उसे प्यार करता था।

—आप व्याकरण की भूल तो नहीं कर रहे हैं?—कहते हुए वह धीरे से हँस दी – था नहीं, हूँ।

उनकी पीठ गुसलखाने में जल रही हल्की रोशनी की ओर थी। उनका आकार भर दिखायी दे रहा था—थका हुआ चेहरा उस काले आकार के अंदर डूब गया था। उनकी आवाज़ में ताज़गी लौट आयी थी और उस आवाज़ के साथ मैं उनका वही चेहरा देख रहा था—विश्वविद्यालय की चौथी कक्षा की किसी छात्रा जैसा चेहरा—जो तोक्यो से उड़ते समय मैंने पहली बार देखा था।

—आप शायद कुछ और कहना चाहती हैं।

—कुछ तो नहीं।—उन्होंने हाथ बढ़ा कर बोतल उठायी—आप भी तो पीजिये, नहीं तो सब ख़त्म हो जाएगी। जापान में मैं सिर्फ़ जापानी थोमाके पीती थी, वह भी बहुत थोड़ी और कभी-कदा लेकिन यहाँ आने के बाद से मैं कितनी शराब पीने लगी हूँ—शाम होने से ले कर सोने तक। कोई काम भी नहीं है मेरे पास। दिन भर, कभी-कभी कई दिनों तक होटल के बाहर नहीं निकलती। पढ़ने के लिये जो किताबें अपने साथ लायी थी वे सब कब की पढ़ डाली।

तो आप किसलिये यहाँ आयी थीं—पर मैंने पूछा नहीं।

—आप मुझे सिरफिरी समझ रहे होंगे।—उन्होंने घूँट भरते हुए कहा—आज पचीस तारीख़ है। पाँच दिनों बाद मैं मुक्त हो जाऊँगी।

मैंने सूटकेस पलंग के नीचे खिसका दिया और बिखरे हुए पैम्फ़्लेट समेट दिये।

तभी वह दरवाजा खटखटा कर अंदर आयीं और एक बोतल मुझे दिखाती हुई बोलीं—मेरा ख्याल सही था, आधी भी नहीं है।

—मुझे शर्म आती है। लगता है, आप मेरी नहीं, मैं आपका मेहमान हूँ।

—तो क्या हुआ।—वह टेबुल पर रखा पतले कागज में लिपटा गिलास खोल कर शराब डालने लगीं—मुझे कितने दिन हुए जापानी बोले? एक महीने। लेकिन मालूम देता है जैसे न जाने कितने साल हो गये हों। सबसे अधिक अच्छी होती है अपनी जबान में बात करने की। इसलिये भी फ़ोन पर जापानी सुन कर मैं चौंकी थी।

मैं हंसने लगा।

—मैं भी मातृभाषा में बात करने को तरसता था। शायद यही कारण हो जो मैंने आपको ढूंढ़ कर यहाँ आया। और आप? आप नहीं पियेंगी!

—मुझे रहने दें।

—यह नहीं हो सकता।

गुसलखाने में बेसिन के ऊपर एक और नया गिलास रखा था। उसमें शराब ढाल कर खुद के लिये रखी और पहले वाला गिलास उठा कर उन्हें दिया।

मैं मन में सोच रहा था कि अपनी मातृभाषा में अपने किसी देशवासी से बात करने में सुरक्षा क्यों मालूम देती है। मेरे सामने कुर्सी पर बैठी हुई उस महिला से मैं उतना ही अपरिचित था जितना कि वह मुझसे तो भी उनके होने से ऐसा क्यों लगता था कि मैं किसी घर के अंदर सुरक्षित हूँ।

मैं अचानक चुप हो गया था, और वे भी। उस समय मैं न सजग हुआ और न मन में इस बात के लिये संकोच हुआ कि मैं चुप क्यों हूँ।

—काम्पाइ!—उन्होंने अपना गिलास ऊपर उठाते हुए कहा।

—काम्पाइ! फिर मिलने के उपलक्ष्य में।

तभी उन्होंने एकदम पहली भेंट में पूछने की तरह पूछा—आप रिओ पहली बार आए हैं?

—जी, पहली बार, नगर के अंदर पहली बार।

—हाँ, मुझे याद आ गयी। आपने बताया था कि आपको बुएनोस आएरस जाना है।

मुझे रिओ से बुएनोस आएरस की यात्रा की याद आ गयी।

—आप तो यहाँ कई बार आ चुकी हैं, आपने बताया था। आपके पति यहाँ रहते हैं।

—जी हाँ। मैं यहाँ तीन-चार बार आ चुकी हूँ। तब उनके साथ रिओ काफी देखा था। यह मेरी रिओ की अंतिम यात्रा है लेकिन इस बार मैं कहीं नहीं गयी। कोपाकाबाना बीच यहाँ से चार सौ मीटर पर है लेकिन मैं वहाँ भी नहीं गयी।

उन्होंने अपने गिलास में शराब डालते हुए कहा—अगर आप बुरा न समझें तो यह रोशनी बुझा दूँ। गुसलखाने में जल रही रोशनी का उजाला यहाँ तक आयेगा।

—अगर आप चाहें तो ठीक है।

—मैंने उठ कर रोशनी बुझा दी।

—देर रात को रोशनी मुझे अच्छी नहीं लगती। मुझे उस मित्र से ईर्ष्या होती है जिससे मिलने के लिये आप इतनी दूर से गये।

—वह एक लड़की है। मैं उसे प्यार करता था।

—आप व्याकरण की भूल तो नहीं कर रहे हैं?—कहते हुए वह धीरे से हँस दी — था नहीं, हूँ।

उनकी पीठ गुसलखाने में जल रही हल्की रोशनी की ओर थी। उनका आकार भर दिखायी दे रहा था—थका हुआ चेहरा उस काले आकार के अंदर डूब गया था। उनकी आवाज में ताजगी लौट आयी थी और उस आवाज के साथ मैं उनका वही चेहरा देख रहा था—विश्वविद्यालय की चौथी कक्षा की किसी छात्रा जैसा चेहरा—जो तोक्यो से उड़ते समय मैंने पहली बार देखा था।

—आप शायद कुछ और कहना चाहती हैं।

—कुछ तो नहीं।—उन्होंने हाथ बढ़ा कर बोतल उठायी—आप भी तो पीजिये, नहीं तो सब खतम हो जाएगी। जापान में मैं सिर्फ जापानी ओसाके पीती थी, वह भी बहुत थोड़ी और कभी-कदा लेकिन यहाँ आने के बाद से मैं कितनी शराब पीने लगी हूँ—शाम होने से ले कर सोने तक। कोई काम भी नहीं है मेरे पास। दिन भर, कभी-कभी कई दिनों तक होटल के बाहर नहीं निकलती। पढ़ने के लिये जो किताबें अपने साथ लायी थी वे सब कब की पढ़ डालीं।

तो आप किसलिये यहाँ आयी थीं—पर मैंने पूछा नहीं।

—आप मुझे सिरफिरी समझ रहे होंगे।—उन्होंने घूँट भरते हुए कहा—आज पचीस तारीख है। पाँच दिनों बाद मैं मुक्त हो जाऊँगी।

—क्या कहती है !

—आत्महत्या—आपने सोचा होगा। नहीं ?

अँधेरे में हम दोनों एक साथ हँस पड़े।

—पाँच दिनों वाद मैं मुक्त हो जाऊँगी तव वापस जा सकूँगी।

मैंने राहत की साँस ली और गिलास हाथ में उठा लिया।

—तेराओका सान्, अगर इस वीच मुझे यहाँ या लॉस ऐंजेलस या हॉनोलुलू में आगे की फ़्लाइट में जगह न मिली और फिर हवाई जहाज़ के अंदर हमारी भेंट हुई और अगर हमारी सीटें अगल-वगल हुईं तो आप अपनी सीट छोड़ कर नहीं चली जाएँगी, न।—उनका ध्यान किसी दूसरी वात पर था।

—जानते हैं, मैं यहाँ किसलिये आयी हूँ।

—जी हाँ, आपने वताया था कि आपके पति यहाँ हैं।

—हाँ, उन्हीं के लिये। हम छह साल से अलग-अगल रह रहे हैं। वह रिओ में और मैं तोक्यो में—देखिये, मैं कितनी वातूनी हो गयी हूँ—अगर वह किसी दूसरी लड़की को प्यार करते हैं तो मैं इसे वुरा नहीं समझती। मैं उन्हें वंधन में नहीं रखना चाहती। इसलिये। पहले मुझे आश्चर्य होता था जव देखती थी कि स्त्री-पुरुष एक दूसरे को इतना अधिक प्यार करने के वाद एक दूसरे के प्रति उदासीन हो जाते थे।

—पहले मुझे भी होता था, अव नहीं। यह किसी रासायनिक प्रक्रिया जैसा परिवर्तन होगा, जिसके वारे में हमें ठीक-ठीक पता नहीं है—जैसे कि व्रह्मांड के निर्माण के वारे में।

—लेकिन मुझे अव भी इस वात पर वहुत अचंभा होता है कि वे कैसे एक दूसरे के लिये सदा को खो जाते हैं। आप ही हैं, कल या परसों आप चले जायेंगे, किसी दिन मैं भी यहाँ से चली जाऊँगी और वस, फिर हम दोनों एक-दूसरे के लिये सदा को खो जाएंगे।

—जाने के पहले मैं आपको अपना तोक्यो का पता दे दूँगा। अगर आप चाहेंगी तो हम वहाँ फिर मिल सकेंगे।

—वह नहीं। मैं उनकी वात कह रही थी जो एक ही शहर में रहते हुए भी भी एक दूसरे के लिये नहीं रहते हैं।

उनका चेहरा अँधेरे की ओर था। पता नहीं, उनके चेहरे पर उदासी थी या नहीं—पर उनके स्वर में कटुता ज़रा भी न थी।

अचानक उन्होंने ही कहा—देखिये, हम इस वारे में वातें न करें। हमें इस दुःखद प्रसंग को छेड़ना ही न चाहिये था।

उनकी बायीं बांह टेबुल पर फैली थी और मुट्ठी में खाली गिलास था।

—आप और पियेंगी ?—ह्विस्की की बोतल उनके गिलास के ऊपर झुकाते हुए मैंने पूछा।

—सिर्फ थोड़ी-सी—आप अपने गिलास में भी तो डालिये।

दोनों गिलासों में थोड़ी-थोड़ी ह्विस्की डालने के बाद बोतल खाली हो गयी।

—देखिये, मैंने सब खत्म कर दी।

मेरे मज़ाक पर शायद उनका ध्यान नहीं गया।

—कितने बजे होंगे। मेरे पास घड़ी नहीं है।

रात के सवा दो बजे थे।

—बहुत देर हो गयी। अब मुझे जाना चाहिये। मैंने आपको इतनी देर तक जगाए रखा।

वह अपने गिलास की ह्विस्की एक बार में पी कर उठ खड़ी हुईं।

—मैं रोशनी कर दूँ ?

उन्होंने उत्तर नहीं दिया। रोशनी में उनका चेहरा पहले से कहीं ज्यादा थका और बुझा हुआ दिखायी दिया।

—अगर चल जाएँ तो मुझे बिना बताए न चले जाइयेगा। इस एक-सवा महीने के बीच सिर्फ आप से बात करने का मौका मिला। बहुत अच्छा लगा।

उन्होंने खाली बोतल उठा कर बगल में दबा ली। उनके घुटने थोड़ा डग-मगा रहे थे।

—चलिये, मैं कमरे तक आप को छोड़ दूँ।

—नहीं। मैं अकेली चली जाऊँगी। ओयासुमिनासाइ।

—ओयासुमिनासाइ।

उन्होंने हँसते हुए सुधारा—यह तो दूसरा दिन है। सुबह के समय ओया-सुमिनासाइ कहना!

वह एक क्षण भर रुक कर सोचती रहीं फिर दायीं ओर मुड़ीं।

—हाँ, लिफ्ट उधर है।—उन्होंने अपने आप पर धीरे से हँसते हुए कहा।

उनके चली जाने के बाद मुझे अपने माथे पर भारी बोझ-सा महसूस हुआ। मैं उन्हें खोजते हुए इसी होटल में क्यों आया? मैं एक परछाईं मिटाना चाहता हूँ तो इसके लिये उस पर दूसरे आकार को खड़ा करना क्यों जरूरी है? उनसे बातें करते-करते मन में उनसे उसकी तुलना क्यों करता जा रहा था? उनकी

कही हुई साधारण-सी बात में उसकी आवाज़ या उसके सवाल या उसके जवाब की प्रतिध्वनि मुझे क्यों सुनायी दे रही थी ?

अकेले शान्त कमरे में कितना अधिक शोर भर गया था !

फिर न जाने कब, जैसे कि नींद में मुट्ठी ढीली हो जाने से पकड़ी हुई रस्सी सरकती हुई हाथ से निकल जाए—

·

आँख खुली तो रोशनी जल रही थी और खिड़की के चौखटे के बाहर सामने की दीवार पर पीले कपड़े की तरह धूप लटकी थी। सिर्फ़ एक चिमनी नहीं थी फिर भी वह बुएनोस आएरस का लिबर्टी होटल नहीं हो सकता था, जिसके कमरे में एक सुबह उठने पर ठीक ऐसी ही दीवार पर ऐसी ही धूप टँगी हुई दिखायी दी थी। बुएनोस आएरस—वह मेरे आगे है या मेरे पीछे ? लेकिन कई सौ या हजार किलोमीटर का अंतर मेरे और उसके बीच में है।

आह, मुझे जल्दी उठ कर एइरो पेरू के ऑफिस में जाना था।

सुबह के नाश्ते का समय खत्म होने में केवल दस मिनट बचे थे। जल्दी-जल्दी हाथ-मुँह धो कर कपड़े बदले।

डाईनिंग लॉज में केवल तीन व्यक्ति अलग-अलग टेबुलों पर बैठे धीरे-धीरे नाश्ता खत्म कर रहे थे। सबसे पहले खाली टेबुल पर बैठ कर ब्वॉय को नाश्ते का ऑर्डर दिया।

तभी लांज के अंदर वाले दूर छोर से तेराओका सान् आती दिखायी दीं। वह आसमानी रंग का स्कर्ट और सफ़ेद स्लीवलेस ब्लाउज़ पहने हुए थीं।

मैंने उनके चेहरे की ओर देखा और हमारी निगाहें चार हुईं।

—ओहायोगोज़ाइमासु !

—ओहायोगोज़ाइमासु।—उन्होंने वैसे ही आगे बढ़ते हुए सकुचाए स्वर में कहा और टेबुलों के बीच से निकलती हुई चली गयीं।

उन्हें निगाह चुराने की क्या ज़रूरत थी। उन्होंने रात को कोई भी ऐसी बात नहीं कही थी जिसके लिये उन्हें अब शर्मिन्दा होने की जरूरत हो। और मुझे भी पिछली रात की और उनकी परवाह न करनी चाहिये।

नाश्ता खत्म करके होटल के फ्रंट से एइरो पेरू को फ़ोन किया।

—क्या आप मुझे आज या कल की फ़्लाइट में लॉस तक एक सीट दे सकती हैं ?

—लॉस ? क्या आपको मालूम नहीं कि कल अर्खेन्तीना में सैनिक क्रांति

हो गयी है और बुएनोम आएरस का एयरपोर्ट बन्द हो गया है। हमारा प्लेन वहीं रुका है।

—सैनिक क्रांति—मुझे पता न था। परसों की फ्लाइट में—

—सॉरी। हमारा सारा शेड्यूल गड़बड़ हो गया है। एक हफ्ते आगे तक हम कोई वायदा नहीं कर सकते। अपना नाम बता दीजिये, वेटिंग लिस्ट में लिख दूँगी। या आप चाहें तो दूसरी एयरलाइन्स में कोशिश कर सकते हैं।

रियायती दर से खरीदे टिक्ट पर भला दूसरी कौन एयरलाइन्स मुझे ले जाएगी।

—नहीं। मेरा नाम वेटिंग लिस्ट में लिख लीजिये।—मैंने उसे अपना तथा होटल का नाम बताया।

सात दिन बाद! और सात दिन तक। और उसके बाद। मेरे पास कितने डॉलर बच रहे हैं? होटल का बिल चुकाने के बाद कितना बचेगा? तीस डॉलर। तीस डॉलर मैं किस हिसाब से खाने पर खर्च करूँ कि सात दिन चल जाए।

फ्रंट के क्लर्क को अपने कमरे की चाबी देते हुए मैंने पूछा—क्या आप मुझे एइरो पेरू के ऑफिस का पता बता सकते हैं?

—वह शहर के बीच में है, सेन्त्रो में। आप अवेनिदा कोपाकाबाना से बस पर चढ़ जाइये और—

—मैं पैदल घूमना चाहता हूँ।

—सेन्त्रो तक! बहुत दूर है। तीन-चार घंटे लग सकते हैं।

—मैं काफी पैदल चल सकता हूँ। रिओ का नक्शा मेरे पास है।

—फिर भी। आप नहीं जानते, यह खतरनाक भी है। यहाँ दोपहर को भी वारदातें हो जाती हैं। मैंने आपको बता दिया। बाद में हमें दोष न दीजियेगा।

आगाह करने के लिये मैंने उसे धन्यवाद दिया और बाहर निकल आया। चौराहे के कोनों पर सड़कों के नाम सफेद तख्तियों पर लिखे थे। रुआ रिपब्लिका दो पेरू, जिस पर होटल अस्टॉल था। अवेनिदा प्रिंसेसा इसाबेल के दूसरी ओर खाने की कई दूकानें थीं। एक दूकान से गोश्त के पकौड़े खरीदे, दोपहर को खाने के लिये। सस्ते थे। उतने में पेट भर जाएगा, मैंने सोचा।

—कहाँ जा रहे हो? दूकानदार ने कागज की थैली मेरी ओर बढ़ाते हुए पूछा।

—सेन्त्रो।

—ओ,, पेलिग्रो!—उसने भी मुझे आगाह किया।

—कोई परवाह नहीं ।

आगे वही लंबी सुरंग थी जिससे हो कर पिछली रात टैक्सी गुज़री थी। दिन के वक्त उसमें बिजली की झालरें नहीं जल रही थीं और दोनों ओर से अटूट कतारों में आ-जा रही कारों का शोर भरा था। सुरंग के अंदर, फुटपाथ की रेलिंग पर लटका हुआ एक छोकरा खड़ा था। उसने मुझे सिर्फ़ एक बार देखा। सुरंग से निकलते ही वह गुलाबी रंग की इमारत थी, रात को जिसके आगे जलती हुई मोमबत्तियाँ दिखायी दी थीं। इस वक्त भी उसके फाटक के दोनों ओर बैठी कई मोटी काली अधेड़ औरतें मोमबत्तियाँ बेच रही थीं और उनमें से तीन की कमर के आस-पास छोटे-मोटे बच्चे मँडरा रहे थे—पुरानी पेंटिंगों में मैडोना के साथ दिखाये गये बच्चों की तरह।

हाँ। दूसरी ओर के ऊँचे पहाड़ की चोटी पर कोरकोवादो की विशाल मूर्ति, खिलौने की तरह दिखायी दे रही थी। आकाश में घने बादल छाये थे और कोरकोवादो की मूर्ति कभी-कभी धुएँ जैसे बादल में छिप जाती थी।

अगर मैं रिओ में एक-दो दिन रह गया तो मैं कोरकोवादो देखने जरूर जाऊँगा। अब मैं कहीं नहीं जा रहा हूँ इसलिये मैं कहीं भी जा सकने को आज़ाद हूँ। शायद तेराओका सान् से भेंट हो जाने के कारण। अच्छा ही हुआ जो उन्होंने आज सुबह ज़रा से परिचित का-सा व्यवहार किया। क्या सही है, कि मैं बँधता नहीं हूँ या कि मैं बाँधता नहीं हूँ...

मुझे लगा कि मैं ग़लत रास्ते पर जा रहा हूँ।

मैं नक्शा देख कर पास का रास्ता पकड़ने के इरादे से चौड़ी सड़क छोड़ कर एक पतली गली में चला गया था। उस पर कारें नहीं आ-जा रही थीं। उसके दोनों ओर पेड़ों की कतारें और ऊँचे-ऊँचे गोल खंभों के पोर्च वाली पुरानी इमारतें थीं। एक जगह दीवार पर कोयले से किसी ने लिख दिया था—हब्शियों को अमाजोन भेजो। उसके ऊपर-नीचे नात्सी स्वस्तिक का निशान बना था। सड़क के छोर पर पेड़ों के ऊपर असुकार पहाड़ की चोटी दिखायी दे रही थी।

एक खुले फाटक के अन्दर तीन-चार जवान लड़के-लड़कियाँ दूर जा रहे थे। वह मेडिकल कालेज जैसी इमारत थी। मैंने उनके पास जाकर नक्शे में सेन्त्रो पर उंगली रखकर इशारे से रास्ता पूछा।

मैं सचमुच रास्ता भटक गया था। लौट कर सड़क पर आते ही बोताफ़ोगो की खाड़ी दिखायी दी, जिसके किनारे पर दर्जनों पालदार किश्तियाँ बँधी थीं। अब मैं फिर नक्शे के सहारे चल सकता था। ग्लोरिया के पास ज़मीन की खुदाई

हो रही थी—शायद सबवे की लाइन बिछाने के लिये—और कई पीले बुलडोजर काम करने से अधिक शोर कर रहे थे।

—अगर यह जगह बुएनोस आएरस में होती तो यह अलेम के नीचे का डॉक वाला इलाका होता।—मैंने कहा।

वह सेन्त्रो के करीब रहा होगा क्योंकि सड़क पर कारों और फुटपाथ पर पैदल चलने वालों की संख्या अचानक बढ़ गयी थी।

सेन्त्रो के बड़े स्क्वायर में भी मशीनों से खुदाई हो रही थी—जरूर सबवे की लाइनें बिछाने के लिये खुदाई की जा रही थी। स्क्वायर के बगल की एक इमारत की सीढ़ियों को कुत्तों ने गंदा कर दिया था। शायद कुत्तों ने ही। फुटपाथ के किनारे एक छोटे से चबूतरे पर, काँख में अखबारों का बंडल दबाए मुँह ऊपर उठा कर हाँक लगाते एक लड़के की मूर्ति थी लेकिन भीड़ इतनी ज्यादा थी कि जल्दी में अपने-अपने रास्ते जाते लोग कदम-कदम पर, कतारों में आने-जाने वाली चींटियों की तरह एक-दूसरे के सामने जरा-सा ठिठक कर आगे बढ़ जाते थे।

उसका कहना सही था। सेन्त्रो वहाँ से बहुत दूर था।

—मैंने आपसे कहा था कि एक हफ्ते तक कोई उम्मीद नहीं है।—वह वही लड़की थी, जिससे सुबह फोन पर बात हुई थी—अगर आपको विश्वास न होता हो तो मैं आपको पैसेंजरों की वेटिंग लिस्ट दिखा सकती हूँ।

—जी नहीं, वेटिंग लिस्ट दिखाने की जरूरत नहीं है। पर एक सप्ताह यहाँ रह सकना मेरे लिये आर्थिक कारण से संभव न होगा।

उसके बगल वाले टेबुल के पीछे बैठी लड़की मुझे देखने लगी। उसकी आँखें दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों की लड़कियों की आँखों जैसी बड़ी थीं।

—आप अपने होटल का फोन नम्बर भी बता दीजिये। अगर कोई संभावना हुई तो हम आपको इत्तिला करेंगे।

—कल या परसों तक कोई उम्मीद नहीं है?

—हम वायदा नहीं कर सकते।

उठ कर चला आया।

पैदल कोपाकाबाना लौटते-लौटते अँधेरा हो गया। रिओ आए मुझे चौबीस घंटे भी नहीं बीते थे। किसी नये शहर को तीन दिनों तक तो बर्दाश्त कर ही सकना चाहिये, नहीं तो जानने वाले हँसेंगे—जैसे कि एक स्त्री और एक पुरुष तीन दिन भी साथ न निभा सकें तो!

अपने आप के साथ लंबी बहस में उलझ जाना अनजानी अँधेरी सुरंग के

अन्दर अकेले घूमने जैसा जोखिम का काम है। कई लोगों ने मुझे आगाह किया था।

अवेनिदा कोपाकावाना पर चलते-चलते काफ़ी आगे रुआ रिपब्लिका दो पेरू की तख़्ती एक तिराहे पर दिखायी दी। वहाँ स्काई स्क्रेपर के नीचे छपरैल की छत वाली एक दोमंज़िला इमारत थी—पहचान के लिये मैंने मन में टाँक लिया।

लेकिन उतनी जल्दी होटल वापस नहीं लौटना चाहता था। नहीं, इसका कारण ऊब नहीं था।

कतारों में आती-जाती मोटरों के शोर के ऊपर हल्का-सा शोर बीच-बीच में उभरता था, लंबी साँस छोड़ने जैसा, सागर की लहरों का।

ट्रैफ़िक सिगनल की रोशनी हरी होने पर सड़क पार करके दूसरी ओर के खुले फुटपाथ पर आ गया। फुटपाथ के दूसरी ओर की नाटी दीवार के नीचे लंबी अँधेरी और निर्जन कोपाकावाना बीच थी। वहाँ से बायीं ओर पाओ दे असुकार की चोटी पर जल रही लाल रोशनी दिखायी देती थी और उसके पीछे रोशन खिड़कियों वाले स्काई, स्क्रेपरों की कतार, क्योतो में गियोन की कंदीलों की झालरों की तरह।

लेकिन वहाँ जाकर मैं वहाँ भी नहीं रुकना चाहता था।

लगभग सभी दूकानें बंद हो गयी थीं। कोपाकावाना एवेन्यू के तिराहे पर फलों की एक छोटी-सी दूकान खुली थी और उसके अंदर हल्के बल्ब की रोशनी जल रही थी। लकड़ी के खोखों में छँटे हुए फल बचे थे—काले पड़ गए छिलके वाले केले, अधिक सुर्ख़ टमाटर और मुरझायी हुई ककड़ियाँ। उससे चार कच्चे अंडे, तीन ककड़ियाँ और टमाटर ख़रीदे, और एक पैकेट कांटिनेन्टल सिगरेट।

मुस्कराने वाला दूसरा क्लर्क होटल के काउन्टर पर बैठा था और अख़बार पढ़ रहा था।

—आपने लौटने में बहुत देर कर दी! आपको वह जापानी सेन्योरा पूछ रही थीं। क्या किसी नाइट क्लब में चले गये थे?

—हाँ।

काउन्टर पर से ताली उठा कर लिफ़्ट की ओर बढ़ रहा था तो उसने कहा—बुएनोस नोचे!

कमरे के दरवाज़े की फाँक में एक चिट खोंसी हुई थी।

—लौटने पर मुझे फ़ोन कर लें, अनुरोध करती हूँ।

कमरा खोल कर उसी चिट पर लिखे नंबर पर फ़ोन किया।

—मैंने दिन में कई बार आपको फोन किया और आपके कमरे तक गयी—

—माफ कीजिये, मैं रिजर्वेशन के लिये शहर गया था।

—मैंने सोचा कि कहीं आप होटल छोड़ कर तो नहीं चले गये। काउंटर में पूछा तो मालूम हुआ कि आप वापस नहीं गये हैं।

—मुझे पता नहीं कि वापस मैं कब जा सकूँगा। मुझे रिजर्वेशन नहीं मिला और हफ्ते के भीतर मिलने की कोई उम्मीद भी नहीं नजर आती।

—अफसोस!—उन्होंने कहा फिर हमने एक दूसरे से ओयासुमिनासाइ कह कर फोन रख दिया।

बेसिन का गर्म पानी का नल खोल कर उसके नीचे चारों अंडे रख दिये और कपड़े उतार कर शावर के नीचे खड़ा हो गया।

मेरा मन एकदम खाली हो गया था और उनसे बात करते समय मेरी आवाज़ में ठंडापन था लेकिन शायद उनका ध्यान इस पर नहीं गया था क्योंकि उनकी आवाज प्रसन्न थी।

नहा रहा था तभी फिर फोन की घंटी बजी।

—बार-बार फोन करने के लिये क्षमा चाहती हूँ। क्या कल सुबह आप खाली हैं?

—जी, मैं खाली हूँ। पाँच-छः दिन, हफ्ते भर मैं एकदम खाली हूँ।

—तो सुबह हम इकट्ठा नाश्ता करेंगे। माफ कीजियेगा, शायद आप बिस्तर में घुसे रहे होंगे।

—जी नहीं।

नहा चुकने के बाद भी बेसिन में गर्म पानी की धार के नीचे रखे अंडे उबले नहीं थे। रोशनी बुझा कर इंतजार करने लगा। एक घंटे बाद भी वे छिलके के अंदर थोड़े कड़े हो गये थे। दोपहर को खरीदे गोश्त के पकौड़ों में से दो-तीन जेब में बच रहे थे। अंडे, पकौड़े और ककड़ियाँ खा कर पानी पीने से पेट भर गया।

—एक बार मन हुआ कि कोंपाराबाना के किनारे-किनारे पैदल चलता हुआ इपानेमा बीच तक हो कर लौट आऊँ लेकिन दोबारा कपड़े बदलने के झंझट को सोच कर नहीं गया।

खिड़की के सामने वाली दीवार पर धूप का तिकोना टुकड़ा लटका हुआ था। मैं फूलदार पौधे खरीदने बाजार गया था। फूलवाले की दूकान पर जितने पौधे थे वे सब शीशे के छोटे-बड़े चौकोर बक्सों में बंद थे और पौधों की पत्तियाँ और फूल रुई की तरह सफेद थे। वह बाजार बुएनोस आएरस का

अन्दर अकेले घूमने जैसा जोखिम का काम है। कई लोगों ने मुझे आगाह किया था।

अवेनिदा कोपाकावाना पर चलते-चलते काफ़ी आगे रुआ रिपब्लिका दो पेरू की तख़्ती एक तिराहे पर दिखायी दी। वहाँ स्काई स्क्रेपर के नीचे छपरैल की छत वाली एक दोमंज़िला इमारत थी—पहचान के लिये मैंने मन में टाँक लिया।

लेकिन उतनी जल्दी होटल वापस नहीं लौटना चाहता था। नहीं, इसका कारण ऊब नहीं था।

कतारों में आती-जाती मोटरों के शोर के ऊपर हल्का-सा शोर बीच-बीच में उभरता था, लंबी साँस छोड़ने जैसा, सागर की लहरों का।

ट्रैफ़िक सिगनल की रोशनी हरी होने पर सड़क पार करके दूसरी ओर के खुले फुटपाथ पर आ गया। फुटपाथ के दूसरी ओर की नाटी दीवार के नीचे लंबी अँधेरी और निर्जन कोपाकावाना बीच थी। वहाँ से बायीं ओर पाओ दे असुकार की चोटी पर जल रही लाल रोशनी दिखायी देती थी और उसके पीछे रोशन खिड़कियों वाले स्काई, स्क्रेपरों की कतार, क्योतो में गियोन की कंदीलों की झालरों की तरह।

लेकिन वहाँ जाकर मैं वहाँ भी नहीं रुकना चाहता था।

लगभग सभी दूकानें बंद हो गयी थीं। कोपाकावाना एवेन्यू के तिराहे पर फलों की एक छोटी-सी दूकान खुली थी और उसके अंदर हल्के बल्ब की रोशनी जल रही थी। लकड़ी के खोखों में छँटे हुए फल बचे थे—काले पड़ गए छिलके वाले केले, अधिक सुर्ख़ टमाटर और मुरझायी हुई ककड़ियाँ। उससे चार कच्चे अंडे, तीन ककड़ियाँ और टमाटर ख़रीदे, और एक पैकेट कांटिनेन्टल सिगरेट।

मुस्कराने वाला दूसरा क्लर्क होटल के काउन्टर पर बैठा था और अख़बार पढ़ रहा था।

—आपने लौटने में बहुत देर कर दी ! आपको वह जापानी सेन्योरा पूछ रही थीं। क्या किसी नाइट क्लब में चले गये थे ?

—हाँ।

काउन्टर पर से ताली उठा कर लिफ़्ट की ओर बढ़ रहा था तो उसने कहा—बुएनोस नोचे !

कमरे के दरवाज़े की फाँक में एक चिट खोंसी हुई थी।

—लौटने पर मुझे फ़ोन कर लें, अनुरोध करती हूँ।

कमरा खोल कर उसी चिट पर लिखे नंबर पर फ़ोन किया।

—मैंने दिन में कई बार आपको फोन किया और आपके [illegible]—

—माफ़ कीजिये, मैं रिज़र्वेशन के लिये शहर गया था।

—मैंने सोचा कि कहीं आप होटल छोड़ कर तो नहीं [illegible] पूछा तो मालूम हुआ, कि आप वापस नहीं गये हैं।

—मुझे पता नहीं कि वापस मैं कब जा सकूँगा। [illegible] और हफ्ते के भीतर मिलने की कोई उम्मीद भी नहीं [illegible]

—अफ़सोस !—उन्होंने कहा फिर हमने [illegible] कह कर फ़ोन रख दिया।

बेसिन का गर्म पानी का नल खोल कर [illegible] और कपड़े उतार कर शावर के नीचे खड़ा हो [illegible]

मेरा मन एकदम खाली हो गया था [illegible] आवाज़ में ठंडापन था लेकिन शायद [illegible] उनकी आवाज़ प्रसन्न थी।

नहा रहा था तभी फिर फोन की [illegible]

—बार-बार फोन करने के लिये [illegible] खाली हैं?

—जी, मैं खाली हूँ। [illegible] हूँ।

—तो सुबह हम [illegible] बिस्तर में घुसे रहे होंगे।

—जी नहीं।

फ़्लोरीदा का था लेकिन दूकान तोक्यो में घर के पास वाले कब्रिस्तान से लगी हुई फूल की दूकान थी। सारी रात मैं ऐसे ऊटपटांग सपने देखने और जागने के बीच झूलता रहा।

नीचे पहुँचा तो देखा वह एक टेबुल पर बैठी मेरा इंतजार कर रही थीं।

—अरे, आपने मुझे जगा दिया होता!

—मैं आपके दरवाज़े तक गयी लेकिन अंदर कोई आहट न मिली तो मैंने सोचा शायद आप सो रहे होंगे। रात को देर तक सोने न दूँ और सुबह जल्दी उठा दूँ, यह ठीक नहीं।

—इस ड्रेस में तो आप एकदम यहीं की लड़की लगती हैं—कारिओका!

वह पीली-काली मोमिजि जैसी पत्तियों के प्रिंट का केवल कमर पर चुस्त ढीला बनपीस पहने थीं। नीचे तक खुले उसके गले से उजली गोलाइयाँ और उनकी अँधेरी गहराई में सोने की बारीक चेन दिखायी दे रही थी।

—जी। पहली बार यहाँ आयी थी तब उसने यहीं से मेरे लिये ख़रीदा था।

ब्वॉय हमारा नाश्ता सामने रख गया।

—रिओ से आप सीधे जापान वापस जाएँगे?

—जी।—मुझे एक बात की याद आ गयी—शायद हम फिर एक ही जहाज़ से जाएँगे।

वह कुछ और सोच रही थीं।

—मुझे अब इधर आने की ज़रूरत न होगी इसलिये सोचती हूँ कि लौटते हुए हम पेरू में कुसको और माचूपिच्चू के खंडहर देख लें।

—तेराओका सान्, मुझे कम-से-कम समय में तोक्यो वापस पहुँचना चाहिये।

—क्यों?—उनके स्वर में भोली जिज्ञासा थी।

—कैसे कहूँ—आर्थिक कारण से।

—मेरे पास साढ़े तीन हज़ार डॉलर हैं।

—ओह, आप कितनी अमीर हैं। तभी तो महीने भर से होटल में रह रही हैं। पर मैं आपसे नहीं लेना चाहता।

—मैं भी नहीं देना चाहती, उधार दूँगी। और मैं अमीर हूँ नहीं, बना दी गयी हूँ। यह उससे मिली रक़म है।

वह बीच में ही चुप हो गयी। इतने बेझिझक उधार देने की बात कह जाने के कारण उन्हें शायद अब संकोच हो रहा था।

हम प्लेटों में बचा हुआ नाश्ता चुपचाप खाने लगे। हमारे बीच की चुप्पी में आगे-पीछे के टेबुलों के गिर्द बैठे दूसरे मेहमानों की प्लेटों में बातचीत और क्रॉकरी पर काँटे-छुरी की खनक उभर आयी।

—यहाँ से हर बार मैं अकेली लौटती थी,—उनकी आवाज़ इतनी धीमी थी कि मुझे लगा कि वह मुझसे नहीं अपने आप में कह रही हैं—क्योंकि मुझे आशा थी कि शायद—पर इस बार—

उन्होंने जूस का गिलास उठाकर होंठों से लगा लिया। उनके बायें हाथ की अनामिका में चौकोर लाल रत्न की अँगूठी थी।

—तेराओका सान्, चलिये, बाहर निकल कर घूमें।

—क्या मैं अब भी तेराओका हूँ—उन्होंने हैंडबैग पकड़ कर उठते हुए कहा—मेरा नाम साचिको है!

होटल के सामने फुटपाथ पर चलते हुए तमाम व्यक्ति कोपाकाबाना की ओर जा रहे थे। बिकिनी पहने एक काली लड़की, अपने आगे एक प्रैम को ठेलती हुई। पेरू और रिबेइरो सड़कों के कोने पर सिगनल के नीचे खड़े केवल जाँघिया पहने दो काले नौजवान दोस्त माथे के आगे हथेली रख कर दूसरी ओर के सिगनल को एकटक घूर रहे थे। उनके एकदम पास बहुत ही मोटी एक औरत खड़ी थी, जिसने जाँघ से छातियों के निचले आधे हिस्से तक को एक बड़े तौलिये में लपेट रखा था। वह उन नौजवानों की माँ नहीं हो सकती थी क्योंकि वह चेहरे से उनसे उम्र में दो-एक वर्ष ही बड़ी दिखायी देती थी।

—साचिको सान्,—मुस्कराते हुए मैंने आँखों से उस मोटी लड़की की ओर इशारा किया।

उसने भौंहें एक बार सिकोड़ कर मना किया।

वे सारे लोग बीच की ओर जा रहे थे।

समुद्र का सूखी रेत का किनारा अवेनिदा अतलान्तिका की चौड़ी सड़क के ठीक नीचे से शुरू होता था। पिछली रात को ही मैं यहाँ तक आया था लेकिन दिन के वक़्त वह एकदम भिन्न जगह लगती थी—सफ़ेद रेत पर हज़ारों स्त्री-पुरुष और बच्चे, सूखी घास के तिनकों की तरह बिखरे हुए पड़े थे।

हम दीवार के आगे आ कर खड़े हो गये। दीवार से बनी छोटी सीढ़ी उतरते हुए कई व्यक्तियों ने सिर घुमा कर हमें ग़ौर से देखा।

—साचिको सान्, समुद्र में नहाइयेगा?—मैंने अचानक पूछा।

—इस कपड़े में!—वह खिलखिला कर हँस पड़ी।

—नहीं। नहाने के पहनावे में।

उसने सिर हिला दिया—मेरे पास नहीं हैं।

मेरे पास भी नहीं हैं। खरीद लेंगे।

उसने बच्चों की तरह प्रफुल्ल स्वर में कहा—हूँ।

सड़क के दूसरी ओर कई दूकानें थीं। एक दूकान की शो विंडो में, जड़ी हुई तितलियों जैसी कई विकिनियाँ लगी थीं। उसने अपने लिये काले रंग की विकिनी पसंद की और अपनी बँधी मुट्ठी मेरी हथेली में रख कर ऊपर से बंद करके मुस्कराती हुई बोली—यह आपकी।

मैंने उसे दोनों हाथों से फैला कर देखा तो हँसी आ गयी।

—यह! मेरे लिये? यह तो बच्चों की जाँघिया है।

—है तो, लेकिन बीच पर इसे वयस्क पहनते हैं यहाँ।

मैं दाम चुकाने लगा तो उसने मुझे रोक दिया।

दूकान से बाहर निकलते ही उसने मुझे तह किये हुए नोट पकड़ाये, सौ-सौ डॉलर के पाँच नोट।

—यह आप क्या करती हैं! अगर किसी ने देख लिया तो मेरा कत्ल हो जाएगा!

—रख लीजिये। मैंने कहा था न।

हम बीच पर जाने के पहले होटल वापस गये और होटल के लॉकर में पर्स और घड़ियाँ रख कर कोपाकावाना लौटे।

बालू पर चलते हुए वह ज़ोर से हँस पड़ी।

—क्या हुआ?

—हम होटल तक गये थे। वहाँ कमरे में जा कर कपड़े बदल सकते थे। अब यहाँ कैसे बदलेंगे।

उतनी बड़ी बीच पर कपड़े बदलने के लिये एक भी गुमटी नहीं थी।

—देखिये, मैं बदल सकती हूँ।

वह हँसते हुए बोली और पहने हुए ड्रेस के अंदर से दूसरे कपड़े उतार कर अंदर विकिनी पहनी फिर ऊपर का ड्रेस उतारते हुए बोली——मुझे शर्म आती है। लेकिन ठीक है। अब मैं इसकी परवाह न करूँगी।

—ज़रा मुझे अपना वह ड्रेस दीजिये।

मैंने भी उसी तरह उसके ड्रेस के अंदर कपड़े बदल कर ऊपर से ड्रेस उतारा तो वह मेरी ओर देख कर हँसने लगी। हमने अपने-अपने कपड़े लपेट कर सूखी बालू पर रख दिये।

—अगर कोई हमारे कपड़े चुरा ले गया,—मैंने कहा—तो हमें होटल तक इसी पहनावे में जाना होगा।

—यहाँ कोई परवाह नहीं करता। आपने रिओ कार्निवल देखा है?

हम घुटने भर पानी में खड़े थे। तभी एक ऊँची फेनदार लहर आ कर हमें पकड़ गयी।

—नहीं।

—मैं क्या कह रही थी?

—रिओ कार्निवल के बारे में।

वह हँसने लगी।

—नहीं!— उसने कहा।

तभी दूसरी लहर ने आ कर हमें फिर गिरा दिया।

—माचिको सान, हम गलती कर रहे हैं। अगर हम और गहरे में जाएँ तो वहाँ लहरें हमें गिरा नहीं सकेंगी।

लहरों से लड़ते-लड़ते थक कर लंबी-लंबी साँसें लेते हुए हम सूखी बालू पर लेट गये। पीठ के नीचे गर्म बालू चिलचिला रही थी।

—इतना नीला आकाश, समुद्र की तरह गहरा, जापान में कभी नहीं दिखायी देता।—उसने कहा।

—ऊँचे पहाड़ पर जाएँ तो कभी-कभी दिखायी देता है।

उसके गीले बाल पतली लटों में झुक आये थे और बदन के उघारे हिस्सों पर सैकड़ों नन्ही-नन्ही बूँदें ठहरी रह गयी थीं—हर बूँद के अंदर एक सूरज चमक रहा था।

बालू पर बैठी-लेटी भीड़ के बीच स्वप्न में घूमने वाले की तरह धीरे-धीरे चलता हुआ एक आदमी हाँक लगाता आ रहा था—सरवेसा!

—बियर पियोगे?—उसने पूछा।

—बियर!—मैंने कहा और व्यंग्य से मुस्करा दिया।

इस समय हर्ज नहीं है क्योंकि मैं ये कपड़े नहीं पहने हूँ। लेकिन पर्स तो हम होटल में छोड़ आये।

—मेरे पास कुछ सिक्के हैं। मैंने रहस्य की जगह में छिपा रखे हैं।

—वह हँसने लगी।

एक कंधे से बक्स लटकाए, सफेद टोपी लगाए वह काला आदमी हमें बियर देने के बाद, माचिको को कुछ पल तक अचंभे से देखता रहा फिर उदासीन भाव से आगे बढ़ गया।

मुझे झटका-सा लगा—क्या आगे जा कर उसने दबे हुए स्वर में आवाज़ दी थी?—एसादो!

—मैं आज से पहले केवल एक बार इस बीच पर आयी हूँ, जब पहली बार हम रिओ आये थे तब। वह सब बीता हुआ हो गया।

—मेरे लिये भी—

—तुम यहाँ क्यों आये थे ?

—कहाँ ? यहाँ समुद्र के किनारे ?

—नहीं।

पर उसने दोबारा नहीं पूछा।

वह अपनी बियर खत्म करके दोनों हथेलियाँ सिर के नीचे डाल कर लेट गयी और बायीं जांघ पर दाहिना घुटना झुका कर आँखें बंद कर लीं। उसका सीना और पेट, नियमित लय से, किनारे के पास आकर लहरों के उभरने और टूटने की तरह, उभरते-गिरते थे। उसका चेहरा, उसकी देह के साथ नहीं देखने पर छोटा और मासूम लगता था।

—साचिको, क्या तुम अपनी सारी बात मुझे नहीं बताना चाहती हो ?

उसने आँखे मूंदे-मूंदे सिर हिलाया—कुछ भी नहीं, बताने लायक कोई बात ही नहीं हैं। सिर्फ़ यह धूप अच्छी लगती है।

सचमुच वह तेज धूप सारी देह के अन्दर लाल शराब की तरह भरती जा रही थी।

—बताओ तो इस समय हम कहाँ हैं, बता सकते हो ? यह जगह कहाँ है, कौन-सी है।—उसने कहा।

मैंने भी एक बार ऐसा ही सोचा था। लेकिन कहाँ ?

—अभी सब पीले रंग में डूब जाएगा। सुनो, मैं एक और बियर पीना चाहता हूँ।

आकाश में सफ़ेद बादलों के छोटे-छोटे टुकड़े घिर आये थे और सूर्य कोरकोवादो के बगल की पहाड़ियों के ऊपर झुक गया था।

रेत पर उस वक्त भी सैकड़ों लोग थे लेकिन आसपास बैठे व्यक्तियों की आपसी बातचीत भी बहुत दूर से आते मद्धिम शोर की तरह अस्पष्ट सुनायी देती थी।

—तेराओका सान्, अब हमें लौट चलना चाहिये। हम लोग इस जगह से अपरिचित हैं।

—मैंने कहा था न, कि मेरा नाम तेराओका नहीं है।

—मुझे तुम्हारा पहले का नाम नहीं मालूम।

वह चलने के लिये उठ खड़ी हुई और हँसते हुए बोली—वह मैं बताऊँगी

नहीं। मेरा नाम माचिको है। सिर्फ माचिको मेरा नाम है। और नाम दूसरे-दूसरे घरों के थे।

हम भुरी रेत पर कदम रखते हुए सड़क की ओर लौटने लगे।

अचानक वह मुड़ी और समुद्र की ओर लौटने लगी।

कुछ पग बढ़ने के बाद उसने दाहिना हाथ ऊपर उठाया और आगे की ओर झटक दिया और वापस लौट आयी।

—क्या था?

उसने मेरी आँखों में आँखें गड़ा कर बायीं हथेली ऊपर उठायी और पलट कर मुझे दिखा दी।

—तुमने ऐसा क्यों किया?

उसने उत्तर नहीं दिया।

हम बीच के कपड़े पहने-पहने होटल लौटे। क्लर्क ने लॉकर में रखा हमारा सामान वापस करते हुए पुर्तगाली में कुछ कहा—शायद उसकी सुंदरता की प्रशंसा में।

लिफ्ट में उसने अपने कमरे वाली मंजिल का बटन दबाया। मैंने अलग बटन दबाने के लिये हाथ उठाया ही था कि वह बोली—मेरे कमरे में भी एक बार आ जाओ, नहीं तो हमेशा तुम्हारे कमरे में आने की मुझे शर्म होगी। मेरा कमरा गंदा जरूर है।

लिफ्ट में होटल का एक कर्मचारी भी था लेकिन हम जापानी में बातें कर रहे थे और वह अकेला था इसलिये वह नजर नीचे किये चुपचाप खड़ा था।

उसने आगे बढ़ कर कमरे का दरवाजा खोला और रोशनी की। कमरा मेरे कमरे से बड़ा था और खिड़की के आगे लगे डबल बेड और कुर्सी पर उसके कपड़े पड़े थे—शायद सुबह जल्दी-जल्दी तैयार होते समय वह वे कपड़े पलंग पर फेंक कर चली गयी थी। बगल वाले टेबुल पर रखे थे जापान के डाक टिकट लगे कई एयरमेल लिफाफे फ्रेम में मढ़ा हुआ, ताश के पत्ते बराबर एक रंगीन फोटो और एक खाली बोतल के आगे लगभग पूरा भरा हुआ गिलास।

उसने वे कपड़े समेटते हुए कहा—तुम जरा बैठो, मैं फव्वारे से नहा कर आती हूँ—या पहले तुम ही नहा आओ, तब तक मैं कमरा करीने से करती हूँ।

मैं गुसलखाने में गर्म फव्वारे के नीचे खड़ा होकर बदन पर सूख गया खारा पानी धो रहा था तभी उसने बंद दरवाजे के काँच के पीछे आ कर ऊँची आवाज़ में कहा—दाहीं बायें हाथ नहाने का साबुन रखा है।

लेकिन उस पर न जाने कितने तरह की शीशियाँ और साबुन रखे थे।

स्नानघर, जिसे सिर्फ एक लड़की प्रयोग में लाती रही हो, भूलभुलैया की तरह परेशानी में डालने वाला हो जाता है।

—साबुन नहीं चाहिये।—मैंने उसे उत्तर दिया।

—नया तौलिया मैं अभी देती हूँ।—उसने फिर ज़ोर से कहा।

—तौलिया भी नहीं चाहिये।

लेकिन वही गीली जाँघिया पहने बाहर निकला तो वह एक नया तौलिया देते हुए बोली—गीले तौलिये से बदन सुखाने के बाद नये सूखे तौलिये से पोंछ कर देखा है कभी? अच्छा लगता है।

—तुम भी फ़व्वारे से नहा लो।

—मैं और बाद में नहाऊँगी।

वह भरा हुआ गिलास बेसिन में फेंकने जा रही थी।

—उसे फेंको नहीं, मैं पी लूँगा।

—नहीं। यह कल रात की है। कल रात को शराब पीते-पीते मैं बीच में न जाने कब सो गयी थी।

—साचिको, अगर यहाँ ओफ़ुरो होता तो कितना अच्छा होता! वह ज़रा-सा मुस्करा दी।

—ओफ़ुरो तो नहीं है, लेकिन नहा कर निकलने के बाद पीने को थोड़ी-सी शराब ज़रूर मिल जायेगी।

उसने दिन वाला हरा ड्रेस पहन लिया था।

—तुम नहाओगी नहीं?

—बाद में। शराब पीने के बाद। मैं यहाँ आकर कितनी ज़्यादा शराब पीने लगी हूँ। कल रात बिस्तर में लेटी-लेटी तीन बजे तक—आज सुबह तीन बजे तक—बैठ जाओ।—उसने खाली कुर्सी की ओर इशारा करते हुए कहा।

नहीं, यों ही ठीक है। कुर्सी ख़राब हो जायेगी।—मैंने धीरे से हँसते हुए उत्तर दिया।

टेबुल पर रखा अपना गिलास उठाने के लिये हाथ बढ़ाया तो निगाह पड़ी उस रंगीन फ़ोटो पर। मैंने उसे उठा लिया। बारीक सुनहले फ्रेम का चौकोर चश्मा, पतले होंठ, चारखानेदार रेशमी नेकटाई, गहरे नीले रंग का सूट, टेबुल के पीछे, किसी ऑफ़िस के कमरे में, रंगोरू से उत्तरी इलाके का सुन्दर-सा नौजवान।

उसने मुझे फ़ोटो टेबुल पर वापस रखते हुए देखा और अपना गिलास उठा कर होंठ से लगा लिया।

अँधेरे में उसकी लंबी उसाँस सुनायी दी।

—और यह तुम मुझसे क्यों पूछती हो। टेबुल पर रखा फ़ोटो—

—हाँ, उसी का फ़ोटो है। तुम्हारा कहना सही है। पहली बार हम इकट्ठा रियो आए थे और इसी कमरे में ठहरे थे। उसके बाद मैं चार बार रिओ आई हूँ। आने के महीनों पहले ट्रैवेल एजेन्ट से कह कर मैं यही कमरा रिज़र्व करवाती हूँ।

—माफ करना, मुझे यह चर्चा नहीं छेड़नी चाहिये थी।

—नहीं तो। मुझे चोट नहीं लगी। कल वह काम खत्म हो गया—इतनी ख़ूबसूरती से खत्म हुआ जितनी ख़ूबसूरती से पहले कभी नहीं रहा था। उसने मेरे कंधे दोनों हाथों से पकड़ कर जब कहा, खुश रहना, सायोनारा, तो मेरी और उसकी आँखों में आँसू भर आये। मैं एक संबंधहीन सम्बन्ध जी रही थी लेकिन उसे कायदे से खत्म कर देने के बाद भी वह बना हुआ है। मैं उसे कैसे खत्म करूँ, मैं नहीं जानती। मैं जीना चाहती हूँ पर क्या मर कर फिर पैदा हुए बिना यह संभव नहीं है?

उसने अँधेरे में टटोलते हुए मेरी दोनों हथेलियाँ मुट्ठियों में पकड़ लीं।

—मैं जीना चाहती हूँ लेकिन अब मैं और अधिक सह नहीं सकती। अपने चारों ओर चक्कर लगाते एक अशरीरी व्यक्ति को ढोना। क्या तुम मुझे उससे छुटकारा नहीं दिला सकते? तुम भी तो—

उसकी आँख के सफ़ेद हिस्से पर चमक की एक बूंद थी, पारे की बूँद की तरह।

—तुम नहीं जानती हो साचिको, तुम क्या कह रही हो। बाद में तुम्हारे मन पर एक और चट्टान पड़ जायेगी और तुम्हें पछतावा होगा।

—नहीं होगा। मैं तुमसे यह तो नहीं कह रही कि मुझे प्यार भी करो। मैं फिर से पैदा होना चाहती हूँ।

मजाक करते समय आँखों से मुस्कराने वाली आँखें, होंठ के नीचे बायीं ओर एक भूरा तिल—सब अँधेरे में डूब गये थे।

—साचिको, हमने अलग-अलग व्यक्तियों को प्रेम किया है और अब हम एक दूसरे को आदिम जातियों के कर्मकाण्ड में काम आने वाले उपकरणों की तरह इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे कुछ भी नहीं बदलेगा।

तुम सिर्फ तोड़ सकते हो।

—मैं जानती हूँ।—वह हँसी—पर ठीक है, यह वही रिओ का शहर है और हम यह नहीं कह सकते कि अब हम एक-दूसरे से एकदम अपरिचित

ज़री के ख़ूबसूरत पर्दे में आग लगती है तो वह पिघली हुई बूँदों में चुपचाप गिरता है—नहीं देखा होगा तुमने भी !

अब हम कभी नहीं मिलेंगे।

हाँ, अब हम कभी नहीं मिल सकेंगे।

—तुम्हारा कहना सही है, मैं भी और तुम भी, अपनी-अपनी देह पर दूसरे की देह की मोहर लगा कर—लेकिन इसमें बुरा क्या है।

उसने ठीक कहा था। अब हम कभी नहीं मिल सकेंगे।

जैसे कि प्रकाश वर्षों की दूरी पर एक नक्षत्र, अनन्त अँधेरे ब्रह्मांड में, लापरवाह, लाखों किलोमीटर प्रति सेकेंड की गति से धीरे-धीरे उड़ा जा रहा हो !

उसका शरीर धीरे-धीरे हिलने लगा। वह सिसकियों में रो रही थी। मैंने उसके बालों में उँगलियाँ फेरते हुए कहा—मैंने पहले ही कहा था कि बाद में तुम्हें पछतावा होगा।

—मुझे किसी बात का पछतावा नहीं, किसी बात का डर नहीं। मैं अब न पत्नी हूँ, न कुमारी। अब मैं सिर्फ़ एक मनुष्य हूँ। तुम्हारी या किसी और मर्द-औरत की तरह।

मेरे एक कंधे पर उसकी उँगलियों के छोर अनजाने में फिरते रहे।

—सुनो, जाग रहे हो क्या ?—उसने दबी आवाज़ में पूछा—तुम्हारी देह की गंध किसी वनस्पति की महक से मिलती है।

करवट बदल कर वह उठी। गुसलख़ाने का दरवाज़ा बन्द करने की आवाज़ सुनाई दी। अँधेरे में।

चाभी तुम्हारे लिये छोड़ जाती हूँ। मुझे फ़ोन करना। दोपहर का खाना साथ खायेंगे। भूलना नहीं। एक बजे प्लाज़ा में तुम्हारा इंतज़ार करूँगी।

वहाँ नल के ऊपर बैठा कबूतर बार-बार सिर झुका कर चोंच से पानी पी रहा था।

मूर्ति के आस-पास। या मैं तुम्हें खोज लूँगी। तुम्हारे सोते हुए होंठों से एक चुम्बन चुरा कर ले जा रही हूँ।

हम ऐसा क्यों करते हैं।

अँधेरे में। एक बुलबुले के फूटने जैसी आवाज़। गुसलख़ाने के अंदर वह गिरी।

बेड से उठ कर अँधेरे बाथरूम की ओर लपका—बीच में रखी कुर्सी ठोकर से गिरी। बाथरूम का दरवाज़ा उसने अंदर से बंद कर रखा था

—माचिको ! माचिको !

दो-तीन बार आवाज़ देने पर भी अंदर से उसके उठने की आहट नहीं मिली।

—साचिको, उठ कर चाभी खोल दो।

—मुझे मर लेने दो।

—देखो, अगर तुम दरवाज़ा नहीं खोलती हो तो मैं दरवाज़ा तोड़ दूँगा।

वह उठ कर खड़ी हुई और दरवाज़े के पास आयी लेकिन उसने चाभी नहीं खोली।

ठोकर से लुढ़की हुई कुर्सी पैर के सबसे पास थी। काँच के टुकड़े-टुकड़े हो कर गिरने की आवाज़ मुझे भी सुनायी दी—और उसी के साथ उसके गिरने की भी।

रोशनी की।

वह दरवाज़े के पीछे टाइल के फ़र्श पर एक ढेर में पड़ी हुई थी।

उसकी नंगी सफ़ेद पूरी पीठ पर घावों से खून की लाल-लाल बूंदें छलक कर बह रही थीं।

—तुमने ऐसा क्यों किया।

—सुख !—उसकी पलकें बंद थीं—इससे अधिक मैंने कभी नहीं जाना था।

—मूर्ख !

कमरे में लाने के लिये उसे दोनों बाँहों से पकड़ कर ऊपर उठाया—

उसके बायें हाथ की कलाई से खून की तेज़ धार निकल रही थी और उँगलियों के छोरों से पतली-पतली धारों में गिर रही थी।

—साचिको ?

—हाँ ?

—सेन्योरा साचिको तेराओका। जल्दी एम्बुलेन्स बुला दीजिये।—वह फ़ोन पर मेरी ही आवाज़ थी लेकिन मुझे विश्वास नहीं हो रहा था।

उन्होंने उसे फुर्ती से स्ट्रेचर पर लाद कर अस्पताली कंबल से ढक दिया।

एम्बुलेंस चलते ही एम्बुलेन्स की छत पर लगे साइरन की कुत्तों के रोने जैसी आवाज़ ऊँऊँऊँऊँ, मेरे मस्तिष्क में भरने लगी।

यह जापान या तोक्यो नहीं रिओ शहर है। यह इसके लिये इतनी दूर क्यों आयी ?

—साचिको ?

मैंने उसे पुकारा तो उसने ढूंढ़ कर मेरी हथेली पकड़ ली।

—तो ?

उसकी दोनों हथेलियाँ मेरे खून में लिथलिथा रही थीं।

—अब चिन्ता की कोई बात नहीं है।

एम्बुलेन्स तेजी से अस्पताल की ओर मुड़ी थी और सीधे जा रही थी।

—मालिनी !—मैंने उसके कान में पुकारा।

उसने उत्तर नहीं दिया।

वह फिर बेहोश हो गयी थी।

एम्बुलेन्स की छत पर लगातार बज रहे सायरन की ऊँची आवाज सारी एम्बुलेन्स में भर गयी थी।

अस्पताल पहुँचते ही उसे पहियेदार गाड़ी पर लाद कर वे अंदर ले गये। एक कमरे में। दो नर्सों ने इशारे से मुझे दरवाजे पर रोक दिया। कुछ देर बाद एक पुरुष मेरे पास आया—सफेद पहनावे से वह डाक्टर लगता था—और मुझे अपने साथ एक खाली कमरे में ला कर बैठा दिया।

—क्या वह बच जाएगी।—मैं उससे पूछने को हुआ लेकिन वह मेरे बैठने से पहले ही दरवाजा बाहर से बंद कर के चला गया था।

प्राय: एक घंटे बाद वह फिर आया। उसके साथ फौजी पोशाक में एक व्यक्ति था।

—वह कैसी है ?

डाक्टर ने सिर हिला कर इनकार किया।

—क्या वह जिंदा है।

उसने सिर हिला कर हाँ किया। और अपनी कलाई मुझे दिखाते हुए उस पर एक उँगली कई बार रगड़ी।

तो मेरा अनुमान सही था।

—क्या मैं उसे देख सकता हूँ ?

उसने सिर हिला कर मना कर दिया।

—आपका-उसका क्या रिश्ता है ?—अफसर ने मुझसे पूछा।

—हम एक ही फ्लाइट से दमिश्क से अलेप्पो आए थे और फिर यहाँ उससे दोबारा मुलाकात हुई थी। बस।

—कहाँ ठहरे हैं ? अपना पासपोर्ट।

—होटल में है।

वह कुछ देर तक सोचता रहा फिर बोला—मेरे साथ आ

हम उस कमरे और गलियारे से बाहर निकले। पोर्च के बाहर। अँधेरे में उसने एक कार का दरवाज़ा खोला। कार के हरे दरवाज़े पर पीले रंग का कोई चिह्न बना था।

उसने होटल का नाम पूछा। फिर वह रास्ते भर चुप रहा। होटल पहुँच कर उसने फ्रन्ट के क्लर्क से पुर्तगाली में थोड़ी देर बातचीत की फिर मेरे पीछे-पीछे मेरे कमरे में आया। मैंने निकाल कर उसे पासपोर्ट दिखाया। वह उसके पहले कमरे में निगाह दौड़ा रहा था।

—यह आपको बाद में वापस कर दिया जायेगा।—उसने पासपोर्ट अपनी जेब में रखते हुए कहा और वापस लौटने को हुआ।

—आप मुझे अस्पताल वापस छोड़ दीजिये।

—वहाँ आपकी कोई ज़रूरत नहीं है। आप यहीं रुक सकते हैं।— उसने अपनी घड़ी देखी—या, जैसा आप चाहें।

—जी हाँ। मैं अस्पताल वापस जाना चाहता हूँ।

उसने मुझे कार से अस्पताल के गेट पर उतार दिया। लौटते समय भी वह बराबर चुप रहा था।

उन गलियारों से सिर्फ़ दो बार गुज़रने के बावजूद मैं रास्ता पहचान गया था।

कमरे में वही डाक्टर अपने टेबुल के पीछे अकेला बैठा था।

वह मुझे देखते ही उठा और कमरे के बाहर निकला। मैं उसके पीछे चलने लगा। लंबा गलियारा खत्म होने के बाद वह बायें मुड़ा फिर दो जीने चढ़ कर एक गलियारे में। कुछ आगे जा कर उसने एक दरवाज़ा खोला और हम अंदर घुसे।

वह एक पलंग पर चादर ओढ़े सो रही थी। पलंग के बगल में लगे स्टैंड पर रबर की नलीदार बोतल उल्टी लटकी थी और पास में कुर्सी पर बैठी नर्स के चेहरे पर परेशानी के चिह्न नहीं थे।

डाक्टर ने नर्स से सवाल किया। नर्स ने उत्तर दिया। डाक्टर चला गया।

वह नींद से सो रही थी। उसकी दाहिनी कनपटी पर खरोंच लगने की सुर्ख लकीर थी। दाहिने गाल पर गोश्त ज़रा-सा छिल गया था। गर्दन के बगल मे रुई का मोटा फाहा टेप से चिपका था। बायीं कुहनी के ऊपर बाँह में नली-दार सुई लगी थी और कलाई पट्टियों में लिपटी थी।

मैंने उसके बालों को धीरे से सहलाया। उसकी मुँदी हुई पलकों पर गहरी शान्ति थी।

यह मेरी कौन है। कोई भी तो नहीं।

—बैठिए!—नर्स ने उठ कर उस कुर्सी पर बैठ जाने को कहा।

—नहीं। ठीक है।—मैंने मुस्कराते हुए उसे उत्तर दिया।

मैंने अपनी कलाई देखी। घड़ी नहीं थी। घड़ी मैंने उसके कमरे में उतारी थी और वह वहीं छूट गयी थी।

नर्स से धुएनोस नोचे वह कर कमरे से बाहर निकल आया। ऊपर जाते वक्त मैंने ध्यान नहीं दिया था कि वह जीना उस कमरे के किस ओर था। गलियारे में एक जगह पर जहाँ सब से कम रोशनी थी दीवार से लगी एक लंबी बेन्च पड़ी थी। उसी पर बैठा रहा, पिघलती मोमबत्ती की तरह लंबी सारी रात!

दिन निकलने के साथ लोग गलियारे से हो कर आने जाने लगे थे—नर्सों और अस्पताल के कर्मचारियों जैसे लोग। कमरे में जा कर उसे देखा, वह होश में नहीं आयी थी। नर्स बदल गयी थी।

दिन। दोपहर। दोपहर के बाद सूरज इमारत के दूसरी ओर चला गया था।

वह पाँचवीं बार था, या छठी बार, मैं कमरे में गया था, वह जाग गयी थी।

मुझे मुस्कराते देख कर वह भी मुस्करायी—होंठों के एक कोने पर हल्की-सी मुस्कराहट।

— यह कौन-सी जगह है?—उसकी आवाज बेहद कमजोर थी।

—वह जगह जहाँ मैं हूँ।—मेरे मुँह तक आया था कि यह रियो शहर है।

वह थोड़ी देर तक एकटक मुझे देखती रही फिर उसने आँखें बंद कर लीं।

—नहीं। मैं सब जानती हूँ। मैं फिर असफल रही।

—पर ठीक है। अब तुम लौट सकोगी।

—हाँ।

—क्या उन्हें सूचित करना चाहोगी?

उसने सिर हिला कर इनकार कर दिया।

—अब तुम अपने देश वापस लौट सकोगी।

—हाँ। मैंने तुम्हें इतना परेशान किया। मेरा तुम्हारा संबंध महज एक हवाई जहाज के दो यात्रियों का था।

—नहीं तो! तुम्हारी ही तरह मैं भी हूँ यात्रिको। मुझे यह कविता अत्यंत प्रिय है, जैसे कि। एक विशाल पक्षी। जिसके डैने विषम रहे हैं। यहाँ-वहाँ कहीं भी उतर पड़ना चाहता है। पर आगे, आगे उड़ता जाता है। लगातार।

ाचिको, जीना सुखों के सहारे नहीं हो सकता। उसके लिये ज्वॉय चाहिये। उसने ठोढ़ी धीरे से झुकाई। उसकी आँखों की कोरों से आँसू की दो बूँदे ढुलक गयीं।

—मैं तुम्हारी सारी देह एक वार छू कर देखना चाहता हूँ।

—क्यों?

—क्योंकि मैं जानता हूँ कि तुम वही साचिको नहीं हो।

सातवें दिन उसे अस्पताल से रिलीज किया गया। उसे रिलीज़ करते समय डाक्टर ने मुझे मेरा पासपोर्ट वापस किया। उन्होंने साचिको से वयान लिया था। उसने लिखा था कि रात को अधिक नशे में होने के कारण वह लड़खड़ा कर गिरी तो वेसिन के ऊपर लगे काँच से उसकी कलाई पर चोट लगी थी।

—मैं इस शहर में अव एक दिन भी नहीं रहना चाहती।—उसने होटल वापस आते ही कहा।

— मैं भी।

अगली सुवह नाश्ता करते हुए मैंने उससे पूछा—क्या तुम अव भी कुसको जाना चाहती हो?

वह दाहिने हाथ से चाकू पकड़ कर आमलेट काटने के वाद चाकू रख कर काँटे से एक टुकड़ा उठा कर मुँह तक ला रही थी—वायीं कलाई की पट्टी अभी उतरी न थीं।

—हाँ! यदि संभव हो तो।

नाश्ता खत्म करके एइरो पेरू के ऑफ़िस में फ़ोन किया। उसी शाम को लीमा जाने वाली फ्लाइट में उसने जगह दे दी। हमारे पास समय अधिक नहीं था और करने को भी कुछ नहीं था।

हमने दोपहर वारह वजे से पहले कमरे खाली कर दिये ताकि होटल वालों को कहना न पड़े। हमारे पास सिर्फ़ एक-एक सूटकेस था। होटल से निकल कर सामने के फ़ुटपाथ पर सूटकेस रख कर हम खाली टैक्सी के इंतज़ार में खड़े थे। फ़ुटपाथ पर जँगले के घेरे में एक झाड़ी थी और दूर पर पाँच-छ: वच्चे रोलर स्केट पर चढ़ कर सड़क की ढाल उतर रहे थे।

एक जगह छोड़ते वक्त, हमेशा, सिर्फ़ जगहें या पेड़-पौधे ही परिचित वच जाते हैं। यहाँ तक कि मैं जिस जगह पैदा हुआ था वहाँ भी, मैं अपनी हथेली खोल कर देखता हूँ, मेरे परिचित अव केवल सड़कें, मक़वरे और झील-नदियाँ ही रह गये हैं। रिओ में उस पहली रात को टैक्सी से उतर कर उसने उसी झाड़ी के वगल में ठीक उसी जगह पर मेरा सूटकेस रखा था।

उसकी कुर्सी की बगल में सिगरेट बुझाने का चौकोर डिब्बा रखा था। मैंने सिगरेट का पैकेट निकाल कर उसमें झाँका। उसमें पाँच या छः सिगरेट बचे थे।

वह उठी और दीवार में लगे पब्लिक फ़ोन के पास चली गयी। मैंने देखा, वह याद से डायल घुमा रही थी।

—मैं हूँ।—उसकी धीमी आवाज़ नींद में सो रहे और चुपचाप बैठे यात्रियों के सिरों के ऊपर से आती सुनायी दी।

—मुझे याद है लेकिन आज मैं वापस जा रही हूँ इसलिये। नहीं, कहने की कोई विशेष बात नहीं। पर मैं तो तुमसे नफ़रत नहीं करती। मैं तुम्हें हमेशा याद करूँगी। वह भी ठीक है। मैं तुम्हारे लिये सुख की। पर मैं तुम्हारे लिये सुख की। सायोनारा।

वहाँ केवल वही बोल रही थी। उसकी आवाज़ कोमल और बहुत ही मंद थी। जैसे कि उस बड़े कमरे में उसके अलावा और कोई न रहा हो, टेबुल, ऐश ट्रे, रोशनी और कुर्सियाँ तक नहीं—एक मेरे सिवा।

मुझे लगा कि उस वक्त मुझे वहाँ नहीं होना चाहिये था।

रिसीवर क्रेडिल पर रखने के बाद भी वह दो-तीन लंबे सेकेंडों तक उसी जगह खड़ी रही तब फिर से अपनी कुर्सी पर लौट आयी। वह अपनी कुर्सी की ओर लौट रही थी उस समय वह मुझे एकदम अपरिचित लगी—जैसे कि मैंने उसे पहले कभी न देखा हो और उस वक्त भी उसे न पहचानता होऊँ।

कॉफ़ी स्टाल के अँधेरे काउन्टर के आगे कुछ लोगों की छोटी-सी खामोश कतार लग गयी थी।

—तुम कॉफ़ी पीना चाहती थीं।—मैंने उसके पास जा कर कहा।

वह ब्रासीली कॉफ़ी बोर्ड का स्टॉल था और वहाँ कॉफ़ी मुफ़्त पिलायी जाती थी।

—तुम नहीं पियोगे ?—उसने लाइन में से पूछा।

—मैं कॉफ़ी ? बिलकुल नहीं।

—फिर भी लाइन में खड़े हो जाओ। तुम्हें मिली कॉफ़ी मैं पी लूँगी।

वह मेरे हिस्से की कॉफ़ी पी रही थी तभी लाउडस्पीकर से एइरो पेरू से लीमा जाने वाले यात्रियों को ब्रैनिफ़ इंटरनेशनल के काउन्टर पर जाने को कहा गया। स्टॉल के आसपास खड़े हो कर कॉफ़ी पीने वालों में से कुछ अपना अपना कप काउन्टर पर पटकते हुए रख कर भागे।

—तुम इतमीनान से ख़त्म करो, मैं जाता हूँ।

सब को आसानी से सीटें मिल गयी थीं। वे उस तरह काफ़ी छोड़ कर भागने की बजाय आराम से अपनी-अपनी कॉफ़ी ख़त्म कर सकते थे।

शाम सवा पाँच बजे रियो से आने वाली यह फ्लाइट रात सवा ग्यारह बजे रवाना हुई ।

लीमा—रियो—ब्यूनोस आयर्स । ब्यूनोस आयर्स—रियो—लीमा । तब भी बाहर रात का अँधेरा था और टर्बुलेन्स की वजह से सामने रखी चाय कभी इधर कभी उधर छिटक कर गिरने-गिरने को होती थी । दोनों कस्टमों से अपने साथियों के लिये छः घड़ियों का उपहार और कोकाकाबाना का सिगार । उसने तो अपनी पेस्ट्री उस नौजवान को दे दी थी—ईसा मसीह के चेहरे वाले नौजवान को । कोर्कोवाडो मैं नहीं देख सका । जाने के शोर में । इंद्रधनुषों का मरना ।

बगल की सीट पर वह चुप बैठी थी । लौटते में आते समय मैंने अपने बगल वाली सीट पर इसी तरह बैठी हुई देखा था उसे । यह केवल संयोग है कि मैं तीसरी बायीं सीट रहा हूँ और यह तीसरी सीट रही है और हम फिर अगल-बगल बैठे हैं । न जाने कब वह सो गयी, या शायद उसने आँखें मूँद ली थीं । मैंने खलल नहीं पहुँचाया ।

तीन-चार बार उठ कर मैं टॉयलेट में गया और उल्टी कर आया । अगर वह सचमुच नींद में सो रही थी तो उसे पता नहीं चला, अगर वह आँख मूँदे जाग रही थी तो उसने कुछ कहा नहीं । इन की रोशनी गुम थी ।

लीमा के हवाई अड्डे पर उतरने के पहले यात्रियों से पेटी बाँधने को कहा गया तो उसने पूछा—इस समय कितने बजे हैं ?

—एक बजा है ।

—कुस्को वाला जहाज कितने बजे जाता है ?

—सुबह । दिन निकलने के वक्त । शायद ।

—हमने रिज़र्वेशन नहीं कराया है ।

—फिर भी सीट मिल जायेगी ।

कस्टम्स अधिकारी ने हमारे पासपोर्ट देखने के बाद सूटकेसों की ओर इशारा करते हुए सिर्फ़ इतना पूछा कि उनमें क्या है और उन पर कस्टम्स की पास-होने चिप्पी चिपका दी।

—हम बच रहा समय लॉबी में बैठ कर बिता देंगे ।—बाहर निकल कर उसने कहा ।

—ठीक है, लेकिन सामान अगर कहीं जमा कर सकें तो ।

एयरो पेरू का काउंटर खुला था । मैंने क्लर्क से सूटकेस जमा करने को कहा तो उसने सूटकेस तो रख लिये लेकिन कहा—हम वायदा नहीं कर सकते कि

आपको सीट मिल ही जायेगी। आपको सुबह सात बजने से पहले काउन्टर पर आना होगा।

लॉबी के एक ओर पारदर्शक काँच की दीवार थी, उसके बाहर घुप अँधेरा था और दीवार के खुले दरवाज़े से हो कर लू के झोंके आ रहे थे।

—अब क्या करेंगे?—मैंने उससे पूछा।

—इन कुर्सियों पर बैठे रहेंगे।—उसने मुस्कराते हुए कहा।

पाँच-एक सौ मीटर लंबी सफ़ेद संगमर्मर की लॉबी में हवाई कंपनियों के उजाले और एकदम खाली काउन्टरों के सामने काला चमड़ा मढ़ी कुर्सियाँ लगी थीं।

—अगर तुम्हें नींद आ रही हो तो तुम सो जाओ।—वह बोली।

वैसी उमस भरी गर्मी में उन कुर्सियों के चमड़े से पसीना जैसा निकल रहा था।

—इस चिपचिपाती कुर्सी में बैठ कर!—मैंने हँसने की कोशिश की—इन पर तो बैठे रह सकना भी कठिन है।

—मेरे लिये भी।—वह कई घंटों बाद पहली बार हँसी।

हम उठ कर लंबी लॉबी में टहलने लगे।

दो कुर्सियों पर एक अधेड़ मोटी औरत और एक जवान लड़की बैठी थीं और कान में मुँह लगाए फुसफुसा कर बातें कर रही थीं। उनसे अलग एक कुर्सी पर सिर टिका कर छत की ओर मुँह खोले हुए एक आदमी नींद में सो रहा था। लॉबी के एकदम बीच में ऊपर वाली मंजिल पर जाने वाला एस्केलेटर था लेकिन वह रुका हुआ था, ठीक वैसे ही जैसा मैंने पहले एक बार देखा था। हम उसकी सीढ़ियों पर चढ़ते हुए ऊपर गये। ऊपर एक रेस्तराँ था लेकिन वह भी बंद हो चुका था। उसके बगल में पेशाबघर था—वह खुला था क्योंकि उसके दरवाज़े टूटे हुए थे। काँच की दीवार के बाहर अँधेरे लंबे छज्जे पर भी कोई नहीं था–नीचे अँधेरे में दूर तक, रनवे के किनारे लगे पीले बल्बों की समानान्तर कतारों के सिवा।

सामने वाले उस अँधेरे में लीमा शहर था शायद—या हवाई अड्डे के पीछे की ओर के अँधेरे में। कज्याओ की गढ़ी फ़ोर्तलिज़ा देल रियाल फैलिपे और बरान्को सिसकियों का पुल और सुबह की रोशनी के साथ टिन की छतों वाले घरों से एक हाथ में शराब की बोतल लटकाए बाहर निकल कर गली के चौराहे की पत्थर की बेन्च पर बैठने वाले नौजवान और बूढ़े और निठल्ले मर्द।

तुम बड़ी देर से चुप हो। क्या सोच रहे हो।···एकाएक उसने पूछा।

"हम कहाँ की बातें करें, जापान की? या रिओ की? या बुएनोस आएरस की?

हम वह एस्केलेटर की सीढ़ियों पर चुपचाप उतर रहे थे।

लॉबी की दीवार में हरे टेलीफोन लगे हुए थे। मेरा मन हुआ कि मैं रिसीवर उठा कर फोन करूँ। अगर लीमा में उस वक्त मेरा कोई परिचित रहता होता तो मैं ज़रूर फोन करता। पर शायद मेरी वैसी इच्छा किसी व्यक्ति को फोन करने से अधिक उन फोनों को खाली देख कर उन्हें इस्तेमाल करने की थी।

छत से लटकते वाले बोर्ड की पर लगी तख्तियाँ कुछ-कुछ देर पर कबूतरों के पर फड़फड़ा कर उड़ने-सी आवाज़ करती हुई बदलने लगतीं। कोई फ़्लाइट आ रही होगी।

लॉबी के दूसरे छोर पर से एक मनुष्य हत्थे के आगे लगे चौड़े पोंछने को धीरे-धीरे ठेलता हुआ आ रहा था। सिगरेट के पैकेट की आखिरी कॉन्टिनेन्टल ख़त्म हो गयी थी। वह पैकेट मैंने इगुवासू से ख़रीदा था, रात को तिरोल होटल से निकल कर सामने वाली दूकान से। जिन दो कुर्सियों पर वे दो औरतें पहले बैठी थीं, वे कुर्सियाँ खाली थीं। एक बन्द स्टॉल के अँधेरे शो-केस में रस्सी से चुटकियों से पकड़ी रंगीन पत्रिकाएँ, हैंगरों पर ऊनी शाल-स्वेटर, कोट वगैरह और नीचे काठ की मूर्तियाँ रखी थीं। तब चार बजे थे और उस स्टॉल के खुलने और सुबह होने से कम-से-कम दो घंटों की देर थी।

एक पुरुष बाहर से लॉबी में आया और बहुसंख्यक कुर्सियों से बिखरे-बिखरे बैठे चन्द व्यक्तियों में से हर एक के आगे चन्दा माँगने की तरह झुक कर न जाने क्या कहने लगा। वैसे ही वह हमारे सामने आकर खड़ा हुआ और बोला—दोलेरास, सेन्योर?

वह अमरीकी डॉलर के बदले में पेरू का पैसो दे रहा था।

हम चुप रहे तो वह मुड़ कर दरवाज़े से बाहर निकला और मोटर के रवाना होने की आवाज़ सुनायी दी।

इक्के-दुक्के मुसाफिर आकर एइरो पेरू के काउन्टरों के सामने लाइन में खड़े होने लगे थे। काँच का रंग, जो पहले एकदम काला था, गहरा नीला हो गया था। बगल वाले काउन्टर के पीछे एक मोटी होस्टेस थी और वह यात्रियों को टिकट देने में जितना समय लगाती थी। उससे कहीं अधिक समय उनके चेहरे देखने हुए मुस्कराने और लंबी बातें करने में! वह कुइइयू जाने वाले फ़्लाइट का काउन्टर था।

—देखा, मैंने कहा था न कि हमें आगे जाने के लिये सीटें आसानी से मिल जायेंगी।—मैंने दो लाल कार्ड साचिको को दिखाते हुए कहा।

कई गेटों के आगे बातचीत करते लोगों के छोटे-बड़े झुण्ड खड़े थे। एक दरवाज़े से केवल चन्द कदमों की दूरी पर माल ढोने वाला चार प्रोपेलर्स का बदशकल और चितकबरा जहाज़ खड़ा था।

—हम ऐसे ही जहाज़ को चार्टर कर के सैर करते थे, न!—एक बच्चे ने अपनी माँ की उँगली खींचते हुए जापानी में कहा। वह बच्चा जापानी था।

वह आश्चर्य प्रकट कर के उनसे बातें करने लगी। पति-पत्नी और दो लड़के। बातूनी पत्नी तोक्यो के पास साहतामा केन् की थी। पति सान् पाओलो में नौकरी करते थे। परिवार के साथ छुट्टी मनाने निकले थे।

—सेन्योर!—पीछे से किसी ने मेरे कंधे पर हथेली रखी।

मैंने घूम कर देखा—ओह, वही सैनिक जो बुएनोस आएरस जाते समय दो नंबर के गेट के अंदर ट्रांज़िट लांज में मिला था, जब मैं उस आधी बाँह की कमीज़ पहने अधेड़ अमरीकी को दोबारा देख कर आश्चर्य कर रहा था जो मुझे पहली बार हॉनोलुलू एयरपोर्ट के सूने बरामदे में दिखायी दिया था।

सैनिक का चेहरा खिल गया और उसने दाहिना हाथ आगे बढ़ाया।

—ओह, सेन्योर!—मैंने उससे हाथ मिलाते हुए कहा।

हम दोनों हँसने लगे।

—कालोर!—उसने हँसते हुए कहा।

—मुचो कालोर!

मुझे याद आयी पहली बार मिलने पर भी उसने यही कहा था। उतनी अधिक गर्मी में हम इसके अलावा और कह भी क्या सकते थे।

आकाश में धुँधली सुबह-जैसे बादल छाये थे।

उड़ने के पहले यात्रियों ने जो कमर-पेटियाँ बाँधी थीं, उन्हें खोलने की अनुमति नहीं दी गयी थी क्योंकि मौसम अधिक खराब था। जहाज पहाड़ों के बीच से एक हवाई नदी की तरह टेढ़े-मेढ़े, ऊपर-नीचे झटके खाता उड़ रहा था और मुझे खाली पेट की सूखी उल्टियाँ हो रही थीं।

—तुम्हारी तबीयत सचमुच खराब है।—उसने कहा—तुम्हारा चेहरा फक् हो गया है। तुम मेरी गोद में सिर रख लो।

—उसकी गोद पर मुझे उल्टी हो गयी।

—मुझे माफ़ करना।

—कोई बात नहीं, इस बार विवर नहीं है।

मैं फीके से मुस्कराया।'

उसने घडी देखकर कहा—बस, चालीस मिनट और। तुम झेल सकते हो।

चालीस मिनट!

अदेम की बर्फीली चोटियाँ डैने से बहुत नीचे थी। मैंने आँखें बन्द कर ली और उबकाई पर काबू पाने की कोशिश करने लगा। तभी जहाज़ ने तीस-चालीस मीटर गहरी डुबकी लगाई। अचानक मेरी आँखें खुल गयी—खिडकी के आगे पहाड की चट्टानी ढाल थी और वे बर्फीली चोटियाँ बहुत ऊपर आकाश मे टँगी थी।

मुझे याद आयी, उसने कहा था कि तुम कुत्ते से बुरी मौत मरोगे। पर मौत सिर्फ़ मौत है और उसका अच्छा या बुरा रंग नही होता। जब उसे अच्छी नही कहा जा सकता तो उसे बुरी कैसे कहा जा सकता है। पर उसने भी मेरी मृत्यु की कामना न की होगी।

कुसको एयरपोर्ट की इमारत पुरानी रोमन इमारतों जैसी थी, चौकोर और पत्थर के ऊँचे खंभों वाली।

—क्या तुम चल सकते हो?—वह अब भी मेरी बाँह पकड़े हुए थी।

—धरती पर उतर आने की खुशी मे दौड भी सकता हूँ!

बैगेज काउन्टर का फर्श किसी मछली बाजार के फ़र्श जैसा था—सीमेन्ट का चारखानेदार फर्श, जो जगह-जगह उखड़ गया था। यात्रियो का सामान फर्श पर जोश के साथ पटका जा रहा था और जँगले के आगे यात्रियो की भीड़ जमा थी!

तुम यही खडे रहो, मैं सामान ढूँढ कर निकाल लाती हूँ।

अपना-अपना सामान लेने को खड़े टूरिस्टो की भीड में टैक्सी ड्राइवरो और होटल के दलालो की भीड़ भी घुल-मिल गयी थी। वे यात्रियो को होटलो के कार्ड बाँट रहे थे। सौदा पक्का होने पर टैक्सी ड्राइवर या दलाल जँगले के अन्दर घुस कर उस यात्री का सामान उठा लाता था।

एक दलाल सब से अलग चुपचाप खडा था। उसके हाथ मे ताश के पत्तों जैसे कार्ड थे लेकिन वह थकी हुई पुतलियों से टूरिस्टो को केवल देख रहा था।

हमारी निगाहें मिलीं तो उसने मेरे पास आकर धीमी आवाज़ में कहा
—सेन्योर ?
—क्वान्तोस ?
उसने एक कार्ड मुझे पकड़ा दिया। होटल मान्तास। वह बहुत महँगा भी नहीं था—दो सौ नव्वे सोलेस सिंगल बेड कमरा।
मैंने उसे दो उँगलियाँ दिखाते हुए कहा—दोस।
वह मेरा सामान निकाल लाने के लिए तुरन्त फुर्तीला हो गया लेकिन तभी वह दोनों हाथों में दो सूटकेस लटकाए आ गयी।
वह पहाड़ी कस्बे जैसी जगह थी और वहाँ पक्की सड़क के अतिरिक्त शहर का कोई चिह्न न था। बायीं ओर एकदम पास में एक ऊँचा पहाड़ था। दाहिनी ओर ऊँचा-नीचा खुला मैदान था और उसके एकदम परे वाले छोर पर छोटी-बड़ी पहाड़ियाँ दिखायी दे रही थीं—जैसी बारीलोचे के बाहर निकलने पर दिखायी दी थीं।
वह व्यक्ति आगे वाली सीट पर टैक्सी ड्राइवर के बगल में बैठा था लेकिन वह टैक्सी ड्राइवर से भी बातें नहीं कर रहा था।
कुसको में दाखिल होने पर गली के दोनों ओर पत्थर की दीवारों वाले, एक या दो मंज़िलों के घरों का अटूट सिलसिला दिखायी देने लगा। वे सभी सड़कें भी पत्थर के टुकड़ों की थीं—बुएनोस आएरस की उस सड़क की तरह जिस पर हो कर मैं उसके घर जाया करता था। फुटपाथों पर कपड़े, सब्जी या टिन के बर्तनों की बिसात फैलाये नाटी-मोटी इन्का औरतें बैठी थीं।
पत्थर के एक बड़े फाटक से निकल कर टैक्सी, एक गिरजे के आगे जाकर दाहिने खड़ी हो गयी।
उस दलाल ने उतर कर हमारे सूटकेस निकाले और मुझसे किराया लेकर टैक्सी वाले को दिया।
होटल लाल कार्पेटदार सीढ़ी के ऊपर दूसरी मंजिल पर था लेकिन ऊपर पहुँचने पर वह किसी घर के अंदरूनी हिस्से की तरह दिखायी देता था। मैनेजर के कमरे के अंदर मोटी भौहों वाला एक नौजवान बैठा था। हमें देखकर वह काउन्टर पर आया।
तभी वह मेरे पास आ कर धीरे से बोली—अगर हम डबल बेड का कमरा लें तो हम बचत कर सकते हैं।
नौजवान ने हमारा नाम-पता दर्ज करने के बाद अंदर आवाज दी।
सामने की छत कर पड़ी बेन्च पर एक पुरुष बैठा था और अखबार पढ़

रहा था। छत के ऊपर सैल्यूलायड की चादर पड़ी थी इसलिये अधिक सर्दी होने के बावजूद वह छत एक कांचघर की तरह गर्म थी। उस व्यक्ति ने एक बार हमारी ओर नज़र डाली फिर अखबार पढ़ने लगा।

नौजवान की पुकार के जवाब मे एक मोटी कद्दावर औरत बगल के कमरे से निकल कर आयी। वह हाथ मे तौलिया लिये थी और उससे हाथ मल कर पोंछ रही थी। हमे देखते ही वह मुस्करायी। वह आश्चर्यजनक डीलडौल की औरत थी, शायद मोटी भौंह वाले मैनेजर की माँ।

टैक्सी ड्राइवर और वह मोटी स्त्री हमे कमरा दिखाने ले चले।

कमरे की जाँच करने पर उन्हे खिड़की की एक कुंडी खराब मिली।

ड्राइवर और वह कुंडी के बारे में प्रश्नोत्तर करने लग गये।

हमे आश्वासन दे कर वे वापस जाने लगे तो टैक्सी ड्राइवर ने दरवाज़े के पास रुकते हुए पूछा—क्या आप साकसावावान देखने जाएँगे? मैं कितने बजे टैक्सी ले कर आऊँ? सिर्फ पाँच सौ सोलेस।

—मैं तो अभी यहाँ आया हूँ, तुम जानते हो।

—जितने बजे भी आप कहे, मैं आ जाऊँगा।

—शाम को आना। अभी हम सोना चाहते है।

—मै तीन बजे आ जाऊँगा। अब आप आराम कीजिये।

वह चला गया।

मुझे चक्कर आ रहा था।

—तुम्हे मेरे साथ एक ही कमरे मे रहने मे एतराज़ तो न होगा।—उसने पूछा और कहते-कहते वह ज़ोर से लड़खड़ायी—ओह; मेरा सिर घूम रहा है!

मेरा भी। पिछली रात को जागने के कारण होगा।

दरवाजा बद कर के खिड़की के मोटे नीले पर्दे खीच दिये तो कमरे मे सिर्फ हरी उजास भर गयी। अलग-बगल के कमरो से बच्चों या बडो की एक भी आवाज नही आ रही थी।

—कितना शान्त है!—उसने अँधेरे मे अपने बिस्तर पर से कहा।

दीवारों को पार करके नीचे की गली से आती उनीदी मिली-जुली हल्की आवाज़ें कुछ देर तक सुनायी देती रही। उसके बाद कही बर्तन मलने की एकरस सुस्त आवाज़।

—कुछ देर सो लें।—मैंने कहा।

—हूँ।

वह ऊँघ रही होगी।

तब तीन बजे थे। बंद दरवाज़ा खटखटा कर उसने हमें जगाया। वह टैक्सी ले कर आ गया था।

खटखुट से वह भी जाग गयी।

—जाओगे ? मुझे तो बड़ी ज़ोर से चक्कर आ रहा है।

मैंने टैक्सी ड्राइवर से कहा कि चक्कर की वजह से हम चलने-फिरने की क्या खड़े होने लायक भी नहीं हैं।

—यह यहाँ आने वाले को पहले दिन होता ही है। यह कुसको की ऊँचाई के कारण है।—वह हँसते हुए बोला—समुद्रतल से साढ़े तीन हज़ार मीटर। अगले दिन सब ठीक हो जाते हैं।

चला जाए।—वह बोली—यह हमारी खातिर किसी और टूरिस्ट को ले कर नहीं गया है। इसका नुकसान होगा।

बाहर निकलते समय कमरे की चाभी मोटे मैनेजर ख़ोर्खे को दी तो उसने पूछा—रात का खाना आप लोग होटल में खायेंगे या बाहर।

—हम बाहर कहीं खा कर लौटेंगे। अगर पेरू का खाना कहीं मिल सके तो, लेचोन, रोकोतो वगैरह।

—लेचोन रात को कोई नहीं खाता, गोस्त बहुत अधिक होता है, पचाना मुश्किल होता है इसलिये उसके रेस्तराँ केवल दोपहर भर खुले रहते हैं। और वे क्विन्ता जराते और बाजाने में हैं। यहाँ से दूर हैं। पास में एक आम रेस्तराँ है, प्लासा द आर्मोस के कोने पर।

—लौट कर उसका नाम पूछूँगा। क्या आपके पास पेन्यास है ?

—पेन्यास पियेंगे ? बहुत तेज होती है। हम नहीं रखते। पर मँगा देंगे

कुकसो से निकलते ही एक पहाड़ी के ऊपर सकसावावान के खंडहर दिखायी देने लगे। मील भर भी वह दूरी न रही होगी। टैक्सी ड्राइवर ने बताया कि यहाँ इन्का का किला था। अब बड़ी-बड़ी चट्टानों की एक टूटी दीवार ही बच रही थी।

वह मेरी एक बाँह के गिर्द अपनी बाँह लपेटे लटकी हुई-सी चल रही थी।

—इससे तुम्हें कोई सहायता न मिलेगी,—मैंने उससे कहा—हो सकता है मैं गिरूँ तो साथ में तुम्हें भी लिये हुए गिरूँ।

—वह मैं जानती हूँ। सिर्फ़ इसलिये कि गिरने वाला गिरे तो अकेला न महसूस करे।—उसने हँसते हुए कहा।

सामने एक अवगोला चबूतरा था, जिसके पीछे की नाटी दीवार में खिड़कियाँ बनी थीं। इन्का युग में यहाँ सभाएँ हुआ करती होंगी।

उन सीढ़ियों के नीचे, तीन झुकी हुई बड़ी चट्टानों के बीच में एक सूखी हौज जैसी थी।

—आइये, आप लोगों का एक फ़ोटो उतार दूँ।—टैक्सी ड्राइवर ने अपना पोलोराइड कैमरा हमें दिखाते हुए कहा—यहाँ अपराधियों को मृत्युदंड दिया जाता था।

हम हँसने लगे।

—यह फोटो हमारी अंतिम निशानी होगा।—वह मुझे फ़ोटो देती हुई बोली।

बाहर निकल कर टैक्सी ड्राइवर ने पूछा—तोम्बो माचे नहीं देखेंगे?

—वहाँ क्या है।

—गर्म सोते, झरने और खंडहर।

—नहीं, रहने दो।

उसने समझा कि मैं किराया बचाने की गरज से मना कर रहा हूँ।

—वह टूर के किराये में शामिल है।

झुके-झुके काले बादलों वाली शाम चक्कर आने के कारण मैं होटल जल्दी लौटना चाहता था।

—चलो, चलेंगे—वह बोली—होटल लौट जाने से ही तो चक्कर ठीक हो नहीं जाएगा।

तोम्बो माचे में खंडहर और झरने थे लेकिन मैंने झरनों को छू कर नहीं देखा कि वे गर्म थे या नहीं। एक पीला बुलडोज़र सोते के दूसरी ओर खुदाई कर रहा था।

—सुनो, क्या गर्म सोते में नहाया नहीं जा सकता?

—यह जापान नहीं, कट्टर कैथोलिक देश है कुमारी जो, यहाँ सारे कपड़े उतार कर नहाओगी तो पुलिस पकड़ कर जेल में डाल देगी।

लौटते हुए एक जगह सड़क के कच्चे फुटपाथ के नीचे, सोते के बगल में, ज़मीन पर ऊनी स्वेटर और टोपियाँ वगैरह दूर तक फैले हुए थे।

—आप लोग पोन्चो नहीं खरीदेंगे?—टैक्सी धीमी करते हुए ड्राइवर ने पूछा।

मैंने उसके लिये एक ऊनी टोपी खरीदी।

वह खूबसूरत जगह थी। दूर-दूर तक खुले मैदान, घाटियाँ और एक के पीछे दूसरी कई पहाड़ियाँ।

वह जगह इतनी दूर नहीं है कि मैं किसी दिन पैदल न आ सकूँ—मैंने अपने आप से कहा।

होटल की सीढ़ी चढ़ते-चढ़ते वह रुक गयी।

—सुनो, अगर हम अभी रात का खाना खा लें तो हमें दोबारा बाहर न निकलना पड़े।

ख़ोर्ख़े ने जिस रेस्तराँ के बारे में बताया था वह चौक के कोने पर था, होटल से पचास मीटर पर।

मैं एक सस्ता-सा कैमरा ख़रीदना चाहता था। होटल के ठीक बगल में कैमरे की एक छोटी-सी दूकान थी। काउन्टर के पीछे एक नाटा-मोटा नौजवान खड़ा था। उसका चेहरा न इन्का जाति का था, न योरोपियन।

मैंने जापानी में बोलना शुरू किया ही था कि उसने टोक दिया—तीन पीढ़ी पहले हम जापानी थे लेकिन मुझे जापानी नहीं आती। क्या आप जापान से आ रहे हैं?

—जी हाँ।

सुन कर वह उत्तेजित-सा हो गया।

—कारमेन!—उसने अंदर की ओर मुँह कर के आवाज़ लगाई—कारमेन, देखो जापान से टूरिस्ट आये हैं!

अंदर से अठारह-उन्नीस साल की एक लड़की निकली। मुझे देखते ही उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल उठा।

—यह मेरी छोटी बहिन है, कारमेन।—वह बोला।

—क्या आप जापान में रहते हैं?—कारमेन ने पूछा - आप वहाँ हमारा एक काम कर दीजियेगा? हम लोगों के दादा जापान से आये थे। हम वहाँ उनके परिवार के लोगों का पता-ठिकाना खोज रहे हैं। कोई-न-कोई तो उनके परिवार में होगा ही।

—किस जगह के रहने वाले थे वह?

—हमें ठीक पता नहीं है। साठ या पैंसठ वर्ष पहले की बात है। दादी कहा करती थीं कि वह सन् १९१० और १५ के बीच जापान से पेरू अकेले आए थे। ओकायामा या वाकायामा के, हम ठीक नहीं कह सकते, किसी शहर या गाँव के थे। हमने दादी से सुना था। वह पेरू की थीं। जब वे दोनों नहीं रहे, मेरे पिता भी मर गये।

कारमेन अंदर से एक पुराना फ़ोटो ले आयी—ज़र्द और फटा हुआ फ़ोटो।

—ये हैं हमारे दादा। वहाँ उनके खान्दान के लोग जरूर होंगे। हम उनके बारे में सिर्फ़ जानना भर चाहते हैं। हमें जो भी जापानी मिलता है, हम उसे उनका नाम लिखा देते हैं और कोशिश करने की प्रार्थना करते हैं।

—आप कभी खुद जापान आइये।

—वह बहुत दूर है और हमारे पास आर्थिक साधन नहीं है।

उसने मुझे भी अपने दादा का नाम नोट कराया और अपनी दूकान का कार्ड दिया।

मैं कैमरे के बारे में पूछना भूल गया।

—बड़ी देर लगा दी!—वह बरामदे में खड़ी थी।

—कुछ नहीं, एक जापानी मिल गया था।—मैंने उसे उनके बारे में बताया।

—वे क्यों अपने मृत दादा के जन्मस्थान की तलाश कर रहे हैं जब कि वे वहाँ की भाषा तक भूल गये हैं और वे वहाँ कभी न जा सकेंगे।—मैंने कहा।

—अपने रक्त का मूल खोजने की ललक होगी। हर एक को होती है।—वह बोली—मान लो मैं या तुम अपना देश छोड़ कर किसी और देश में जा बसें तो अपनी जन्मभूमि की याद क्या हमें नहीं आएगी?

हम दोनों अचानक चुप हो गये और हमें दूसरों की चुप्पी लगातार बोझिल लगती रही।

होटल मैनेजर की कुर्सी पर सोर्मे की बजाय एक अधगंजा व्यक्ति बैठा था। उसकी तराशी हुई मूँछें लाल और सफ़ेद रंग की खिचड़ी थीं।

उसने गूँगे की तरह पेन्यास की बोतल उठा कर मुझे दिखायी।

कमरे में आ कर भी मैंने रोशनी जानबूझ कर नहीं की। हीटर की स्विच दबायी लेकिन काफ़ी देर बाद भी हीटर लाल नहीं हुआ तो स्विच आफ़ कर दी।

गिलास गुसलखाने में बेसिन के ऊपर काँच की पट्टी पर रखे थे। मैं उस जगह तक एकदम अँधेरे में भी पहुँच सकता था।

गिलास, गुसलखाने और अँधेरे से मुझे याद आयी पिछली बार की जब हमने इकट्ठे शराब पी थी—रिओ के होटल में, उसके कमरे में!

उसने गिलासों में पेन्यास डाली और हमने गिलास उठा कर आपस में खनकाए।

अपने गिलास की ज़रा-सी पेन्यास वह दो-तीन घूँटों में पी कर खड़ी हो गयी।

—अरे, और नहीं लोगी?

—नहीं। आज नहीं।

वह अपने विस्तर पर चली गयी।

थोड़ी देर बाद मैं अपने विस्तर पर आया और लेटने के पाँच मिनट के भीतर गहरी नींद सो गया। न जाने कितनी देर बाद, नींद के घने अँधेरे जंगल में, किसी के ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़, उजले पेड़-पौधों जैसी उग आयी। दूर पर के किसी कमरे में एक व्यक्ति फ़ोन पर ऊँची आवाज़ में डाँटने की तरह बातें कर रहा था—अ लो ओ !—म न्याना !

पास के किसी दरवाज़े का पल्ला खोले जाने पर जंग खाए कब्ज़े की आवाज़ हुई।

—ओ के ! अ लो—अ लो—अ लो ओ !—वह बड़ी देर तक बात करता रहा।

रात के न जाने कितने बजे थे। एक बार उठ कर घड़ी देखने की इच्छा हुई लेकिन उठा नहीं। उसके बाद नींद नहीं आयी। वह पता नहीं सो रही थी या मेरी तरह जागती हुई अँधेरे में चुपचाप पड़ी थी। सोचा टेबुल लैंप जलाऊँ पर यह सोच कर नहीं जलाया कि अगर वह सो रही होगी तो।

पूरे आधे विचारों के टुकड़े, अँधेरे में बहते नाले जैसा समय।

अचानक अँधेरे और सन्नाटे को तोड़ते हुए पास के गिरजों में से किसी एक का घंटा लगातार बजने लगा—टन् टन् टन् टन्। उसके बाद कुछ और दूर पर के दूसरे गिरजे के घंटे की धीमी आवाज़ सुनायी दी।

चार-पाँच मिनट लगातार बजने के बाद घंटों का बजना बंद हुआ तो उनकी आख़िरी चोटें अँधेरे में देर तक काँपती रहीं। देर शायद उतनी नहीं हुई थी जितनी मैं समझ रहा था। मैं शायद नशे मे था।

उतने छोटे से कस्बे में, जहाँ दो-तिहाई से अधिक निवासियों के चेहरों पर इन्का छाप थी, उतने अधिक गिरजे क्यों थे ! स्पेनी उपनिवेशवादियों के वहाँ पहुँचने के पहले वह जगह कैसी रही होगी ? पुरानी इमारतों, खंडहरों, शहरों में आ कर हम उनके युग के क्यों हो जाते हैं ! अगर वह व्यक्ति नहीं पैदा हुआ होता तो आधी से अधिक दुनिया की आज क्या शक्ल होती ! मनुष्य को मसीहों की ज़रूरत कब से शुरू हुई।

तभी घंटे फिर बजने लगे। तार और मंद्र आवाज़ों में। इस बार वे देर-देर पर आने वाली जैसे कि अलसायी हुई आवाज़ें थीं। दूर पास, बहुत दूर से आती कुसको के सभी गिरजों के घंटों की सर्द अँधेरे को कँपाती हुई आवाज़ें। उनमें से हर टनकार का न केवल स्वर दूसरे से भिन्न था बल्कि उनके रंग भी अलग-

अलग थे। शायद वह देर रात का ही वक्त था—या रात से जुड़ी हुई अगली सुबह का। खिड़की पर खिंचे हुए पर्दे के एक ओर की खड़ी लकीर उजली-नीली हो गयी थी—पर्दे के जरा से खुले हुए हिस्से से दिखलायी देने वाली सुबह की रोशनी की।

मैंने माचिस से सिगरेट जलाया तो वह माचिस की आवाज से जाग गयी।

—तुम बड़ी जल्दी जाग गये!

—हाँ।

तभी उसका ध्यान घंटों की आवाज की ओर गया। घंटों की हल्की आवाज तब भी, दीवारों से रिस कर कमरे में आ रही थी।।

—गिरजे के घंटे!—उसने लगभग फुसफुसाते हुए कहा।

—*मैं जरा बाहर जा रहा हूँ। तुम नाश्ता कर लेना।*

—देर से लौटोगे?

—पता नहीं।

उसका पूछना एकदम घरेलू औरत की तरह था और मेरा उत्तर भी। हमें एक साथ रहते एक महीना या एक साल नहीं हुआ था और हम पति-पत्नी भी नहीं थे। मेरा मन शायद पहले से ही वितृष्णा से भरा था—किस से, मैं नहीं जानता।

सूरज नहीं निकला था लेकिन साफ उजाला हो गया था।

बगल के गिरजे के खुले हुए विशाल द्वार के एक ओर एक इक्का औरत फूलों की डलिया अपने आगे रखे फर्श पर बैठी थी। आगे सड़क पर पत्थर के पुराने फाटक से निकलते ही फुटपाथ पर दूकानदार कपड़े, सब्जियों और अलमुनियम के बर्तनों की बिसात फैलाने लगे थे। और आगे बायीं ओर सिर्फ कपड़ा बेचने वालों की गुमटियाँ थीं—उनके बीच के सँकरे रास्ते के ऊपर भी सस्ते कपड़े टँगे थे।

याद आयी, हमें माचू पिच्चू जाना था। टिकट खरीद लेने के इरादे से एक दूकानदार से स्टेशन का पता पूछा।

स्टेशन पर स्थानीय लोगों की भीड़ थी। खिड़की के आगे भी वे एक झुंड में जमा थे। बड़ी धक्का-मुक्की के बाद वहाँ से अगले दिन के लिए माचू पिच्चू के टिकट खरीदे।

स्टेशन के सामने सड़क के किनारे सब्जी वाले जमीन पर सब्जियों के ढेर लगाए बैठे थे। उनके पीछे टिन की बड़ी छत के नीचे बाजार था, जिसमें फल और खाने के दर्जनों स्टाल थे। उतनी सुबह ही उन स्टालों के आगे

—नहीं। आज नहीं।

वह अपने बिस्तर पर चली गयी।

थोड़ी देर बाद मैं अपने बिस्तर पर आया और लेटने के पांच मिनट के भीतर गहरी नींद सो गया। न जाने कितनी देर बाद, नींद के घने अँधेरे जंगल में, किसी के ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने की आवाज़, उजले पेड़-पौधों जैसी उग आयी। दूर पर के किसी कमरे में एक व्यक्ति फ़ोन पर ऊँची आवाज़ में डांटने की तरह बातें कर रहा था—अ लो ओ!—म न्याना!

पास के किसी दरवाज़े का पल्ला खोले जाने पर जंग खाए कब्ज़े की आवाज़ हुई।

—ओ के! अ लो—अ लो—अ लो ओ!—वह बड़ी देर तक बात करता रहा।

रात के न जाने कितने बजे थे। एक बार उठ कर घड़ी देखने की इच्छा हुई लेकिन उठा नहीं। उसके बाद नींद नहीं आयी। वह पता नहीं सो रही थी या मेरी तरह जागती हुई अँधेरे में चुपचाप पड़ी थी। सोचा टेबुल लैंप जलाऊँ पर यह सोच कर नहीं जलाया कि अगर वह सो रही होगी तो।

पूरे आधे विचारों के टुकड़े, अँधेरे में बहते नाले जैसा समय।

अचानक अँधेरे और सन्नाटे को तोड़ते हुए पास के गिरजों में से किसी एक का घंटा लगातार बजने लगा—टन् टन् टन् टन्। उसके बाद कुछ और दूर पर के दूसरे गिरजे के घंटे की धीमी आवाज़ सुनायी दी।

चार-पाँच मिनट लगातार बजने के बाद घंटों का बजना बंद हुआ तो उनकी आख़िरी चोटें अँधेरे में देर तक काँपती रहीं। देर शायद उतनी नहीं हुई थी जितनी मैं समझ रहा था। मैं शायद नशे मे था।

उतने छोटे से कस्बे में, जहाँ दो-तिहाई से अधिक निवासियों के चेहरों पर इन्का छाप थी, उतने अधिक गिरजे क्यों थे! स्पेनी उपनिवेशवादियों के वहाँ पहुँचने के पहले वह जगह कैसी रही होगी? पुरानी इमारतों, खंडहरों, शहरों में आ कर हम उनके युग के क्यों हो जाते हैं! अगर वह व्यक्ति नहीं पैदा हुआ होता तो आधी से अधिक दुनिया की आज क्या शक्ल होती! मनुष्य को मसीहों की ज़रूरत कब से शुरू हुई।

तभी घंटे फिर बजने लगे। तार और मंद्र आवाज़ों में। इस बार वे देर-देर पर आने वाली जैसे कि अलसायी हुई आवाज़ें थीं। दूर पास, बहुत दूर से आती कुसको के सभी गिरजों के घंटों की सर्द अँधेरे को कँपाती हुई आवाज़ें। उनमें से हर टनकार का न केवल स्वर दूसरे से भिन्न था बल्कि उनके रंग भी अलग-

अलग थे। शायद वह देर रात का ही वक्त था—या रात से जुड़ी हुई अगली सुबह का। खिड़की पर खिंचे हुए पर्दे के एक ओर की खड़ी लकीर उजली-नीली हो गयी थी—पर्दे के ज़रा से खुले हुए हिस्से से दिखलायी देने वाली सुबह की रोशनी की।

मैंने माचिस से सिगरेट जलाया तो वह माचिस की आवाज़ से जाग गयी।

—तुम बड़ी जल्दी जाग गये!

—हाँ।

तभी उसका ध्यान घंटों की आवाज़ की ओर गया। घंटों की हल्की आवाज़ तब भी, दीवारों से रिस कर कमरे मे आ रही थी।

—गिरजे के घंटे!—उसने लगभग फुसफुसाते हुए कहा।

—मैं ज़रा बाहर जा रहा हूँ। तुम नाश्ता कर लेना।

—देर से लौटोगे?

—पता नही।

उसका पूछना एकदम घरेलू औरत की तरह था और मेरा उत्तर भी। हमें एक साथ रहते एक महीना या एक साल नही हुआ था और हम पति-पत्नी भी नही थे। मेरा मन शायद पहले से ही वितृष्णा से भरा था—किस से, मैं नही जानता।

सूरज नही निकला था लेकिन साफ उजाला हो गया था।

बगल के गिरजे के खुले हुए विशाल द्वार के एक ओर एक इन्का औरत फूलों की डलिया अपने आगे रखे फर्श पर बैठी थी। आगे सड़क पर पत्थर के पुराने फाटक से निकलते ही फुटपाथ पर दूकानदार कपड़े, सब्जियो और अलमुनियम के बर्तनों की बिसात फैलाने लगे थे। और आगे बायी ओर सिर्फ़ कपड़ा बेचने वालो की गुमटियाँ थी—उनके बीच के सँकरे रास्ते के ऊपर भी सस्ते कपड़े टँगे थे।

याद आयी, हमे माचू पिच्चू जाना था। टिकट खरीद लेने के इरादे से एक दूकानदार से स्टेशन का पता पूछा।

स्टेशन पर स्थानीय लोगो की भीड थी। खिड़की के आगे भी वे एक झुंड मे जमा थे। बड़ी धक्का-मुक्की के बाद वहाँ से अगले दिन के लिए माचू पिच्चू के टिकट खरीदे।

स्टेशन के सामने सड़क के किनारे सब्ज़ी वाले ज़मीन पर सब्जियो के ढेर लगाए बैठे थे। उनके पीछे टिन की बड़ी छत के नीचे बाजार था, जिसमे फल और खाने के दर्जनों स्टाल थे। उतनी सुबह ही उन स्टालों के आगे

ग्राहक बेन्चों पर बैठ कर खाना खा रहे थे और लावारिस कुत्ते आसपास मँडरा रहे थे।

वापस लौटने के लिये बाहर निकला तब धूप निकल आयी थी और ज़मीन पर लगे सब्ज़ियों के ढेर धूप में चमक रहे थे। ग्राहकों की भीड़ बढ़ गयी थी।

एक लड़के ने उँगली उठाकर मेरी ओर इशारा किया और हँसने लगा।

वहाँ से निकल कर होटल की ओर लौट पड़ा। नींद आ रही थी और मैं घंटे-दो-घंटे सोना चाहता था, दिन निकल आने के बाद।

ढाल उतरते हुए एक साइनबोर्ड पर नज़र पड़ी— ओ ओमुरा मार्केट। आगे एक दूकान पर साकामोतो का साइनबोर्ड लगा था। जापानी, हर कहीं हैं! हम हर कहीं हैं!

वह कमरे के आगे सेल्यूलायड के ढकी छत के नीचे कुर्सी पर बैठी थी और उसके सामने टेबुल पर दर्जनों पैम्फ़्लेट बिखरे थे।

—मैं माचू पिच्चू के टिकट ले आया, कल का।—मैंने उसे टिकट निकाल कर दिखाने के लिये जेब में हाथ डाला तो मुँह से हल्की-सी कराह निकल गयी।

—क्या हुआ!

—मेरा जेब कट गया।

मेरा पंजा जेब के बाहर निकला हुआ था।

—तुम्हारा पासपोर्ट?

—नहीं। सिर्फ़ पर्स। लेकिन उसमें तुमसे उधार लिये डॉलर थे और कल के रेल टिकट।

वह हँसने लगी।

—सारी रक़म ले कर जाने की ज़रूरत क्या थी।

—मुझे क्या पता था कि यहाँ जेबकट भी हैं।

मैंने खोर्ख़े से कहा तो वह चेहरे पर शिकन लाए बग़ैर बोला—तो तुम्हारा भी जेब कट गया न! यहाँ हर टूरिस्ट का जेब, घड़ी, नेकलेस कट जाते हैं।

—तो तुम्हें आगाह कर देना चाहिये था।

—उससे कोई फ़ायदा नहीं होता।

मैंने उससे पुलिस स्टेशन का ठिकाना पूछा तो उसने बता दिया लेकिन कहा कि पुलिस में रिपोर्ट करने से भी कुछ नहीं होगा।

—पर्स में कल सुबह सात बजे माचू पिच्चू जाने वाली ट्रेन के टिकट भी थे।

वह मुझे घूरने लगा।

—इस ट्रेन से कोई टूरिस्ट नहीं जाता। यह यहां के लोगों के लिये है। उसमें जाओगे तो जेब फिर कट जाएगा।

कम्पानिया गिरजे के सामने पुलिस स्टेशन था। एक पुलिस अफसर ने सारा वाकया बताया तो उसने मुझे दूसरे पुलिस अफसर के सामने कुर्सी पर बैठा दिया। उसने मुझसे पासपोर्ट मांगा और पासपोर्ट लेकर उसके पहले पन्ने से लेकर आखिरी पन्ने तक धीरे-धीरे पढ़ डाला। फिर उसने पासपोर्ट एक ओर रख दिया और दूसरी तरफ रखा एक पैड उठाया फिर पासपोर्ट अपने पास खींच कर पासपोर्ट पर दर्ज नम्बर-नाम वगैरह लिखने लगा। लिख चुकने पर उसने होटल का नाम, कमरा नंबर पूछा जिसमें मैं टिका था। फिर चोरी गयी रकम की तफसील पूछ कर लिखने लगा—कितने डॉलर, कितने पैसो, कितने क्रूजेइरो और कितने यन, कितना नकद, कितना ट्रैवेलर्स चेक में। सब लिख लेने पर उसने मेरा पासपोर्ट मुझे लौटा दिया और टेबुल पर दोनों कुहनियां टिका कर हथेलियों में चेहरा रख कर चुपचाप मेरे चेहरे की ओर ताकने लगा।

—इस जांच का परिणाम मुझे कब तक मालूम हो सकेगा?—क्रोध पर काबू पाते हुए मैंने पूछा।

उसने सिर हिला कर इनकार किया।

—फिर आपने यह सब नोट क्यों किया।

—यह हमने अपने रिकार्ड में रखने के लिये दर्ज किया है।

—अगर आप मेरे साथ पेद्रो स्टेशन तक चलें तो मैं आपको वह लड़का पहचनवा दे सकता हूं जिसने मेरे जेब की ओर इशारा करके कुछ कहा था। हो सकता है उसने उस जेबकट को देखा हो। मेरे पास दोपहर का खाना खाने तक का पैसा नहीं है।

वह मुस्कराने लगा।

—जांच हम अपने ढंग से करेंगे। आपको वहां नहीं जाना चाहिये था। भविष्य में सावधान रहियेगा।—कहते हुए उसने टेबुल के ऊपर हाथ बढ़ा दिया।

उससे हाथ मिलाये बगैर मैं उठा और बाहर निकल आया।

—क्या हुआ?—होटल लौटने पर उसने पूछा। वह तब भी वहीं बैठी पैम्फ़-लेट पढ़ रही थी।

मैंने उसे उत्तर नहीं दिया और कमरे की ओर बढ़ गया।

वह उठ कर कमरे में आयी।

—चलो, खाना खा आएं।

—कौन हमें मुफ्त में खिलायेगा। और यह कटा हुआ पैन्ट पहने मैं बाहर

वह उस समय भी एक रंगीन पैम्फ्लेट हाथ में लिये थी।

—मैं यह गली देखना चाहती हूँ।—उसने एक रंगीन तस्वीर दिखाते हुए कहा। फोटो में मकानों की कतारों के बीच एक ढलवाँ गली थी, जिसके दोनों किनारों पर चौड़ी-चौड़ी सीढ़ियाँ थीं। सेज़ान की पेंटिंग जैसी पीली-हरी गली।

लंबी सँकरी गलियों से होते हुए हम एक आँगन में पहुँच गये। उसमें धूप भरी थी और तीन-चार छोटे बच्चे खेल रहे थे। वह उनसे उस गली का रास्ता पूछने के लिए उनकी ओर बढ़ी तो वे बच्चे घरों के अंदर भाग गये।

एक पुरानी इमारत के सामने टूरिस्ट मर्द-औरत का एक जोड़ा खड़ा था। उन्होंने हमें उस गली तक जाने का रास्ता समझाया और नाम बताया, मान् ब्लास। वह जगह पास ही थी। दो-तीन पतली गलियों से घूमते हुए, जैसी कि गर्म देशों के पुराने शहरों की गलियाँ दोपहरों में वीरान हो जाती हैं।

मान् ब्लास की गली वास्तव में वैसी ही थी, जैसी पैम्फ्लेट में दिखायी गयी थी। इक्के-दुक्के आदमी गली के किनारे की सँकरी छाया में सीढ़ियाँ चढ़ते हुए धीरे-धीरे जा रहे थे। दो-तीन फुर्तीले सैलानी। एक मोटी औरत दरवाज़े के चौखट के अंदर खड़ी थी। दोपहर को ज़रा-सी नींद लगने पर दिखायी देने वाले सपने की तरह, जिसमें कोई अचंभा न हो, सिर्फ एक सपना क्योतो के कियोमिज़ु मंदिर के पास की सीढ़ीदार गलियाँ जैसी!

कई बार हम उस गली के एक छोर से दूसरे छोर तक चढ़े-उतरे।

—तुम थके नहीं? – उसने पूछा।

कई घंटे बीत गये थे, हम एक-दूसरे से एक शब्द भी नहीं बोले थे।

—नहीं तो।

—मैं थक गयी।

रात को उससे खाना खाने के लिये साथ चलने को कहा तो उसने बताया कि दोपहर को गोश्त खाने की वजह से उसे ज़रा भी भूख नहीं थी। शायद वह अधिक थकी होने के कारण बहाना बना रही थी। उसने अपने पर्स से निकाल कर मुझे तीन सौ शोलेम दिये।

—इतना अधिक नहीं चाहिये।

—रख लो।

—इसका मतलब है, इस बार दूसरा जेब कटेगा।

प्लासा द आर्मास की सड़क के बीचों-बीच, एक आदमी, आती-जाती कारों की रोशनी में, पालथी मारे बैठा था। वह शायद नशे में धुत्त था।

—सरवेसा।—टेबुल पर बैठते हुए मैंने लड़के से कहा। सुबह

स्थिति किसी दूसरे की हो गयी लगती थी और मैं हल्का महसूस कर रहा था।

दो बोतल बियर के बाद खाना खा कर बाहर निकला तो रास्ते में बैठा आदमी उठ कर कहीं चला गया था।

मैं सान् ब्लास की उस गली को एक बार फिर देखना चाहता था कि वह रात को कैसी लगती है। लेकिन काफ़ी देर कोशिश करने के बावजूद उसे खोज न सका।

लौटते समय खंभेदार अँधेरी दालान के अंदर जा रहा था तभी बाँसुरी एक बार फूँकी जाने की आवाज़ सुनायी दी। वह आगे धीरे-धीरे जा रहा व्यक्ति था जो रह-रह कर बाँसुरी में फूँक देता था और फिर छड़ी से ज़मीन ठकठकाता था। सवारियों की घर्राहट, कारों के हॉर्न और आते-जाते लोगों की बातचीत के मिले-जुले शोर के ऊपर उठती बाँसुरी की तेज़ आवाज़। लोगों को आगाह करने के लिए वह रह-रह कर बाँसुरी बजा रहा था। प्लासा द आर्मास के बगल की लंबी अँधेरी दालान पार करता हुआ एक इक्का अंधा बूढ़ा।

कुछ दूर तक पीठ पीछे बाँसुरी की आवाज़ सुनायी देती रही।

कमरे की रोशनी जल रही थी और वह सो गयी थी। घड़ी में साढ़े ग्यारह बजे थे। टेबुल पर पेन्यास की बोतल और एक खाली गिलास पड़ा था। बोतल में पेन्यास पिछली रात की अपेक्षा आधी रह गयी थी।

सुबह उसने मुझे जगाया। हम दोनों देर से उठे थे। ट्रेन छूटने में सिर्फ़ चालीस मिनट रह गये थे। हमें लगा कि ट्रेन मिल नहीं पायेगी।

—इस बार मैं माचू पिच्चू ज़रूर देखूँगी। हर बार मैं चाह कर रह जाती थी।

—माचू पिच्चू में आख़िर इतनी ख़ास बात क्या है!

—मुझे पता नहीं। पर एक बार मैंने उस जगह को सपने में देखा था। उसमें घास के हरे-हरे मैदान और सीढ़ीदार धान के खेत थे। मैं देखना चाहती हूँ कि वास्तव में वह जगह कैसी है।

हम लगभग दौड़ते हुए स्टेशन पहुँचे तब ट्रेन चली नहीं गयी थी। उसमें केवल दो डिब्बे थे और आगे-पीछे दो इंजन। ट्रेन खचाखच भर गयी थी। वे सभी विदेशी सैलानी थे।

ट्रेन रवाना होने के साथ ही वे एक-दूसरे को अपना परिचय देने-पूछने लगे और फुसफुसाकर में अपनी कीमती चीज़ें गुम जाने की दास्तानों का विनिमय करने लगे।

बगल वाली सीट पर एक नौजवान जोड़ा बैठा था। युवक की नीली कमीज़

आस्तीन पर नेपाल का पीला झंडा बढा था । वह अमरीकी था । उसने
[illegible]ाया कि वह नेपाल वगैरह घूम आया है । लगभग सारा एशिया, अफ्रीका
[illegible]र आस्ट्रेलिया ।

—मेरी पत्नी टी० डब्ल्यू० ए० मे होस्टेस है इसलिये हम दोनो को एयर-
[illegible]लाइंस का फ्री पास मिलता है ।—कह कर उसने एक आँख मचकाई ।

ट्रेन एक बार रुक कर उल्टी दिशा मे जाने लगी । वह इसी प्रकार बार-
बार रुक कर आगे-पीछे जाते हुए पहाड चढ रही थी । एक जगह वह काफी देर
तक खडी रह गयी तो करीब सभी यात्री डिब्बो से नीचे उतर कर देखने लगे ।
कई दर्जन मजदूर कुदालो से पटरी के अगल-बगल खुदाई कर रहे थे ।

—देखते हो ?—अमरीकी ने कहा—ये मजदूर पहाड की ढाल खोद कर
रास्ता बना रहे हैं । जब पहाड जमीन के समतल हो जायगा, तब ट्रेन आगे जाएगी ।

लेकिन कुछ ही देर बाद गार्ड ट्रेन के दोनो ओर घूम-घूम कर सबसे ट्रेन
पर चढ जाने के लिये कहने लगा । ट्रेन फिर पीछे की ओर खिसकने लगी । तेज
बहती पहाडी नदी के कगार पर ।

—ओह, यही उरुबाम्बा नदी है ।—किसी ने कहा ।

कोई डेढ घंटे बाद ट्रेन पुएन्ते रुइनास स्टेशन पर रुकी, जो आखिरी स्टेशन
था । लाइन के आगे गोल गढे मे इंजन घुमाने वाला पुल था ।

ट्रेन के रुकने के साथ ही सारे यात्री उतर कर बस स्टैंड की ओर दौड
पडे । वहाँ पहले से ही चार लंबी-लंबी कतारें खडी थी और बस [illegible]
पहले से लाइन मे लगे यात्री सिर ऊपर कर के पहाड की ऊँची ढाल की [illegible]
देख रहे थे, जिस पर चींटियो की तरह रेंगती पाँच-छह नीली-सफेद बसें [illegible]
चढ रही थी और नीचे उतर रही थी ।

तभी मैंने उसे दिखाया, लीमा से रवाना होते समय जो परिवार हम [illegible]
पर मिला था—पति-पत्नी और दो बच्चे—लाइन मे आगे [illegible]
फिर देख कर हमें आश्चर्य नही हुआ । पहले किसी दूसरी जगह पर [illegible]
इतनी छोटी प्रसिद्ध जगह पर फिर दिख जाने [illegible]
तो स्वाभाविक ही है ।

जो बसें पहाड के कटे-पिटे रास्ते पर [illegible] दिखायी दे [illegible]
पहुँचने मे दस-बारह मिनट लग गये । वे [illegible] बसें थी और [illegible]
सारी सीटें भरते ही वे फिर रवाना हो गयीं । हम [illegible]
सी खडे लोगो की लाइनें छोटी दिखायी [illegible]
बस की आवाज मे डूब गया ।

अचानक कई चीखें एक साथ छूटीं ।

वस ड्राइवर ने कच्चे सँकरे रास्ते पर आगे-आगे जा रही अगली वस से आगे निकल जाने के लिये उसको वायीं ओर से अपनी वस निकाली तो पिछले पहिये विना फेंस वाली सड़क के एकदम कगार पर से गुज़रे थे ! वस के यात्री अव दर्जन भर मातृभाषाओं में वस ड्राइवर की फजीहत कर रहे थे । उसे सवारियाँ पहुँचा कर फिर नीचे आने की जल्दी थी ।

माचू पिच्चू—पुरानी चोटी—पर वड़े-वड़े पत्यरों की प्राचीरों से घिरा एक किला रहा होगा । ऊपर से ले कर नीचे तक, पूरी ढाल पर सीढ़ीदार खेत थे लेकिन उस वक्त उसमें केवल जंगली घास उगी थी । इन्का ने कुसको से इतनी दूर दुर्गम स्थान में इस किले का निर्माण शायद नीचे के जंगलों में वसने वाले कवीलों पर शासन करने के उद्देश्य से किया होगा—या कुसको से कम ऊँचाई पर होने के कारण लाल मिर्च और दूसरी जड़ी-वूटियाँ पैदा करने के लिये ।

दो वड़ी चट्टानों के वीच के सँकरे रास्ते से अंदर घुसने पर दाहिने हाथ एक झोपड़ी थी, पुराने ज़माने में शायद पहरेदारों की । आगे के सीवे समतल रास्ने के वाद दाहिने-वायें, ऊपर-नीचे पत्थर की सीढ़ियाँ सीढ़ियाँ सीढ़ियाँ, जिन पर चढ़ते-उतरते सैलानी रंग-विरंगे फूलों की तरह लगते थे ।

सीढ़ियों की एक सीधी कतार के ऊपर पत्थर का सावूत फाटक था और उसके पीछे एक समतल तिकोना चवूतरा, जिसके एक सिरे पर पत्थर का छोटा खंभा था । उस पर अपराधियों को प्राणदंड दिया जाता था या शायद वह धूपघड़ी थी। वहाँ से घाटी के दूसरी ओर एक काला पहाड़ दिखायी दे रहा था, जिसकी चोटी झुके हुए वादलों में छिपी हुई थी ।

वह साथ नहीं थी । हम गिद्ध के पंजे वाली चट्टान देख रहे थे तव वह मेरे साथ थी । वह शायद वहीं रुक गयी थी ।

एक वूढ़ा सैलानी रेलिंग के पास खड़ा हो कर वड़ी देर से सामने के काले पहाड़ को देख रहा था और दूसरे कई टूरिस्ट, जो सिर्फ़ उस पहाड़ का फ़ोटो उतारना चाहते थे, वूढ़े से हट जाने की प्रार्थना कर रहे थे ।

—यह सार्वजनिक स्थान है और मेरी जव तक इच्छा हो, यहाँ खड़े रहने को मैं स्वतंत्र हूँ ।—वूढ़े ने उन्हें उत्तर दिया था ।

सात-आठ स्त्री पुरुप उससे ज़रा दूर खड़े हो कर हँस रहे थे ।

—यह सज्जन अंतिम स्वतंत्रता सेनानी हैं !—एक ने धीरे से फव्ती कसी ।

—अरे नहीं, उन्होंने समय निश्चित कर रखा है, उस समय वह यहाँ से नीचे कूदेंगे । कुछ मिनट और इंतज़ार कीजिये ।—दूसरा वोला ।

बूढ़ा छाती पर हाथ बटे सब को पीठ दिये खड़ा था।

नीचे का तालाब-जैसा चौक तीस-चालीस सैलानी एक साथ पार कर रहे थे। वह माचू पिच्चू का सभास्थल था और सिर्फ वहीं हरी दूब उगी थी।

चौके के दूसरी ओर सीढ़ियों के कई सिलसिलों के ऊपर दूसरे पहाड़ की चोटी पर तीन खिड़कियों वाली पत्थर की कोठरी थी।

वह मुझे ढूँढती हुई आयी और साथ-साथ चलते हुए उसने मेरी हथेली अपनी हथेली में ले ली।

सामने बिना छत का एक कमरा था, जिसकी दीवारों में एक-एक मनुष्य के खड़े रहने लायक खोखली जगहें थीं। वह कैदखाना था और उन खाली जगहों में अपराधियों को खड़े कर के यातनाएँ दी जाती थीं।

सीढ़ियाँ उतरते हुए मैं उससे कुछ पूछ रहा था। उसने उत्तर नहीं दिया तो मैंने घूम कर देखा। वह साथ में नहीं थी— कैदखाने के कमरे में खड़ी उन खाली जगहों को ध्यान से देख रही थी।

—तुम्हें कैसा लगा माचू पिच्चू ?—वह पास आयी तो मैंने फिर पूछा—मनुष्य की अदम्य निर्माण शक्ति पर आश्चर्य नहीं होता !

—ऊँ।—वह आगे कुछ कहना चाहती थी लेकिन चुप रह गयी।

लम्बी सीढ़ियाँ चढ़ कर तीन खिड़कियों वाले बुर्ज पर पहुँचे तो हम ज़ोर-ज़ोर से हाँप रहे थे।

वह एक खिड़की की सिल पर बैठ गयी।

—सुनो, अब वापस चला जाए।—उसने कहा।

—थक गयी क्या ?

—नहीं, वह वजह नहीं है।

—माचू पिच्चू देखने को तुम कितनी लालायित थीं। वहाँ भी पहुँचते ही तुम तुरन्त वापस लौटने को क्यों कहने लगती हो ?

उसने उत्तर नहीं दिया। खिड़की के बाहर देखने लगी।

वहाँ से माचू पिच्चू के सभी खंडहर और सामने वाला काला पहाड़ एक साथ दिखायी देते थे।

हम धीरे-धीरे सीढ़ियाँ उतरने लगे।

स्मारक के फाटक से निकलते ही एक रेस्तराँ था पर उसमें बहुत भीड़ थी। हम बाहर की सीढ़ी पर बैठ कर नीचे से बस आने का इन्तजार करने लगे।

बस पर बैठते ही उसने मेरे कंधे पर सिर टिका कर आँखें मूँद लीं, हालांकि

बस रवाना होने के बाद नीचे रेलवे स्टेशन तक पहुँचने में केवल दस-बारह मिनट लगने को थे।

वापसी की ट्रेन शाम साढ़े चार बजे छूटती थी और इसमें सवा घंटा बाकी था।

वह अकेली, सुविनियर की दूकानों पर नज़र डालती धीरे-धीरे टहलती हुई बाज़ार के छोर तक गयी फिर ऊँचे पहाड़ की चोटी पर खड़े माचू पिच्चू के खंडहरों को एकटक देखने लगी।

स्टेशन की सीमेन्ट की सीढ़ी पर लम्बे खुले बालों वाली एक लड़की बैठी थी। उसके गले और कंधों से चार-पाँच कैमरे लटके थे और वह हड़बड़ी में उनके लेन्स अदल-बदल रही थी। उसके पीछे ग्यारह-बारह गोरे-काले, छोटे लड़के-लड़कियों का झुंड खड़ा था। वह उन सब की माँ तो हो ही नहीं सकती थी हालांकि अपनी खोयी-खोयी निगाहों से वह पगली लगती थी।

ट्रेन प्लेटफ़ार्म पर आते ही यात्रियों की भीड़ ने उस पर धावा बोल दिया। देखते-देखते सारी सीटें भर गयीं।

रुकी हुई ट्रेन के बगल वाली खाली रेल लाइनों के बीच एक स्थानीय औरत कंधे पर वस्त्र लादे खिड़कियों की ओर देखती हुई टहल रही थी। किसी विदेशी सैलानी ने खिड़की से उसकी ओर एक सिक्का उछाला तो उसने झुक कर वह सिक्का उठाया और अपनी टेंट में खोंस लिया। ट्रेन चलने पर भी, लाइन के बगल में खड़े अधनंगे लड़कों के झुंड पर वे सिक्के फेंकते तो कई बच्चे उस जगह की घास नोचने-खसोटने लगते थे।

बीच रास्ते में ही अँधेरा हो गया था। आते वक्त जिस सबसे ऊँची जगह पर ट्रेन काफ़ी देर रुकी थी, वहाँ इस वक्त मजदूर नहीं थे लेकिन वहाँ ट्रेन खड़ी हो गयी। दोनों ओर ताज़ा खुदी ढालें कोयले की खदान-सी दिखायी देती थीं। उससे कुछ ही आगे जाने पर मीलों दूर हल्की रोशनियों की बिसात बिछी दिखायी दी—कुसको की बत्तियाँ! कई ढलानें उतरने के बाद लाइन के एकदम पास में खड़े इक्के-दुक्के घर आने लगे—इकहरे, खपरैल की छतों और सफ़ेद चूने से पुती, उखड़ी ईंटों की दीवारों के।

वह माचू पिच्चू से कुस्को तक के पूरे रास्ते भर चुप रही थी। शायद वह बहुत अधिक थक गयी थी।

कमरे में पहुँचते ही उसने मेरे एकदम पास आ कर उतावली से कहा—अब चलो यहाँ से।

—लेकिन आज रात तो हम नहीं रवाना हो सकते हैं।

—तो कल । जल्दी-से-जल्दी ।

देखा, वह सोने जा रही थी ।

—सेन्यास पी कर सोओ तो तुम्हें नींद ठीक से आएगी । कल तुमने बचा रखी थी ।

—वह तुम्हारे लिये थी ।—उसने बिस्तर में घुसते हुए कहा—कल पता करें । शायद हमें कल ही वापस जाने वाली फ्लाइट में सीट मिल जाए ।

—रोशनी बुझा दूँ ?

—जागना चाहते हो तो जलती रहने दो ।

लेकिन मैंने रोशनी बुझा दी ।

उसकी तरह मैं भी तो हूँ, कहीं भी जा कर रुकना नहीं चाहता, कहीं आगे जाना चाहता हूँ । वह भी हमेशा जा कर वापस लौटना चाहती है । फिर दोनों में अंतर क्या है ।

सुनायी दिया, अँधेरे में उसने लम्बी साँस छोड़ी । मैंने सोचा था कि वह गहरी नींद में सो गयी है ।

—क्या तुम अब भी जाग रही हो ?

—मैं अब और खंडहर नहीं देखना चाहती ।

—तुम्हें यहाँ नहीं आना चाहिये था, मार्चिको ।

—तुम नहीं जानते हो, एक वायदा था जिसे मैंने पूरा कर दिया । अगर मुझे पता होता कि यह ऐसी जगह है तो मैं कभी न आती ।

उसका स्वर उदास नहीं, दीन था । न जाने क्यों मुझे रिओ:की वह रात याद आ गयी, माद्रन की आवाज वाली रात ।

—अब हम लौट चलें, मार्चिको ।

उसने कुछ नहीं कहा । कुछ देर बाद वह धीरे से हँसी ।

—कितने दिनों बाद तुमने मुझे मेरा नाम ले कर पुकारा है ।

रात कितने बजे थे, पता नहीं, घंटों की आवाज दीवारों से रिस कर अँधेरे में भरने लगी ।

—गिरजे के घंटे ।—मैंने धीरे से कहा ।

—मुझे लगता है कि तुम देवता में विश्वास करते हो ।—वह व्यंग्य से हँस दी ।

—जरूर । लेकिन मेरा देवता इन्सान है । उसे मैं भूलना नहीं चाहता ।

इन्तजार करता रहा कि वह प्रतिवाद करते हुए कुछ कहेगी लेकिन देर तक उसने कुछ नहीं कहा, वह नींद में खो गयी थी ।

एइरो पेरू का आफ़िस दो सँकरी गलियों के चौराहे पर था। दरवाज़े पर एक अंधी बूढ़ी औरत तीन छोटे बच्चों को अपने आगे किये बाँसुरी बजा कर भीख माँग रही थी।

होस्टेस ने कहा कि न केवल उस दिन की फ़्लाइट बल्कि अगले दस दिनों तक की सारी फ़्लाइटें भर चुकी हैं।

—अगर आपको इतनी जल्दी लौटना था तो आपको वापसी की बुकिंग पहले ही करा लेनी चाहिये थी।—उसने लगभग डाँटने की तरह कहा।

मैंने उसे बताया कि अगर हम आज लीमा नहीं पहुँचे तो तोक्यो तक के हमारे सारे रिज़र्वेशन बेकार हो जाएँगे।

वह मोटे कूल्हे से कुर्सी को एक ओर ठेलती हुई उठी और पार्टीशन के पीछे चली गयी।

देख लेना, हमें सीटें मिल जायेंगी। नहीं तो वह उठ कर अंदर न जाती।—उसने धीरे से कहा।

होस्टेस बाहर निकल कर मेरी ओर एक हथेली बढ़ाते हुए बोली—अपने टिकट दीजिये।

कुर्सी पर बैठ कर वह टिकट भरने लगी। भर कर उसने टिकट चुपचाप मेरी ओर बढ़ा दिये।

—दस बजे की फ़्लाइट में हमने आपको सीटें दे दी हैं।

मैं उस पर उबल पड़ा।

—पहले तो आपने कहा था कि अगले दस दिनों तक सारी सीटें रिज़र्व हैं फिर ये दो सीटें कैसे निकल आयीं?

—मैंने आप के लिये कोशिश की। आप को देर हो रही है।

—ठीक है, चलो।—उसने मेरी बाँह धीरे से खींची।

—या होटल और जेबकटों को आमदनी कराने की।—कहते हुए मैं बाहर निकल आया।

वैसी ठंडी और क्रूर मुस्कान मैंने किसी दूसरे मनुष्य के चेहरे पर पहले कभी नहीं देखी थी। आखिर, हमने उसका क्या बिगाड़ा था। वह हमें पहले ही सीट दे सकती थी।

—तुम्हें खीझना नहीं चाहिये था।—बाहर आ कर वह बोली।

मुश्किल से डेढ़ घंटे का समय हमारे पास था। होटल लौट कर मैं बिल चुकाने गया, वह सामान समेट कर सूटकेसों में भरने लगी। मैंने खोर्खे से टैक्सी बुलाने को कह दिया था।

टैक्सी रवाना हुई तो मुझे इतमीनान हुआ कि हम समय से कुछ पहले ही एयरपोर्ट पहुँच जायेंगे।

—क्या तुम फिर कभी कुसको आना चाहोगी? मैं फिर कभी यहाँ जरूर आऊँगा।

—तुम यों ही हर जगह से वायदा कर बैठते हो, फिर आने का।—वह हँसते हुए बोली—मैं इधर दोबारा कभी न आऊँगी। अगर मुझे पता होता कि यह ऐसी मनहूस जगह है तो मैं इस बार भी न आती।

एयरपोर्ट के लाज मे हर काउन्टर के आगे यात्रियो के जत्थे जमा थे।

—तुम सामान देखो, मैं टिकट चेक करा कर आता हूँ।

यहाँ लाइनें नही बनायी गयी थी बल्कि हर आदमी आगे वाले दो व्यक्तियों के बीच से जगह फाड़ कर आगे बढ़ने की कोशिश कर रहा था।

मैं काउन्टर तक पहुँच भी नही पाया था कि वह अमरीकी लड़की जो माचू पिच्चू से वापसी के समय स्टेशन पर चार-पाँच कैमरों और दस-बारह किशोर-किशोरियों के साथ दिखायी दी थी, भीड को ढोर की तरह चीरती हुई काउन्टर पर पहुँची और टिकट पटकती हुई बोली—ये रहे चार टिकट!

उसके बगल में उस वक्त भी वे सभी कैमरे लटके थे और आपस मे टकरा रहे थे।

टिकट वहीं छोड कर वैसी ही जल्दी से वह वापस मुड़ी।

—हलो!—मुझे पहचान कर उसने कहा—मैं क्या करूँ, समझ मे नहीं आता। हम सब का रिजर्वेशन एक साथ नही हो रहा है। चार एइरो पेरू मे लीमा जा रहे हैं और सात फासेट से—अब उधर जाऊँ।

कहते हुए वह तिब्बती मायाविनी की तरह गायब हो गयी।

वे सारे सैलानी शहरी थे और पूरे कपड़ों मे थे लेकिन वे ओकायामा की इयो मात्सुरी मे पुरोहित द्वारा उछाली गयी छड़ी पाने के लिये, सिर्फ लँगोट पहने सैकड़ों नौजवानो की भीड़ की तरह धक्का-मुक्की कर रहे थे।

—मैं तुम्हे दूर से देख रही थी, तुम ठीक से लड-झगड़ सकते हो।—वापस आया तो वह हँसते हुए बोली।

—मैं बहादुर हूँ, यह सोच कर तुम्हे अभिमान हुआ होगा।

—नही, कोई खास नहीं। देखना तो अब है कि तुम कितने बहादुर हो। समय कम है, तुम्हे उड़ान के पहले की तैयारी नही करनी है?

उसने मुझे याद दिलायी।

—नहीं, इस बार ऐसे ही देखूँगा, देखूं, जी कितना खराब हो सकता है।

—हाँ, एक बार कर के देखो। तुम शुरू से ही डर जाते हो।

जहाज़ ज़मीन से उठने के बाद हिलने-डुलने लगा तो मुझे मन में पछतावा हुआ।

—तबीयत खराब लग रही है?—उसने पूछा।

मैंने उसे उत्तर नहीं दिया। पीठ पीछे की ओर झुका ली।

—सीधे बैठे रह कर तो देखो!

— नहीं, यों ठीक है।

एक घंटे बाद हवाई जहाज़ लीमा एयरपोर्ट पर उतरा तो मेरी सारी शक्ति जैसे निचुड़ गयी थी लेकिन पहली बार मैंने नशे की सहायता लिये बिना हवाई यात्रा की थी।

—देखो, मैं पहले ही कहती थी कि तुम नाहक डरते हो।

ग्यारह बजे थे। लॉस ऐंजेलस जाने वाली एइरो पेरू की फ़्लाइट रात दस बजे छूटने को थी। बीच के ग्यारह घंटे हमें वहीं बिताने थे। दोपहर की, शीशे से छन कर अंदर आती धूप, फ़र्श पर बिछी थी। क्षण भर को मुझे लगा कि वह रिओ एयरपोर्ट का लॉन्ज था लेकिन उस पर तो संगमर्मर के काले-सफ़ेद चौखटे जड़े थे। वह लीमा एयरपोर्ट का लांज था और वे चमड़े की चिप-चिपाती कुर्सियाँ थीं।

—हम खाना खाने एक साथ जाएँगे तो सूटकेस साथ ले जाना होगा।—मैंने उससे कहा—पहले तुम खा आओ। मेरा अभी खाने का मन भी नहीं है। रेस्तराँ सीढ़ी के ऊपर है।

वह खाना खाने चली गयी। मैं पास के एक बुकस्टॉल के बाहर खड़ा हो कर शो केस में लगे पेपरबैक्स के शीर्षक पढ़ने लगा।

वह काफ़ी देर बाद लौटी। उसने बताया कि वह खाना खाने के बाद ऊपर के लंबे छज्जे पर टहल रही थी और लोगों को विदा करते हुए देख रही थी।

तब दोपहर के ढाई बजे थे। वक्त बड़ी धीरे-धीरे गुज़रता लग रहा था। वह कुर्सी पर बैठी नहीं।

—तुम ऊब तो नहीं रहे हो!—उसने पूछा।

मैंने इनकार किया तो वह धीरे-धीरे टहलती हुई लॉन्ज के छोर तक गयी और सीढ़ी के नीचे वाले बुकस्टॉल पर से एक पत्रिका उठा कर उसके पन्ने पलटने लगी। पत्रिका वापस रख कर वह वैसे ही धीरे-धीरे टहलती हुई सामने से गुज़री और लंबे लॉन्ज के दूसरे छोर तक गयी।

हम अकेले-अकेले, अपनी-अपनी अलग दुनिया से उलझे हुए थे। तीन या

बार बार रिओ आते-जाते समय वह इसी लॉन्ज में रुकी होगी और एक बार मैं भी।

तीसरी बार सामने से गुजरते हुए जैसे कि उसे अचानक ध्यान आया हो, वह आ कर बगल की कुर्सी पर बैठ गयी।

—अब मैं सामान देखूँगी।

मैं बैठा ही रहा तो उसने कहा—तुमने सुबह से कुछ भी नहीं खाया है।

मुझे भूख नहीं लगी थी फिर भी मैं चुपचाप उठ गया। दीवार पर पत्थर के काले पार्टिशनों के बीच हरे रंग के फोन लगे थे। और उनके नीचे फोन नंबर की डायरेक्टरियाँ लटक रही थीं। उन्हें देख कर भी फोन करने की इच्छा पिछली बार की तरह नहीं हुई। एस्केलेटर चल रहा था। रेस्तराँ के बड़े हॉल में काँच की दीवार के पास बाने सिर्फ एक टेबुल के गिर्द पाँच-छः हिप्पी जैसे लड़के-लड़कियाँ बैठे थे और जोर-जोर से बहस कर रहे थे। धुँआए काँच के दूसरी ओर ढलते हुए सूरज का पीला गोला दिखायी दे रहा था।

एक बोतल बियर ले कर उसे काफी देर तक पीने के इरादे से बैठा था लेकिन वे इस कदर शोर कर रहे थे कि जल्दी से खत्म कर के नीचे उतर आया। वह वहाँ नहीं थी और सूटकेस भी नहीं थे। अकेली वह एइरो पेरु के काउन्टर के आगे खड़ी दिखायी दी। काउन्टर खुल गया था और वह सूटकेस जमा करा रही थी।

—अब हमें सामान की बराबर निगरानी न करनी पड़ेगी।—उसने कहा।

—चलो, तुम्हें बियर पिला लाऊँ। मैं पी आया, एक बोतल और सही।

—मैं बियर नहीं पीना चाहती। अगर कॉफी हो तो कॉफी पियूँगी।

वे हिप्पी चले गये थे।

—तुम देर से न जाने क्या सोच रही हो।

—नहीं तो!

—फिर सुबह से तुम गुमसुम क्यों हो?

—तुम भी तो। तुम भी तो लगातार कुछ सोच रहे हो।

—हाँ। लेकिन मैं तुम्हारे बारे में ही सोच रहा था।

—एक बात पूछ सकती हूँ? क्या अब तुम उन्हें घृणा करते हो?

—नहीं तो!

—क्या तुम्हें उनकी याद आती है?

—हाँ।

—तो क्या तुम अब भी उन्हें प्यार करते हो?

—नहीं। मैं उसे भी प्यार नहीं कर सका और मैं किसी दूसरे को भी प्यार न कर सकूँगा। मैं अब यह भी नहीं समझ पाता कि स्त्री-पुरुष कैसे एक दूसरे को प्यार कर सकते हैं।

—मैं जानती हूँ।

—लेकिन मैं उन्हें आँख-ओझल नहीं होने देना चाहता—किसी को भी नहीं। अब से बीस-पचीस वर्ष बाद भी मैं उन्हें याद करूँगा और उन्हें देखना चाहूँगा।

—इसीलिये तो एकदम शुरू में और एकदम अंत में किसी को भी तुम अच्छे नहीं लग सकते—सिर्फ़ बीच में।

मैं ज़ोर से हँस पड़ा तो वह चौंक गयी।

—उतना भी उपकार मुझे नहीं चाहिये। मैंने कहा—चलो, बाहर चलें।

हम बाहर निकले और हॉल से बाहर निकल कर छज्जे के छोर की तरफ टहलने लगे। उस समय बिना रोशनी के छज्जे पर हमारे सिवा और कोई न था और नीचे एक भी हवाई जहाज़ न होने के कारण नीचे का खुला एप्रन और पीली रोशनियों वाले रनवे बड़े मनहूस लग रहे थे। आगे, बायें हाथ की गच की रेलिंग के आगे तीन-चार स्त्री-पुरुष खड़े थे और उनकी पीठें इमारत के ऊपर जल रही तेज़ रोशनियों से चमक रही थीं। वे शायद अगली फ्लाइट से आने वाले अपने मित्रों या संबंधियों के लिये वहाँ खड़े थे।

—जापान लौटने के बाद तुम क्या करोगे?

—मैं। मेरे पास करने को ढेर सारे काम हैं। जैसे कि मुझे अपना धंधा फिर से जमाना है। ये एक-डेढ़ माह बाहर रहने के कारण मुझे लगभग नये सिरे से शुरू करना होगा। जैसे कि मुझे कर्ज़ उतारना है।

—तुम तो ठीक हो, लेकिन मैं?—वह मुस्कराने लगी—मेरे लिये करने के सारे काम वे हैं जो मुझे नहीं करने हैं। जैसे कि दोबारा प्रेम में नहीं पड़ना है, दोबारा शादी नहीं करनी है।

—तुम कुछ भी करो या कुछ भी न करो लेकिन मन से खुश ज़रूर रहना, हालाँकि।...

—हालाँकि ?

—कुछ नहीं। मन से खुश रह सकना बहुत मुश्किल है, लगभग असंभव। मैं सोच रहा था कि क्या मैं ही फिर पहले की तरह हँस सकूँगा। क्योंकि हँसना, जीने के लिये कितना ज़रूरी है। तुम रोने क्यों लगीं।

—मैं रो कहाँ रही हूँ। तुम्हारे कहने का ढंग ऐसा था कि—मैं रो नहीं

रही हूँ ।—उसने झट से आँखें पोंछ लीं—तुमने मुझे रिओ के अस्पताल में एक कविता सुनायी थी न !—उसकी आवाज बहुत धीमी थी—लगातार उड़ते जाने वाले एक पक्षी के बारे में ।

—हाँ । मैं अब भी उसी तरह खोज रहा हूँ ।

तेज रोशनी उसके चेहरे के पीछे थी । उसकी नाक, होठों और ठोड़ी को मिलाती हुई एक चमकती हुई बारीक लकीर बन गयी थी ।

—तुम मेरी बात पर हंसोगी तो नहीं, न ?

—नहीं ।

—मैं हमेशा कोशिश करता आया । मैं नहीं जानता कि मैं जो खोज रहा था वह क्या था । पर मैं अब भी वही खोज रहा हूँ ।

—क्या ।

—खूबसूरत चीज नहीं । चीजों में खूबसूरती ।

लेकिन तुम्हारी खोज भी एक दिन खत्म हो जाएगी ।

—जीने की इच्छा । बनी रहने तक नहीं । अगर ऐसा न होता तो एक-एक कर के हम सब न जाने कब के आत्महत्या कर चुके होते ।

—जीने की इच्छा ।—खोयी-खोयी-सी उसने दुहराया और सामने के अंधेरे में एकटक देखने लगी ।

उसी रास्ते वापस छज्जे पर लौटते हुए सामने दिखायी दिया, एक बड़ा फाटक, जिसके ऊपर दो का अंक लिखा था । वह यात्री, आधी बाँह की सफेद कमीज पहने, जो हॉनोलुलू एयरपोर्ट के लंबे बरामदे में पहली बार मिला था, यहीं उस नम्बर दो फाटक की ओर जाते हुए फिर दिखायी दिया था—और हेल्मेट लगाए वह मोटा सैनिक भी, जो कुसको जाते वक्त सुबह के समय दोबारा मिला था । उन्हें मैं प्रेम नहीं करता लेकिन मैं उन्हें फिर देखना चाहता हूँ । शायद अपने आप को अचंभे में डालने के लिये ।

काले आसमान में हल्की लालटेन-सी टिमटिमाती रोशनी की बुन्दी धीरे-धीरे नीचे उतर रही थी और गच की रेलिंग के आगे लोगों की अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गयी थी । लाउडस्पीकर पर आने वाली फ्लाइट का नंबर बताया जा रहा था । वे सब शायद उसी जहाज के आने के इन्तजार में खड़े थे ।

—अब तक मैंने जो भी किया है, उसमें से किसी भी बात को मुझे दोहराना नहीं है ।—उसने कहा ।

उसने मुझसे नहीं, अपने आप से कहा था ।

वह जहाज सरकता हुआ उस छज्जे के नीचे आकर रुका और यात्री

—नहीं। मैं उसे भी प्यार नहीं कर सका और मैं किसी दूसरे को भी प्यार न कर सकूंगा। मैं अब यह भी नहीं समझ पाता कि स्त्री-पुरुष कैसे एक दूसरे को प्यार कर सकते हैं।

—मैं जानती हूँ।

—लेकिन मैं उन्हें आँख-ओझल नहीं होने देना चाहता—किसी को भी नहीं। अब से बीस-पचीस वर्ष बाद भी मैं उन्हें याद करूँगा और उन्हें देखना चाहूँगा।

—इसीलिये तो एकदम शुरू में और एकदम अंत में किसी को भी तुम अच्छे नहीं लग सकते—सिर्फ़ बीच में।

मैं ज़ोर से हँस पड़ा तो वह चौंक गयी।

—उतना भी उपकार मुझे नहीं चाहिये। मैंने कहा—चलो, बाहर चलें।

हम बाहर निकले और हॉल से बाहर निकल कर छज्जे के छोर की तरफ़ टहलने लगे। उस समय बिना रोशनी के छज्जे पर हमारे सिवा और कोई न था और नीचे एक भी हवाई जहाज़ न होने के कारण नीचे का खुला एप्रन और पीली रोशनियों वाले रनवे बड़े मनहूस लग रहे थे। आगे, बायें हाथ की गच की रेलिंग के आगे तीन-चार स्त्री-पुरुष खड़े थे और उनकी पीठें इमारत के ऊपर जल रही तेज रोशनियों से चमक रही थीं। वे शायद अगली फ़्लाइट से आने वाले अपने मित्रों या संबंधियों के लिये वहाँ खड़े थे।

—जापान लौटने के बाद तुम क्या करोगे?

—मैं। मेरे पास करने को ढेर सारे काम हैं। जैसे कि मुझे अपना धंधा फिर से जमाना है। ये एक-डेढ़ माह बाहर रहने के कारण मुझे लगभग नये सिरे से शुरू करना होगा। जैसे कि मुझे कर्ज़ उतारना है।

—तुम तो ठीक हो, लेकिन मैं?—वह मुस्कराने लगी—मेरे लिये करने के सारे काम वे हैं जो मुझे नहीं करने हैं। जैसे कि दोबारा प्रेम में नहीं पड़ना है, दोबारा शादी नहीं करनी है।

—तुम कुछ भी करो या कुछ भी न करो लेकिन मन से खुश ज़रूर रहना, हालाँकि।...

—हालाँकि?

—कुछ नहीं। मन से खुश रह सकना बहुत मुश्किल है, लगभग असंभव। मैं सोच रहा था कि क्या मैं ही फिर पहले की तरह हँस सकूंगा। क्योंकि हँसना, जीने के लिये कितना ज़रूरी है। तुम रोने क्यों लगीं।

—मैं रो कहाँ रही हूँ। तुम्हारे कहने का ढंग ऐसा था कि—मैं रो नहीं

रहा हूँ।—उसने झट से आँखें पोंछ लीं—तुमने मुझे रिओ के अस्पताल में एक कविता सुनायी थी न!—उसकी आवाज बहुत धीमी थी—लगातार उड़ते जाने वाले एक पक्षी के बारे में।

—हाँ। मैं अब भी उसी तरह सोच रहा हूँ।

तेज रोशनी उसके चेहरे के पीछे थी। उसकी नाक, होंठों और ठोडी को मिलाती हुई एक चमकती हुई बारीक लकीर बन गयी थी।

—तुम मेरी बात पर हँसोगी तो नहीं, न?

—नहीं।

—मैं हमेशा कोशिश करता आया। मैं नहीं जानता कि मैं जो खोज रहा था वह क्या था। पर मैं अब भी वही खोज रहा हूँ।

—क्या।

—खूबसूरत चीज नहीं। चीजों में खूबसूरती।

लेकिन तुम्हारी खोज भी एक दिन खत्म हो जाएगी।

—जीने की इच्छा। बनी रहने तक नहीं। अगर ऐसा न होता तो एक-एक कर के हम सब न जाने कब के आत्महत्या कर चुके होते।

—जीने की इच्छा।—खोयी-खोयी-सी उसने दुहराया और सामने के अँधेरे में एकटक देखने लगी।

उसी रास्ते वापस छज्जे पर लौटते हुए सामने दिखायी दिया, एक बड़ा फाटक, जिसके ऊपर दो का अंक लिखा था। वह यात्री, आधी बाँह की सफेद कमीज पहने, जो हॉनोलुलू एयरपोर्ट के लंबे बरामदे में पहली बार मिला था, यहीं उस नम्बर दो फाटक की ओर जाते हुए फिर दिखायी दिया था—और हेलमेट लगाए वह मोटा सैनिक भी, जो कुसको जाते वक्त सुबह के समय दोबारा मिला था। उन्हें मैं प्रेम नहीं करता लेकिन मैं उन्हें फिर देखना चाहता हूँ। शायद अपने आप को अचंभे में डालने के लिये।

काले आसमान में हल्की लालटेन-सी टिमटिमाती रोशनी की बुन्दी धीरे-धीरे नीचे उतर रही थी और मंच की रेलिंग के आगे लोगों की अच्छी-खासी भीड़ जमा हो गयी थी। लाउडस्पीकर पर आने वाली फ्लाइट का नंबर बताया जा रहा था। वे सब शायद उसी जहाज के आने के इन्तजार में खड़े थे।

—अब तक मैंने जो भी किया है, उसमें से किसी भी बात को मुझे दोहराना नहीं है।—उसने कहा।

उसने मुझसे नहीं, अपने आप से कहा था।

वह जहाज सरकता हुआ उस छज्जे के नीचे आकर रुका और यात्री

बाहर निकले तो वे सभी स्त्री-पुरुष-बच्चे हाथ उठा कर हिलाते हुए, जेट इंजन के शोर की परवाह न कर के उन्हें पुकारने लगे। यात्री इमारत के अंदर जा रहे थे और रेलिंग के सामने खड़ी कतार के लोग बिखर कर इक्के-दुक्के लौटने लगे थे—झीनी लिंगरी जैसी ड्रेस पहने। एक मोटी अधेड़ औरत, बीच में एक बच्चे के दोनों हाथ पकड़े स्त्री-पुरुष, फटे हुए पायँचों की नीली जीन्स पहने एक स्कूली लड़की—

लाउडस्पीकर से अगली फ़्लाइट के यात्रियों को काउन्टर पर आने के लिये कहा जा रहा था। वह वही फ़्लाइट थी जिससे हमें लॉस ऐंजेलस जाना था।

—मैं आज जल्दी सो जाऊँगी।—उसने फाटक से बाहर निकलते हुए कहा—मैं बहुत थक गयी हूँ।

जहाज़ के अंदर नीमरोशनी में अधिकतर सीटें खाली लगीं। जो यात्री सीटों में बैठे थे, वे सो रहे थे। नये आए मुसाफ़िर अपनी-अपनी सीटें ढूंढ़ने में व्यस्त थे।

वह खिड़की की ओर की सीट पर बैठी और खिड़की के बाहर देखने लगी, हालांकि उधर रनवे के पीले बल्बों के अलावा घुप अँधेरा था।

जहाज रनवे की ओर धीरे-धीरे जा रहा था और ऊपर-नीचे झूलते हुए हिल रहा था—कांच की चिड़िया की तरह, जो सामने रखे पानी के गिलास में एक बार चोंच डुबा लेने के बाद बड़ी देर तक सिर आगे-पीछे झुलाती रहती है। रनवे न जाने कितना लंबा था! आख़िर, एक जगह जहाज़ घूमा और रनवे पर दौड़ने लगा, तेज़ से तेज़तर और एक हल्के से झटके के साथ धरती से ऊपर उठ गया।

—सायोनारा!—उसके होंठ फड़क रहे थे।

—क्या तुम्हें अब तक उम्मीद थी?

उसने एक ओर सिर झुकाया लेकिन कहा कुछ नहीं।

होस्टेस यात्रियों को विभिन्न हिदायतें दे रही थी।

—मैंने यह यात्रा अँधेरे में शुरू की थी, शायद इसलिये।—उसने धीरे से कहा और सीट पीछे की ओर झुका कर उस पर सिर टिका लिया।

वे सब सो रहे थे, नींद से या जागते हुए भी चुप। जाग रहा था केवल एक शोर, अनवरत, प्रपात का! जा आ आ आ! उसका न तो किसी से कोई नाता था और न वह कहीं जा रहा था, न कहीं से आ रहा था—ज्वालामुखी के गर्भ में होने वाले शोर की तरह, चुम्बक की तरह परिवेश से तोड़ कर

अपनी ओर खींचता हुआ, सागर की तरह समय से खीच कर अपनी गहराई में डुबाता हुआ !

वह सो गयी थी और शायद नींद से सो रही थी ।

होस्टेस को बुलाने की बजाय मैं खुद बियर ले आने के लिये जा रहा था तो दो सीटों के बीच के सँकरे रास्ते में एक पुरुष खड़ा था। उसने मुझे रास्ता देते हुए क्षमा माँगी और अचानक बोला—अरे तुम !

—तुम ?

वह आस्तीन पर नेपाल के राजचिह्न वाला वही अमरीकी था जो माचू पिच्चू जाते समय ट्रेन में मिला था। उसने ऐनक उतार दी थी लेकिन वह वही था।

—यह देखो !—उसने एक उँगली से सीट की ओर इशारा किया। बीच के हत्थे गिरा कर तीनों सीटों पर उसकी पत्नी फैनी सो रही थी।

—मैं यहाँ खड़ा होकर इसकी पहरेदारी कर रहा हूँ। अगर यह लुढ़क कर नीचे गिर जाए तो—

—तुम अपनी पत्नी को कितना प्यार करते हो !

—या तो तुम किसी को प्यार करते हो या तुम किसी को प्यार नहीं करते हो। इनके बीच में कुछ नहीं है, जिसके बारे में बहस की जा सके।

—तुम ठीक कहते हो। बियर पियोगे ?

—कम ऑन, मैन ! तुम इसे देखते रहो, मैं बियर ले आता हूँ।

लीमा से मेक्सिको की साढ़े तीन घंटे की फ्लाइट, हम बारी-बारी से एक-दूसरे को बियर पिलाते रहे।

नीचे मेक्सिको शहर की रोशनियों की बिसात फैली थी और जहाज नीचे उतर कर एक लैंप पोस्ट की गोल मर्करीलाइट का बार-बार चक्कर लगाता जा रहा था।

सोचा कि जा कर उसे जगाऊँ और दिखाऊँ लेकिन वह गहरी नींद में बेखबर सो रही थी और वह मर्करीलाइट नहीं बल्कि गोल चंद्रमा था, जो असंख्य वर्षों से रात के समय एल ताजिन के खंडहर और सेनोते दे साक्रिफिसि-ओम के बलिदान कुंड को ऊपर से इसी तरह घूरता आया है।

मुझे कोई नशा नहीं चाहिये, अगर ये हो तो।

वह नींद से सो रही थी। मुझे मेक्सिको सिटी नहीं उतरना था लेकिन जहाज से उतर कर कस्टम्स के फाटक तक गया।

—मैं यहाँ फिर कभी आऊँगा।—मैंने अपने मन में कहा।

कस्टम्स की रोशनी तेज़ थी, जैसी कि अस्पताल के आपरेशन थियेटर में जलायी जाती है। न जाने क्यों, देश कोई भी हो, कस्टम्स हमेशा अस्पताल की याद दिलाते हैं!

फाटक के दूसरी ओर केवल कमीज़-पैन्ट पहने एक युवक और एक दुबली पतली लड़की खड़े थे और उनके इर्दगिर्द हेलमेट लगाये तीन सैनिक। वे वीसा न होने की वजह से, या किसी और कारण पकड़े गये होंगे। वे मेक्सिको के नहीं लगते थे—उनके बाल पीले और भूरे थे—इतालिया या फ्रांस के।

लौटा तो देखा वह खड़ी होकर आगे-पीछे मुझे ढूंढ़ रही थी।

—तुम कहाँ चले गये थे?

मैं उतर कर ज़रा यों ही देख रहा था।

—मैंने सोचा कि तुम उतर कर चले गये।

वह वापस बैठ गयी और सिर एक ओर झुका कर उसने आँखें मूँद लीं।

वह अमरीकी भी तीन सीटों पर सो रही अपनी पत्नी के पैर की ओर सिर करके अपने दोनों पैर उसके सीने पर लाद कर नींद से सो रहा था—वे दो जुड़वाँ छोटे बच्चों की तरह लगते थे जो एक ही बिस्तर पर सुलाये जाने पर नींद में एक दूसरे से उलझ जाते हैं।

लॉस ऐंजेलस से पहले ही खिड़कियों में सुबह की रोशनी भरने लगी।

—क्या तुम रात भर जागते रहे?—वह उठी तो मुझे जागते हुए देख कर बोली।

लॉस ऐंजेलस में हवाई जहाज़ से उतरते ही मैंने उसे सामान की पर्चियाँ देते हुए कहा—देखो, तुम सामान लेना, मैं नौ पैंतालीस की हॉनोलुलू वाली फ़्लाइट में रिजर्वेशन कराने के लिये दौड़ूँगा। शायद मिल जाए। कॉन्टिनेन्टल के काउन्टर पर मिलना।

कॉन्टिनेन्टल के काउन्टर पर पहुँचने वाला मैं पहला मुसाफ़िर था।

वह दोनों ओर दो सूटकेस लटकाए हुए आती दूर से दिखायी दी। मैंने हाथ ऊपर उठा कर टिकट हिलाते हुए उसे दिखाये।

—अभी एक सवा घंटे का वक्त है, अगर तुम कुछ ख़रीदना चाहो तो।

—मुझे कुछ नहीं ख़रीदना है। कहाँ तक का रिज़र्वेशन मिला?

—सिर्फ़ हॉनोलुलू तक का। वह कह रहा था कि एयर सायाम में हड़ताल होने वाली है। पता नहीं कि हॉनोलुलू से तोक्यो तक उसकी फ़्लाइट होगी भी या नहीं। वहाँ पहुँच कर देखा जाएगा। काउन्टर खुल जाए तो सामान जमा करके विंडोशापिंग की जाए।

एक कोरियाई स्त्री बायें हाथ में अपना सूटकेस लटकाए और दाहिने हाथ में कागज की एक पर्ची लिये सामने से आते-जाते लोगों से बार-बार कुछ कह रही थी।

—क्या है?—मैंने उसके पास जा कर जापानी में पूछा।

वह शहर में एक जगह फोन करना चाहती थी, जहाँ से कोई उसे लेने के लिये एयरपोर्ट आने को था लेकिन उसे पता नहीं था कि पब्लिक फोन कहाँ है। उसके पास क्वार्टर के सिक्के भी नहीं थे।

फोन मिलते ही वह स्त्री बहुत दूर की अपनी मातृभाषा कोरियाई में बातें करने लगी।

मैंने सैगूना में मि को फ़ोन किया, हालाँकि मुझे मालूम था कि उस वक्त वह घर पर न होगी। उसका दोस्त डिक था।

—मि तो इस समय लॉसएँजेलस में ही है।

—मैं जानता हूँ पर क्या आप मुझे उसका फोन नंबर बता सकेंगे?

उसने फोन नंबर बताया।

—मैं आप के घर एक बार आ चुका हूँ, इधर से दक्षिण अमरीका जाते समय लेकिन तब आप घर पर थे नहीं। इस बार मैं लौटने की जल्दी में हूँ।

—हाँ, मि ने मुझे आपके बारे में बताया था। ठीक है, अगली बार जब कभी आप इधर आयेंगे तब हम मिलेंगे। और हाँ, मैं आपको बताना भूल गया, मि को फ़ोन कीजियेगा तो बेसमेन्ट वाई फ्लोर माँगियेगा।

आवाज से वह खुशदिल लगा।

मि को फ़ोन किया तो उसने कहा—कहाँ से?

—एयरपोर्ट से। लेकिन मि, इस बार तुम्हारे यहाँ न आ सकूँगा। मेरी मित्र मेरे साथ है।

उसने हँसते हुए बात काटी—मैं पहले से जानती थी।

—नहीं, वह नहीं। सुनो, मुझे तोक्यो लौटने की जल्दी है। एयर लाइन्स में हड़ताल होने वाली है। अगर हड़ताल शुरू हो गयी तो हम बीच में लटके रह जाएँगे। क्या तुम हाल में जापान आ रही हो?

—नहीं, निकट भविष्य में नहीं। मेरी आर्थिक हालत तुम जानते हो, अच्छी नहीं है। अगर कभी बाहर निकल सकी तो स्कैंडिनेविया जाना चाहती हूँ।

—मि, मेरे पास और सिक्के नहीं हैं। अच्छा गुड लक!

—शुक्रिया, तुम्हें भी।

हॉनोलुलू में जिस बात का मैं भय कर रहा था वह नहीं हुई—एयर सायाम में हड़ताल नहीं हुई थी लेकिन तोक्यो, हांगकांग, बैंकाक जाने वाला वह एयर सायाम का आखिरी जेट था। काउन्टर के आगे अपने-अपने टिकट लिये यात्रियों की लंबी कतार थी—मेरे आगे करीब ढाई सौ लोग थे! मेरी तरह उन्होंने भी रियायती किराये पर टिकट खरीदे थे और हड़ताल शुरू होने का डर उन सब के मन में रहा होगा क्योंकि एयर सायाम के रियायती टिकट पर हमें कोई दूसरी एयर लाइंस नहीं ले जाने को थी। कुछ देर बाद मैंने घूम कर देखा तो पीछे कम-से-कम सौ से अधिक व्यक्ति पंक्ति में जुड़ गये थे। वह क्लर्क फुर्ती से यात्रियों को निबटा रहा था। मेरे आगे की लाइन छोटी होती जा रही थी लेकिन मैं डर रहा था कि न जाने कब वह क्लर्क खड़ा हो कर यह कह देगा कि सारी सीटें भर गयीं! जब मेरे आगे केवल तीन व्यक्ति रह गये तो मुझे आशा बँधी।

मैंने उसके आगे दोनों टिकट रखे।

—तोक्यो।

उसने चार्ट पर नज़र डालते हुए कहा—केवल एक।

—केवल एक से आपका क्या मतलब है! मैंने एक व्यक्ति को दो-दो, तीन-तीन सीटें देते अभी आपको देखा है।

—लेकिन यह आखिरी सीट है।—वह मुझे घूरते हुए बोला—हमने एकॉनमी क्लास के यात्रियों को भी फ़र्स्ट क्लास में सीटें दी हैं।

—लेकिन हम साथ हैं।

पीछे खड़े यात्री लाइन से सिर निकाल कर हमें देखने लगे थे।

—सॉरी! केवल एक सीट है। अगर आप रुकना चाहें तो—

मैंने अपना टिकट उठा लिया और उसका टिकट आगे बढ़ा दिया।

उसने टिकट का नंबर भर कर टिकट पर सीट नंबर की चिप्पी लगाते हुए कहा—अगर आप चाहें तो अपना नाम वेटिंग लिस्ट में लिखा सकते हैं लेकिन उम्मीद बहुत कम है।

वह दूर पर खड़ी थी इसलिये उसने शायद हमारी बातचीत नहीं सुनी थी।

—तुम फिर क्लर्क से उलझ रहे थे?—उसने मेरे हाथ पर हथेली रखते हुए कहा।

—नहीं, मैं उससे लड़ नहीं रहा था। तुम्हें अकेली जाना होगा। सिर्फ़ एक सीट थी, आखिरी। उसमें मैंने तुम्हारा रिज़र्वेशन करा दिया है।

—तुमने न कराया होता! हम यहाँ तक साथ आये तो मैं तोक्यो तक तुम्हारे साथ जाना चाहती थी।—वह बोली—मैं इस फ़्लाइट से नहीं जाना चाहती।

—तुम्हारे साथ बीते ये कुछ दिन मुझे पिछले कई वर्षों से अधिक महत्त्व-पूर्ण लगे, सायोनारा !—उसने वह कागज़, तह किया हुआ, मुझे वापस करते हुए कहा । उसकी आँखें डबडबा आयी थीं ।

—सायोनारा !

वह मुड़ कर अंदर चली गयी ।

एक क्षण भर तक सूना लगा, साथ के एक व्यक्ति के चले जाने के कारण । वह अनेक स्थानों पर दिखायी दी—वियर का झाग कपड़ों पर पड़ने के बाद सब से पीछे की अँधेरी सीटों पर सोयी हुई—आप पहुँच गये ?—वह ह्विस्की की खाली बोतल बगल में दबाए थी । हाँ, लिफ्ट उधर है—कोपाकाबाना बीच पर—उँगलियों के छोर से गिरती गुनगुने खून की धार, उसने कलाई की नस काट कर आत्महत्या करने का असफल प्रयत्न किया था—वह, जैसे कि गहरे जल में पत्थर का टुकड़ा फेंक देने के बाद । सिर्फ़ एक क्षण भर । अगर हम साथ तोक्यो जाते तो उससे भी कोई अंतर न पैदा होता ।

वह कस्टम्स के दूसरी ओर निकल कर लंबे सूने बरामदे में जा रही थी । उसने घूम कर नहीं देखा । उसने सोचा होगा कि मैं चला गया होऊँगा ।

न जाने कितने घंटों बाद नींद खुली तो वही शोर सुनाई दिया और लाउड-स्पीकर पर जापान का समय बताया जा रहा था । खिड़कियों में रोशनी भरी थी और सिर घूम रहा था । वह उसके बाद का अगला दिन नहीं था इसलिये पर-वाह नहीं, वह पिछला कोई भी दिन हो सकता था—शायद तीसरा दिन । एयर सायाम की हड़ताल ख़त्म नहीं हुई थी और थाईलैंड की ही दूसरी एयरलाइंस का जंबो जेट हॉनोलुलू में पड़े एयर सायाम के यात्रियों को लेने आया था ।

उस दिन तोक्यो के हनेदा इंटरनेशनल एयरपोर्ट पर उतरा वह पहला जहाज़ था । कस्टम्स बड़ा रीता-रीता लग रहा था क्योंकि अधिकतर यात्री हाँगकाँग और बैंकाक जाने वाले थे । अफ़सर ने एक दो सवाल किये और पासपोर्ट पर मोहर लगा कर वापस कर दिया ।

इमारत से बाहर निकल कर देखा, आकाश में सुबह की सागर रंग की रोशनी भरी थी, उस रोशनी पर बादल के छोटे-छोटे टुकड़े तैर रहे थे और हवा के झोंकों में जापानी वसंत की सुबह की खुनकी थी ।

मेरे पैर लड़खड़ा रहे थे जैसे कि तेज़ भूकम्प के समय पैदल भागते हुए लड़खड़ाते हैं ।

मैं ग़लत दिशा में जा रहा था । मोनोरेल का स्टेशन उल्टी ओर था ।

मोटरपूल के फाटक पर बैठे कर्मचारी से स्टेशन का रास्ता पूछा। तो मैं तोक्यो में रास्ता भूला जा रहा था!

वह सुबह की पहली मोनोरेल थी और उस पर मेरे अलावा केवल दो नौजवान सवार हुए थे। उनके सफरी सामान से लगता था कि वे भी उसी फ्लाइट से लौटे थे।

उनमें से एक ने मेरी ओर देख कर हँसते हुए कहा—बहुत जोर की नींद लगी है।

हम अभी ही जापान लौटे थे और विदेश यात्रा के दौरान अपरिचित व्यक्तियों से भी बेझिझक बात शुरू कर देने की हमारी आदत नष्ट नहीं हुई थी।

—मुझे भी। तुम कहाँ से?

—हवाई। और तुम?

—उससे जरा अधिक दूर से।

—कहाँ? कैलिफोर्निया?

मैंने सिर हिला कर स्वीकार कर लिया। सच न कहना उस समय एक खेल की तरह अच्छा लगा।

मोनोरेल से दिखायी दिया, सामने रेगिस्तानी मैदान की तरह, सपाट समतल मैदान, युमे नो शिमा, जो शहर का कूड़ा-कचरा तोक्यो खाड़ी में भरे जाने से निकल आया था।

अन्तिम स्टेशन हामामात्सुच्चो पर उतर कर सीढ़ियों के नीचे आते ही यामानोते लाइन की हरी ट्रेन आती दिखायी दी। महज डेढ़ महीने बाद उसे देख रहा था लेकिन लगा कि पहली बार देख रहा हूँ। रोज़ की तरह उतनी सुबह ही प्लेटफार्म पर भीड़ खड़ी थी, काम के अपने-अपने ठिकानों पर पहुँचने वालों की। भीड़ में अलग-थलग और चुपचाप खड़े, सुबह की सर्द फीकी धूप में वे अपने आप से भी बेगाने लग रहे थे।

मैं शिकोकु से पहली बार तोक्यो आया था और सुबह का ही वक्त था, ऐसी ही ज़र्द धूप खड़े हुए लोगों के पैरों के काले सायों के बीच प्लेटफार्म पर पड़ रही थी। वह यामानोते लाइन पर का ही कोई स्टेशन था लेकिन मुझे उस स्टेशन का नाम नहीं मालूम था और बाद में अनेक स्टेशनों पर उतर कर खोजने के बावजूद मैं पहली बार दिखे उस स्टेशन को नहीं खोज पाया।

ट्रेन खचाखच भरी आयी। ताजे मेकअप में आफ़िस जा रही लड़कियाँ और टाई-सूट में दुरुस्त नौजवान। मैं ख़ुद को उनसे अलग और अजनबी लगा।

तोक्यो स्टेशन के एक-दो नम्बर के प्लेटफ़ार्मों पर नारंगी रंग की ट्रेनें खड़ी थीं। उनमें इने-गिने मुसाफ़िर थे। सुबह तोक्यो आने वाली ट्रेनें ही शहर में काम पर पहुँचने वालों से ठसाठस भरी होती थीं। एक जगह गाड़ी बदलने के बाद अपने छोटे-से स्टेशन पर उतरा। उसके दोनों प्लेटफ़ार्मों के बाहरी किनारों से लगे साकुरा के नाटे वृक्षों की डाल-डाल और टहनी-टहनी पर सफ़ेद फूलों के गुच्छे बदरायी धूप में हल्के-हल्के झूम रहे थे। डेढ़ माह पहले बाहर जाते समय मैं उसी प्लेटफ़ार्म से ट्रेन पर सवार हुआ था, तब उन पेड़ों की डालें सूनी और काली थीं।

छाजन के नीचे के बाज़ार में सब्ज़ी वाले ने पहचाना और चुपचाप मुस्कराया संगतराशों की दूकानों में खड़े पत्थर के छोटे-बड़े खंभे, पँचमुहानी पर एल ग्रेको की चित्रकृति-सी, दुबले लम्बे और पीले चेहरे वाली बुढ़िया बैठी थी। उससे एक पैकेट सिगरेट खरीदा। उसने सदा की तरह केवल धन्यवाद कहा।

लंबी सड़क से मिलने वाली पतली गली में तीन-चार छोटे बच्चे ज़मीन पर बैठ कर खड़िया से स्केच बना रहे थे। वह गली सँकरी होने के कारण सुरक्षित थी क्योंकि उसमें मोटर गाड़ियाँ नहीं घुस सकती थीं।

दरवाज़े के बगल में लगे लेटर बॉक्स में डाक बुरी तरह ठूँसी हुई थी। चिट्ठियाँ, अखबार और विज्ञापन के पर्चे।

दरवाज़े के अंदर फ़र्श पर एक लिफ़ाफ़ा पड़ा था। मैं एक बार चौंक गया। लेकिन उसे तो डाक से आना था और बाहर डाक बॉक्स में होना चाहिये था। उस लिफ़ाफ़े में एक पत्र था और हज़ार यन के पाँच नोट।

याद है तुम्हें मेरी? मैं योशिको हूँ। मैं तोक्यो छोड़ कर वापस जा रही हूँ। जाने के पहले तुमसे एक बार मिलना चाहती थी इसीलिये परसों भी आयी थी लेकिन तुम घर पर नहीं थे। आज तीसरी बार आयी हूँ। अगर तुम अंदर हो तो दरवाज़ा खोल दो। इस समय सात बजे हैं, क्या तुम अब तक सो रहे हो? बार-बार घंटी बजाने पर भी तुम बाहर नहीं आते हो तो शायद तुम घर में नहीं हो।

कल रात बहुत अधिक बर्फ़ पड़ी थी। मैं कुछ देर कब्रिस्तान में घूम कर फिर वापस आयी हूँ। लगता है कि तुम शहर-बाहर चले गये हो। मैं इस घर का डाक का पता पड़ोसियों से पूछना चाहती हूँ लेकिन इतनी सुबह उन्हें जगाते संकोच होता है। भविष्य में अगर कभी तोक्यो आयी तो मिलूंगी। सायोनारा। योशिको। मार्च बारह।

वे पाँच हजार येन उसने वापस कर दिये थे, जो मैंने अर्थहीन विभोर भावुकता में उसे दिये थे।

मुझे उसकी याद थी लेकिन बारह मार्च को मैं कहाँ था?

वे मेरी हथेली में रंग-बिरंगे पंख टाल जाती है लेकिन रात होती है तो वे चुपचाप रोती हैं—जैसे कि दूर पहाड़ों पर फुहार पड़ती है तो पत्ती-पत्ती भीगती है!

घर भर में बासीपन था—गैस रेंज, स्नानघर, सामने वाले कमरे में तातामि पर रखी छोटी चौकी, बंद खिड़की के आगे खिंचा हुआ पर्दा—हफ्तों से बंद घर के अंदर का गहमापन!

बेसिन का नल खोला तो पानी भभक कर निकला। पानी की केतली ऊपर रख कर गैस जलायी तो खट् से आवाज़ हुई। पर्दा एक ओर झटक कर खिड़की का पल्ला खोला तो उसके नीचे लोहे के झींगुर किट-किट बोले—बहुत दूर से आ रहीं, बहुत निकट की परिचित ये ध्वनियाँ! घर की दीवार पर चिपकी बेल में नयी पत्तियाँ निकलने में चन्द हफ्तों की देर थी। पड़ोसी के घर का सहन उजाड़ और सूना था और उनका बाँस का फाटक हमेशा की तरह बंद था।

सिगरेट सुलगाया तो ताज़े मक्खन के जलने-सी महक आयी।

गली की ओर अहाते की दीवार और घर के बीच की छोटी-सी तिकोनी जगह में, पत्थर की बेन्च थी जिस पर केवल एक व्यक्ति के बैठने भर की जगह थी। दीवार के नीचे, जहाँ हमेशा छाया रहती थी, फर्न के पौधे अपने आप उग आये थे और कटे हुए पेड़ के तने पर सफेद काई, जिसमें वर्षा ऋतु में पीले फूल निकलते थे।

सँकरी क्यारी में कटारियों-सी पतली-हरी पत्तियाँ निकल आयी थीं ट्यूलिप की, जिसकी पुतियाँ वहाँ गाड़ कर मैं गया था—और वहीं कहीं, जाने के दो तीन दिन पहले की एक शाम को उसे भी मिट्टी के नीचे दबाया था। ट्यूलिप में अभी कलियाँ नहीं निकली थीं और उन्हें देख कर यह नहीं बताया जा सकता था कि उनमें से किसमें किस रंग के फूल खिलेंगे।

सिर बुरी तरह चकरा रहा था और ऐसा लगता था कि आसमान, पेड़ पौधे और धूप तक मेरी तरह नशे में हैं! दोपहर—टूटे हुए सफेद पंख की तरह धीरे-धीरे नीचे गिरती हुई—पीली-नीली शाम।

शाम का गाढ़ा नीला अँधेरा कमरे में भर आया, बल्कि शाम का उजाला। यह काठ की काली पालिशदार चौकी पर भी प्रतिफलित हो रहा था। फिर वह उजास भी मिट गयी लेकिन मैंने रोशनी नहीं की। कभीकदा दूर वाली चौड़ी सड़क से मोटर की आवाज़ गुज़र जाती थी।

तभी ओलती से बूँद-बूँद पानी गिरने की आवाज़ वाहर के अँधेरे से आयी—वसन्त ऋतु की वर्षा। पास के कब्रिस्तान में उस अँधेरे में भी सैकड़ों पेड़ों पर साकुरा के सफेद गुच्छे होंगे और उन पर वारिश की बूँदें लदी होंगी।

टप! टप!—वाहर फ़र्न के पौधों के बीच जरा से गढ़े में जमा पानी और उसमें वारिश की बूँदों के गिरने की आवाज़। नीले अँधेरे में फ़र्न की उन हरी-हरी पत्तियों में जैसे कि उजले अगाध जंगल उग आये थे। उनमें जा कर भला कौन वापस लौट सका है!

सायोनारा, स्वप्न में खिली धूप में, धूप-छाँह से काँपते थरथराते चेहरे! एक छोटी-सी लंबी यात्रा पूरी हो गयी थी। और कृतज्ञ था मैं उसका कि उसने मुझे भीड़ के पास वापस भेज दिया और अगली सुवह का इंतज़ार करना मेरे लिये संभव वनाया।

सिगरेट जलाने के लिये माचिस की डिब्बी खोली तो उसमें एक भी तीली न थी। जेब में दूसरी डिब्बी थी—हॉनोलुलू एयरपोर्ट की उस कॉफ़ी शॉप की। उसके साथ चिपका वह तह किया कागज़ निकल आया, जिस पर उसने अपना पता लिख कर दिया था। उसे फाड़ने के लिये ऐंठा था कि रुक गया। खोला तो देखा, उस पर उसका पता नहीं था। उसने लिखा था—दो व्यक्ति मिलते हैं। दो व्यक्ति अलग हो जाते हैं। पर एक क्षण की चमकती हुई कनी में हम अपने आप से साक्षात्कार करते हैं। तव। तो तुम्हें अनेक धन्यवाद। साचिको।

उसे फिर तह कर के टेवुल पर ऐश ट्रे से दवा दिया।

अँधेरे में आसमान से झींसियों का पड़ना एकाएक रुक गया था। सर्द हवा के झोंके कभी-कभी आते थे। आकाश में नीचे की तरफ़ एक फाँक जैसा चन्द्रमा दिखायी दिया। वह डूव नहीं रहा होगा वल्कि ऊपर उठ रहा होगा। वादलों से खाली आकाश के उस छोटे से खाली काले टुकड़े में अनन्त गहराई तक न जाने कितने वारीक-वारीक छेद होंगे। उनके पीछे भरी हुई तेज रोशनी उनसे छन रही थी। क्या वह भी तारा था?—जो पहली वार दिखायी दिया था? गहरे सन्नाटे में रेशमी झंडियों की तरह फहराते ब्रह्मांड में!

जैसे कि गिरगिट ने करोड़ों-अरबों वर्षों की दूरी।तय करने के वाद किरन वन कर सिर ऊपर की ओर उठाया हो, मैंने चेहरा ऊपर कर के आकाश देखा।

एक कीड़े की अँधेरे में छेद करती हुई सहमी-सी आवाज़ सुनायी दी। सेमि की ज़िंदगी धरती पर केवल दो सप्ताह की होती है लेकिन ऊपर आने के पहले वह वीस साल तक मिट्टी की अँधेरी परतों के नीचे इंतज़ार करती है! पर वह सेमि की आवाज़ नहीं हो सकती। सेमि वसंत मे नहीं वोलती, गर्मियों की साँझ

मे बोलती है और तब उसकी आवाज आँगन मे रखी सिलाओं के अंदर गूँज मिलती है !

नहीं, वह अँधेरे में हवा-घंटी की आवाज थी। पिछली बार अकेले के बाद भी कोई अपने घर की खिड़की पर से हवा-घंटी उतारना भूल गया था—मुझसे पहले ही मेरी तरह, लेकिन मेरी यात्रा से अधिक लंबे समय तक वह उस घर तक वापस नहीं लौटा था। वह सर्द हवा के थपेड़ों के बीच उलझती हुई अँधेरे में फड़फड़ाती हुई आवाज थी।

या पत्तों के ढेर में से उन पत्तों की आवाज, जो धूप से सूखे-सूखे से बन गये थे, हवा के झोंकों के साथ उड़ते हुए।

बाहर वर्षा का तेज लगातार शोर—एक हवाई जहाज जैसे आकाश में बहुत ऊँचे पर उड़ता जा रहा था। जैट का धुँआ छोड़ता, लगातार बिजली गिरने की तरह। दूर पर से सुनायी देने वाले झरने के शोर की तरह। सचमुच, झरने के पास से सुनायी देने वाले शोर की तरह। जगह-जगह से फूट-फूट कर गिरने वाले इगुवासू के झरनों के शोर की तरह। मूसलाधार वर्षा के शोर में डूबता हुआ शोर !

जो मैंने सुना था।

विवे ! आइ, उना कासा, उना [illegible], उना मुखेर!

वे बारिश के शोर में गीत की तर्ज पर नाच रहे थे और सफ़ेद बालों वाला वह बूढ़ा टेबुल पर उछल रहा था।

आइ उना रासोन, पारा विविर—विवे !

हाँ, जीना एक ज़िद है।

घने अँधेरे में भी जो यह कहे कि मुझे रोशनी नहीं चाहिये, अँधेरा चाहिये, वह खुले दरवाजे के आगे खड़ा होकर दरवाजा खुलने का इंतजार करने वाले की तरह पागल नहीं तो और क्या है !

• •